वृन्दावनलाल वर्मा के कथा साहित्य में नारी स्वतन्त्रता एवं प्रगतिशीलता

बुन्देलखण्ड विश्वविद्यालय की पी-एच. डी. की उपाधि हेतु प्रस्तुत

शोध-प्रबन्ध

सन् 1997 ई०

पर्यवेक्षक :
मनु जी श्रीवास्तव
एम०ए०,पी-एच०डी०
अध्यक्ष, हिन्दी विभाग
बुन्देलखण्ड कॉलिज, झाँसी

शोधकर्त्री।
रेनू मित्तल
एम०ए०

It is certified :-

1:- That the Thesis embodies the work of the candidate herself.

2:- That the candidate worked under me for the period required under ordinance 7 and

3:- That she has put in the required attendance in my department during the period.

(Manuji Srivastava 1/3/79)
M.A., Ph.D.
Supervisor.
Head of Hindi Department
Bundelkhand College,
JHANSI.

वृन्दावनलाल वर्मा के कथा साहित्य में नारी स्वतन्त्रता एवं प्रगतिशीलता

बुन्देलखण्ड विश्वविद्यालय की पी-एच. डी. की उपाधि
हेतु प्रस्तुत

शोध-प्रबन्ध

सन् 1997 ई०

BUNDELKHAND UNIVERSITY
JHANSI
Central Library
Acc. No. 1250

पर्यवेक्षक :
मनु जी श्रीवास्तव
एम०ए०,पी-एच०डी०
अध्यक्ष, हिन्दी विभाग
बुन्देलखण्ड कॉलिज, झाँसी

शोधकर्त्री :
रेनू मित्तल
एम०ए०

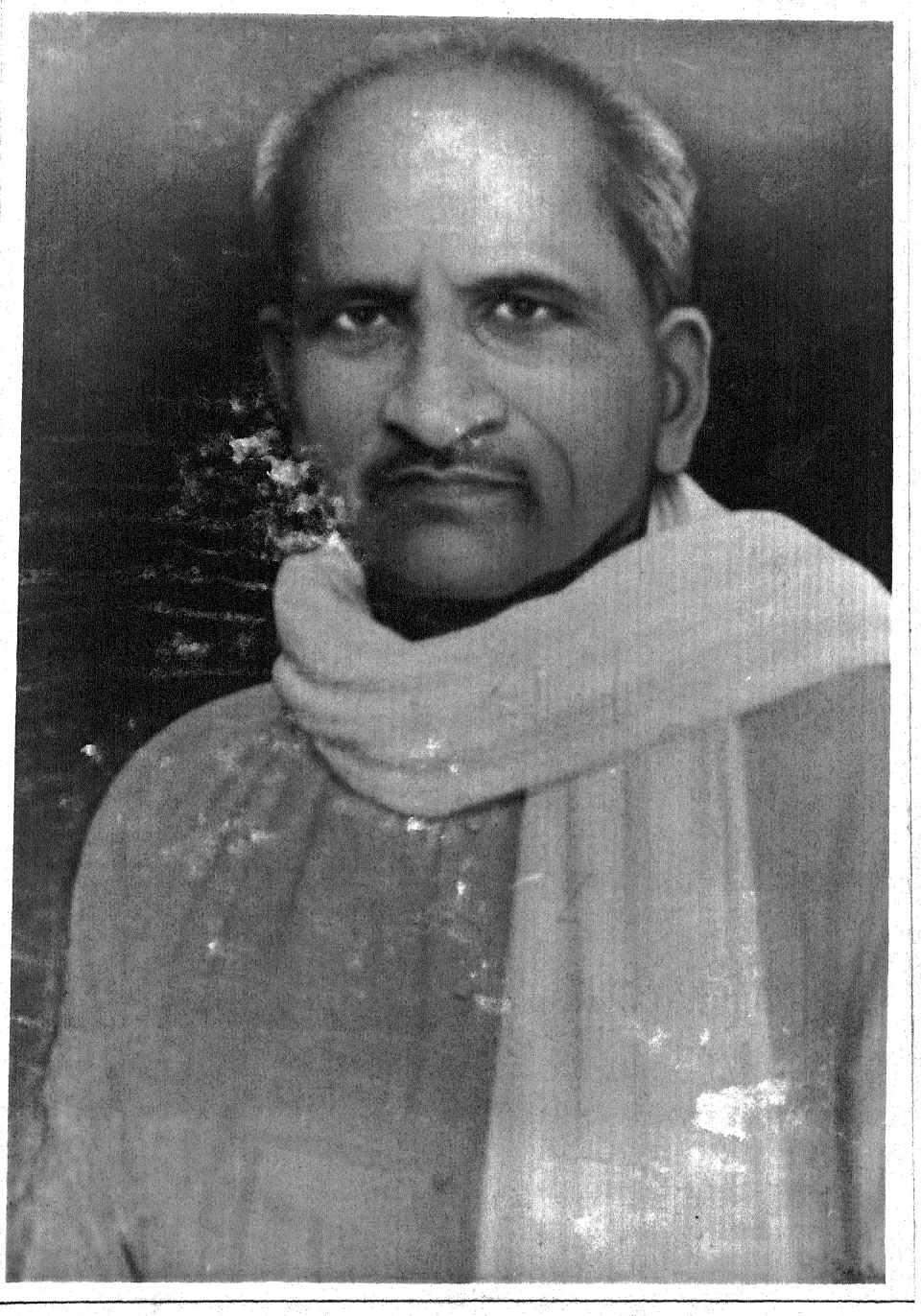

डा० वृन्दावन लाल वर्मा

वृन्दावनलाल वर्मा के कथा साहित्य में नारी स्वतन्त्रता एवं प्रगतिशीलता

बुन्देलखण्ड विश्वविद्यालय की पी-एच. डी. की उपाधि हेतु प्रस्तुत

शोध-प्रबन्ध

सन् 1997 ई०

पर्यवेक्षक :

मनु जी श्रीवास्तव

एम०ए०,पी-एच०डी०

अध्यक्ष, हिन्दी विभाग

बुन्देलखण्ड कॉलिज, झाँसी

शोधकर्त्री :

रेनू मित्तल

एम०ए०

"वृन्दावन लाल वर्मा के कथा साहित्य में नारी सतीत्व एवं पुनर्विवाह"

	पृष्ठ संख्या
विषय-अनुक्रमणिका	1-5
भूमिका	1-5

प्रथम-अध्याय

नारी सतीत्व एवं पुनर्विवाह सम्बन्धी अवधारणायें ..

(अ) प्राचीन अवधारणायें	
1-भारतीय	6
2-पाश्चात्य	6
(ब) नवीन अवधारणायें	7
1-कार्लमार्क्स	7
2-बेटिनाम गोर्की	7
3-लेनिन	8
4-माओ त्सेतुंग	8
5-बालगंगाधर तिलक	9
6-अरविन्द घोष	10
7-महात्मा गांधी	10
(स) जीवन सम्बन्धी अवधारणायें	11-21
(द) आधुनिक साहित्य में प्रतिबिम्बित नारी सतीत्व और पुनर्विवाह का साहित्यिक अवगाहन ..	22-27

द्वितीय अध्याय

वृन्दावन लाल वर्मा के कथा-साहित्य का शैक्षिक परिचय

(अ) उपन्यास	
(क) ऐतिहासिक	
1-मृगनयनी	28-31
2-झाँसी की रानी लक्ष्मीबाई	32-39
3-कचनार	40-41

			पृष्ठ संख्या
4-माधव की गिलहरी	..	..	42-43
5-टूटे खटे	..	..	44-46
6-मुन्नाली	..	..	47-48
7-कुन्न सिंह	..	..	49-51
8-साहित्याकार	..	..	52-53
9-गड़ कुम्हार	..	..	54-57
10-गिरहाट की पहुनिनी	..	..	58
11-नलिनविलोचन	..	..	59-60
12-गीदड़ और अक्ल	..	..	61-62
13-बेलगढ़ की सुल्ताना	..	..	63-64
14-रावगढ़ की रानी	..	..	65-67
15-बहादुरी दुर्गावती	..	..	68-69
(ख) नाटकीय	..	..	
1-गरम	..	..	70
2-प्रेम की भेंट	..	..	71-72
3-नौका	..	..	73
4-मुख्यारत	..	..	74-75
5-सामदेव	..	..	76
6-बादल	..	..	77-78
7-नैना	..	..	79-80
8-मुन्नाली पढ़	..	..	81
9-सैला मेरा कोई	..	..	82-83
10-कभी न कभी	..	..	84
11-नौती आय	..	..	85
12-उदय और विजय	..	..	86
13-भारत वह है	..	..	87-88

पृष्ठ संख्या

(ग) विविध कहानियाँ

क-ऐतिहासिक कहानियाँ 90-92

ख-सामाजिक कहानियाँ .. ...

1-अंगारे का टुकड़ा 93-95

2-बेटी का ब्याह 96-97

3-दीदी का दान 98-99

4-मंदिरागत 100-103

5-रोटी 104-105

6-रोशन सुबह 106-109

ग-विविध कहानियाँ .. ..

7-खो गया 110

तृतीय अध्याय

* वर्मा जी के उपन्यासों में नारी के विविध रूप*

1-ऐतिहासिक 111-114

2-धार्मिक 115-117

3-सामाजिक 118-120

4-निम्नवर्गीय 121

5-उच्चवर्गीय 122

चतुर्थ अध्याय

*वर्मा जी के कथा साहित्य में परंपरा व प्रगतिशील .. नारी की विशेषताएँ (नारी प्रेम, स्वभाव एवं उदात्तता)

1-वीरेन्द्र 123-129

2-स्वाभिमानिनी 130-131

			पृष्ठ संख्या
3-देशभक्ति	..	..	132-133
4-साहस	.	..	134-138
5-सौन्दर्य	..	..	139-140
6-प्रेम	..	..	141-146
7-त्याग	..	..	147-148
8-नैतिकता	..	..	149
9-मूढ़ता	..	..	150
10-उदारता	..	..	151
11-दया	..	..	151
12-जाति पाँति की अनेकता		..	151
13-लड़कियों के प्रति दृष्टि	..	..	151-152
14-दासी प्रथा का विरोध	..	..	152
15-नैन्य प्रेम	..	..	152

पंचम अध्याय

* वर्मा जी के काव्य साहित्य में स्वतंत्रता व प्रगतिशीलता के प्रतीक नारी-पात्र

(कार्य क्षेत्र, व स्वभावानुसार)

1-यक्ष कुमार -सरला, देवसेना, मायावती	..	153-158
2-निराला की पद्मिनी -कुमुद, मोनसी	..	159-162
3-सुमानिया पु-नरवारी लाली, सुभद्रा	..	163-166
4-दासी की रानी-दासी की रानी मधु, जयमारी, सुन्दर, कामीमाई, मोती माई, पुती,	..	167-191
5-कुमार- कुमार, कुमारी, गन्धा	..	192-199
6-टूटे काँटे - कुमारी, रोमी	..	200-209
7-मूकनायी-मूकनायी, नायी	..	210-216
8-सुमन-चित्रा- गोरी हिमानी	..	217-222

				पृष्ठ संख्या
9-अहिल्याबाई-अहिल्याबाई, सिन्दूरी,		..	..	223-229
10-राधा की सिन्धिया -मन्ना सेना		..	..	230-231
11-गंगा-रामा		..	..	232-234
12-सीता-जानकी सेन	.. ..	..	..	235-237
13-प्रेम की पीड़-सरस्वती, उपियारी	..	..	..	238-245
14-कुन्ती की कुल-रत्न, पुष्पा,	..	..	..	246-247
15-सभी न सभी -मीना	..	.	..	248-250
16-जैसा मेरा कोई-कुन्ती	..	..	..	251-252
17-सोना-चंपा, सोना	..	..	..	253-256
18-आरोप- अंजना	..	..	..	257-259
19-सीख और सबक-कविता	..	..	..	260-262
20-देवगढ़ की मुस्कान-किरण	..	...	..	262-263
21-गणितादित्य -कलावती, कुमारादित्य		...	..	264-266
22-आहत-सौरभ	..	..	..	267-268
23-महारानी दुर्गावती-दुर्गावती	..	..	..	269-276
24-रायगढ़ की रानी-शान्ती वर्मा	..	..	..	277-280
25-मेरा तोती आम-लोकेश, शमन्य	..	..	..	281-282
26-कुमारगढ़ -सोमवती, कुमारानी		..	..	283-286
27-अक्षय और विजय -विजय		..	..	287-288

षष्ठ अध्याय

स्वातंत्र्य और प्रगतिशीलता की दृष्टि से वर्मा जी के प्रमुख नारी-पात्रों का अन्य उपन्यासकारों के नारी पात्रों से तुलनात्मक अध्ययन

क-वृन्दावन लाल वर्मा और प्रेम चन्द	..	..	289-294
ख-वृन्दावन लाल वर्मा और जगदीश चन्द्र माथुर	..	..	295-298

			पृष्ठ संख्या
ग-वृन्दावन लाल वर्मा और यशपाल	..	..	299-303
घ-वृन्दावन लाल वर्मा और अज्ञेय	..	..	304-308
ङ-वृन्दावन लाल वर्मा और निराला	..	..	309-310
च-वृन्दावन लाल वर्मा और भगवतीचरण वर्मा	..	..	311
छ-वृन्दावन लाल वर्मा और जैनेन्द्र कुमार	..	..	312-317
ज-वृन्दावन लाल वर्मा और उपेन्द्रनाथ अश्क	..	..	318-320
झ-वृन्दावन लाल वर्मा और अमृतराय	..	..	321-322

सप्तम अध्याय

नारी पात्रों और प्रगतिशीलता की दृष्टि से वर्मा जी की हिन्दी साहित्य को देन 323-328

सहायक ग्रन्थ सूची 329-330

-:भूमिका :-

कला कला के लिए अथवा जीवन के लिए, में, भारतीय मनीषियों का प्रायः मान्य है कि कला जीवन के लिए है। उपन्यास में जीवन का सर्वांगीण चित्रण रहता है। कला वह जो कि उपन्यास जीवन का सम्यक चित्रण है तथा वह जो कि उपन्यास जीवन का सम्यक चित्रण है तो अतिशयोक्ति न होगी। उपन्यास भी अनेक प्रकार के लिखे जाते हैं। ऐतिहासिक तथा सामाजिक उपन्यासों का एक विशेष स्थान है। ऐतिहासिक उपन्यासों में अनेक ऐतिहासिक तथ्यों का उद्घाटन रहता है। तथा वह अतीत की अनुभूतियों को हमारे समक्ष आगत करते हैं। जहाँ अतीत का यथार्थ चित्रण होता है तथा जीवन की तथ्यानुभूति होती है। जिन बातों को ऐतिहासिक तथ्यों में छानबीन में दिखलाया है उनको ऐतिहासिक उपन्यासकार समाज के सम्मुख अपने तथ्यों में रखकर इतिहास की सच्ची झाँकी प्रस्तुत करता है। सामाजिक समाज का दर्पण है। उपन्यास में कल्पना के पुट के कारण रोचकता बढ़ जाती है। इतिहास नीरस और शुष्क होता है, जबकि उपन्यास में कल्पना के संयोग से आनन्द का अतिरेक होजाता है। उपन्यास के माध्यम से हम सच्चे इतिहास की तथ्य रखने में समर्थ होते हैं। सामाजिक उपन्यासों को तथ्य रखने में जहाँ हम समाज के चित्रण को सामने रखते हैं और समाज के कल्याण की दृष्टि से उसमें सुधार करने के लिए सुझाव और प्रेरणा देते हैं। सामाजिक उपन्यासों में सामाजिक वस्तु स्थिति का चित्रण रहता है। समाज की कल्याण भावना अन्तर्निहित रहती है। इस प्रकार सामाजिक उपन्यास भी जीवन का निर्माण करते हैं। वृन्दावन लाल वर्मा ने ऐतिहासिक और सामाजिक उपन्यासों की रचना कर वहाँ अतीत की पूर्ण अनुभूति कराई है। वहाँ समाज के वास्तविक स्वरूप का दिग्दर्शन किया है। उनके उपन्यासों में अतीतकाल से बुन्देलखण्ड का चित्रण है, बुन्देलखण्ड की प्रकृति का सजीव चित्रण है, वहाँ की वेशभूषा के दर्शन होते हैं, बुन्देलखण्ड के गौरव को बढ़ाने और उसको चित्रण में स्थान देने का श्रेय वृन्दावन लाल वर्मा को ही है।

वृन्दावन लाल वर्मा के जीवन, कृतित्व और उपन्यासों पर अनेक कार्य हुए हैं। जिनसे उनका कृतित्व उजागर हुआ है। उनके साहित्य को गौरव के पद

पर प्रतिष्ठित होने में सहायता मिली है। वृन्दावन लाल वर्मा के कथा साहित्य में नारी स्वातंत्र्य एवं प्रगतिशीलता" विषय पर अभी तक कोई शोध कार्य नहीं हुआ था । भारत की नारियों ने युग्य के उत्थान समाज सेवा, देश की स्वतंत्रता तथा समाज निर्माण कार्यक्रम में बहुत योगदान दिया है। वे देश की स्वतंत्रता के लिए युद्ध कर सकती है। ग्राम न्यायाधीश कर सकती है। पति को युद्ध की प्रेरणा देकर जीवन उत्सर्ग और बलिदान कर सकती है। उनमें भी त्याग और बलिदान की भावना दिखाई देती है। वह अन्याय नहीं है। पुरुष समाज ने उनको आदर और सम्मान की भावना से देखता आया है। प्रस्तुत की नारी आधुनिक नारी की प्रतीक है। सहनशीलता है और जीवन पति को त्याग सकती है सेवा को ग्रहण कर सकती है। युद्ध के लिए अग्रसर कर सकती है। और पुरुष को भी कर्म करने के लिए प्रेरणा दे सकती है। तो वर्मा जी की नारियाँ युद्ध में भारत की स्वतंत्रता के लिए विदेशियों से लड़ सकती है। प्रेम को कर्तव्य की वेदी पर कुचल सकती है। मंदिर आदि धार्मिक स्थानों का निर्माण कर दुष्ट विलासिताओं को प्रभु की ओर उन्मुख कर सकती है। पुरुषार्थ और बल में वे किसी प्रकार भी पुरुष से पीछे नहीं है। वे पुरुषों को प्रेरणा देती है और देश को विदेशियों से बचाने के लिए चेतना की प्रतीक है। वर्मा जी ने अपने उपन्यासों में एक प्रकार से नारी को गरिमा मण्डित की है, अनेक उपन्यासों के नाम नारियों के नाम पर ही रखे गये है। नारियों में वर्मा जी का प्रेम है। मीरा और गुलाब के लिए आकर्षण है वही साहस,वीरता, कर्मठता, कर्तव्यनिष्ठा, और देश को स्वतंत्र देखने की भावना है। वे अपने कर्तव्यों के प्रति जागरूक है। उनमें अदम्य साहस है जीवन को कर्तव्य के लिए उत्सर्ग करने की भावना है। इस शोध प्रबन्ध में वर्मा जी के कथा साहित्य में नारी स्वातंत्र्य एवं प्रगतिशीलता पर प्रकाश डाला गया है ।

झाँसी की रानी लक्ष्मीबाई विषय विख्यात है। उन्होंने उपन्यास में सिद्ध किया है कि वह देश के लिए लड़ी । कुमकुमदेवी में प्रेम और शौर्य

का सामान्य है। अवन्तीबाई दुर्गावती में भक्ति भावना प्रधान थी । अहिल्याबाई में प्रशासनिक क्षमता, भक्तिभावना और वीरता का सामन्जस्य था। रानगढ़ की रानी में भक्तिप्रियता थी । मुन्नाबाई में कला और प्रेम के साथ शौर्य और वीरता भावना का सामन्जस्य था । बुन्देलखण्ड की वीर नारियों के शौर्य वीर,धर्म और त्याग को वर्मा जी ने आकार दिया है। इन नारियों ने भारत की गौरव की रक्षा की है। उनमें नारी आत्मीय एवं प्रगतिशीलता दृष्टिगोचर होती है ।

वर्मा जी के उपन्यासों में बुन्देलखण्ड के कण-कण का प्रयोग हुआ है । बुन्देलखण्ड की प्रकृति उनके कला साहित्य में चित्रित हुई है। यह सजीव चित्रण है। बुन्देलखण्ड के पहाड़ों, नदियों, जिलों तथा ग्राम आदि को चित्रित करने और उन्हें सजीवता देने का श्रेय वर्मा जी को है। उन्होंने अनेक स्थानों को सूक्ष्म दृष्टि से देखा है तथा उनका सम्यक चित्रण कला साहित्य में किया है। ऐसा प्रतीत होता है कि जैसे वर्मा जी बुन्देलखण्ड के प्राकृतिक चित्रकार हैं यहाँ की धरती से उन्हें अधिक प्रेम है ।

इस शोध प्रबन्ध में मैंने वर्मा जी के कला साहित्य में नारियों के आत्मीय एवं प्रगतिशीलता का वर्णन करने का प्रयास किया है। वर्मा जी के कला साहित्य में नारी आत्मीय एवं प्रगतिशीलता को दृष्टिगोचर करने में यह शोध प्रबन्ध सफल सिद्ध होगा । साथ नारी भारत के गौरव पर प्रकाश पड़ेगा । इस प्रकार यह हिन्दी साहित्य को विशिष्ट योगदान होगा ।

इस शोध प्रबन्ध के प्रथम अध्याय में नारी आत्मीय एवं प्रगतिशीलता सम्बन्धी अवधारणायें प्रकट की गयी हैं। भारतीय संस्कृति के अनुसार नारी की जहाँ पूजा होती है, वहाँ देवता निवास करते हैं। उनके,विद्वानों के नारी आत्मीय एवं प्रगतिशीलता के सम्बन्ध में क्या विचार थे इस पर प्रकाश डाला गया है ।

वर्मा जी ने विपुल कला साहित्य की रचना की है। उन्होंने अनेक ऐतिहासिक और सामाजिक उपन्यास लिखे हैं, तथा ऐतिहासिक,सामाजिक

[illegible] तथा ऐतिहासिक सामाजिक और विचार से सम्बन्धित कहानियाँ लिखी हैं इस शोध के द्वितीय अध्याय में वर्मा जी के उपन्यासों और कहानियों का संक्षिप्त परिचय दिया गया है जिससे उनके साहित्य पर प्रकाश पड़ सके ।

तृतीय अध्याय में नारी के विविध रूपों पर प्रकाश डाला गया है। नारी के ऐतिहासिक सामाजिक धार्मिक देशी जनजातीय निम्नवर्गीय एवं उच्चवर्गीय रूप पर प्रकाश डाला गया है।

चतुर्थ अध्याय में स्वतन्त्रता एवं प्रगतिशीलता, नारी की विशेषताओं पर प्रकाश डाला गया है। नारी में अपरिमित मिलते हैं। वे उदात्त गुणों से सम्पन्न हैं। वे वीरता, [illegible], साहस, [illegible], निर्भीकता, दृढ़ता, [illegible] प्रेम, [illegible], उदारता, त्याग, दया तथा कोमलता की मूर्तियाँ हैं। उन्होंने स्त्रियों की [illegible] को [illegible] का प्रयत्न किया है।

पंचम अध्याय में वर्मा जी के कथा साहित्य में स्वतन्त्रता एवं प्रगतिशीलता के प्रतीक प्रमुख नारी पात्रों के परिचय का चित्रण किया गया है। इसमें वर्मा जी के सभी उपन्यासों में जो प्रमुख नारी पात्र आये हैं उनका विस्तृत परिचय चित्रण करने का प्रयास किया है। नारी पात्रों के चरित्रों में जो भी विशेषताएँ पाई जाती हैं। वे उजागर हुई हैं। इन चरित्रों के चित्रण से समाज में नारियों को ऐसे गुणों को अपनाने की जहाँ प्रेरणा मिलेगी वहाँ उनमें स्वतन्त्रता एवं प्रगतिशीलता के भाव ओत प्रोत होंगे । इससे नारियों में सुधार होगा तथा उनके चरित्र का विकास होगा । इस प्रकार इस अध्याय के पठन पाठन से नारियों में चेतना जागृत होगी और वे देश की सुरक्षा करने के लिए और अपने जीवन को स्वतन्त्र जीवन बनाने में समर्थ होंगी।" इस प्रकार से यह अध्ययन शोध प्रबन्ध का मेरुदण्ड है ।

षष्ठम् अध्याय में स्वतन्त्रता एवं प्रगतिशीलता की दृष्टि से वर्मा जी के प्रमुख नारी पात्रों की अन्य उपन्यासकारों के नारी पात्रों से तुलना की गयी है । वर्मा जी के नारी पात्रों का जीवन चित्रण है तथा वे अपने जीवन को स्वतन्त्रता के लिए उत्सर्ग कर देती हैं। वे प्रगतिशीलता की प्रतीक हैं। वे प्रगतिशील प्रवृत्ति की हैं। पुरुषों से किसी की हालत में पीछे नहीं हैं।

तृतीय अध्याय में वर्मा जी के अभिमतों के नारी पात्रों एवं प्रगतिशीलता की दृष्टि से वर्मा जी की हिन्दी साहित्य को देन पर प्रकाश डाला गया है ।

मैं अपने परिवार रायपुर जिले की लाल चन्द्र जी अग्रवाल [स्व. ती. अग्रवाल] की विशेष आभारी हूँ जिनकी कृपा मेरे ऊपर सदैव बनी हुई है। उनकी आकांक्षा थी कि मेरा शोध कार्य पूर्ण हो जाये । यह सब उनकी ही प्रेरणा का फल है जो शोधकार्य पूर्ण हो सका । मैं अपनी लाल जिले श्रीमती विद्यावती जी की भी विशेष आभारी हूँ जो कि समय समय पर मुझे शोध कार्य पूर्ण करने के लिए प्रेरणा देती रही है। यदि वे प्रेरणा न देती तो पता नहीं यह शोध कार्य पूर्ण होता या नहीं । मैं अपने पति श्री विनोद कुमार अग्रवाल की भी विशेष आभारी हूँ जिन्होंने इस शोध कार्य को पूर्ण करने के लिए मुझे समय एवं सुझाव प्रदान किया ।

मैं उन सभी लेखकों और कृतिकारों के प्रति अपना आभार प्रदर्शित करती हूँ जिनकी कृतियों से मैं लाभान्वित हुई हूँ। मैं स्वर्गीय डा. श्री वृन्दावन लाल वर्मा के पुत्र श्री सत्यदेव वर्मा और उनके पौत्र श्री रहमीकान्त वर्मा और श्री रमाकान्त वर्मा की भी विशेष आभारी हूँ जिनके यहाँ से वर्मा जी का साहित्य उपलब्ध हुआ तथा जिन्होंने वर्मा जी का फोटो तथा उनकी हस्तलिपि का पत्र दिया ।

अंत में मैं डा. श्री मधु जी शर्मा तथा संस्कृति अध्यक्ष हिन्दी विभाग बुन्देलखण्ड विश्वविद्यालय झाँसी के प्रति भी आभार प्रदर्शन करना अपना कर्तव्य समझती हूँ जिनके सहज निर्देशन, प्रेम तथा सहानुभूति से सहयोग के कारण ही यह शोध प्रबन्ध पूर्ण हो सका। यह उन्हीं की कृपा का फल है। मैं अपने पिता डा. डी. पी. मिश्रा, सेवा निवृत्त अध्यक्ष हिन्दी विभाग बुन्देलखण्ड विश्वविद्यालय झाँसी की भी आभारी हूँ जिनकी कृपा एवं सहयोग से यह शोध प्रबन्ध पूर्ण हो सका । श्री शिवकुमार सविता टंकक, भी मेरे धन्यवाद के पात्र है।

इस शोध प्रबन्ध में टंकण में जो त्रुटियाँ हो गयी है उनके लिए मैं क्षमा माँगती हूँ । मैं भविष्य में उन्हें दूर करने की चेष्टा करूँगी ।

रेणु मिश्रा,
एम.ए.

प्रथम अध्याय

नारी स्वातन्त्र्य एवं प्रगतिशीलता विषयक अवधारणायें

प्रथम अध्याय

नारी शिक्षा एवं प्रगतिशीलता सम्बन्धी अवधारणायें :-

प्राचीन अवधारणायें :- भारतीय-संसार में हर बीमारी और हरी अंगूर का विकास होता है। धर्म व्यक्ति की तरह समाज का भी विधायक है। संसार समाज का विकास करने वाला है और और उजाड़ने वाला है। भारतीय संसार में नारियों में मर्यादा आचरण,अपने पति को परमेश्वर मानने की भावना आती है,उच्चतम चरित्र का उनमें विकास हुआ है। स्नान,श्रृंगार,भोजन,शय्या,सेवा आदि उनके अनुकूल है। त्यागी के प्रति पतिव्रत धर्म का निर्वाह और मानुषिक की रक्षा उनके चरित्र है। सुन्दर आचरण और चरित्र को भारतीय नारी श्रेष्ठ कहती है भारतवर्ष में प्राचीन मान्यता थी कि जहाँ नारियों की पूजा होती है वहाँ देवता निवास करते है। देवियों की पूजा देवों से भी अधिक होती है लक्ष्मी,काली,सरस्वती,दुर्गा, आदि देवियों की पूजा समस्त भारतवर्ष में होती है। ये नारियाँ शक्तिशाली, तेजस्वी,श्रीसम्पन्न,गुणवान,मर्यादाशील और शालीन है। प्राचीन नारी उन्हीं गुणों से अभिभूत रही है। वह नारियों की पालनकर्ता और धर्म की अधिष्ठात्री भी रही है। वह मानुषिक की रक्षक मानमर्यादा की आधार और सतीत्व की पुजारी रही है। उनके लिए धर्म श्रेष्ठ रहा है,चरित्र प्रधान है।

पाश्चात्य :- पाश्चात्य देशों की नारियों में मर्यादाशीलता,शील,आचरण,मानुषिक प्रेम ,भारतीय नारियों के समान नहीं मिलता। नारी की पुरुष से समता की भावना अधिक है। वहाँ अर्थप्रधान है अर्थमूल है। संसार और संस्कृति में अंतर है। वहाँ की संस्कृति भोगवाद की अधिक है वहाँ की संस्कृति लौकिक अधिक है जबकि भारतवर्ष की पारलौकिक। वहाँ की संस्कृति लोकाश्रित है जबकि भारत की पारलौकिक है। वहाँ की नारी में स्वतन्त्रता की भावना है वह उन्मुक्त है। कुछ व्यक्तियों की धारणा है कि नारी में दो ही मानवीय है क्योंकि वह पुरुष से अधिक नारी है। पाश्चात्य नारी ओज कुछ अधिक स्वतंत्र एवं प्रगतिशील है।

-: कार्लमार्क्स :-

कोलियत का जो संविधान सोवियत संविधान के नाम से प्रसिद्ध है। जो 1936 में लिखा गया। उसमें स्त्री पुरुष,पुरुषों के राजनीतिक सांस्कृतिक और सामाजिक अधिकारों का वर्णन है। जिन्हें मूलभूत अधिकार माना है। स्त्री को पुरुषों के समान दर्जा मिलना चाहिए। नारियों को समान होने के लिए मातृत्व की भावना का सम्मान किया गया। जिस नारी के दस बच्चे होते थे उसे मदर कोरीन की उपाधि दी जाती थी। उनका अभिमत था कि मातृत्व की भावना मूल्यवान है। माँ को कार्य करने का अवसर प्रदान हो सके। इसलिए नर्सरी स्कूलों की व्यवस्था बनाई गयी। माँ को कार्य मिल सके यह भावना थी। नारियों को मुफ्त शिक्षा का प्रावधान था। उन्होंने नारी और पुरुषों की समानता पर बल दिया उनका अभिमत था कि नारी को तब तक समानता नहीं मिल सकती जब तक कि नारी आर्थिक दृष्टि से पुरुष के समान नहीं होती। तब तक तक स्वतंत्र नहीं हो सकती। नारी के लिए पुरुषों के समान आर्थिक समानता होनी चाहिए। इस प्रकार नारी की प्रगतिशीलता और उसके सशक्तीकरण में उनका महान योगदान है।

-: मैक्सिम गोर्की :-

उन्होंने माँ उपन्यास की रचना की। यह अन्तर्राष्ट्रीय ख्याति का उपन्यास है। यह विश्व की उत्कृष्ट पुस्तकों में से एक है। इसका अनुवाद अनेक भाषाओं में हुआ है। माँ का समाज में बहुत बड़ा योगदान है। उनका योगदान पुरुष से अधिक है माँ के प्रति बड़ा आदरभाव और सम्मान उन्होंने दर्शाया है। इससे प्रतीत होता है कि नारी के प्रति उनका दृष्टिकोण बहुत प्रगतिशील है।

-: रेखा :-

रेखा बहुत ही विचारशील व्यक्ति हुए हैं । जिनकी विचार धारा समाजवाद सम्बन्धी है। उन्होंने स्त्री पुरुषों की समानता पर बल दिया है। वह प्रखर नारी स्वातंत्र्य और उनकी प्रगतिशीलता के वे पक्षधर हैं ।

:- माओ त्सेंग :-

माओ त्सेंग चीन के प्रेसीडेंट रहे हैं। वे बड़े शक्तिशाली नेता थे । चीन की स्वतंत्रता के लिए वे बहुत लड़े और उन्होंने प्रयत्न किये । वे समाजवादी विचारधारा के व्यक्ति रहे हैं । नारी वह भी कार्य करने के लिए विशेष अधिकार है । पुरुष की भाँति कार्य करने का अधिकार उसे भी प्राप्त है। वहाँ उनकी नारी स्वातंत्र्य एवं प्रगतिशीलता की विचारधारा देखने को मिलती है ।

-[illegible] तिलक :-

बाल गंगाधर तिलक महाराष्ट्र में हुए थे । जिन्हें प्रेम और श्रद्धा से "लोकमान्य" कहा जाता है। कट्टरपन्थ जनता की स्थापना में उनका हाथ था । उन्होंने दक्षिण शिक्षा समिति का निर्माण किया । वे केसरी और मराठा दो पत्रों के सम्पादक हो गये और उनके माध्यम से उन्होंने जनता में राजनीतिक चेतना जगाई थी । उन्होंने शिवाजी महोत्सव और गणपति महोत्सव मनाना भी प्रारम्भ किये । सर्वप्रथम उन्होंने महाराष्ट्र का दौरा किया और जगह जगह अखाड़े,नाटीशाला,और लोकप्रिय विरोधी समितियाँ खोली जब उन्हें 6 वर्ष के लिए मांडले जेल किया तो "गीता रहस्य" और आर्कटिक होम आफ दि वेदाज" नामक प्रसिद्ध पुस्तकें लिखी। जेल से छिड़ाने पर आपका राष्ट्रीय नेता के रूप में स्वागत हुआ। आपने 1916 में होम रूल की स्थापना की । तिलक अनुशिक्षकों के थे। और सब नेताओं में अधिक प्रभावशाली थे। तिलक प्रखर देशी के समर्थक थे । और गरम प्रकृति के थे। तिलक सांस्कृतिक विकास को नये सिरे से जगाना चाहते थे, तिलक राष्ट्र उनके निर्माण को मुख्य समझते थे। वे विदेशियों को देश से हटाना चाहते थे । वे न्यायालय पर विश्वास करते थे। वे सर्वसाधारण की ओर देखते थे। उनकी अदालत मौन और सांकेतिकी । वे आगे लक्ष्य से आगे थे। तिलक का उद्देश्य स्वराज था जो प्रत्येक भारतवासी का जन्मसिद्ध अधिकार था । पुत्रों के साथ ही स्त्रियों को भी अधिकार मिले । आगे वे पक्षपाती थे। स्त्रियाँ शिक्षा एवं पुनर्विवाह के वे पक्षपाती थे ।

---o---

-: श्री अरविन्द घोष :-

श्री अरविन्द घोष जी इंजीनियरी की परीक्षा में उत्तीर्ण होने के बाद उपनिवेश सचिव बन गिया। बंग आन्दोलन के सम्बन्ध में उन्होंने बड़ौदा कालिज के प्रिंसीपल का पद छोड़ा और बंगाल की राष्ट्रीय शिक्षा परिषद की प्रधानता स्वीकार करली। इससे उनके महान और व्यापकतम देश-प्रेम का पता लगता है। 1906 में वे "वन्दे मातरम" के सम्पादक हुए जिसके माध्यम से उन्होंने बताया कि आत्म निर्भरता और निष्क्रिय प्रतिरोध ही राष्ट्रीय मांग को मनवाने का साधन है। उनका सम्बन्ध बंगाल के क्रान्तिकारी आन्दोलन से था। बम बनाने केन्द्रों के पकड़े जाने के सम्बन्ध में सन्दिग्ध तौर से उन्हें गिरफ्तार किया गया। परन्तु बाद में उन्हें छोड़ दिया गया। वे गिरफ्तारी से बचने के लिए 1910 में पाण्डिचेरी चले गये। उन्होंने अपना शेष जीवन पूजा के चिन्तन और अभ्यास में बिताया। और उन्होंने बंग आन्दोलन तथा क्रान्तिकारियों के नेता के रूप में लाखों में क्रान्ति पैदा की। देश के सांस्कृतिक तेज के रूप में उन्होंने हमारे विचारों में मौलिक परिवर्तन किये। भारतीय स्वतंत्रता एवं पुनरुत्थान की भावना उन्हीं में मिलती है।

---o---

महात्मा गांधी:- महात्मा गांधी का भी भारत की स्वतंत्रता और पुनरुत्थान में बहुत योगदान रहा है। उनकी वीरता और शक्ति अनुपम है। उनके स्वतंत्रता आन्दोलन में बड़ी सहायता, सहयोग, और प्रेरणा मिली। अपनी वीरता के ही कारण वे स्वतंत्रता आन्दोलन में सदा सक्रिय रहे। वे भारतियों का ही आदर अपने दिलों और दुआओं पर लेते रहे। वे भारतियों की स्वतंत्रता और पुनरुत्थान के साथ उनके बराबर काम करने और सहयोग देने के पक्षपाती थे।

---o---

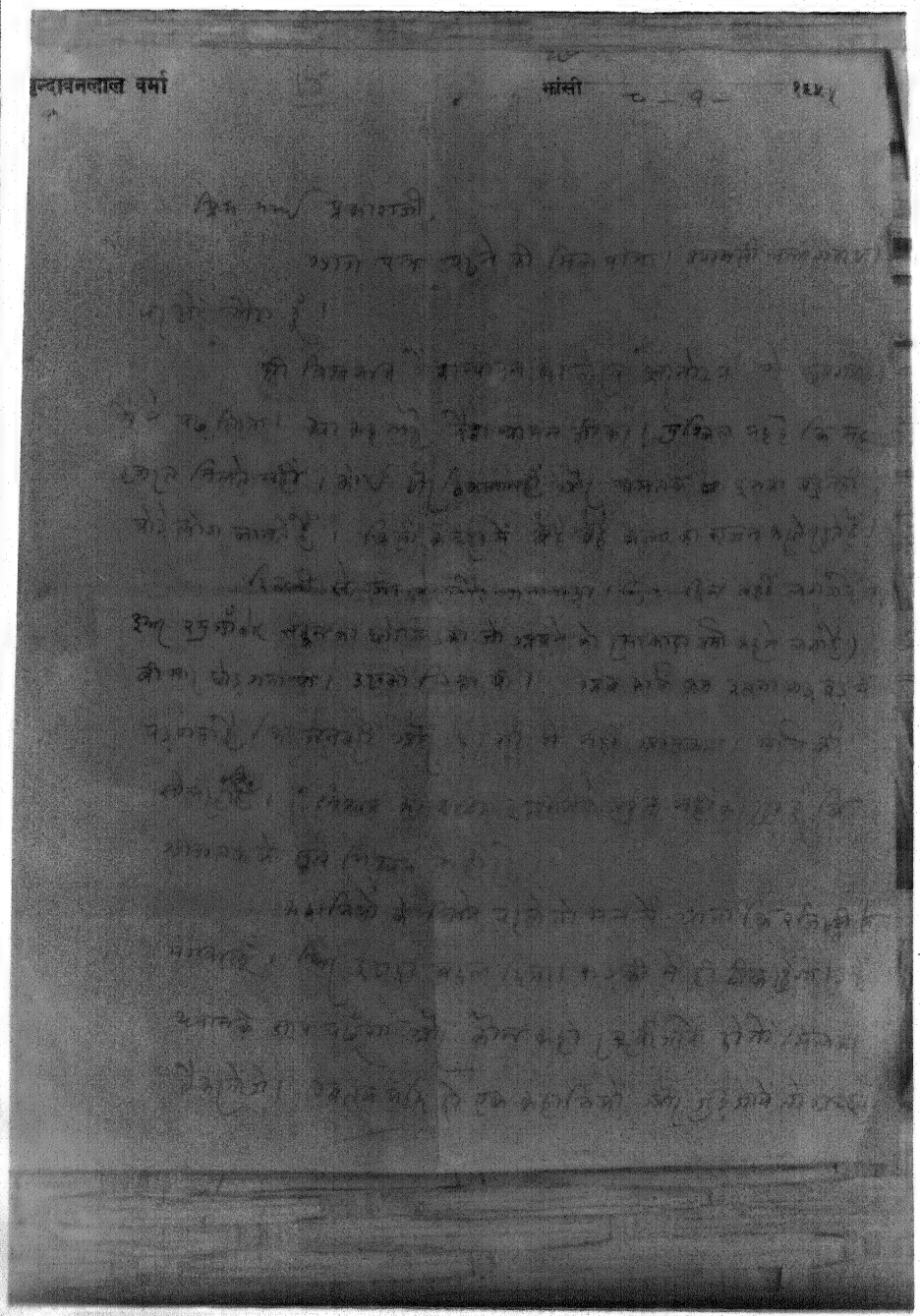

वर्मा जी का हस्तलिखित पत्र

-:जीवन सम्बन्धी अध्यायायें :-

पुन्नालाल लाल वर्मा का जन्म 9 जनवरी 1889 अर्थात पौष शुक्ल अष्टमी सम्वत 1945 के दिन हुआ था । इनके पिता का नाम श्री अयोध्या प्रसाद था और माता का नाम श्रीमती सुखरानी था । पुन्नालाल लाल वर्मा के पिताश्री सादी पियवाधर दीक्षित थे और उनके पुत्र श्रीसुदली मनोहर दीक्षित वर्मा जी के पुरखाई थे से जाम्बुर में बसोबेट रहे हैं। पिताश्री ने यही पर " ओम नमःशिवम" लिखाया ।

दो वर्ष बाद ही वर्मा जी ने लिखना पढ़ना और हिंदी पढ़ना सुरू कर दिया। वर्मा जी लाल वर्ष की आयु में सरल हिन्दी की पुस्तक पढ़ने लगे । वर्मा जी के पिता जी छोटी खालिस में बीज व्यापारी रहे कुशल आदमी थे। इनके पिता जी बाकाबाला मटोरा खालिस में हो गया ।वर्मा जी के छोटे भाई रामनाथ उनसे चार वर्ष छोटे थे । पंडियियाधर दीक्षित मटोरा स्कूल में हेड मास्टर होकर आये । वर्मा जी को मातृ पिता का प्यार मिला था । और परमात्मा ने खानियाँ सुनने का सौभाग्य प्राप्त होता था ।

वर्मा जी को लाल मन में सो कुर्ते और सो धोतियाँ और एक कोट मिलता था उन्होंने अपने अपने के सामने में ही पहना । वर्मा जी के घर को उपन्यास और नाटक पढ़ने का बड़ा शौक था । घर में भारतेन्दु हरिश्चन्द्र के नाटक और प्रेमचन्द्र जी का उपन्यास उपन्यास मँगवाये । वर्मा जी को दिन में स्कूल और खेल से अवकाश नहीं मिलता था । इसलिए उपन्यास में और नाटक लेख से कोठरी में पढ़ते थे । भारतेन्दु के "भारत-दुर्दशा" और नीलदेवी नाटकों ने वर्मा जी के दिल पर बड़ा प्रभाव डाला । वर्मा जी को घर में बड़े बहादुर दुखदाई लगते थे । वर्मा जी तीसरे दर्जे की वार्षिक परीक्षा में पास आये । जब वर्मा जी 11-12 साल के थे तभी उनका विवाह हो गया। लखीमपुर की लड़की नहीं है।उनका ससुराल नाम मालू है। मेरा नाना ।

वर्मा जी की ससुराल लखीमपुर के निवासी पनारी नामक गाँव में थी ।

वर्मा जी छुट्टियों में मटोरा यहाँ आरती जिस बैठकखानियाँ लगाते थे उन्हें में बड़े थे, जिन्हें वे रात में तीन-चार बजे जगा के आते थे । लोहारी नदी में नहाकर आम की डंठ और पानी की बैठक, लगाते थे माँ की में

[illegible] रोटियाँ और तरोई तेर [illegible] रख देती थी । पिता भी [illegible] थे । [illegible] लड़ने के अखाड़े में लम्बी [illegible] और [illegible] में [illegible] होती थी ।

पिताजी के एक बड़े मित्र [illegible] आते थे । उनके पास एक लाइसेंसी दोनालीदार बन्दूक थी । वर्मा की [illegible] के जंगलों में एक मित्र के साथ शिकार जाते थे, और उस दोनालीदार बन्दूक से निशाना बाजी किया करते थे। [illegible] अधिकांश लड़के बंगाली थे और वर्मा से वर्मा महाराष्ट्रीयन । उन्हें बंगालियों से बंगाली तीजने को मिली और महाराष्ट्रीयन से मराठी, परन्तु वे अधिकतर एक पर भी न कर पाये ।

वर्मा की जो [illegible] की एक पुस्तक साथ लगी [illegible] एण्ड [illegible] [illegible] आज । भारत [illegible] जा सकता है । इस पुस्तक को वर्मा जी ने अपने समय से पढ़ा । [illegible] [राधाकृष्ण] की लिखा । [illegible] का नील [illegible] नाटक, भारत दुर्दशा नाटक, रामायण और महाभारत [illegible] सम्मान [illegible] । उन्होंने सन 1905 में बरसात के दिनों में [illegible] का सुन्दर नाटक राम [illegible] पूरा किया । वर्मा जी के एक [illegible] मित्र पंडित [illegible] प्रसाद [illegible] ने [illegible] में एक [illegible] "[illegible]" [illegible] के नाम से [illegible] । बुन्देलखण्ड का पुराना नाम [illegible] है [illegible] यहाँ के [illegible] [illegible] [illegible] ।

वर्मा जी [illegible] [illegible] [illegible] " [illegible] " में छपे और [illegible] [illegible] समाचार में [illegible] । वे भी प्रकाशित हुए । छुट्टी में तीन नाटक लिख [illegible] छपे नहीं । छुट्टी की समाप्ति में स्कूल पहुँचते ही विदित हुआ कि [illegible] [illegible] हुआ था और वर्मा जी का तीसरा ।

[illegible] में "[illegible] [illegible] [illegible]" नाम की नाटक मंडली आई । [illegible] का [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] नाटक खेले, [illegible] के एक [illegible] आये उनके 6-7 [illegible] हुए। उन्होंने [illegible] [illegible] और से [illegible] [illegible] । एक महाराष्ट्र [illegible] की [illegible] में [illegible] [illegible] । [illegible] [illegible] उनके मन में समाई कि [illegible] [illegible] वर्मा जी ने [illegible] समाचार, [illegible] समाचार [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] ।

वे परीक्षा में प्रथम उत्तीर्ण हुए [illegible] कई पुस्तकें पुरस्कार में मिलीं और 12 रुपये का [illegible] मिला । दो पुस्तकें पुरस्कार में जो मिली थीं वे थीं एक रिलेटिविज़म की पुस्तक [illegible] [illegible] और दूसरी थी [illegible] की भारत सम्बन्धी पुस्तिका । उन्होंने सभी पाँच नाटक लिखे जिनमें एक सेनापति उदा था । [illegible] ने सेनापति उदा और अन्य नाटक प्रकाशन के लिए ले लिये ।

[illegible] में मैसूर उच्चतर का [illegible] भारत [illegible] के लिए प्राप्त हो गया एक [illegible] के पास से [illegible] के सारे उपन्यास [illegible] । [illegible] लेखक [illegible] के घर दो [illegible] मिले । एक [illegible] और दूसरे [illegible] । एक का नाम था [illegible] और दूसरे का [illegible] । इनके साथ वर्मा जी ने [illegible] में [illegible] प्रचारिणी सभा की स्थापना की । [illegible] [illegible] अपने [illegible] ने [illegible] "[illegible] का [illegible] [illegible] वर्मा जी को [illegible] [illegible] के पास वर्मा जी ने [illegible] [illegible] के लिए भेज दिया । उन्होंने सन 1908 में उसे छाप दिया ।

वर्मा जी की [illegible] [illegible] थी, उनका [illegible] हो गया था । [illegible] के छोटे भाई को वर्मा जी के [illegible] [illegible] की [illegible] के पास [illegible] [illegible] । एक [illegible] [illegible] । वह उन से वर्मा जी ने ले ली । एक [illegible] [illegible] तीन [illegible] की [illegible] [illegible] लगे । वर्मा जी [illegible] हो गये । [illegible] [illegible] । उन्होंने तीन [illegible] की [illegible] में [illegible] [illegible] एक [illegible] में और भी [illegible] में [illegible] । [illegible] [illegible] के [illegible] से [illegible] [illegible] की [illegible] हुआ था । [illegible] के [illegible] [illegible] थे। उनके [illegible] [illegible] के [illegible] थे । वे [illegible] [illegible] [illegible] की पुस्तकें [illegible] [illegible] । [illegible] की [illegible] पुस्तक [illegible] । [illegible] । वे [illegible] [illegible] [illegible] वर्मा [illegible] वर्मा जी पर [illegible] [illegible] । [illegible] [illegible] [illegible] की [illegible] [illegible] [illegible] और [illegible] । [illegible] । [illegible] । उन पुस्तकों के [illegible]

के अनुवाद भारत मित्र में छपे । बाबू बालमुकुन्द गुप्त ने साथ दिये ।

कुछ साल उपरांत वर्मा जी ग्वालियर के विक्टोरिया कालेज में भर्ती होने के लिए आ गिये । मथुराजी तो सहपत्नी प्रताप गुप्त के साथ ग्वालियर कई ही जगहों में चार वर्ष रहे । इसके बाद कलकत्ता के अध्ययन काल में दो वर्ष एक ही जगह आगरे में रहे इन्हें पत्रिका छोड़ दी । तंजुला के प्रोफेसर लोकनाथ लेलन ने तंजुला आ में ले लिया । इतिहास इनका सुन्दर विषय रहा । रेल की छत में बैठ कर वर्मा जी तंजुला आ कलम की रचनाएं पुकारते कर रहे थे तो पलकों छद्दु जी -चन्दु जी के बड़े उत्तरदायित्व शिखर हुलेन आ, सवाल की भाग की आगे उत्तरदायी ने पैट हो गयी । कालेज में जब आ पाठक होते थे तो वे उनके अभिनय करते थे। और जी कभी कभी गाते थे । इन्हीं दिनों वर्मा जी की पिता तीन आलोचनाएं सरस्वती में प्रकाशित हुई । राजी मन्द भाई सरस्वती के सितम्बर सन 1909 के अंक में दूसरी सरकार और एक वीर राजपूत 1910 के अक्टूबर अंक में और तीसरी लोकचित्र की पत्रिका सरस्वती के जिसी 'अ में प्रकाशित हुई ।

वर्मा जी को कोलिन हाउस का मानेजर बनाया गया और प्रिंटेट का सम्पादन तथा पिक्टोरियल सोसाइटी (चित्र-विकास क्लब) का सभापति चुना गया । प्राचार्य के पूछने पर बताया कि वे सम्पादन करेंगे। साथ ही कुछ देखभाल । वर्मा जी ने ग्वालियर में ही आगे पीछे और छुटाछुट की चारित्र वाली दीवारें तोड़ दी थी। राजपूत प्रेस के मालिक कुंवर बहादुर सिंह रघुवंशी ने सन 1909 में वर्मा जी की पुस्तक "महाराणा सुख का जीवन चरित्र" प्रकाशित की थी उन्हीं के प्रयास से राधा कृष्ण पाल सिंह के यहाँ उन्हें शिक्षक मिल गयी राधा साहब की जमींदारी लोकना में थी वह सदी बर्मन के पास आगरे में रहते थे । श्री राम रत्न राधा साहब के भाई भतीजों को हिन्दी पढ़ाते थे । और वर्मा जी अंग्रेजी पढ़ाने को नियुक्त हुए । वर्मा जी की जीवनचरित्र की ने गाड़ी मिल्ला हो गयी और अंत तक अक्षुण्ण रही । पिता दो वर्ष ही थी परन्तु और चन्द्रपाल सिंह, कुंवर लोकपाल पाल सिंह, राव लोकेन्द्र पाल सिंह भाइयों आदि श्री प्रसन्न हो है। अध्यापक श्री राम रत्न ने वैष्णवीनाथ पटा से परिचय कराया ।

श्री माखन लाल चतुर्वेदी "प्रभा" का सम्पादन कर रहे थे। वर्मा जी इनके और श्री रतुजी जी "स्वदेशी बांधव" में लिखा करते थे। भट्ट जी ने वर्मा जी का परिचय श्री गणेश शंकर विद्यार्थी से कराया वे सरस्वती के सहकारी सम्पादक थे और कानपुर से "प्रताप" निकाल रहे थे। वर्मा जी "प्रताप" के सम्पादकाचार्य बने। "मोहनदास करमचंद गांधी" बनी। भट्ट जी मोहनदासचन्द्र के नाम से सम्मान द्विवेदी जी मजदूरी महावीरचन्द्र के नाम से और वर्माजी चिटचिटाचन्द्र के नाम से हास्य और व्यंग्य के लेख लिखते थे। भट्टजी मोहल्ला पुरा में रहते थे, कविरत्न सत्यनारायण जी का भी कभी कभी साथ हो जाता था। भट्ट जी का परिचय श्री सत्यदेव चतुर्वेदी से कराया। उत्तर प्रदेश हिन्दी साहित्य सम्मेलन का सम्मेलन अभिनन्द में हुआ। वहाँ पत्रिकाओं का सम्मेलन भी आये। जब वह ओसीरिया में थे तो सरस्वती में मधुकर लिखा करते थे। सन 1948-49 में महान अध्ययन करके वर्मा जी ने मध्य भी शिक्षा नाम का उपन्यास लिखा। आगरा आकर एम.ए. की डिग्री वहाँ नाम लिखा लिया।

1946 के अगस्त में पिता जी का तार आया किन्तु वर्मा जी को माँ बहुत बीमार है। अध्यापक श्री राम रतन लाने केवोनेन्ट्रा से घर पर मातृ मूर्ति है। अपने मन मुताबिक। माँ का देहान्त हो गया। वर्मा जी की दो छोटी बहिनों का भार वर्मा जी की पत्नि को सौंपकर वर्मा जी की माँ राम नाम लेती हुई शान्ति के साथ सिधार गयी। पिता जी के पत्र से विदित हुआ कि 3 सितम्बर को पुत्र उत्पन्न हुआ है पुत्र का नाम रखा गया सत्यदेव। हुसैनाबाद के श्री श्यामाचरण रायके साथ वर्मा जी की बहिन का सम्बन्ध तय हुआ और 10 जून को बरात आई। इलाहाबाद विश्व विद्यालय के इतिहासाचार्य श्री ईश्वरी प्रसाद वर्मा जी इनके सहपाठी थे।

राय साहब बाबू शेर सिंह के आग्रह पर श्री गणेश शंकर वर्मा जी के साथ आये। वर्मा जी ने अगस्त 16 अगस्त सन 1946 के दिन जुल्फ दी और वे उस दिन से नियमित अखबारी आने लगे। प्रताप कार्यालय में आचार्य राम चन्द्र शुक्ल और बाल कृष्ण शर्मा नवीन से परिचय हुआ। वह अखबारी में काम नहीं होता था तो वर्मा जी निकलती जल में आ बैठते थे। वहाँ एक आता पुस्तकालय था। वे वह अच्छे लोगों के घर थे। वेरियकले अधि और नाटकार विरसिंह का साहित्य और विचार सुनने

तथा जुआ के अन्याय नहीं घटे। अतः वेणे प्रजन्य, मोतिये, बालचंद, मोचाली लालचंद पुरिजन इत्यादि की कीर्ति हुई। और धीरे धीरे उनकी हुई हुई कीर्तियां घटी। कारण पहले ही कह चुके थे।

सन् 1918 अगस्त में मलाया इन्फ्लुएंजा का भीषण रूप प्रकट हुआ। न्यूमो फिर कोप हुआ कोहर था कि तेरा तमा आदमी बीमार पड़ा और मेरे का मरा। तेरा घाम घाना अंदरुनी भरे हुए नाथी जिन गये। जिनमें मुख्य थे। मनीराम तेल, बाबा प्रसाद वर्मा, प्रेम नारायण दुबे, नाथूराम अग्रवाल और लाल राय वकील, वर्मा जी ने आवारित वालों की सुनाई कार्य बन्द कर दिया। वे राम नाम तत्व की अपेक्षा धैर्यमाहात्म्य खले खले नाम होते थे। वे राजनारायण मनोना ने सहायता उपलब्ध कराने में बहुत सहायता की थी।

महात्मा गांधी अंतर्राष्ट्रीय शक्ति आई होती आये जो वर्मा जी ने उनका सामान देश के जिलों से उखाड़कर बाहर रखा। साहित्य तेरा की भावना से "स्वाधीन" नाम का एक साप्ताहिक पत्र निकलवाया। वे भी अनेक छोटी कहानी पर निबन्ध लिखते थे। राजनारायण जो बाल हो गया था। जब उनका मुख बन्द कर दिया गया तो वर्मा जी ने अपने सीने मुख का प्रबन्ध किया। और उन्हें महात्मा गांधी के प्रति श्रद्धा की परम्परा शक्ति की ओर से निम्न होने लगा। जो पितृसत्ता के सहने पर विपरत पार्टी में भर्ती हो गये।

एक बार वर्मा जी देखने गये। झांसी से पाकिस्तान गाड़ी से गये। कार्यकर्ता भारत को लिए एक बड़ा कमरा में 6 तेर के लगभग मुख उठाया लाये। और आधा तेर कोठी ले आये। वर्मा जी ने वह मुख भी लिया और कोठी साफ कर गये। कार्यकर्ता जिनने बरसों वर्मा हुआ उनकी रसीद मांगने लगे कार्यकर्ता हमा याचना करते हुए बोले," हमारी तरह वाले बैसे विचारात नहीं करेंगे। कि वहीन राज्य ने हमारा खाया-पिया होगा। [1]

अब वर्मा जी की बचाना से हलकी आवाजें होने लगी कि फिर पर वर्मा जाने लगा। धीरे धीरे पुस्तकों की भी पेरणी निकले लगी कभी कभी वे आर्थिक निकले लगे और प्रचार के लिए लेख भी निकले लगे।

1-मेरी कहानी पृष्ठ- 106 पुन्नालाल बाला।

और उनके उद्देश्य में बुलवाया । वैधानिक उपायों द्वारा स्वराज्य की प्राप्ति करना हमारा ध्येय है। जब क्रांति में सरकार ने आन्दोलनकारियों की धर-पकड़ करना-शुरू की गयी तब लाई इरविन आये वह नेहरू और उनमें से राजनीतिक कैदियों के परिवारों की सहायता के लिए विठ्ठल भाई की के सहारा हुआ । वे चिरगांव में मैथिलीशरण गुप्त के पास प्रायः पहुंच जाते थे । वे गुप्त जी को बेटे थे और भाई भी। इसलिए दोनों ही बातें होती थी।

गुप्त जी के यह प्रसिद्ध मित्र और लगभग राम कृष्ण दास से भेंट हुई । बारह बोर वाली दुनाली और तीन नौ पचास बोर वाली राईफल भाई जी के पास रही । शिकार में कई बार भाई जी के साथ तीतर में गये । उन्हें आगे मारने बचाने का शौक था और अक्सर उनकी फिर उत्साह आदि बातों से हुई जिससे उनकी ५२ वर्ष तक घनिष्टता रही । यह हुंडर का पास सम्मानीय सदस्यता का प्रतिनिधित्व है। हुसकनी के पेशु की आदिवासी से सम्मान है। हुर्लन मजदूर के अर्थ पास का मूल्य है। प्रत्यक्षतः में जिस भाषा का चित्रण किया है । वह मेरी भाषा ही है । क्रांति जिले में सरकारी आन्दोलन का प्रारम्भ हुआ । भाई जी की सरकारी समितियों की स्थापना करने लगे । भाई जी का विचार था कि सरकारी प्रयत्नों से ग्रामीण जनता की आर्थिक और सामाजिक स्थिति सुधर सकती है। हृदय की शिकार भाव से उनके शिष्यों का नेतृत्व प्रकाशित हुआ । शिकार सम्बन्ध रखने वाली पारवाजों का उल्लेख हमने पास नामक पुस्तक में कर दिया । शिक्षा क्षेत्र में भाई जी के विरोधी की आज्ञा राम की गोविन्द सेर को सार गये। दीवानगंज में हुसेनपुर में अक्सर की दीराम शर्मा और की हरिशंकर शर्मा से भेंट हुई। महाराज के मैनेजमेन्ट में की रमा शंकर शुक्ल भी थे । वहीं शिवनन्दन की भोरी शंकर की शिवेदी शंकर से भेंट हुई । भाई जी ने बेरसिंह की प्रजा महाभारत उपन्यास के लगभग लिखे पास में ही है। जब तक पूरा रचना तैयार न हो हुआ । निरीक्षण के लिए भाई जी बराबर आते रहे और मजदूर करते रहे । कभी न कभी उपन्यास में रुपये में काम करने वाले मजदूरों की आवश्यकता मिलती है। 1908 में भाई जी ने "भारत का मुक्ति" का जीवन चरित लिखा । जब उनकी चिराग मुक्त और निरीक्षण के साथ

उमड़ आते थे । कला के लिए कला में वर्मा जी की आस्था नहीं थी । उनकी धारणा थी कि साहित्य और कला द्वारा समाज की सेवा की कुछ लेना कर लेते । लक्ष्मीबाई उपन्यास का अभिनय उन्होंने श्यामली वाले मकान में लिखा । उनका मेरा कोई" उपन्यास की घटना सच्ची है। यह घटना कानपुर के एक सम्भ्रान्त परिवार की है ।

लखनऊ में जब वर्मा जी ने मोटरों से गहे कुत्ते के साथ की सवारी की तो बहुत बीमार पड़ गये और एक महीने के लिए बलरामपुर अस्पताल में रहना पड़ा । वहीं अमृतलाल नागर, श्री फणीश्वर वर्मा, श्री गंगादत्त सिंह श्री कृष्णकिशोर सिंह आदि हिन्दी के विद्यार्थी और लेखकों ने अस्पताल में भेंट हुई । उन्हें आगरा विश्व विद्यालय ने डी०लिट० की उपाधि से विभूषित किया । टूटे कांटे के बुरा होने पर प्रसन्न बड़ा चित्र । "लक्ष्मीबाई" पर चित्र बनाने की बात उठी ।

प्रयाग विश्वविद्यालय के अध्यापक डा०ओमप्रकाश बिहारी का पत्र मिला कि वर्मा जी विश्वविद्यालय की हिन्दी परिषद के उद्घाटन के लिए प्रयाग पधारें । डा०राम कुमार वर्मा जी को परिचय दिया। डा०धीरेन्द्र वर्मा सपत्नीक ने उनका स्नेह वर्मा जी पर बरसाया । जब एक विद्यार्थी ने पूछा कि आपने आज तक जो कुछ लिखा है उसमें एक वाक्य में बताइये तो वर्मा जी के मुंह से निकला कि "उन्होंने इतिहास को कला के घेरे में बाँधने का प्रयत्न किया है। [1]

मुझको सदैव सुरक्षा और सम्पन्नता का अनुभव था। प्रकृति के साथ कला के अनिवार्य सम्बन्ध को भारतीय कलाकार ने ही प्रकट किया है । भारतीय कला का उद्गम प्यार और धारणा से हुआ न कि अवलोकन से । श्यामली वाले घर पर चार नाटक लिखे और,पीले हाथ ढेर और लेट । 1933 में मनोरमा चित्रण नाटक लिखा । फिर विजयोपहार चित्र कला कवि से लिखे । उनकी वीर सतायें प्रसिद्ध हैं। वर्मा जी ने अतीत को वर्तमान में पहचानने लिखने के लिए अतीत के प्रेरणादायक तत्वों को वर्तमान के यथार्थ से सम्मिलित करने के लिए लिखा है । वे अपनी बात साधारण पात्रों के पात्र-मुखापेक्षी कहते

1-अपनी कहानी पृष्ठ-209 वृन्दावन लाल वर्मा ।

हैं । मैथुन नहीं भाषा और पुस्तकालय नहीं में उनका विश्वास नहीं है। वर्मा जी को राष्ट्रभाषा प्रचार समिति ने चिलमर में होने वाले अपने समारोह के लिए आमन्त्रित किया। 9 जनवरी को काशी विश्व विद्यालय के प्रसिद्ध पुरातत्ववेत्ता डा० वासुदेव शरण अग्रवाल वर्मा जी के अन्वेषण पर आये और बहुत से चित्र भेंट कर गये । दिल्ली स्थित ओरिएंटल बुकशाप के मालिक सुनिल सेठ की टीवली स्टोन ने आँखी आकर कहा कि महादेवी उपन्यास का अनुवाद अंग्रेजी में करें । वर्मा जी ने अनुवाद अंग्रेजी में किया फिर सप्त उपन्यास का अनुवाद भी अंग्रेजी में किया ।

नागरी प्रचारिणी सभा ने समारोह में एक एक ग्रन्थ भेंट किया । एक समारोह के अध्यक्ष प्रसिद्ध लेखक और उ०प्र० की हिन्दी परिषद के अध्यक्ष डा० राम प्रसाद त्रिपाठी थे। विश्वविद्यालय के उपकुलपति कमला प्रसाद मदनमोहन प्रधान लेखक थे । उन्होंने कहा कि," यह किताबी और पुस्तकीय है चालीस रोटियां एक बार खा जाते हैं। [1] वर्मा जी ने प्रतिवाद करते हुए कहा," मेरी चालीस रोटियाँ एक बैठक में नहीं खाई हैं सौ चालीस अन्डे चार एक ही बैठक में खाये हैं। [2] आगरा में भी डा०रिलेश मिले जो भाषा विज्ञान का अनुशीलन कार्य कर रहे थे। मा०खो [illegible] की श्रीमती दीप्ति गोस्वामी ने 1857 के अमरवीर काशी शेष का अनुवाद अंग्रेजी भाषा में किया है । श्रीमती दीप्ति ने लिखा कि वर्मा जी की कृतियाँ विश्वस्त और रिश्ते के लारों को छुती है ।

वर्मा जी ने अनेक बार मेलघाट को पार किया था । अंधेरी रात में भी। अमृतसर के समीप दिल्ली नगर निगम साहित्य परिषद ने वर्मा जी के सम्मान करने का आयोजन किया । सभा श्यामा नाथ सामन्त समिति के सभापति थे। उस समय दिनकर जी, डा० नगेन्द्र,[illegible],[illegible] कुमार जैन, [illegible] जी, डा० विश्वेन्द्र विद्यालंकार,[illegible] से मिले । फिर भी [illegible] राय,श्री रमाशंकर, प्रसाद [illegible],राजा [illegible] बहादुर सिंह,श्रीमती राधारानी गुप्त, श्री इन्द्र नारायण गुप्त,श्री ओम चन्द्र गुप्त,वर्मा जी मिले । डा० सुशीला कपूर मिली ।

1-अपनी कहानी पृष्ठ- 266 पुन्नालाल लाल वर्मा ।
2-अपनी कहानी पृष्ठ-266 पुन्नालाल लाल वर्मा ।

वर्मा जी सरकार के बैंक में मैनेजिंग डायरेक्टर वर्षों रहे। वे प्रबन्ध सेवालय निरीक्षक हुये थे। वे डिस्ट्रेक्ट बोर्ड, जब जिला परिषद् के चेयरमैन रहे। वे जयपुर महारानी सुदर्शनी की 400वी वृष्णतिथि में सम्मिलित होने गये। वहाँ पंडित द्वारका प्रसाद मिश्र, डा० शैल दयाल शर्मा, श्री हुकी लाल सुमे, मुन्नु, भैया ग्वालियर, राजेन्द्र सिंह तथा अन्य नेहरी बन्धुओं से भेंट हुई। राष्ट्रपति भवन में राष्ट्रपति डा० सर्वपल्लीराधाकृष्णन ने वर्मा जी को पदमभूषण प्रदान किया। और उन्होंने उसे सहर्ष स्वीकार किया।

श्री सुदामा प्रसाद भोलाजी एम.एस.सी. ने अप्रैल के द्वितीय सप्ताह में लखनेश्वर में सर्वश्री सिंह सुन्दर लाल के घर आयोजन वर्मा जी के सम्मान में किया। वर्मा जी ये भोपाल से सीहोर गये। डा० राजेश्वर गुरु प्राचार्य राजकीय महाविद्यालय सीहोर उन्होंने सीहोर गये भोपाल आ गये थे। सांस्कृतिक प्रतिनिधि आदान प्रदान के अन्तर्गत वर्मा जी का गये थिलका और भारत और का की सरकारों ने उठाया।

लोग कहते वर्मा जी का स्वास्थ्य कभी से है का से उन्होंने थोड़ा कुछ का जीवन परिचय पढ़ा और लिख लिया। उन्होंने सहयोग की क्रियाओं का अभ्यास भी किया। उन्हें पुष्ट शरीर और सहनशीलता उसी से मिली। स्वास्थ्य चिरंतन भी उसी की देन है। वे राजयोग का भी कुछ अभ्यास करते रहे हैं। उन्हें 26 जनवरी को लखनऊ के अखिल भारतीय कवि सम्मेलन के उद्घाटन के लिए निमंत्रण मिला। आगरा कालेज आगरा के दीक्षान्त भाषण देने का भी निमंत्रण मिला। वहीं डा० राम विलास शर्मा, डा० हरिहरनाथ टंडन, डा. हरिवंश शर्मा आदि मित्रों से भेंट का आनन्द मिला।

तीन मार्च को हैदराबाद में देश सम्मेलन का उत्तर सभापति वर्मा जी को बनाया गया। उन्होंने 6 मार्च को भिलाई में महाराज बीरा की याद निमित्त महाविद्यालय में दीक्षान्त भाषण दिया। उन्हें सौजन्यता केवल पुरस्कार के साथ 16 मार्च, भार को दिल्ली में 8000 रुपये का नगद पुरस्कार दिया गया। उसके साथ ही सम्मान और मानपत्र मिले।

वृन्दावन लाल वर्मा ने अपनी कहानी में लिखा है, "विन्ध्याचल की कटीली मिट्टी और नर्मदा के पानी से मेरी माटी बनी है। बेतवा के पानी ने उस माटी को सिंचकर आकार प्रकार दिया। बेतवा से मैं और बुन्देलखण्ड वासी कभी उऋण नहीं हो सकते। बेतवा पर बहुत गाने लिखे या कुछ गाने की कोशिश की गी। उसने कुछ परिमार्जित परिष्कृत परिवर्धित किया। मेरी कहानी बिना बेतवा के वन्दन पूजन गाये अधूरी ही रहेगी। बेतवा बुन्देलखण्ड के लिए प्रकृति की अमीत है। जिस पानी ने मेरी माटी को सिंचा। मेरी कामना है उसी से मेरी माटी सींची जाये। अन्तिम "सुन्दरी बेतवा" को मैं अर्घ्य चढ़ा रहा हूँ। [1]

1-अपनी कहानी पृष्ठ-382 वृन्दावन लाल वर्मा।

आधुनिक साहित्य में प्रतिबिम्बित नारी चेतना और प्रगतिशीलता

कुछ सैद्धान्तिक अवलोकन :-

आत्मा से परमात्मा के मिलाप होने का मूल कारण प्रेम है। प्रेम की सारी भावनायें और अवस्थायें व व्यापारायें एक परिपूर्ण के सम्बन्ध के रूप में ही की है। सन्तकवियों ने आत्मा रूपी स्त्री मानव मूल्य व परमात्मा के प्रति उत्कृष्ट प्रेम का चित्रण किया है। अनेकों कष्टों, साधनाओं और आशाओं के बाद आत्मा को परमात्मा की अनुभूति होती है। कबिर आत्मा गा उठती है :-

> बहुत दिनन में मैं प्रीतम पाये, भाग बड़े घर बैठे आये ।।
> मिलाचार मोहि मन राखौं, राम सनेह रलया पाखौं
> मंदिर माहि भया उजियारा मैं पुनी अपना पीव पियारा ।।

परमात्मा के लिए व्याकुल आत्मा की चित्रण का अंत नहीं है। रवीन्द्र नाथ टैगोर और महात्मा गांधी का भी बहुत अधिक प्रभाव आधुनिक कवियत्री पर पड़ा है, गांधी जी तन मन के साथ को स्वीकार करते थे। वे सदा ईश्वरवादी सत्यपथ में आस्था रखने वाले अहिंसावादी और मानवतावादी थे। वे लोक सेवा की भावना में ईश्वर देखते थे। उनका मार्ग नीरस का चिन्तन अनोखा था। महात्मागांधी के तत्व अहिंसा, असहयोग तथा सत्याग्रह के आदर्श भी इस युग में काव्य प्रेरक रहे हैं। बन्धु ने युवाओं युवतियों और प्रजा में महात्मा जी के विचार और गुण व्यापी व्यक्तित्व को मुखरित करने की चेष्टा की है।

प्रेम में मिलन, विरह, उत्कंठा, और तीव्रता, प्रिय की मूर्तिता दर्शन आदि विविध अवस्थाओं का चित्रण छायावादी कवियत्रियों हुआ है। प्रिय के मिलन की मूर्ति और उस समय की व्यक्ति निम्न-लिखित पंक्तियों में देखिये :-

> अविनाशी पर प्रेम जागे, जैसे में दीप जिलाये।
> जीवन की गोधूलि में, अंधकार से हम आये ।।

तीर्थयात्रा पर केदारनाथ की छायावाद में चित्रित देन है। आँसू में अतीन्द्रिय सौन्दर्य के साथ ही शारीरिक सौन्दर्य का भी वैचारिक-चित्रण चित्रित मिलता है। परवर्ती छायावादी कवियों में ऐन्द्रिय वैचारिता अधिक उभरी हुई है। छायावादी काव्य में छायावाद दृष्टि के आलम्बन शारीरिक सौन्दर्य पर भी दृष्टि गयी है। शारीरिक सौन्दर्य की व्यंजना और रमणीयता के साथ उसकी अनुभूति की भावना मिली हुई है। कवि अपने प्रियतम-परोक्ष सत्ता का आश्रय लेकर कहता है :-

घर पथों में मन में आ, मिली प्रतिमा का अंकन। अमुर।
कमल मानस योग में जो छाया है मन और ।।

पन्त जी ने ऐसे की समानता देकर इन कवियों ने प्रतिमाओं का और सम्भावना विहग मन्तु में अनुभूति, जो पन्त ऐसे में और भी वैचारिक का लक्ष्य किया तथा मानवता में सुख सौन्दर्य को प्रकाशित किया :-

नील परिधान बीच सुकुमार, खुल रहा मृदुल अधखुला अंग ।
खिला हो ज्यों बिजली का फूल, मेघवन बीच गुलाबी रंग ।।

छायावाद में नारी-सहचारिणी, सहयोगिनी, सहचारिणी मानव जीवन देवी, प्रियतमा आदि रूपों में चित्रित हुई है। अब नारी संसार विभाजक नारी मानव सहचारिता पथ में चलने वाली विचारिणी व सहचर जीवन की समता प्रदान करने वाली परिपूर्ण कोत बन गई :-

नारी तुम केवल श्रद्धा हो, विश्वास रजत-नग पगतल में ।
पीयूष-स्रोत सी बहा करो, जीवन के सुन्दर समतल में ।।

प्रगतिवादी साहित्य के उदय के अन्त काल प्रगट का विकास तथा आरम्भ का विकासवाद था। प्रगतिवाद में समाजवादी यथार्थ वाद देखने को मिलता है। प्रगतिवादियों ने काल्पनिक लोक को छोड़कर वास्तविक जीवन को समग्र रूप से ग्रहण किया है। प्रगतिवाद में नारी स्वातंत्र्य देखने को मिलता है, प्रगतिवाद जीवन नारी को दुखी बनाने वाले है। वह नारी स्वातंत्र्य के साथ उसके स्वस्थ प्रेम को भी प्रकाश

देता है। वह नारी के अधःपतन का पोषक नही है । और उसे पुरुष की कृपा पर अवलम्बित नही रखना चाहता । वह उन्मुक्त प्रेम का पक्षपाती है। डा०राम विलास शर्मा प्रेम की व्याख्या करते हुए लिखते है "प्रगतिशील साहित्य नारी की स्वाधीनता का पक्षपाती है वह सम्पत्ति जाति,और धर्म के विचार से किये हुए विवाहों की वेदी पर देश के युवक युवतियों के प्रेम की बलि देने का सख्त विरोधी है। वह उनके प्रेम करने का और जीवन में एक साथ रहने और संघर्ष करने के अधिकार का समर्थन करताहै। जब तक प्रेम के अतिरिक्त विवाह के लिए जाति,धर्म और सम्प्रदाय सम्पत्ति आदि की शर्ते रहेगी। सामाजिक व्याधियां बनी रहेगी । लेकिन ये व्याधियां शुद्ध ग्लास से शुद्ध जल पीने की थ्योरी से दूर नही हो सकती । यह मार्क्सवाद के विपरीत सामंती पूंजीवादी नैतिकता काप्रतिपादन होगा। प्रगतिवादी कवि नारीको मुक्त न करने के लिए पुरुष को फटकारता है :-

योनि नही है रे नारी,पत्नी मानवी प्रतिष्ठित ।
उसे पूर्ण स्वाधीन करोवह रहे न नर पर अवलित ।
× × × × × × ×
मुक्त करो जीवन संगिनि को, जननिदेव को आहत ।
जग जीवन में मानव के संग हो मानवी प्रतिष्ठित ।।
× × × × × × ×
मुक्त करो नारी को मानव,चिरवन्दिनि नारी को ।
युग युग की बाधा कारा से ,जननि सखी प्यारीको ।
उसे मानवी का गौरव दे पूर्ण स्वत्व दो मुक्त ।
उसकामुख जग का प्रकाश हो,उठे अंध अवगुंठन ।
खोलो हे मेखला युग की कटि प्रदेश से तन से ।
अमर प्रेम ही बंधन उसका हो पवित्र वह मन से ।

नारी युगो से पुरुष की कामवासना की तृप्ति का साधन मात्र समझी जाती रही है, युग युगान्तरो से पुरुष उसे क्रीतदासी मानता रहा है। इसलिए प्रगतिवादी कविकी दृष्टि नारीकी परिवशताऔर दुर्दशा की ओर गयी है। रामेश्वर शुक्ल अंचल शरीरी प्रेम यौवन और आवेशमयी भावुकता

के लिए है। उन्होंने दलित पीड़ित वर्ग का दुख, दर्द, रोष, और उल्लास सभी आंचलिक शब्दावली में चित्रित किया है। उन्होंने साम्यवाद से अनुप्राणित साहित्य का सृजन किया। प्रेम कुमार की "मुनिया" में दाय नहीं लगता। "मालगुडी" में नया का आग्रह आंचलिकता के प्रति हुआ है। प्रेम नारायण शुक्ल का कथन है कि,प्रयोगवाद नागरिक प्रगतिवादी नागरिक से अधिक निकट है। दोनों ही प्रकार के लेखकों की प्रेरणा अनुभव प्रतीत प्रायः एक ही है। "

कवियों में बीसवी शताब्दी के तीसरे दशक के अन्त में छायावादी भाव तरल, व अलंकार,लालित्य काव्य सामग्री एवं शैली शिल्प से असन्तोष होने लगा और यह धारणा दृढ़ होने लगी कि छायावाद जीवन की अभिव्यक्ति नहीं कर सकता। इस हेतु उसके विरुद्ध प्रतिक्रिया होने लगी और एक ओर व्यवहारिक भाषायिक कोमल जीवन की नई अनुभूतियों की माँग बढ़ने लगी और दूसरी ओर दुनिविचित बौद्धिक धारणाओं का जोर बढ़ने लगा।

सौन्दर्य चेतना का यदि एक रूप मधुर और कोमल है तो दूसरा रूप उग्र और परुष। आधुनिक जीवन में उग्र और ओज उभारने अधिक निकट है। इसलिए मधुर और कोमल के अतिरिक्त कुछ उग्र और ओज को दिखाने का प्रयोगवादियों का विशेष आग्रह है। आज के युग में राजनीति में हिंसा,अहिंसा, प्रजातन्त्रवाद,साम्यवाद,और सर्वाधिकारवाद का अर्थनीति में पूँजीवाद और समाजवाद का दर्शन के क्षेत्र में आदर्शवाद और यथार्थवाद भौतिकवाद का और मनोविज्ञान में चेतना का तथा अवचेतन का चेतना पुनरुत्थान हुआ है। कि छायावादी सौन्दर्य बोध कराना असम्भव सा है। इस हेतु इसके प्रतिकार के फलस्वरूप आधुनिक जीवन के अनुकूल नूतन सौन्दर्य बोध जगाना ही आवश्यक एवं सार्थक है।

प्रयोगवादी कविता पर प्रकाश का प्रकाश सीधे तौर से अंग्रेजी में कवि हुई रचनाओं की पुनः लौटा। फ्री वर्सीफिकेशन। यद्यपि सारा व्यापक जगत और समस्त मानव प्रवृत्तियों के मूल में काम प्रवृत्ति होता, ही कार्य करती है। इन दो बातों का इस पर बहुत प्रभाव पड़ा है।

गिरीश बहादुर सिंह की कविताओं में नवीन प्रयोग तथा [illegible] तीव्रता का अभाव दिखाई पड़ता है। उनमें रोमांटिक तत्वों का भी अभाव नहीं है। मेरे प्यारे दीप " कविता में लिखते हैं :-

मेरे दीप
सुन्दर नारि ने
प्रिय आगमन को।
तैल की पकड़े हुई।
बैठी अकेले बारी
प्रिय की मुक्ति प्यारी ने।
डोलिया ले दीप पर
आने
प्रिय आगमन को।

देवेन्द्र सत्यार्थी की कविता " वह मुसाफिर की मंजिल " में प्रयोग देखिये :-

जेल का दुपहर नहीं थी वह न मुझे ले गई किसी जगह।
न मधु का घूंट थी, लोरी सुप ने मुझे सुला दिया।
न थी वह तितली की आँख सब ओर से झलकी हुई।
वह और कुछ ही मालूम थी,
आज सुबह-सुबह आ गई।

गांधी जी का उपदेश है ," यदि मैं अपने विरोधी को मार दूं तो वह हिंसा है। सच्चा अहिंसक बनने के लिए मुझे उसे प्रेम करना चाहिए। और वह मुझे मारे तो भी उसके लिए प्रार्थना करनी चाहिए।" गांधीवाद में प्रौढ़ शिक्षा और स्त्रियों की उन्नति की बात है। स्त्रियों की उन्नति से गांधीवादी कवि घबराती है। देवेन्द्र ने भी गांधीजी को गम्भीरतापूर्वक ग्रहण किया है। उनकी 'स्वीकृति' कविता कविता में आचार्य विनोबा भावे के अनुसार गांधी जी का विचार समाज की बंधी हुई व्यवस्था को तोड़ने का न होकर समाज को परिष्कृत कर विकसित करने का था।

प्रगतिवादी-मार्क्सवाद को भी सच्चा मानते हैं। विद्वानों ने आदर्शवाद को पलायन माना है। मार्क्सवाद का उद्देश्य सर्वहारा वर्ग के शोषण को समाप्त कर एक वर्गहीन समाज को स्थापित करना है। अर्थ का

असमान विभाजन ही सामाजिक विषमता का मुख्य कारण है। मार्क्सवादी विचारधारा और उसके परिणामों का यथार्थ चित्रण करने वाले साहित्य अनुशीलन चाहता है। जिससे पाठक इन समस्या को सोच समझकर उसे दूर करने का प्रयास करें। इस प्रकार मार्क्सवाद यथार्थवादी चित्रण को महत्व प्रदान करता है।मार्क्सवाद और प्रगतिवाद के अनुसार यह स्त्रियों की आर्थिक स्थिति सुदृढ़ हो जायेगी तो वे पुरुष के बराबर आ जाएँगी। इस दृष्टि से आज स्त्रियों को नौकरियों में स्थान दिया जा रहा है। उनके एम०ए०,और एम०बी०ए० की डिग्री में वरीयता दी जा रही है । नारी स्वातंत्र्य और प्रगतिशीलता की ओर उन्मुख हो रही है।

हिन्दी के कुछ लेखकों पर इस प्रयोजनवाद का प्रभाव पड़ा है। वे फलवाद को आधार पर सम्प्रेषणता को प्रतिष्ठित करते हैं। उनके अनुसार चित्रण में प्रेम से अधिक प्रगतिशील अन्य भावना नहीं है। समाज केवल पाँच समस्याओं का ही भंडार नहीं है। पाँच समस्याओं का उठना ही व्यर्थ लेखकर है। समकालीन यथार्थवाद में पाँच समस्या को अन्य समस्याओं का सब मान मानकर ही चित्रण किया जाता है। जो अपने परिवेश व में उचित और सत्य है। [1] यथार्थवाद में नीरसता तथा कुरूपता की मात्रा अधिक है। कुछ आलोचक यथार्थवादी साहित्य पर अश्लीलता का भी आरोप लगाते हैं। यथार्थवादी साहित्य में स्त्रियों की वास्तविक स्थिति का चित्रण कर स्त्रियों को स्वातन्त्र्य एवं प्रगतिशीलता की ओर उन्मुख करने की बात है ।

1-साहित्य में यथार्थवाद डा० रमेश राजन ।

द्वितीय अध्याय

वृन्दावन लाल वर्मा के कथा साहित्य का संक्षिप्त परिचय

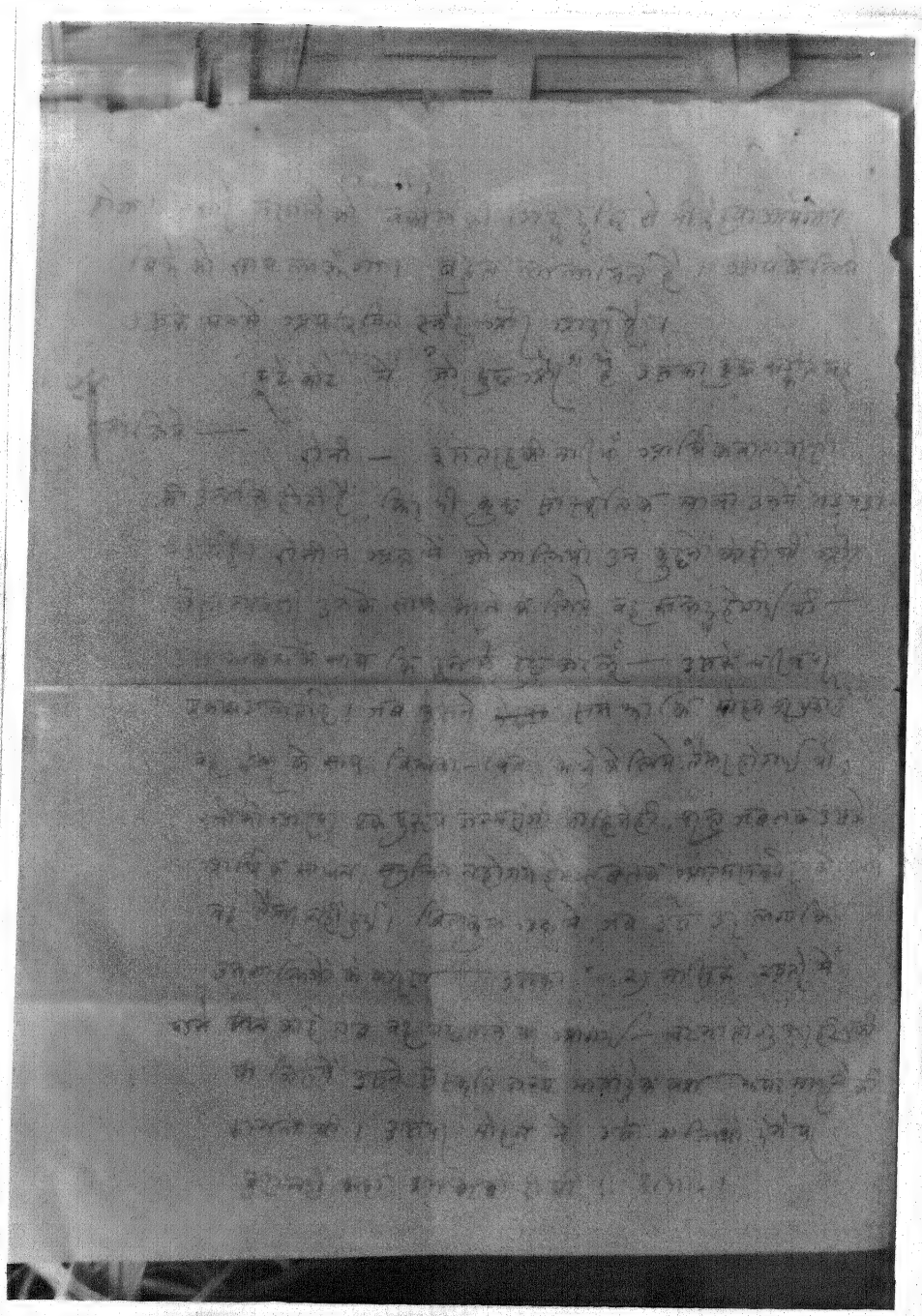

वर्मा जी का हस्त-लेख, टूटे कांटे पर टिप्पणी

सुशीलचन्द्र

जागीरदार सुशीलचन्द्र बरसन्द में दतिया में निवास करते थे वे शिकार के शौकीन थे । एक दिन शिकार खेलने गये तो साथियों के साथ रक्त से हाथ को धराशायी किया । पुरन की बाँह में हिरन के दाँत गड़ गये थे । सुशीलचन्द्र शेरों सिंह उदार थे, शिक्षित थे, सच्चे थे, सत्यवादी और सच्चा प्रवर्ती थे । सुशीलचन्द्र ने अपने गले का गुन्धन उतारा और पुरन को पहना दिया । गुन्धन बड़े सोने का था और उसमें हुए कारीगर भी थे । सुशीलचन्द्र के दाम को वे न मानते थे । इसलिये उनके सेवकों में तथा अनुचरों में सुशीलचन्द्र का बेट भाव बहुत न था । उनकी पत्नी बरसारी के राजा की बेटी थी । सुशीलचन्द्र यही चाहते थे कि वह बेट भर सायें और उनके आश्रय हुये वा अभेट रहें । वह चाहते थे कि पुरन की सेवा सुश्रूषा बहुत अच्छी हो और उसे कुछ दिन विशेष भोजन भी मिले । उनकी पत्नी बरसारी वाली ने सन्दूकची में से रत्नजटित स्वर्ण पहुँचियाँ निकाली और सच्ची मोती के साथ हुंची के वर्ण गिरवी रखकर पाँच सौ रुपये सेठ कन्हार को दी पूरी हुई और सैनिक साथियों की भोजन व्यवस्था प्रारम्भ हो गई । बरसारी वाली के पास एक मन कम से कम तीन हजार रुपये की होगी । उसे बड़े साहूकार के यहाँ गिरवी रखकर सिपाहियों के खाने सेवन को चुका दिया । उनका यह नाम था इसलिये काम भी बड़े करते थे ।

दतिया रनवास में रक्त उत्सव हुआ । महारानी की परिचारिकायें बरसारी वाली सरकार को निमन्त्रित करने के लिये आई सैनिक साथियों के अभाव में बरसारी वाली को वाना अच्छा नहीं लगा और बीमारी का बहाना कर दिया । परन्तु रानी स्वयं देखने आ गई । बरसारी वाली को ध्यान था कि इस उत्सव में आप जागीरदारों और सेठ साहूकारों तथा अमीरों

की बहू बेटियाँ इकट्ठी होती । उनके पास कोई आभूषण नहीं है । सबकी दृष्टि उनके ऊपर पड़ेगी। मायका ससुराली न होता तो कोई बात नहीं थी मैं हाथ और गला लेकर महलों में क्या मुंह दिखाऊंगी । वहाँ सलाम स्त्री काया पूरी करेगी । ससुराली वालों को बहुत दुख हुआ ।

रमु और पूरन ने डाका डालने की योजना मेहतर तेजिर्ह के साथ डाका डाला चाहे और आभूषण ससुराली वालों को दे दिये जायें क्योंकि डाके और लड़ाई में कोई अन्तर नहीं है । सलीम भी हमारे ही पेट मारने के लिये सरकार ने अपने महले एक एक करके साहूकारों को भेंट कर दिये हैं । हमारे ही पैसे साहूकारों के पास है । बहोनी के पास 20-25 आदमियों ने गाड़ियों को घेर कर लूट लिया । छिमा के पास अकस्मात पड़ा हुआ धन मिल जाने की बात समझकर सोने के समस्त आभूषण ससुराली वालों को दे दिये और बाँदी को नली को ।

दतिया वाली बहू ने डकैतों को पहचान लिया और सन्देह होने लगा कि भिखारियों ने डाका डाला है मुहाविब बु को भी सन्देह हो गया कि डाका ससुराली वालों ने डलवाया है क्योंकि पहुचिया जैसी ही मिल रही थी जैसी पिरवी घर की गई थी । कुंवी को पूरी सुभद्रा ने भी डकैतों को पहचान लिया था । नली ने सुभद्रा के सामने बाँदी के कंगने और कुछ आभूषण रखे जिन्हें सुभद्रा ने पहचान लिया और देखने सुभद्र के ही थे ।डाके की नली ने स्वीकार कर ली । कुंवी को सुभद्रा ने सब चिट्ठा सुनाया। कुंवी ने कोतवाल अमीन ,दीवान सबको करियाद सुनाई । दीवान जानता था कि मुहाविब बु राजा के भाई के दामाद है और राजा के दरबार में उनके पद का महत्व है । मुहाविब बु समझते थे कि उनके आदमी भी नाम कमायेंगे परन्तु उन्होंने मुंह पर पोतने के लिये कालिख तैयार की है । उन्होंने फिर भी रामसिंह

ने कहा कि वह राजा के पास जायेंगे और जो कुछ दण्ड दे उन्हीं हैं। सरकारी वाणी ने भी कहा कि अपने आदमियों को खाने के लिये कोई कसर नहीं रखनी चाहिये। राजा ने कोतवाली को आदेश दिया एक घंटे के भीतर सभी चौकी और मुहाफिज खु के मेहतरों को पकड़कर लाओ। मुहाफिज खु ने सिपाहियों को आज्ञा दी कि सब लोग पकड़ने न जाने के लिये तैयार रहो। गोली आवाज हमारे पास भी काफी है। राजा ने आज्ञा दी कि यदि अपराधी घेरा नहीं किये जाये अथवा पकड़ने में न आवे तो मुहाफिज खु जीवर्जित को कैद करके किले ले जाओ और कारागृह में बन्द कर दो। अन्यथा आप ही उनको घेरा निकाला दे दो। कोतवाल ने समझाया कि आपके सिपाहियों के हथियार राजा पर आई किसी विपद को काटने के लिये उठने चाहिये थे तो आपस वालों के खून बहाने के लिये उठने को है। आपको लोग नमक हराम कहेंगे। कोतवाल ने प्रस्ताव किया कि सब आदमियों और सामान को लेकर कूच कर जायें। कुछ समय उपरान्त राजा शान्त हो जायेगा और आपको फिर सम्मान मिल जायेगा। कोतवालने तुमाली मुकुंद मुहाफिज खु से ले ली और राजा को समझाकर घेरा कर दी। राजा को समझाया कि मुहाफिज खु सरदार है और सेवक वरसल वे अच्छे सिपाही है और स्वामिभक्त। मैंने आपकी आज्ञा उन्हें घेरा निकाले की सुना दी है। मुहाफिज खु ने अपने आदमियों के साथ प्रस्थान किया। राजा के पैर सफल हो गये। और कहने लगे कि घेरा निकाले का दण्ड तो पूरा हो होगया। हा सरदार ने मेरे लिये अनेक बार जान जोखिम में डाली है। सदा आप यह हाल देखकर क्या आतीहै कोतवाल ने भी कहा कि रण में ऐसा मुझे वाला ठाकुर कठिनाई से मिलेगा। राजा ने आज्ञा दी अकड़ की मर्यादा पूरी हो गई वरसन्द लौट जाओ। कोतवाल ने कहा कि आपने महाराज की आज्ञा का कभी निरादर नहीं किया।

सम्पत साहूकार भी मुसाहिब जू के पास आकर लौटने की प्रार्थना करने लगे । रामसिंह कहता है कि सिन्धिया की सेना रानी की ओर बढ़ी चली आ रही है । लोग कहेंगे कि आप कायरों में सबसे आगे हैं और आपके सिपाही डाका डालने में प्रवीण । मुसाहिब जू कहने लगे कि युद्ध में प्राण देना अच्छा बाने की अपेक्षा कहीं अधिक अच्छा है । राजा दीवान को लेकर आगे के बाग में पहुंचे और मुसाहिब जू से कहा कि मैं तुम्हारा राजा हूँ ।मेरी आज्ञा का उल्लंघन तो न करोगे । अरजन्द बाजोजोर बगावत अपना काम करो । जब दतिया पर कोई धावा बोले तो डटकर उसका मुकाबला करो । मुसाहिब जू ने स्वीकार कर लिया कि स्वामी के हठ के सामने सेवक का हठ नहीं चल सकता अभी जाता हूँ मुसाहिब जू ने राजा से कहा कि मैं यह सब भाल लौटाया हुआ। राजा ने हँसकर कहा कि मुझको उस विषय में कुछ नहीं कहना है ।

इस उपन्यास में मुसाहिब जू का चरित्र मुखरित हुआ है । वह किस प्रकार सती, अपने राज्य की रक्षा करने में समर्थ और अपने सेवकों के प्रतिपालक और उनकी प्रतिष्ठा की रखने वाले हैं । अपने सेवकों से उनका प्रेम है कि उन पर आँच नहीं आने देते ।

झाँसी की रानी लक्ष्मीबाई

झाँसी की रानी लक्ष्मीबाई उपन्यास में रानी लक्ष्मीबाई का चरित्र चित्रण है और उनके शौर्य, वीरता, स्वतन्त्रता की भावना तथा स्वतंत्रता संग्राम के बीच कौने का संकेत है। उनकी मान्यता थी कि उनका संग्राम के लिये अथक प्रयत्न एवं निरन्तर बलिदान आवश्यक है। उनका प्रयत्न नींव के पत्थर के समान है जिस पर भवन खड़ा होता है।

गंगाधर राव झाँसी के राजा थे। उनके राज्य में अभिनय होते रहते थे। राजा स्वयं अभिनय करते थे। मोतीबाई नाट्यशाला में बहुत प्रसिद्ध थी। वेद उपनिषद, धर्म, पुराण, तन्त्र, आयुर्वेद, ज्योतिष, व्याकरण काव्य इत्यादि के अनेक ग्रंथ उनके पुस्तकालय में थे कि लोग दूर दूर से उनकी प्रतिलिपि के लिये आने लगे।

मोरोपन्त की पत्नी का नाम भगीरथ बाई था। मनुबाई कार्तिक वदी 14 सं० 1891 (11 नवम्बर सन 1836 के दिन काशी में छन्नी से उत्पन्न हुई। मनु जब चार वर्ष की थी तभी उनकी माता का देहान्त हो गया। मनु इतनी सुन्दर थी कि कुटुम्ब में बाजीराव इत्यादि उनको स्नेहवश छबीली नाम से पुकारते थे। मनु चपल हठीली और बहुत पैनी बुद्धि की थी। झाँसी शिवाजी और अर्जुन सिंह के पुरातन आख्यानों का उस पर प्रभाव पड़ा। उसमें रानी होने के लक्षण मुझ थे। वह दुर्गा सी वीर पड़ती थी। मोरोपन्त के पास जो कुछ था उसे वह विवाह में लगाने को तैयार थे। प्रसिद्ध ब्राह्मणों की मध्य स्थता में तय हुआ कि विवाह का व्यय झाँसी के राजा वहन करेंगे और विवाह झाँसी में होकर होगा। यह भी तय हुआ कि मोरोपन्त स्थायी तौर पर झाँसी में ही रहेंगे और उनकी नियुक्ति झाँसी के सरदारों में होगी। उस समय झाँसी में पनेरा और दुजेरा दो अच्छे कवि थे। गंगाधर राव प्रौढ़ थे।

नारायण शास्त्री एक छोटी बंशिन को रखे हुये थे । पनेरा की एक अन्य जाति की सुन्दरी को रखे हुये थे । पनेरा ने आर विचार उठा कि नीची जाति वाले पनेरा नहीं पहन सकते । पनेरा और नारायण शास्त्री विरोध में थे। राजा ने न्याय किया कि नीच जाति वाले को कोड़े लगवाये । एक दिन छोटी जब भीतर नारायण शास्त्री के मकान में घुस आई तो बाहर से लोगों ने संका बढ़ा दी । छोटी अंगरेज पर चढ़कर पीछे से बाहर निकल गई । नारायण शास्त्री ने पुराने नये बहुत से पनेरा छोटी को दिये और राजा से उनने कहा कि कई लोगों ने मेरे साथ कपट किया है परन्तु राजा ताड़ गये कि यह शास्त्री की मन गढ़न्त घटना है । राजा ने उन्हें शांति छोड़ने आज्ञा दिया ।

मंगलसिंह राव का विवाह नगर वाले गणेश मन्दिर में मनुबाई के साथ हुआ । सुन्दर मनु के साथ दासी बनकर रहने के लिये आई परन्तु मनु ने कहा कि दासी कोई नहीं मेरे साथ सहेली बनकर रहोगी पुरोहित ने जब दोनों की गांठ बांधी तो मनु बोली कि ऐसी बांधिये कि कभी छूटे नहीं ।

विवाह होने के पूर्व मंगलसिंह राव को शासन का अधिकार नहीं था। विवाह के उपरान्त उनको अधिकार मिल गया । रानी लक्ष्मीबाई सवारी सवाराम सम्पन्न किले वाले महल के ही निजी आड़ ओट में कर पाती थी । अपनी सखी सहेलियों तथा किले के भीतर रहने वाली स्त्रियों को वह सवारी , शस्त्र प्रयोग , घुड़सवार , कुश्ती का अभ्यास कराती थी । लुटपन की छबीली मनु लक्ष्मीबाई के विशाल आंगन में विलीन हो गई । महल में रानी ने खेल की मनोवृत्ति में गौर की प्रतिमा की स्थापना की । हरदौल के उत्सव की रानी ने मनाया जिसमें सधवा स्त्रियाँ एक दूसरे को रोरी का टीका लगाती है और उनको किसी न किसी के बहाने अपने पति का नाम लेना पड़ता ।राजा के लड़ कठोर और अत्याचार पूर्ण होते थे । कठोर शासन में नहीं कभी कभी

दिखाई पड़ती थी वह रानी के प्रभाव के कारण दिखाई पड़ती थी उस समय झाँसी में 52 घराने सम्पत्ति थे ।

संवत 1908 [सन 1851] की अगहन सुदी एकादशी को श्री गंगाधर राव के पुत्र हुआ । राजा ने पुत्र प्रसन्न किये । गंगाधरराव का वह बच्चा तीन महीने की आयु पाकर मर गया ।राजा ने अपने कुटुम्बी वासुदेव राव नेवालकर के पाँच वर्ष के पुत्र आनन्दराव को रानी की सम्मति से गोद लिया उसका नाम बदल कर दामोदर राव रखा गया परन्तु कंपनी सरकार ने उसे नहीं माना। राजा बीमार पड़े और उनका स्वर्गवास हो गया । उन्होंने मृत्यु से पूर्व एक संदेशा कंपनी सरकार को लिखवाया कि यदि मेरा देहान्त हो जाये तो दामोदरराव राज्य का उत्तराधिकारी होगा । कुलिस ने 20 नवम्बर सन 1853 को गंगाधर राव का अंतिम पोलिटीकल एजेन्ट डेवा[को झाँसीपुर में रहता] के पास कर दिया । गंगाधर राव के देहान्त के समय लक्ष्मीबाई 18 वर्ष की थी रानीजिसे वाले महल में ही रहती थी । रानी का मत था कि बुन्देल खण्ड के रजवाड़े छूटे हुये दीपक हैं उनमें तेल है परन्तु बाती नहीं ।

नाना और तात्या रानी से मिले । नाना ने कहा कि झाँसी ही हमारी एक आशा है ।

रानी ने बुआबाई को झाँसी में रहने की आज्ञा दे दी । गंगाधर राव ने बुआबाई और मोतीबाई को निकाल दिया था ।

लेकिन बड़े लाट साहब की आज्ञा सुनाने आये और बोलना प्रतिकूल थी । रानी ने पर्दे के पीछे से कहा कि मैं अपनी झाँसी नहीं दूँगी। पाँच हजार रुपये मासिक वृत्ति महाराजा साहब और उनके कुटुम्ब के लिये दीजाई। रानी ने कहा कि मुझको यह वृत्ति नहीं चाहिये नहीं दूँगी ।उनकी मान्यता थी कि हमको देश कर्म करने का अधिकार है कर्म के फल का नहीं ।उन्होंने

कहा कि मैं स्वराज्य धारा को आगे बढ़ा जाऊँगी । जनता तब कुछ है । जनता अमर है, उसको स्वराज्य के लिए मैं बाँधना चाहिये । जनता के आगे होकर मैं स्वराज्य की पताका फहराऊँगी । मैं बिना प्रार्थना की सिंहा पढ़ी जारी रखूँगी शिवाय मैं अधीन भिखाऊँगी ।

पोलिटीकल एजेन्ट ने झाँसी के खजाने से 6 लाख रुपये निकालकर दामोदर राव के नाम से अंग्रेजी खजाने में जमा कर दिये और निश्चय किया कि दामोदर राव के बालिग होने पर ब्याज सहित लौटा दिये जायेंगे । रियासत के सब जवाहरात और सोने चाँदी के आभूषण इत्यादि दामोदर हेतु रानी के अधीन कर दिये । छोटे जागीरदारों में आनन्द राव भी था उसके पास साढ़े पाँच थे । वे छीन लिये गये और बदले में वायदा पर नकदी दे दी गई ।

रानी ने लड़कियों के नक्शों का अध्ययन किया बाहुली शिवाय स्थापित किया तात्या ने नारायण आप्टे को ज्योतिषी जानने के कारण अंग्रेजी सेना से सम्पर्क में रहने का कार्य सौंपा । रानी का निजी खर्च बहुत कम था परन्तु दान पुण्य में बहुत दे डालती थी । वे हरकारे की एक योजना चलने लगा लेती थे । दामोदर राव के 6 वर्ष के होने पर जनेऊ होना ही चाहिये ।

कारतूसों में सुअर और गाय की चर्बी लगे कारतूसों की बात छावनियों के हिन्दुस्तानी सिपाहियों में फैल गई । कमल के फूल और रोटी जगह जगह लेकर क्रांति की बात फैल गई । 10 मई को मेरठ में तलवार बन्दूक चल गई अंग्रेजों को मार मुरकर सिपाही घोड़े लिए दिल्ली पहुच गये । वहाँ की हिन्दुस्तानी सेना उनसे मिल गई ।दिल्ली सिपाहियों ने उनका साथ दिया । बहादुरशाह जफर को दिल्ली का सम्राट घोषित किया । कानपुर में चौथी जून की रात को बगावत अंग्रेजी राज के प्रति तीव्र जाहिर हुये । हिन्दुस्तानी सेना ने क्रान्ति का आरम्भ कर दिया । लखनऊ बनारस और इलाहाबाद क्रान्ति

-कारियों के हाथ में आ गये और नाना को राजा घोषित कर दिया। घोड़ी
कुछ को ही फाँसी में क्रान्ति के लक्षण प्रकट हुये । कुन्दन सिंह नाम के अवतार
कुछ सैनिक लेकर अपनी निर्मित छोटे से किले में कुछ पहरा और लड़ाई का सब
सामान और रुपया पैसा उठाकर ले आया । गार्डन ने अंग्रेज स्त्रियों और बच्चों
को महल में आश्रयहेतु रानी से आज्ञा माँगी । रानी ने महल में रख लिया उन्हें
रोटियाँ खिलाईं । घोड़ेवाले अली ने रूहीन को मारा और सब काट दिया ।
सिपाहियों ने निश्चय किया कि रानी से रुपया लो और दिल्ली चल दो ।
यदि रानी साफ रुपया न दे तो डाकर से लूट लो । रानी ने कहा कि
अंग्रेजों ने मेरे पास रुपया नहीं छोड़ा परन्तु कहा कि लूट मार नहीं न करना
और अपने से हीरों का हार उतारकर सैनिकों को दे दिया । रानी ने दीवान
बख्तावर सिंह को बुलाया और नगर व किले का प्रबन्ध करने का आदेश दिया।
गोपालकर ने कहा कि राज्य का सर्वाधिक शासन रानी लक्ष्मीबाई के हाथ में रहे
और सब लोग अपने को उनकी प्रजा मानकर अपने जीवन का निर्वाह करें । रानी
यह भार स्वीकार किया । झाँसी पर नया झण्डा फहरा दिया गया । राज
कार्य का विभाजन हुआ और पदाधिकारी नियुक्त कर दिये गये । रानी ने
पुराने हथियार इकट्ठे किये जनता ने भी लौटकर रुपये दिये बड़े और महत्वपूर्ण
मुकदमे वे स्वयं सुनती थी । और तुरन्त निर्णय देती थी । उन्हें पता लगा कि
कल्याणसागर में कुंवर सागर सिंह डाकू ने अत्याचार कई डाके डाले हैं । रानी ने
दुलावजा को सिपाही लेकर कल्याणसागर भेजा और कहा कि उसे तुम या घोषित
कार्य । परन्तु दुलावजा घायल हो गये । रानी जाटीबाई और मोतीबाई
के साथ कल्याणसागर गई । सेना बेतहाशा बढ़ी थी पानी बरस गया था रानी
तथा आगे पानी में कूद गई रानी कल्याणसागर के किले में पहुंची वहाँ दुलावजा
और घायल सिपाही पड़े थे । दुलावजा ने विस्तृत हाल सुनाया। रानी ने -

लाखरसिंह को दीक्षित कर लिया और घोड़ा लटाकर उसकी कमर में हाथ डाल दिया ।

रानी ने लाखरसिंह को झाँसी की सेना में भर्ती होने को राजी कर लिया और वह अपने पूरे गिरोह के साथ सेना में भर्ती हो गया ।नत्थेखाँ के दूत ने जो संदेशा दिया उसका सार था कि झाँसी वाली औरत का अंत था , वह अनुचित प्रकार से औरछा से काट दिया गया , अब औरछा को वापिस मिलना चाहिये । ओरछा को पाँच हजार मासिक वृत्ति रानी साहब को देने के उन्हें ज्यों की त्यों मिलती रहेगी किला , नगर और शस्त्र हमारे हवाले कर दो । औरछा के दूत को नत्थेखाँ के संदेशों का उत्तर दिया कि लक्ष्मीबाई एक स्त्री है वो साहब को अपना की रक्षा करनी चाहिये न कि उनके साथ इस प्रकार का व्यवहार । रानी ओरछा की ओर से झाँसी का प्रबन्ध कर रही है । रानी ओरछा की ओर से झाँसी का प्रबन्ध कर रही है । नत्थेखाँ की सेना मार खाकर पीछे हटी । रानी झाँसी को हर बात में आगे देखना चाहती थी । प्रत्येक किला में झाँसी आगे रहे । वह सभी जन देश को ओरछा के पंजे से छुटकारा मिल जाये । रानी को घबराया हुआ या चिन्तित कभी नहीं देखा उनका कार्य सदाः अनवरत जारी था ।रानी ने एक विधुर ब्राह्मण की दूसरी शादी करने के लिये पाँच सौ रुपये दिये ।रानी ने इतनी बारूद कारखाने में रखने की आज्ञा दी जितनी हम किले में बैठकर महीनों लड़ सकें । जब रानी को अंग्रेजी, गंगाधर ने घेरा तो उसने दीवान को आज्ञा दी कि मांगने वाले, भिखारी साधु फकीर को उनको एक एक कुआँ खोदने और कब्जा देने को कहा पूरन के साथ जब एक बछिया मर गई तो सभाच हलकारी की गया तयारी देखना चाहता था पूरन रानी के पास आया तो रानी ने बछिया वाले से पूछा और उसने कहा कि बछिया मरी नहीं । पूरन को एक पैसा देती पड़ी और छुट्टी हो गई रानी

रानी अपने को महाराष्ट्र कुल की न समझकर विन्ध्य अंडी समझती थी। वे ललित कलाओं की पोषक थी ।

तांत्या टोपे ने दरबारी के राजा को घेर लिया और लूट कर काल्पी लौट गया । राजा गढ़ के बाये पाँव तो पठान रानी के अनुयायी हुये। उनका सरदार कुल मुहम्मद था । उन पठानों को हीन आदमी थी । अच्छे पद को वे उन्हें बहुत भोजन नहीं मिला था । रानी ने उनकी सब प्रकार की सुधि लाये थी । पठानों ने प्रण किया कि स्वराज्य के लिये रानी के चरणों में अपने सब के सिर देंगे । उन्होंने अपने प्रण को अन्त तक निभाया ।

अमरावि में किले में मोर की स्थापना हुई । रानी ने मुसलमान के साथ सिन्दूरोत्सव मनाया । लम्बी टूंक रानी विधवा की आज्ञा से स्वयं सिन्दूर नहीं दे रही थी । अमरसिंह ने काँसी पर चढ़ाई कर दी । तोपची तोप दागते रहे मुन्दर ने रघुनाथ सिंह को सुन्दर ने कुन्दारु की , मोती ने बुन्देलखण्ड की जगह ली और कुशल पूर्वक काम किया । अन्देराव फाटक पर तानसिंह और सागर खिड़की पर बहादुरशाह पठान को भेज दिया। किले से गोलाबारिश करने के लिये प्रधान नायक गुलाम गोसाईं और भाउबख्शी थे । सागर सिंह अन्देराबेट के पास मारा गया । रानी की स्त्री सेना भी तरह काम कर रही थी वैसे ही पुर्ण ने अनेक प्रकार धारण कर लिये थे ।

पेशवा की सेना सहायता हेतु आई परन्तु अव्यवस्था एवं अनुशासन हीनता के कारण अंग्रेजों से पराजित होकर वापिस लौट गई । काँसी की रानी को अपनी अपनी सेना के बल पर युद्ध करना पड़ा । काँसी की रानी ने कहा कि जो लोग अंग्रेजों व मोत से डरते हो वे सम्मान रखकर आराम के साथ अपने घर को जाये बुन्देलखण्ड मोतीबाई, काशीबाई,सुन्दर आदि औरतों के साथ नहीं परन्तु वीर आदमी व कुन्दारु अंग्रेजों से मिल गये और औरछा फाटक को तोप

दिया यद्यपि बख्तावुद्दीन ने रानी को उनके सम्बन्ध में पूर्व सूचना दी थी कि उन पर शक है, अचानक युद्ध हुआ परन्तु झाँसी पर अंग्रेजों ने अधिकार कर लिया। रानी की गोद में केवल सुन्दर, गुलमुहम्मद, खेरामुहं और रघुनाथ सिंह को छोड़ सब मारे गये। बाकी बेलवा तात्या की सेना का सेनापति राव साहब को बना दिया। उनकी सेना बड़ी परन्तु अनुशासन हीनता और अव्यवस्था के कारण परास्त हो गई। रानी ने छः महीने झाँसी पर सफलता पूर्वक राज्य किया। बेलवाई सेना तात्या टोपे प्रधान सेनापति नियुक्त हुआ ग्वालियर को जीत लिया और वहाँ सिंहासनारूढ़ हुआ। वह रंग में डूब गया। अंग्रेजों ने फिर आक्रमण किया ग्वालियर सेना के पक्ष में मिलने के कारण बेलवा की हार हुयी। रानी के तलवार लगी खून बहने लगा। बाबा गंगादास की कुटी सोनरेखा नाले के उत्तर की ओर थी। रानी वहाँ गई और रघुनाथ सिंह से कहा कि मेरी देह को अंग्रेज न छूने पावे।

रामचन्द्र ने अपनी वर्दी पर रानी को लिटाया और बंधे हुये साफे के टुकड़े से उनके सिर के घाव को बाँधा रघुनाथ सिंह ने अपनी वर्दी पर सुन्दर के शव को रख लिया, बाबा गंगादास ने घास बिछाया। बाबा ने कहा कि धूप काफी नहीं है तो कुटिया की लकड़ियों से घास तैयार कर दो। खेरामुहं खेरामुहं ने बाबोधरराव को पीठ पर बाँधा और घोड़े पर सवार होकर चल दिया। गुलमुहम्मद फकीर बनकर अपना नाम गुलाई रखकर रहा। रघुनाथ सिंह भी मारा गया। गुलमुहम्मद सो गया सुबह उठा तो देखा कि कुछ दाढ़ियाँ रह गई। उसने मन में कहा वह मरा नहीं वह कभी नहीं मरेगा। वह मुझ में जान बनकर रहेगा। अंग्रेजी सेना का एक दल रानी की दृढ़ खोज में वहाँ पर आया उसने गुलमुहम्मद से पूछा यह स्त्रीका मजार है। गुल मुहम्मद ने उत्तर दिया हमारे पीर बाबा बहुत बड़ा वली था।

———:x———

अमार

अमार ऐतिहासिक उपन्यास की कथा मुख्यतः आमेरी के किले और राज तक सीमित है । जिस प्रकार जिलीप सिंह की शादी होती है । मानसिंह बेटर मार्ग से अलावती रानी के साथ लौट में आई तो बाजियाँ अमार और नलिता को देखता है और अमार पर आसक्त हो जाता है । अमार सुन्दर और गोरी है तथा नलिता थोड़ी सांवली । बाजियाँ का जीवन जिस प्रकार हुंडारेपन में ही व्यतीत होता था । महन्त अमनपुरी और उनके अखाड़े की बात से इस बात पर प्रकाश पड़ता है कि गोसाई सैनिकों के समूह पराक्रम विकास और मनोपार्जन की भावना से देश के मध्यभाग में घूमा करते थे । जिसी प्रकार से आमेरी पर हुये आक्रमण से जिलीप सिंह ने रक्षा की परन्तु वह घोड़े से गिर गया और उसकी स्मृति जाती रही । उपचार न हो सका और रक्त अधिक होने और दवाई का असर न होने के कारण उसका स्वर्गवास हो गया। जबकि उसकी देह में दाह संस्कार की क्रिया करने गये तो पानी व घोड़े ओझल हो गये और दाह संस्कार करने वाले व्यक्ति वहीं से वापस लौटे । पुत्र शरीर में पुनः कुछ रक्त व कम्पन हुआ । गोसाईयों के महन्त ने पुनः कुछ दवाई देकर उसे ठीक कर लिया । धीरे धीरे कुछ स्मृति लौटती रही और वह कुछ कुछ याद रखने लगा । जीलीप सिंह को गोसाईयों के महन्त में बड़ी आस्था हो गई ।

मानसिंह ने उधर अलावती से विवाह का प्रस्ताव रखा और पटा के बाद विवाह हो गया । पुनर्विवाह की समस्या नहीं उठाई है । मानसिंह अमार के सौन्दर्य के कारण उस पर आसक्त था और उसको भी अपनी वासना का शिकार बनाना चाहता था । अमार ने विवाह के बाद मानसिंह के साथ प्रेमव्यवहार की स्वीकृति दी परन्तु जो बीच शिवजी की पूजा के बहाने वह कुंजी में छुरी रखकर निकल गई और महन्त अमनपुरी के अखाड़े में सम्मिलित हो गई । अपनी सुरक्षा के लिये त्रिशूल धारण करने की स्वीकृति महन्त ने अमार के लिये दी ।

अमार को धीरे धीरे आभास हुआ होने लगा कि राजा जिलीप सिंह भी महन्त के शिष्य है जिनका नामकरण सुमन्त पुरी भी है । अमार का

नामकरण बैजनाथपुरी की हुआ । बाद में धीरे धीरे रहस्य खुला । गोस्वामियों ने डारी सिंह की सहायता से अमोनी पर आक्रमण किया परन्तु कोरी सिंह मारे गये । गोस्वामियों की जीत हुई और अमोनी किले पर उनका अधिकार हो गया । महन्त अजनपुरी ने अमोनी का अधिपति पुनः राजा शिवप्रसिंह को बना दिया । शिवप्र सिंह का विवाह श्री महन्त ने कमार के साथ करा दिया महन्त ने फिर अपने अधीनस्थ पूरे डेरे और गोस्वामियों का अधिपति अपने शिष्य और विश्वासपात्र भक्त मन्टोली राम को बनाकर महन्त ने इस प्रकार पूर्ण वैराग्य ले लिया ।

इस उपन्यास में महन्त के माध्यम से धार्मिक और आध्यात्मिक परिचर्चा है । दासी प्रथा की समाप्ति और आदिवासियों के भी विकास का परिचायक है । यह भी दिखाया है कि किस प्रकार आदिवासियों में भी अपने चरित्र की रक्षा और स्वाभिमान की भावना है । मानसिंह जैसे विलासी व्यक्ति का पतन एवं सच्चरित्र कमार की विजय दिखायी है । ऐतिहासिक लोगा है कि धर्म की ने दुर्भाग्यपूर्ण प्रथा का समर्थन किया है । घटना इस अधिक विश्वसनीय नहीं है । पूरी कथा अमोनी गढ़ के चारों ओर ही जैसे चक्कर काट रही है ।

कमार के चरित्र के माध्यम से जैसे लेखक दिखाना चाहता है कि नारियाँ किस प्रकार सक्षम , कर्मठता करने वाली और अपने नारीत्व की रक्षा करने वाली है। वह शस्त्र भी धारण कर सकती है और अपने चरित्र की स्वयं रक्षा कर सकती है । वह किस प्रकार वीरांगना है ।कमार के चरित्र को उभारना और दास प्रथा की समाप्ति लेखक का मुख्य उद्देश्य दिखाई देता है । तत्कालीन राजनीतिक स्थिति पर प्रकाश इस उपन्यास से पड़ता है ।

माधव की सिन्धिया

माधव की सिन्धिया सचमुच महामानव थे । उनमें कुछ कमियाँ भी थी जो उनके बड़े गुणों के सामने नगण्य थी । हमारे देश में पतनोन्मुखी युग में भी महान नर नारी हुये है जो मार्ग दर्शन करते हुये अपनी छाप छोड़ गये थे माधव की सिन्धिया और उनके समकालीन राव शरणो, अहिल्या बाई होलकर, माधव राव पेशवा, मुगलीन बाँ नाहीं इत्यादि .

माधव की तरीके नायक का ही काम था कि केन्द्र को प्रबल बनाये रखने के साथ ही उन्होंने प्रांतों को भी आत्म निर्भर बने रहने में सहयोग दिया और हिन्दू मुसलमानों में एकता की भावना सुदृढ़ करने के प्रयत्न किये। माधव की सिन्धिया के सब बाद बहुत थोड़ों को छोड़कर ऐतिहासिक है । कहाँ की धन्या केन्द्र और कहाँ उसका देहावसान हुआ ।

माधव की तरीके नायक का ही काम था कि केन्द्र को प्रबल बनाये रखने के साथ ही उन्होंने प्रांतों को भी आत्म निर्भर बने रहने में सहयोग दिया और मुसलमानों में एकता की भावना सुदृढ़ करने के प्रयत्न किये। साथ ही उन परदेशी जागीरदारों और जमींदारों को उखाड़कर जनता के विश्वास का मार्ग खिलुल किया ।

माधव जी का विशाल स्वप्न भारत की सारी शक्तियों को केन्द्र के विकेन्द्रकता में बाँधने का था। इस विषय में उन सरीखा अपना दूरदर्शी राजनीति भारत में और कोई नहीं उत्पन्न किया । वह एक विराट कल्पना थी परन्तु जो माधव जी केवल माधव जी ही सफल बना सकते थे। यदि उनका देहान्त न हो गया होता तो वे सफल हो जाते । माधव जी अपने को सेवक कहा करते थे । आँधी तूफानों की ओरों और अनेक कष्टों में अपने सिर सीधा किये हुये एक ही माधव शायद उस युग में दूसरा कोई

नहीं ।

इन आँधी तूफानों में एक बड़ा था तानसेन घराने का मुसलमान संगीत आचार्य उस्ताद कबीर खाँ संस्थापक थे । अपने मत समर्थन वाले हिन्दुओं को भी इस पंथ में सम्मिलित करना चाहते थे ।परन्तु उनका यह प्रयास सफलतापूर्वक मन की मन का विचार के विरुद्ध था ।यही बहुसंख्यक है ।जिन्होंने कबीरपंथ को साथ देकर माधव को ये बड़े भाई दत्ता की का पालन और बन्दी होते हुये भी सिर काटकर कबीरपंथ को ठेंट किया था । महाराज ने हिन्दु मुसलमानों में भारतीय एकता और सद्भावना उत्पन्न करने के प्रयत्न किये परन्तु विदेशी तुर्क मुगलादि सदा बाधा डालते रहे । फिर भी अनेक मुसलमान माधव की ने आदर्शों के बहुत पोषक थे- जैसे तानसेन माधव रागेश्वरी । रागेश्वरी ने तो तालसेन की लड़ाई के पहले माधव को से अन्य और प्रसाद तक लिया था । माधव की हिन्दू और मराठी दोनों में कविता भी करते थे । गन्धार बेगम इनके दोनों का भी माधव करती थी। गन्धार बेगम बलाहर सिंह की बेहद चाहती थी उन दोनों ने परस्पर निश्चय कर लिया था कि जब आपसे में आ रही हो तब मार्ग में धावा मारकर बलाहर सिंह उसे अपने साथ ले जावे परन्तु बलाहर सिंह के पिता भरतपुर नरेश सूरजमल को पहले ही मालुम हो गया ।गन्धार बलाहर सिंह के साथ न जा सकी ।

गन्धार बेगम का देहान्त सन 1775 में हुआ था आज कल गन्धार बेगम उसकी कब्र पर हुआ है । वह ग्वालियर से उत्तर पश्चिम में 11-12 मील की दूरी पर मुरारबाद स्टेशन के निकट है उसके दुखी जीवन का भी पता लगता है वर्मा जी ने इस उपन्यास में उस काल के चित्रण का प्रयत्न किया है कुछ तथ्य थोड़े बढ़ने और घटाकर है परन्तु वर्मा जी ने कुछ समझ करने का प्रयत्न किया है ।

टूटे कंटि

टूटे कंटि उपन्यास में मुहम्मदशाह दिल्ली के बादशाह , नादिरशाह और मोहन रोनी तथा गुरबाई तथा सोता का वर्णन है । दिल्ली का बादशाह मुहम्मदशाह किस प्रकार ऐश आराम में डूबा हुआ था । उसके यहाँ अनेक वेश्याएँ थी तथा मुल्यवान भेंट होते रहते थे और बीमती तख्ताऊस था । अमीरों की आक्रमण करता रहता था ।मुहम्मद शाह की तत्कालीन राजनीतिक स्थिति का दिग्दर्शन तो इस उपन्यास में होता है साथ ही गुरबाई के चरित्र के ऊपर दृष्टिपात भी किया है ।

गुरबाई फारसी की गजले गाती थी उसे सुरदास ,नन्ददास और रसखान के पद बहुत प्रिय थे । वह पहले नवाबों की महफिल में थी वह थोड़े समयबाद मुहम्मदशाह के दरबार में बहुत गई । कालचुर तोकरी के पास का निवासी जिसकी पत्नी रोनी थी और भाई सोता था पत्नी के कर्कश स्वभाव के कारण घर से भाग कर फौज में भरती हो गया और दिल्ली पहुच गया । वहाँ वह रात की छिपुटी पर था । मुहम्मदशाह को नादिरशाह ने कर्नल के पास भाग मर्दित कर दिया नादिरशाह ने मुहम्मद शाह से अपने सब तरह के नुकसान के बदले बीस करोड़ रुपये चाहे । दिल्ली में जमा हुआ और प्रलय मचा दी । वहाँ नादिरशाह की सेना ने बहुत नुकसान किया ।

गुरबाई जैसी रूपवती थी वैसी ही कलावन्त थी ,मुहम्मदशाह ने गुरबाई को नादिरशाह को भेंट किया। परन्तु गुरबाई मोहन सिपाही के साथ एक दासी की सहायता से रात में भाग निकली ।उसके पास एक सोने का हार था जिसमें हीरे जवाहरात जड़े थे । उसमें से कुछ भागने के समय सिपाही आदि को दिये शेष को वह अपनी कमर में बांध ले गई ।रास्तों में कपड़ों में रख लिये । मार्ग में वे एक गाँव के पहाँ रुके जो रात में लूट मार

भी करते थे । उस बाट के वहाँ के लोगों को बकावटहो गया कि इनके पास धन है । मुरबाई ने मोहन से कहा कि यहाँ से कहीं अन्यत्र ब्रज क्षेत्र में चलो। कन्नी को मुरबाई के नहाते समय पाटनी ने देख लिया था और उसे आभास हो गया था कि इनमें आभूषण हैं । मोहन ने मुरबाई के परामर्श से एक गाड़ी किराये पर मथुरा जाने के लिये की और दोनों उसमें चल दिये।परन्तु गाड़ीवान ने चलने में विलम्ब कर दिया।रास्ते में कुछ अँधेरा होने पर डाकुओं ने उन्हें लूट लिया । मोहन के सिर पर पाटियाँ मारी परन्तु मुरबाई ने बड़ी चतुराई से उसे बचा लिया और कहा कि यह मेवर सब ले जाओ। कुछ उनको तरक देकर दिया और फिर भी कुछ बचा लिया । वे पास ही एक गाँव में ठहरे वहाँ एक व्यक्ति ने उन्हें पूआ दिया तथा प्याज तैलने व बाँधने को दी । इसके बाद प्रातः वे फिर मथुरा जाने के लिये चल दिये और वहाँ एक पंडा के यहाँ डाली घर में रुके ।

नादिरशाह लगभग करोड़ रुपये से अधिक लेकर दिल्ली से रवाना हुआ। चार हजार दासियाँ तथा कारीगर, बढ़ई संगतराश आदि को भी साथ ले गया ।

मोहन की पत्नी ने महत्वाकांक्षा के वशीभूत हो तोता का धन संग्रह करने और लूट मार करने के लिये प्रेरित किया । तोता और रोमी भी ब्रज क्षेत्र ब्रज की तीर्थ करने की दृष्टि से चल दिये । वहाँ पर उनकी भेंट मोहन और मुरबाई से हो गई ।

मुरबाई ने ब्रज में सब कुछ पा लिया उसे कुन्जों में आनन्द आने लगा । वह पूजा करती और भगवान कृष्ण के भजन गाती । उसका ध्यान था कि उसने मोहन को पा लिया । वह ईश्वर नहीं पाना चाहती थी क्योंकि ब्रज का आनन्द वहाँ कहाँ ।अपना डेरा नहीं छोड़ना चाहती थी । मुरबाई ने स्वयंमेव कहा कि क्या अति देखी आज। तथापि कन्हैया मन्दिरों को छोड़कर

वहाँ चला जाता है । एक बार कोई उसको उसकी ही दुनाई है तो वह थोड़े घूमने लगता है । आज तो कुछ देखा । तब देखा । मेरे प्यारे मोहन तुमने ही यह सब करामात दिखलाई ।" वह कुछ सोच रही थी मोहन ने उल्लास के साथ पूछा कि गोपी क्या सोच रही है? मुरलाई ने उत्तर दिया "यही कि काम और क्रोध को छोड़कर आगे क्रम और क्रमशः में न पड़ो ।" आपकी प्रभुराय के सामने किसी भी अत्याचारी की नहीं चल सकती ।"कोई महल सजाता है कोई मन्दिर को सजाता है पर मन को सजाये बिना काम नहीं चल सकता"हमें वह देगा जो सबको देता है अगर उसने कोई माँगे तो " । मोहन ने उसने कहा कि "सेवा अपने मन से और पसीने से तैयार करो ।क्ष सोने से तैयार की हुई सेवा कभी क्रम की रक्षा न कर सकेगी ।" मुरलाई ने महाराज सोने के उस टुकड़े को पूरे बल के साथ गहरी धार में फेंक दिया। दुःख से वह टुकड़ा वहीं समा गया ।" वहीं कुंजों में वह आनन्द लेती रही।

-: मुगलानी :-

मुगलानी में वर्मा जी की अन्यतम कला का चरम विकास दिखाई देता है। पन्द्रहवीं शती के अन्तिम चरण में धर्म,संस्कृति तथा आचरण ने भी न जो मुगल काल की विशेषताओं को मुखरित कर दिया था।वर्माजी ने इस युग के जन-जीवन सामन्त जीवन पुरोहित,पुजारी तथा मुल्ला मौलवियों के जीवन के सुन्दर चित्र प्रस्तुत किये हैं। जन-जीवन का पक्ष,सन्त तोरन है जो बड़ा उज्ज्वल है।राष्ट्रीय भाव से चित्रण में जनजीवन का स्वरूप चित्रित हुआ है। आपने सम्पूर्ण सामन्त जीवन की अपूर्व झाँकी प्रस्तुत की है। मुसलमान सामन्तों के तीन प्रमुख वर्गों ; एक अपनी मुगल और धर्मांध में मुल्ला का मुगल अर्धसैनिकऔर तीसरा पिछाड़ में मुगल था ; पहली-सिकन्दर लोदी तथा नसीरुद्दीन,फतिरुद्दीन के रूप में क्रमशः इन्हीं तीनों वर्गों का प्रतिनिधित्व हुआ है। हिन्दू सामन्तों के दो वर्गों ; एक वीर तथा तेजस्वी और दूसरा आदर्श सामन्त के रूप में आया है। वीर वर्ग चारण -विज्ञान और वैश-मर्यादा की रक्षा करता था। राणासिंह जी वर्ग का प्रतिनिधि है। इनमें विलास का अभाव था ; आदर्श सामन्त वीरता के साथ कर्तव्यपरायणता और उदारता है, भाव सिंह इसी आदर्श राजपूत सामन्त का प्रतिनिधि है। राजपूत नारी अपनी सम्पूर्ण लोकलाज से लिपट कर आत्मोत्सर्ग को जीवन का अन्तिम सत्य मानती है।

जन और सामन्त जीवन दोनों के साथ ही साथ ही सर्वाधिक पुजारी पुरोहित तथा मुल्ला मौलवियों का जीवन था ; मुल्ला मौलवियों की धार्मिक दृष्टि-संकीर्ण थी। हिन्दुओं के प्रति इनमें विद्वेष था। ये आत्मा को पवित्र नहीं करते थे अपितु प्रभाव मुसलमान सामन्तों पर था,पुजारी पुरोहित मुगल सैनिकों के कारण धर्मव्यवस्था की रक्षा के लिए आवश्यकता से अधिक सजग हो गये थे। ये पुरोहित जीवन मुक्ति संकीर्ण और प्रतिक्रियावादी थे। हिन्दू धर्म तथा मुगल और आदर्श धर्म का इनमें अभाव नहीं था ; मोक्ष के जीवन में यही तत्व उपस्थित हुआ है। चित्रण कला के व्यापकता में उन्होंने दक्षिण के विजयपत सैन्यसंघटन के विशुद्ध मानवता की भूमि पर प्रतिष्ठित किया है ।

वर्मा जी ने इस अन्यतम मेघुल चेतना की पृष्ठभूमि पर मुगलानी के व्यापक तत्व की प्रतिष्ठा की है। मुगल की उदारता,धर्मान्धता,संकीर्णता आदि और धारणा के अलग मुस्लिमकालीन पात्रियों का चित्रण किया है। मुगलानी में

बुन्देलखण्ड की पर्वतमालाओं की अजस्रधारा, नदियों की तरलता और गति प्रवाह, तथा धरातल की सरसता साकार हुई है। इनमें व्यक्तियों के बीच सुख की प्रेरणा मिलती है। कुमुदनी के व्यक्तित्व में रहस्य और सौंदर्य तथा कुमुदनी का रहस्य का चित्रण है। नारी और जल के रूप में बुन्देलखण्ड की भूमि अपनी कुछ तरलता और स्नेहमयता भेद का व्यक्तित्व की रक्षा में अपने आपको मिटा देती है। कुमुदनी के व्यक्तित्व मानसिंह के चरित्र को निखारता है। मानसिंह के चरित्र में शौर्य, उदारता, सौन्दर्यबोध, और प्रगति है। वह अनन्य के लिए सतत प्रयत्नशील है। और प्रसन्न करता है, "कर्तव्यवादी क्रम में आज जीवन की धार रह गयी है। देवी, आज शिव के चरित्र में व्यक्तित्व प्रतिष्ठित नहीं है। संकीर्णता नहीं है। चातुर्य नहीं है, और प्रतिक्रिया नहीं है। इस अध्ययन पर विचार करते हुए कुछ आलोचकों ने यह आरोप लगाया है कि," उपन्यासकारों की ने लोकप्रिय संस्कृति के रूपों को मोहक रूप में आकर्षित का प्रयत्न किया है जो पाठक को व्यामोह में डाल दे तथा दे अवाक ।

कुमुदनी उपन्यास का मुख्य उद्देश्य कुमुदनी के चरित्र को उजागर करना है।

सुवन विक्रम

सुवन विक्रम का कथानक अयोध्या राज्य एवं कुरु धौम्य से सम्बन्धित है । अयोध्या राज्य के राजा रोमक थे । वहाँ वर्षा नहीं हुई । राजा रोमक ने यज्ञ बन्द करा दी । बहुत से यज्ञ किये उनकी सारी सामग्री कुंठी परन्तु फिर भी वर्षा नहीं हुई और अनेक प्रजा के व्यक्ति छोड़ छोड़ कर बाहर देशाटन के लिये चले गये । उन्हीं बाहर जाने वालों में गौरी और उसके माता पिता थे । नैमिषारण्य के पास धौम्य खेड़ा में नौकरी करके गौरी के माता पिता ने वर्षों की ने की थी ।

हिमानी नील की पुत्री थी । सुवन रोमक का पुत्र था । सुवन ने खेल में हिमानी के कोड़े लगाये । रोमक ने आचार्य मेधा का अपमान भी किया । इसलिये हिमानी ने मन्दिर में बदला लेने की ठानी ।ये आचार्य मेधा की अपमान का बदला लेना चाहते थे । फसल न होने के कारण प्रजा रोमक से असंतुष्ट हो गई । मेधा ने चालाकी से प्रजा को राजा के खिलाफ बहका कर राजा को अपदस्थ करवा दिया और राजा रोमक दूसरे अपने मकान में रहने लगा । रोमक ने सुवन को धौम्य बनाने के लिये क्योंकि वह उदण्ड और दूर था अध्ययन करने के लिये नैमिषारण्य आश्रम में महर्षि धौम्य के पास भेज दिया। वहाँ धौम्य ने सुवन को अनेक प्रकार की शिक्षायें दी और प्रात धौम्य खेड़ा में जाकर गौवें मुँगकर लाने और फल फूल बीन कर लाने का आदेश दिया । धौम्य ने बड़े परिश्रम और हृदयुक्त चित्त से गुरु के आदेशों का पालन किया। वहीं एक टीले पर बैठा था कि गौरी को देखा । वह सुन्दर थी । गौरी भी सुवन से प्रेम करने लगी । एक दिन वह शिक्षा के लिये सुवन गया तो गौरी के साथ से साथ बिछड़ गया । उसके माता पिता ने देख लिया । उन्होंने सुवन से कहा हम गरीब ब्राह्मण है परन्तु धौम्य ने गौरी के साथ विवाह करने की स्वीकृति दी।

वहीं पर भीष्म कुल के आदर्श ,कर्पिंजल , वेद, कल्क आदि शिष्य थे ।

रोमक भीष्म ऋषि के आश्रम गया । वहाँ भीष्म ने कहा जितना संग्रह गुरु से उसने अपने राज्य के सुख की बात की । भीष्म ने कहा जितना संग्रह करो उससे अधिक बाँटो । वहाँ काकी आँधी हुई और रोमक को रुकना पड़ा। वहीं समाचार मिल गया कि अयोध्या में भी काकी आँधी हो गई है । जो व्यक्ति सुख के कारण अयोध्या छोड़कर बाहर चले गये थे वे लौटने लगे । खेती करने लगे । रोमक ने अपनी जमीन गरीबों को बाँटनी शुरू कर दी और अन्न आदि भी बाँटना शुरू कर दिया । प्रजाजन उससे फिर प्रसन्न हो गये ।

गौरी के माता पिता भी गौरी को और अपनी गायों व घोड़ों से सामान को लेकर अयोध्या अपने घर लौटने लगे । बीच में छोटा सा गाँव पड़ा । वहाँ छोटी नदी को पारकरने के लिये ग्रामवासियों ने मना किया परन्तु गौरी के पिता नहीं माने । पानी से निकल रहे थे कि पानी की बाढ़ आ गई और उनकी गायें बह गई । गौरी के माता पिता भी बह गये ।गौरी एक पेड़ की शाखा को पकड़ने के कारण बच गई । ग्राम वालों ने उसे सान्त्वना दी तथा सचेत किया । फिर एक ग्रामवासी गौरी के हट करने पर अयोध्या छोड़ गया। जब घर आई तो घर खंडहर हो गया था एक छोटी कोठरी बची थी , सोचा नौकरी कर लूँगी । नौकरी करने के लिये वह हिमानी के पास चली गई उसने अपनी सेवा में रख लिया और नाम रेवती रखा ।

रोमक ने जब बहुत सारा बाँट दिया और कुछ न रह गया तो नील की पुत्री हिमानी के साथ विवाह के सुमन के साथ प्रस्ताव को स्वीकार कर लिया । सुमन यद्यपि उसकी दूर प्रवृत्ति के कारण विवाह नहीं करना चाहता था परन्तु वह सोचता था गौरवी भी जल में बह गई है । नील ने कहा वह कुछ धन पहले ही भेज देगा और शेष विवाह के समय दे देगा। फिर जब सुमन

कर देर की जावेगा । दीर्घायु के साथ विवाह सम्पन्न हो जावेगा । इस अवसर के सम्बन्ध में गौरी तथा कपिंजल ने भुवन को सूचना दे दी । भुवन ने कुछ बाह्मणों ने कुछ की और व्याव की पूरी तैयारी कर ली तथा बरात में घोड़ा भी साथ ले लिये । बरात की अगवानी और स्वागत हुआ। परन्तु आचार्य मेध ने कहा कि पहले वाक्षेत्र की पूजा होगी। ऐसा नियम है और मंदिर में कोई और नहीं जावेगा । उधर हिमानी ने एक दूती स्वर्ण की और दूसरी गौरी को भी दे दी । उसने गौरी से कहा पहला वार में कभी फिर तुम सहायता करोगी तथा दूसरा वार करोगी । जब मन्दिर में भुवन गया तो। वहाँ उसके कुछ भाई भी तैयारी के साथ थे । वैसे ही हिमानी वार करना चाहती थी कि गौरी ने धक्का दे दिया और भुवन बच गया । भुवन के साथियों ने हिमानी के सखियों तथा आचार्य मेध आदि को पकड़ लिया। स्नातक होने के समय पराक्रम और पुरुषार्थ के कारण आचार्य सौम्य ने भुवन को भुवन विक्रम के नाम से विभूषित किया था । भुवन का विवाह गौरी के साथ हो गया और राजा रोमक को भी फिर राजा बना दिया गया ।

भुवन विक्रम की कथा क्षीण है इस उपन्यास में वर्मा जी ने अनेक सदुपदेश तथा धर्म और दर्शन की व्याख्याएँ दी है । अनेक विचार प्रस्तुत किये है । ये सब विचार एवं उपदेश प्रमुखतः आचार्य सौम्य मुनि के द्वारा दिये गये है । कथा अयोध्या के उजाड़ और फिर अयोध्या की बसावटी से सम्बन्धित है ।

-: अहिल्याबाई :-

अहिल्याबाई सरदार प्रसिद्ध सूबेदार मल्हारराव होलकर के पुत्र खण्डेराव की पत्नी थी । उनका जन्म सन 1727 में हुआ था और देहान्त 13.8.1795 को । उस दिन तिथि भाद्रपद कृष्णा चतुर्दशी थी ।

अहिल्याबाई किसी बड़े भारी राज्य की रानी नहीं थी । उनका कार्य क्षेत्र सीमित था। उन्होंने जो कुछ किया आश्चर्यजनक है। उस समय शासन और व्यवस्था के नाम पर और अत्याचार हो रहे थे, प्रजाजन साधारण दुःख थे ,किसान, मजदूर अत्यंत हीन अवस्था में जीवन रहे थे, उनका शोषण सहारा धर्म-सम्प्रदाय विद्यालों मन्दिरों और क्रियों की आड़ में किया जा रहा था । न्याय में न अडिग रहती थी न दिखाई । ऐसे काल की उन विकट परिस्थितियों में अहिल्याबाई ने जो कुछ किया वह बहुत किया ।

वह बारह वर्ष की आयु में उनका विवाह हुआ । उन्नीस वर्ष की अवस्था में विधवा हो गयी । पति का व्यवहार कैसा और क्या था । यह तो उन्होंने सहा, फिर वह 42-43 वर्ष की थी, पुत्र मालेराव का देहान्त हो गया। अहिल्याबाई की आयु 62 वर्ष के लगभग थी दौहित्र नत्थू चल बसा । चार वर्ष पीछे सामान्य सहित राय पक्ष ने न रहा और उनकी पुत्री मुक्ताबाई सती हो गयी । पुत्र के तत्पश्चात तुकोजी होलकर के पुत्र मल्हारराव पर उनका स्नेह था। सोचती थी कि इनके सहारे यही शासन, व्यवस्था और परिवारिक की ओर सम्पादन पर वह अंत तक उन्हें कुछ देता रहा जिसका अपेक्षाकृत पीड़ा का वर्णन उपन्यास में आया है ।[1]

अहिल्याबाई ने अपने राज्य की सीमाओं के बाहर भारतवर्ष के प्रसिद्ध तीर्थ और स्थानों में मंदिर बनवाये घाट बंधवाये, धर्मशालाओं का निर्माण किया। मार्ग बनवाये पुलों के लिए अन्न दान दिये, प्यासों के लिए प्याऊ बिठवाई , मंदिरों में विद्वानों की नियुक्ति आज्ञा के अनुसार

1-अहिल्याबाई पृष्ठ-2 वृन्दावनलाल वर्मा ।

-चिन्ता और प्रदर्शन हेतु की । और आज प्रतिष्ठा के प्रति मोह का त्याग करके तथा न्याय करने का प्रयत्न करती रही, यहाँ तक कि, ये उसी परम्परा में थी जिसमें उनके समकालीन पुत्र के न्यायाधीश राम शास्त्री थे और उनके पोते काँती की रानी लक्ष्मीबाई हुई।[1]

उन्हीं कारण अपने जीवन काल में ही देवी कहने और कहने लगे थे, जनता में इतना बड़ा व्यक्तित्व अपनी आँखों से नहीं देखा था, इन्दौर में प्रतिवर्ष भाद्रपद कृष्णा-चतुर्दशी के दिन अहिल्योत्सव बड़ा धूमधाम से मनाया जाता है । श्रेष्ठी पुस्तकों में अहिल्याबाई की सादगी, सौन्दर्य और धर्म परायणता की भूरि-भूरि प्रशंसा हुई है । अहिल्याबाई देवी से बढ़कर मानव थी । जीवन का केवल इतने बड़े साम्राज्य की अपने देवता पर अटल रख तथा सोचा। उन्होंने सुख में चिन्ता पढ़ा, बड़ी होने पर चिन्ता देखा और सुना । चिन्ता वातावरण ने वह पिछली हुई थी जिन पुर्वाग्रहों में वह बंधी हुई थी उनके और बढ़ता गया उठती रही । अहिल्याबाई के सम्बन्ध में दो प्रकार की विचारधारायें रही है । एक में उनकी देवी का अलंकार की पहचान दी गयी है। दूसरी में उनके अतिरिक्त गुणों के साथ अन्य विशेषताओं और कमियों केवल पढ़ा जो भी प्रकट किया है । दुन्दालाल नाम वर्मा उस दोनों की प्रकार विरुद्ध मानते हैं। जिसे दोनों बार बार प्रकाशे की चेष्टा करता रहता रहा है। इस अध्याय का मुख्य उद्देश्य अहिल्याबाई के चरित्र पर प्रकाश डालना है ।

1- अहिल्याबाई पृष्ठ- 2 दुन्दालाल नाम वर्मा ।

गढ़ कुण्डार

गढ़ कुण्डार उपन्यास में नारी स्वातन्त्र की समस्या का जहाँ तक सम्बन्ध है अन्तर्जातीय विवाह का समर्थन किया है । हेमवती राजपूत नारी है उसका विवाह कुण्डार के राजकुमार नाग के साथ कराने की योजना है जो कुँवार है । नाग हेमवती के सौन्दर्य को देख मुग्ध हो जाता है और उसी के कारण युद्ध होता है तथा अग्निदत्त अपना प्रतिशोध लेता है । तारा भी प्रमुख पात्र है जो व्रत करती है और नित्य प्रतिदिन कनेर के पुष्प देवी पर चढ़ाती है जिससे उसे मनवाँछित वर की प्राप्ति हो जावे । दिवाकर उसके सौन्दर्य पर मुग्ध है । परन्तु तारा वीर भी है,साहसी भी है और दिवाकर को कारावास गृह में उतर कर उसे लोटा फेंकवाकर जल पिलाती है तथा उसको बचा लेती है क्योंकि जल के अभाव में उसके प्राण ही निकलने वाले थे । वह असि विद्या, और तीर विद्या भी जानती है तथा निडर है । नारी को किस प्रकार अपनी सुरक्षार्थ वीर होना चाहिये यह बात नारी जाति को प्रबल प्रोत्साहन देती है । वह सम्पन्न घराने की नारी की भाँति केवल सौन्दर्य वर्द्धन में ही अपना समय व्यतीत करना नहीं चाहती है । अपनी सुरक्षा हेतु वे कटार भी रखती है । घोड़े पर सवारी करने में भी पटु है । इस प्रकार गढ़ कुण्डार की नारी वीर नारी है । अन्तर्जातीय विवाह और वर्णाश्रम व्यवस्था तोड़कर विवाह करने की बात इस उपन्यास का नारी स्वातन्त्रता की दृष्टि से प्रमुख विषय है ।

गढ़- कुण्डार

==========

गढ़ कुण्डार में बताया है कि किस प्रकार अंगार राज्य का पतन हुआ और बुन्देले राजपूतों ने उसके अपने अधिकार में कर लिया तथा फिर आस पास के छोटे छोटे गढ़ों को भी अपने आधिपत्य में कर लिया तथा उनकी कीर्ति बढ़ी और फैल गई। हुरमत सिंह कुण्डार का राजा है और नागदेव उस का पुत्र था। नागदेव तोरन पाल की सुन्दरी हेमवती के सौन्दर्य को देखकर उसके साथ अन्तर्जातीय विवाह करने को उत्सुक है। उस समय छोटे छोटे राज्य भारत वर्ष में फैले हुये थे। मुसलमान आक्रमण करते थे और लूटते थे। बहुत से राजघराने शांति स्थापित करने के कारण दिल्ली दरबार से संन्धि कर लेते थे।

अग्निदत्त की बहिन तारा भी सुन्दरी थी। तारा मनोवांछित वर की प्राप्ति हेतु व्रत रखती है और देवी पर अंगूर के कुण्ड चढ़ाती है। खिलावन तारा के सौन्दर्य तथा साहस को देखकर उस पर मुग्ध है और उसको प्राप्त करना चाहता है। तारा भी एक दिन अंगूर और फूलों की माला में मेरे देख कर और लिखकर डाल देती है और खिलावन उसे पढ़ लेता है।

अग्निदत्त मानवती को प्रेम करता है। इस प्रकार इस उपन्यास में तीन प्रेमी युगल है। उपन्यास में एक ओर धुव कुमार, लिलार कुमार है और दूसरी ओर कुंवर कुमार है। अंगार राजा हुरमत सिंह ने कहला भेजा कि अंगार रेशिरियाव से हेमवती का विवाह मान ले तो जायेगा। बुन्देलों ने बात मानली की कि अंगारों की मदिरा कूप चिलाई जाये उसके बाद मांस खिलाया जाये। अंगार मदिरा पीकर मस्त हो जाते है उसी समय बुन्देले राजपूत आक्रमण उनके ऊपर कर देते है और कुण्डार को अपने अधिकार में कर लेते है।

अग्निदत्त प्रतिशोध की आग में जलता है और वही पुरी योजना आक्रमण की बनाता है परन्तु वह युद्ध करता हुआ उसमें मारा जाता है।

खिज्जर को बंदीगृह में डाल दिया जाता है। उसको वहाँ खाने और पानी की व्यवस्था की जाती है। परन्तु युद्ध में व्यस्तता के कारण और भागदौड़ के कारण उसके पास पानी और भोजन का अभाव हो जाता है। खिज्जर प्यासा होने के कारण और पानी न मिलने के कारण मूर्छित हो जाता है। तारा वहाँ से निकल रही थी। वह बन्दीगृह में देखती है और सुमाका को लेकर बंदीगृह में उतरती है। वहाँ वह खिज्जर पानी माँगता है। वह वहाँ पानी न देकर लोटा लेकर ऊपर आती है और पानी भरकर नीचे उतरती है तथा जब पानी पिलाती है तो खिज्जर होश में आ जाता है। खिज्जर कहता है कि हमारा संयोग उधर है। दर्गाह की दीवारें हमको रोक नहीं सकती। दोनों घोड़े पर बैठकर नदी की ओर चले गये।

हुन्डार को अधिकार में करने के बाद लोहनवाल का राज्याभिषेक हुआ और शीघ्र ही देवसी का विवाह पृथ्वपाल के साथ हो गया। धीरे धीरे वह युवा था। खिज्जर का कुछ पता नहीं लगा। इसलिये पृथ्वपाल और उसका भाई राज्य के मंत्री नियुक्त किये गये। स्वामी अनन्तानन्द का कुछ पता नहीं लगा। किसुदत्त कुछ दिनों अपनी संपत्ति की रक्षा करके परलोक वासी हुये। अग्निदत्त की मृत्यु का ज्ञान उसको शीघ्र मालूम हो गया था। मरने के पहले किसुदत्त ने एक लवाराय को गोद ले लिया था इसलिये उसका वंश नष्ट नहीं हुआ मृत्यु के पूर्व उस को राज्य से सम्मान भी प्राप्त हुआ। लोहनवाल ने उसको कोषाध्यक्ष बना लिया था। टूटी फूटी अवस्था में आज भी वहाँ की खोली हुन्डार के अन्दरूनी में बनी हुई है। कहते है अनेक हैमार उसी बालक की संतान है जो राजकुमार का पुत्र था। हैमार राज्यकाल में उनका जो सामाजिक स्थान था उससे वे बहुत दूर जा पड़े।

बुन्देलों ने उस पहाड़ी के नीचे विन्ध्य वासिनी देवी का मन्दिर बनवाया , वहाँ से कुछ दूरी पर देवगढ़ी में बुन्देला-नृ अंगार संग्राम विजित हुआ से देखा था । कोई कोई अंगार कहते हैं कि यह मन्दिर अंगारों की विन्ध्यवासिनी देवी का है बुन्देलों ने दूसरा नाम कर लिया है ।कुन्डार को अधिकार में कर लेने के बाद से बुन्देलों की कुल पाटी पर ये शब्द लिखे जाने लगे "विन्ध्यो हुर्मिः" अर्थात देवी को अपनी कुंद, तय करते हुये चढ़ाने वाला बुन्देला ही यह कुन्डार का स्वामी हुआ ।

....

चित्रलेखा की पटरानी

चित्रलेखा की पटरानी एक ऐतिहासिक रोमांस है जिसे ऐतिहासिक वातावरण की सीमा पर लिखा है। यह कथा काल है। इसमें अनेक अनेक तथ्यों में घटित घटनाओं को परस्पर समन्वय करके एक साथ रख दिया है। ये घटनायें इतिहास प्रसिद्ध न होकर लोक परम्पराओं में प्रचलित है। आचार्य चन्द्र तिवारी का कथन है कि,"युग काल की निर्बलता ,सामन्त राजाओं की स्वेच्छाचारिता, राजपूत राजाओं का विलास,वीर वीरता,कलाओं की लोकप्रियता,राजपूत नारियों का उत्साह,दरबारियों की चाटुकारी तथा जनता की स्वतंत्रप्रियता,"चित्रलेखा की पटरानी में का सभी कुछ साकार हो गया है। [1] कुछ व व्यक्तिगत कला मनोवृत्ति है। प्रेम का लक्ष्य तिरोहित न ये उसके व्यक्तित्व में होने की विशेषता है। वह प्रेम ने जीवन में सक्रियता का संचार होता है। और बलिदान की प्रेरणा मिलती है। कुंवर का उसके प्रति समर्पण और त्याग प्रधानतः सादृश्य है।

1-हिन्दी का गद्य साहित्य पृ०-330-33। आचार्य चन्द्र तिवारी ।

ललितादित्य

ललितादित्य ऐतिहासिक उपन्यास वर्मा जी ने सर्वमाती होने के एक वर्ष पूर्व आरम्भ होने पर भी पूर्ण किया । इस उपन्यास को लिखने में उन्हें काफी समय कश्मीरी (डोगरी) भाषा, संस्कृति का गहन अध्ययन-मनन करने में लगा वर्मा जी ने इसमें गहरे पैठने की कोशिश की है ।

ललितादित्य कश्मीर का राजा है । वह अपने राज्य की सुरक्षा करने में समर्थ है । उसकी रानी कमलावती है जो धार्मिक है, मंदिर निर्माण करवाने में सक्रिय सहायक है और अपने पति को प्रसन्न रखने की चेष्टा करती है। सुगन्धिका सुन्दरी प्रधान नारी है। जो सुन्दरी है और कला प्रेमी भी है। राजा ललितादित्य की वह प्रेरक सिद्ध होती है। और राजा के अन्तस में उसके लिए स्थान है । उसके कर स्पर्श से ही राजा को नयी स्फूर्ति उत्पन्न होती है। राजा सौम्य अपनी प्रजा के हितार्थ नहर, मंदिर आदि बनवाने में समर्थ अनेक कल्याणकारी योजनाओं को साकार रूप प्रदान करने में निमग्न है। वह किसी का अहित नहीं चाहता परन्तु मदिरा के प्रेम और प्रभाव में कुछ आज्ञा में अविवेक में दे जाता है जैसे कि वह राष्ट्रद्रोही को प्राण दण्ड दे देता है परन्तु बाद में पछताता है । वह मेहतरों को हटाकर उनकी जगह कमलेश्वर मंदिर बनवाने का निर्णय करता है परन्तु जब मेहतर उसके महल में आकर करते हैं कि हम अपने पुरखों की जगह को छोड़ नहीं छोड़ेंगे । यद्यपि वह उन्हें बहुत धन और अच्छे कल बनवाने की लालसा देता है, तो वह अपने निर्णय को बदल देता है और सोचता करता है कि उस स्थान पर मंदिर नहीं बनेगा वह अन्यत्र बनवा दिया जायेगा । निर्णय को बदलने और भूल किये पर पश्चात्ताप करने से प्रतीत होता है कि उसकी प्रवृत्ति सत्य है। महात्मा बतलाता है कि पूर्व जन्म में वह किसान का हल चलाने वाला नौकर था और एक महात्मा को प्यासे आये तो उसने अपनी रोटी का भाग और जल उन्हें दिया ।

सुगन्धिका सुन्दरी राजा को उसके खिलाफ हुए षड्यंत्र से अवगत कराती है, राजा जब विजय की कामना से सेना के साथ आगे बढ़ता है तो वह एक पत्र लिखकर उसके खिलाफ होने वाले षड्यंत्र से अवगत कराती है । वह राजा को पत्र लिखती है और राजा उसके पत्र को पढ़कर लौट आता है । इस

प्रकार वह राजा की हत्या करती है और उसे बना लेती है ।

एकाकार ने इस उपन्यास में आसुरी शक्तियों पर दैवी शक्तियों की विजय है । सात्विक और क्रूरमान आदि सम्प्रदायों को इसमें उल्लेख है । इसमें पात्रों का अधिक नहीं है । मंदिर की मूर्ति को पीसकर उसे नष्ट भ्रष्ट कराकर राजा ने अहंकार का खण्डन करवाया है। नंदन,वसुरा, प्रधानमंत्री, सुमीत, भिन्न शर्मा, आदि अन्य प्रमुख पात्र है । यह उपन्यास प्रायः मुख्य धर्मप्रधान है । राजा दीन ने अमीर की रक्षा करते हुए अंत में अपने किया कलापों पर पश्चात्ताप करते हुए अपने लेकर जाता है । और समाधि ले लेता है । परन्तु जब लोग उसकी भस्म को गंगा जल में समर्पित करने के लिए भस्म लेने जाते है तो वहाँ कुछ नहीं मिलता । और लोग कहने लगते है कि महाराजयोगी हो गये है ।

शीर्षक-कथा

वर्मा जी के शीर्षक और कथा उपन्यास में आजीवन के हजारों बन्धनों के सौंदर्य और केवल कल्याण के आदर्शवाद का वर्णन है। लाइट,शैल्ट, और प्रतिमा कहाँ प्रमुख पात्र है । मदनवर्मा जी की कीर्तिलिप्सा और विलास प्रिय का वर्णन है। पूरा व्यापार सुन्दरीकरण से सम्बन्ध रखता है। प्रतिमा की कला के प्रति आस्था दर्शायी गयी है। वह सुख और कला में पारंगत है। कला एक सुन्दरी का जीवन यापन कर रही है। वह किस प्रकार से प्रेम की प्रेरणा देती है। इसका वर्णन दिखाया गया है। इसमें बताया है कि सौंदर्य हमारे यहाँ का अद्वितीय है और आपस की फूट भी बेजोड़ितनी हमारे देश में है । आप कहीं न होगी । पन्थोंने ने जनता के अधिकार के और धर्म के लिए जो कुछ किया दिखाई कर रहे है, वह अनुकरणीय है। यूनानी के सम्राट को हमारे देश का कोई अनुभव राजा पराजित नहीं कर सका । केवल सन्देश सुनाए दिखलाकर ने ही उसे घबराया, और डराया । उन्होंने यदि निर्धन हो गये होंगे तो विद्वेषियों का साथ दो और उन्हें मार भगाने की शक्ति आपमें कोई नहीं है। मदन वर्मा ने अपनी रक्षा-योजना को सफल बनाने में बहुत सावधानी बर्ती । सेना को छोटे-छोटे चार दलों में विभक्त किया ।

उन्होंने इसमें धार्मिक कथाओं की व्याख्या की है । साम्राज्यों के पंजा मलाव मदन मदन मदन मदन मदन,सुधा और मैत्री की बड़ी सुन्दर व्याख्या की है। उनका कथन है कि ईश्वर एक है,अपनी इच्छा और भक्ति के अनुसार जो जिस रूप को अपने हृदय में बिठाया लेता है वह उसके द्वारा पार हो जाता है। उनका कथन है कि बोध तीन प्रकार के है, मन्त्रबोध सत्यबोध,और रसबोध, । सत्य की बात है ज्ञान का केन्द्रित करना। सन्तों ने ये सब कथाएँ की सत्यता का अधिकार है। इसे कर्तव्य पालन कर सभी के प्रति सत्य का भाव बनाना चाहिए ।

यह उपन्यास पूर्ण ऐतिहासिक उपन्यास है। मगध एक लघु सम्पन्नशाली सेवाधारी अधिकारियों मगधवर्ष देश की सेना के साथ है। ईश्वर की सैदानी देश से

[illegible] । [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] । [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] । [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] । [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] । [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] । [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible]

-: देलवाड़ा की पुकार :-

"देलवाड़ा की पुकार" पुस्तक लाल वर्मा का ऐतिहासिक अध्ययन है। इसमें देलवाड़ा का वर्णन है। देलवाड़ा के नीचे विष्णु मंदिर का जाय भी है। परन्तु उस युग में विक्रम संवत 1040 के लगभग तो यह मंदिर बड़ी ही सुन्दर शिल्पकला से निर्मित हुआ था। मंदिर के चारों ओर जाल परकोटा था। उसके बीचों बीच विष्णु का मंदिर लगभग छत्तीस हजार का बना था मंदिर अपनी स्थापत्य सौन्दर्य का अद्भुत उदाहरण रहा है। पुस्तकालीन आस्था का प्रतिनिधित्व करता है। देलवाड़ा में देवियों के मंदिर है। जैन धर्म ने बनाया है। जिनका अर्थ है वीतराग। जिसने अहंकार, क्रोध, मोह, लोभ, कैवल्य ज्ञान को अपने बीच से निकाल बाहर किया वह जिन हो जाता है। इस धर्म का पालन करने वाला जैन, चाहे वे कोई भी हो, जैसा कि जैन व्यक्ति चाहे वह हो चाहे नारी -मंदिर में बिना स्त्रीधर की भी सहायता के प्रवेश कर सकता है। जैन कहलाने लगता है। यह मानव बराबरी के है। जिसका कोई पोथी। अहिंसा मुख्यतः का अर्थ है। कायर का अर्थ है। यदि कोई जैन न भी हो तो उसे मानवी धर्म हो जायेगा। मानवी आदर्श ही धारण कर धर्म, शान्ति नाथ के मंदिर में प्रतिमा पद्मासन लगाये ध्यानस्थ है। वीतराग मुद्रा में ही हमारी तो पुस्तक तैयार की सारी बाधाओं, कठिनाईयों विपत्तियों, पतझड़ी अनुरागियों को शान्ति के साथ सुनती देने वाली पुस्तक अर्थात धर्मी की लहरों में धारण किये है। सुखी वह है जो सुखों को सुखी करते। वह जो परोपकार से शान्ति भाव करता है। उसके अंदर है जो सामुहिक लाभ करता है। पूरी आस्था और विश्वास के साथ जो आरम्भ करते है उनके लिए कुछ असंभव नहीं है।

देलवाड़ा का ऐसा ऐसा स्थान रम्य और चित्ताकर्षक है। देलवाड़ा नदी के किनारे किनारे दोनों ओर पहाड़ ऐसे प्रतीत हो रहा है। इस पहाड़ की चोटी-निकट घाटी है। नदी पहाड़ से उतरकर पश्चिम की ओर बह जाती है।

"यहाँ देखो -यहाँ प्रसन्न मूर्तियाँ, मंदिर, स्तम्भ, तोरण, अनुपम दीवारें, और अन्य अलंकरण सम्पन्न पूर्ण है। ये सब अपनी मूक और सजीव प्रेरणा द्वारा भिन्न विचार मुद्राओं में आध्यात्मिक जीवन की झाँकियों का उद्घाटन करते है। तीर्थंकर पार्श्वनाथ की विद्यालय मूर्तियाँ, अनगिनत अप्सरायें विचारते देवता मुद्रा आनन्द विभोर कर देती है। वहाँ चौहानरी, पद्मावती, ज्वालामालिनी, सरस्वती,

आदि जिन शासन की रक्षिका देवियाँ अपनी अ भिन्न-भिन्न मुद्राओं से मुख अंकुश व अभयों से सुशोभित बनाया दे रही हैं,ऐसा लगा।[1]

देवगढ़ पर्वत पर लगभग प्रसिद्ध जैन मंदिर है। इसकी स्थापत्य का कला भारतीय मात्र की अद्भुत देन है। एक मंदिर में हम दर्शकों ने भगवान तीर्थंकर की मात्र को लेती हुई व्यवस्थावस्था में लीन,निर्विकार अन्य मुद्रा में देखा।[2] इस अद्भुत आकृति ने राजा के भीतर आनन्द की हिलोरें दी । उसने पाँच । रानियों की आँखें भर आईं। मंदिर के चारों ओर एक लम्बा आठ,प्रतिमायें अंकित हैं। इसी आश्चर्यमुग्ध दशा पर मुग्ध होते हुए वे सब आगे बढ़े । राजा ने कहा-" यह है अपने आर्यावर्त का भारत का एक ऐसा जहाँ देवकला, शैल, शास्त्र,आरंभ तथा ने भाई भाई बनकर रहे आये हैं । कभी भी धर्म की कला को लेकर एक ने दूसरे को नहीं सताया ।[3]

देवगढ़ के एक अन्य मंदिर का वर्णन वर्मा जी ने इस प्रकार किया है "बढ़ते बढ़ते वे सब इस मंदिर में पहुँचे जिसमें जिन प्रतिमा पद्मासन लगाये ध्यानस्थ है। वीतराग मुद्रा में ही इसकी ही मुस्कान तैयार की सादी कायाओं,अलिखाओं पिछाड़ियों,मतवालों अनुरक्तियों को शान्ति के साथ मुस्कुराती देने वाली मुस्कान। मुक्तिमोक्ष प्रिया की स्थिति में । अति नासिकाग्र पर केन्द्रित ।[3]

1-देवगढ़ की मुस्कान पृष्ठ- 227 मुन्नालाल लाल वर्मा ।
2-देवगढ़ की मुस्कान पृष्ठ-228 मुन्नालाल लाल वर्मा ।
3-देवगढ़ की मुस्कान पृष्ठ-229 मुन्नालाल लाल वर्मा ।

रामगढ़ की रानी

मध्य प्रदेश के मण्डला जिले में रामगढ़ नाम का एक स्थान है वहाँ एक शूरवीर रानी जिसका नाम था अवन्तीबाई । वे लोधी ठाकुर थी । उनके दो बच्चे थे अमानसिंह और शेरसिंह ठाकुर जगत सिंह गढ़ेरा वाले पण्डित कन्धिय अहेरा वाले बड़े मालगुजार थे । जगत सिंह का मानना कि इन विदेशियों ने हमारे देश को लूटा , धरती माता की छाती पर पैर रौंदे रोजगार नष्ट किये अब धर्म की गर्दन काटने पर उतारू हैं। कन्धिय ने समर्थन किया एक दिन अवश्य आयेगा जब हम स्वतंत्र होकर रहेंगे । मुनीम ने भी कहा कि ये परदेशी हम सब को हिन्दू मुसलमान सबको मिटा देने पर तुले बैठे है । परन्तु सफल नहीं होंगे अपने देश का व्यापार चौपट करके इन्हें वापस भेजे फिरें ।

रामगढ़ तीन ओर से सोन नदी है । चौथी तरफ भी घनघटा जाल है । रानी अवन्तीबाई की आयु लगभग सत्ताईस के समक्ष होगी । किसान मजदूर यदि हमारे साथ रहे तो इन परदेशियों के दाँत खट्टे करने में रानी पर भी कसर नहीं लगेगी । रानी भी साथ देने का आश्वासन देती है । वह चतुर थी सेना एक दो बंदूकों से कुछ नहीं होगा अपनी सेना को तैयार करना होगा । उमराव सिंह का अंग्रेजी अफसरों ने अपमान किया लोग कुछ काकुछ न समझ बैठे इसलिये रानी ने पुड़ियाँ भेजी पुड़ियाँ के कागज पर लिखा था देश की रक्षा करने के लिये या तो कमर कसो या चूड़ी पहिनकर घर में बन्द हो जाओ तुम्हें धर्म ईमान की सौगन्ध है जो इस कागज का सही पता मेरी को दो ।"रानी ने उमराव सिंह से कहा कि लोगों को जगाने उठाने का यह काम सावधानी के साथ करना है अपने यहाँ परदेशियों के चिह्न भी कई है उमराव सिंह ने क्रान्ति की योजना का प्रसार किया । रानी को विश्वास था कि मण्डला का पूरा क्षेत्र उनका साथ देगा। रानी

शिकार जैसी साधारण जनता से मेल मेल रखती । रानी बड़ी सुंदर, चतुर और बहादुर थी । राजा रघुनाथशाह के पास कमरे में बरेठा के ठाकुर जगत सिंह राजपूत हुकरीवाँ के ठाकुर बहादुर सिंह गौड़ और कई मालगुजार रात दिन इकट्ठे होकर सलाह किया करते थे । रानी अवन्ती बाई दीन हीन किसानों की सहायता करती थी । वह अनेक किसानों को बिना ब्याज के रुपया देने लगे थे । रानी का सद्व्यवहार सारे इलाके में विदित हो गया छोटे बड़े सब उनके प्रति आदर के भाव से भर गये ।मंडलपुर मंडला, डोंडला ,नरसिंहपुर इत्यादि इलाकों की जनता इनके झंडे के नीचे आ गई कमिश्नर का चपरासी फकीर बन कर रघुनाथशाह और उनके लड़के रघुनाथ शाह से मिला था वे बगावत पर तुले हुये थे । सुबेदार बन्देलखिलारी का नाम भी उसने और से लिया । रघुनाथशाह और रघुनाथ शाह को तोप से उड़ा दिया गया ।बन्दियों पर आरोप लगाये गये कि उन्होंने सिपाहियों और जनता को बगावत करने के लिये भड़काया ।

रामगढ़ राज्य का विस्तार सुहागपुर अमरकंटक और कबीर चबूतरा तक था । शासन में रामगढ़ राज्य की स्थिति केवल मालगुजार जमींदार की रह गई थी । अवन्तीबाई तो इतनी जनप्रिय हो गई थी कि जनता उनके लिये अपना सिर दे देने पर तैयार थी । अवन्तीबाई ने छुटे शासन छुटा लिये थे तो अपार सुख थी । उनका और उनकी जनता का आत्म विश्वास प्रबल और सशक्त था । रानी ने कहा कि वह फिरंगियों के दांत खट्टे कर के ही मरेंगी । अवन्तीबाई ने घिरास थाने पर आक्रमण कर दिया। रानी ने वार्डिंगटन पर वार किया परन्तु एक सिपाही ने वार रोक लिया। रानी ने वार्डिंगटन के बच्चे को उसके पास वापिस भिजवा दिया फिर रानी ने रामगढ़ पहुंचकर घमासान युद्ध का निश्चय किया । वह सेना की कई

टुकड़ियाँ ले लेकर निकल पड़ी । वार्डिंगटन ने कहा की हिम्मत वाली औरत है । रामगढ़ इस हालत में उसे नहीं मिलना चाहिये वरना फिर से घेरा डालने में दिक्कत पड़ेगी । इसलिये महल बरकोटा पर कब्जा ले लिया । रानी को कहीं से किसी सहायता की आशा नहीं थी । उनके सिपाही बीहड़ करने के लिये मरने मारने के लिये तैयार थे । उमराव सिंह से तलवार लेकर रानी ने अपने पेट में भोंक ली । रानी की शूरवीरता की प्रशंसा की और पूछा कि ये निशान किसके भड़काने पर अपने साथ लगे । रानी ने स्पष्ट स्वर में कहा कि किसानों को सिवाय मेरे और किसी ने भी नहीं बहकाया भड़काया । ये बिल्कुल बेकसूर हैं । उनका कोई दोष नहीं । वार्डिंगटन ने उच्च वर्गीय हिन्दू सिपाहियों के हाथों रानी अवन्ती बाई के शव का दाह संस्कार करवाया । रानी अवन्ती बाई को समाधि नहीं बनवाई परन्तु वातावरण की उनकी वीरता की छाप अमिट है ।

-: महारानी दुर्गावती :-

दुर्गावती चन्देल वंशज थी । उनमें शौर्य पराक्रम,जनहित चिन्तन, कठिनाईयों को सामनेकर न हटाने का साहस भरा था । वे अकबर की एक नहीं सेना से लड़ी । मान्धु के राजबहादुर को उन्होंने कई लड़ाईयों में हराया कभी युद्धों का नेतृत्व उन्होंने स्वयं किया । अकबर की सेना के भी कई बार दाँत खट्टे कीये । अतीव वीरता के साथ लड़ते-लड़ते उन्होंने प्राण त्याग दिये । उनका जन्म महोबा जिला हमीरपुर में हुआ था । और वे विवाहित हुई कालिंजर जिला बांदा में अपने पिता के साथ रही थी । कालिंजर के राजा कीर्तिसिंह उनके पिता थे ।

दुर्गावती का सम्बन्ध एक ऐसे वीर के साथ तय हो गया परन्तु वह दुर्गावती को पसन्द नहीं आया और दुर्गावती अतीव सुन्दर थी । और गोंडवाने साम्राज्य सिंह अपनी सुन्दरता,वीरता, और सभ्यता के लिए विख्यात था । दुर्गावती ने उनके पास कालिंजर से गढ़ा आने का अवसर । वरण के लिए पत्र भेजा । वह बारात सजा लेकर आया । कीर्तिसिंह दुर्गावती के पिता ने सजा दुर्गावती एक दुर्ग से अपने अधीन में थी । और दलपति शाह के साथ शादी थी । विवाह सम्बन्ध अलग नहीं हो सकता था, क्योंकि दलपतशाह गोंड राजवंशीय जाति का था । दुर्गावती का पाणिग्रहण संस्कार चिरंजन में हुआ ।

दुर्गावती शिकारी प्रवृत्ति की थी । उनके तीर और बन्दूक के निशाने अचूक थे। वह शेर के शिकार की बड़ी शौकीन थी कि शेर का पता मिलते ही रानी सीधा होकर शिकार के लिए चल देती थी । दुर्गावती कीर्तिसिंह की एक मात्र संतान थी वह थी सुवीर और सुदर्शिका थी । वह बड़ी बलवती थी। जब दुर्गावती अपने पिता के साथ मनियागढ़ शेर का शिकार खेलने गयी थी। तो वहाँ दलपति के प्रेम अंकुरित हुआ । उसका सम्बन्ध राज्य की सीमा से लगा हुआ सबसे बड़ा सम्पन्न राज्य गोंडवाना ही था। दुर्गावती का विवाह 1543 के अंत में सम्पन्न हुआ। उनके उपरांत सेनापति पुर का आक्रमण हुआ । शेर शाह और कीर्तिसिंह का अंत सन 1545 में हुआ । दुर्गावती ने अनेक स्थान बड़े बड़े मकान बनवाये । उन्होंने सीधियों का निर्माण गढ़ा में नर्मदा के प्रसिद्ध स्थान भेड़ाघाट पर और कई स्थानों पर बनवाया। महारानी दुर्गावती सुरक्षा

[illegible], [illegible], [illegible], [illegible] और [illegible] की [illegible]
थी ।

लगन

लगन उपन्यास के चरित्र एक गायक देवीसिंह का असली नाम नन्दलाल था । वह बड़ा स्वाभिमानी पुरुष था । नन्दलाल के भीषण पराक्रम का वर्णन इस उपन्यास में किया गया है वह सच्ची घटना है । नंदलाल के बंगाल कबरा ग्राम के उजड़ जाने पर दूसरा ग्राम में आ जाते है । इस उपन्यास में हेमा राजा के चरित्र का वर्णन है । वह घर में किस प्रकार बंगले से झाँक कर अपने प्रेमी से मिलती रहती है । उसका विवाह सम्बन्ध विच्छेद हो जाता है परन्तु वह साहस करके नदी पार करके समस्त बन्धनों को तोड़कर स्वयंवर अपने घर अर्थात जहाँ सम्बन्ध होना निश्चित हो चुका था वहाँ पहुच जाती है और फिर वह दोनों परिवारों को मिला देती है और दोनों परिवार मे मिलते है । कथानक अल्प है । परन्तु नारी के शौर्य और कठिनाई को स्वाग कर प्रगतिशील नारी की भाँति उसके अपने घर जाने की कथा है । नारी दो परिवारों के मध्य में उत्पन्न हुये वैमनस्य को समाप्त कर देती है यह इस उपन्यास से विदित होता है । वास्तव रामा एक प्रगति शील नारी की प्रतीक है जो स्वयंवर अपने पति के यहाँ पहुच जाती है । यदि नारियाँ इस प्रकार अपने जीवन कर्तव्य का पालन करें तो समाज में समन्वय एवं प्रेम की भावना का उद्भव होगा और वैमनस्य आपसी प्रेम में परिवर्तित हो जायेगा । यह उपन्यास नारियों को शिक्षा प्रदान करता है ।

प्रेम की भेंट

एक लड़की बड़ी सुन्दर थी । एक युवक का उसके साथ प्रेम हो गया । वे दोनों एक दूसरे के भाव से परिचित थे, परन्तु उनका प्रेम आगे न बढ़ पाया । लड़की के माता पिता को उस प्रेम का पता लग गया उनके मकान पर उस लड़के का आना जाना बन्द कर दिया गया । इसके से वह लड़की बीमार पड़ी । लड़का उसे देखने को बहुत छटपटाया परन्तु उससे न मिल सका लड़की मर गई । परन्तु उस समय युवक को मालूम न हो पाया ।

वह लड़का युवती की बहुधा एक रंगीन चुनरी ओढ़े देखा करता था । जिस दिन वह मरी उसी दिन युवती के घर की टहलनी उस चुनरी के एक टुकड़े को कूड़े के साथ झाड़कर बाहर फेंकने के लिये लाई। युवक का लड़की की बीमारी की खबर कहीं रोज से नहीं बनी थी । उसी समय वहाँ होकर निकला। चुनरी के टुकड़े को उसने पहचान लिया। टहलनी से सारे में पूंछा क्या हाल है ? सारे में टहलनी ने सुना दिया , सब समाप्त हो गया । चुनरी के उस टुकड़े को रास्ते के एक कोने में डालकर टहलनी भीतर चली गई। युवक ने चिथड़े को उठाकर अपने मुख से लगा लिया । इसके बाद वह पागल हो गया और फिर मर गया । यही इस उपन्यास का आधार है ।

सरस्वती इस उपन्यास में वह लड़की है जो वीरेन्द्र से प्रेम करती है । वह स्वाभिमानिनी और बड़ी सूक्ष्म बुद्धि है । वीरेन्द्र के मुख में सरस्वती के लिये बड़ी पीड़ा होती है । वह वीरेन्द्र से प्रेम करती है और सदा उसके लिये रहेगी वीरेन्द्र की आकांक्षा थी कि सरस्वती साड़ी को संभालकर रखे। सरस्वती के सिरहाने से टुकड़े टुकड़े कर के साड़ी का एक टुकड़ा सरस्वती के हाथ में मुट्ठी में रह गया । सरस्वती चिकित्सालय में कहती है कि वह साड़ी उन्होंने दी थी । उसमें क्या लिखा है जानती हो ।उसने मुट्ठी खोल

कर दोनों हाथों में लाठी का एक छोटा सा बना हुआ टुकड़ा लेकर लेख ने पढ़ा उसमें घसीटा लिखे हुये दो शब्द लिखे थे "प्रेम की जीत" जीवन भर चाता है और फिर तपस्वती की उसके पास ही पुष्पेंद्र चाती है। इस प्रकार इस लोक के प्रेमियों का मेल स्वर्ग में मिलन करा देते हैं। उसकी भावना है कि लौकिक प्रेम यदि सत्य है और दोनों प्रेमियों का यदि इस लोक में मिलन नहीं हो पाता तो स्वर्ग लोक में उनका मिलन हो जाता है। "प्रेम की जीत" शब्द सार्थक है।

सोना

सोना उपन्यास का आधार लोक कथायें है । वर्मा जी ने लोक कथाओं के आधार पर इस उपन्यास की रचना की है । इसमें कर्म मार्ग का संदेश है और नारियों को अपनी इज्जत बचानी चाहिये तथा इस बात का संदेश है कि वहाँ की स्त्रियाँ क्षमता सब कर सकती है वहाँ के पुरुष निकम्मे नहीं हो सकते ।[1] इस इस उपन्यास के सोना और रूपा दो पात्र है । सोना का विवाह देवधू के राधा के साथ होता है जो लम्पट है सोना बोनों को मनोहे खिलाती है और एक हार वही उतार कर भूल जाती है। वह रूपा को मिल जाता है परन्तु वह कहती है कि बोल ने नहीं खोल हार को छोड़ जाती है और साथ को ले जाती है । फिर रूपा को जमीन में खोदने पर बहुत से बहुमूल्य हीरे जवाहरात या सिक्के मिले ।

इस उपन्यास का मुख्य उद्देश्य कर्म मार्ग के सिद्धान्त का प्रतिपादन करना है तथा नारियों को अपनी इज्जत की रक्षा करना है । इनका सिद्धान्त है कि" मेहनत सफाई और ईमानदारी उपासना से ही जीवन का सच्चा मूल्यांकन मिलता है ।[2] इनका संदेश है कि काम देखो अपना काम देखो ।"[3] इनका संदेश है कि हाँ मेहनत मजदूरी करनी चाहिये।" परिश्रम न करने वाला कभी सुखी नहीं हो सकता ।"[4] चाहे गरीब हो, मजदूर हो परन्तु अपनी इज्जत नहीं बेचनी चाहिए। नारियों की शक्तिमत्ता, कर्मठता एवं चरित्र निष्ठा को बनाये रखने के उद्देश्य से यह उपन्यास बड़ा सार्थक है । जीवन को कर्म के प्रति प्रेरित करने में यह उपन्यास योगदान देता है ।

---

1. सोना पृष्ठ 228 वृन्दावन लाल वर्मा
2. " " 166 "
3. " " 179 "
4. " " 226 "

प्रत्यागत

प्रत्यागत उपन्यास में मूर्ति के लौट आने की घटना सन 1927 के अन्त या 1928 के आरम्भ की है, उसका जो निर्णय पन्चायत में हुआ था वह सच्ची घटना है । प्रायश्चित से मन्दिर में देव स्थापना के समय फसाद से सम्बन्ध रखने वाली बातें भी सच्ची है ।

प्रत्यागत की घटना मंगल के इर्द गिर्द घूमती है । मंगल टीकाराम का पुत्र है । वह कुछ करता नहीं है उसको ग्लानि होती है और से बम्बई कार्य करने के उद्देश्य से चला जाता है वहाँ से पुणे चला जाता है और पुणे से मलाबार चला जाता है । वहाँ पर मुसलमान काफिरों यानी हिन्दुओं को मारते है । रहमतुल्ला मंगल को अपनी पत्नि और पुत्री की रक्षा करने हेतु भेजता है और वह आन्दोलन में चला जाता है । वहाँ पर रहमतुल्ला की पत्नी बड़े साहस से उसे मुसलमानों से बचाती है। अंग्रेज उसे रहमतुल्ला के घर के बाहर पाकर पूंछताछ व पता लगाने को थाने ले जाते है अंग्रेज मंगल की पत्नी के घर और पूछताछ से इस परिणाम पर पहुचते है कि वह हिन्दू है । वे मंगल को उसके घर उत्तर प्रदेश में भेज देते है वहाँ हिन्दू उसका बाईकाट कर देते है और इस प्रायश्चित करना पड़ता है । परन्तु नवनविहारी उसे परेशान करता है और जब उसके मंदिर के स्थान करने जाता है तो वह मूर्ति को उल्टा कर देता है। कुछ जवान लोग प्रायश्चित करवा कर प्रस्ताव पारित कर देते है और मुसलमानों को पिटा देते है । धर्म के आडम्बर का इस प्रकार कड़ा कोड़

होता है । मंगल अपने घर परिवार और अपनी माता के पास आ जाता है । इस उपन्यास में हिन्दू मुसलमानों का मिल मिलकर रहने का उद्देश्य है दूसरे हिन्दू पुजारियों और जाति पाँति के आडम्बर का खण्डन है । इतिहास की घटना के साथ इसमें समाज का चित्रण है ।

-: अमरबेल :-

अमरबेल की अधिकांश घटनाओं को गाँवों के जीवन से जुटाया गया है। ये घटनायें सच्ची है और पात्र भी सच्चे है। उनके और तत्सम्बन्धी स्थानों के नाम बदल दिये गये है। साहूकारी,खेती,किसानों तक में अनीति से पैसा कमाने की धुन गाँवों में व्यापक रूप से फैली हुई है जैसे हरे भरे पेड़ पर अमरबेल। अफीम के अवैध रोजगार के समाचार और सुरक्षित बहुधा पत्रों में छपते रहते है। एक घटना वर्मा जी को भारत के मंत्री श्री श्याम लाल पाँडेय ने विस्तार के साथ सुनाई थी जो उसका उपयोग इस उपन्यास में किया है। सहकारी अधिकारी राधेश्याम का नाम बदल दिया है । दूसरे पात्रों और स्थानों के नाम बनावटी नाम है ।

इस उपन्यास में वर्मा जी ने सहकारिता के सम्बन्ध में अपने विचार व्यक्त किये है। और सहकारिता के प्रति ग्रामवासियों को लालायित किया है। सहकारिता से अन्य की उपज बढ़ाने भर कर बढ़ेगी। कुटीर उद्योग फूले फलेंगे । और देहाती गरीबी ,अशिक्षा,गंदगी, मिट जायेगी । मतलब यह है कि देश की अनेक समस्याओं का हल इसमें होगा । इसे नाले पर आने ज ने के लिए पुलिया का बनाना जो भरी बरसात में भी काम दे सके,शिक्षा और सफाई,मलेरिया, हैजा,मोतीझरा, कम-ज्वर, इत्यादि का निर्मूलन सरकार और मनोरंजन के साधनों का सेवा, हरिजनों का उत्थान आध्यात्मिक सत्यों का प्रचार, जीवन के ऊँचे स्तर का प्रबन्ध,जीवन बीमा आदि हो सकेगा । जीवन का नया ओज हाथ में आयेगा । वर्मा जी के कहने का सार यह था कि " मन के भीतर छाई अमरबेल मुश्किल से मुरझती है,अभय हो जाओ तो कोई बेल कुछ नहीं कर सकती, अभय होने के लिए श्रद्धा,और ईर्ष्या का त्याग,लोभ में कमी,ईश्वर में विश्वास बहुत जरूरी है । हिम्मत के साथ कठिनाईयों का मुकाबला करना, उन पर खेल कूद के जरिये हँसना और मैथिल की तरह मुस्कराते साथ बढ़े-चलना ही जीवन है । और यह जीवन तभी सफल माना जाये-जब सदा बढ़ाने के लिए प्रेरणा त्याग,और तपस्या से मिले, इसी क्रिया के द्वारा भीतर वाली अमरबेल मुरझा जायेगी ।"[1]

1-अमर बेल पृष्ठ- 287 वृन्दावन लाल वर्मा ।

" आहत "

आहत उपन्यास में अनेक बातों का समन्वय किया गया है। इसमें दहेज प्रथा का विरोध किया गया है । अंगद का पुत्र दीप है और मैथरी नारी का चरित्र उज्ज्वल दिखाया गया है। दीप बहुत नटखट है वह ठीक पढ़ता नहीं है । उत्पात करता है गुलेल चलाता है। वह राज्य के क्षेत्र में हनुमान बनकर पूँछ रेती फिराता है कि मन्दोदरी बनी लड़की की साड़ी में आग लगा देता है तथा लाठी में भी बारे बेनिशान आ जाते है। उसके पिता उसे डाटते है। एक बार उसे इतना डाँटा कि दीप माँ के बटुये को चुराकर कानपुर भाग गया । कानपुर में उसकी भेंट लक्ष्मण से हो जाती है। वो पल बेचता है। लक्ष्मण दीप को पढ़ने की प्रेरणा देता है तथा उसको बहुत प्रेम देता है।दीप पढ़ता है और हाई स्कूल उत्तीर्ण कर लेता है तथा एम०ए०बी०एम०में आ जाता है। और वह पल बेचता है । लक्ष्मण उसको साईकिल ले देता है तथा उसके लिए कुछ हिसाब निकाल कर उसके लिए पैसे भी जमा कर देता है। दीप साईकिल पर अखबार भी बेचता है और कम पैसे में अच्छे पल देता है। अंगद पर कर्ज हो जाता है उसका मकान भी गिरवी रख जाता है। तथा वह अमरपुर छोड़कर बाहर चला जाता है । तथा साधु हो जाता है। मैथरी अपना जीवन यापन करती है, चरखा कातती है । तथा अन्य कार्य करती है तथा मैना के घर चली जाती है और वहाँ रहने लगती है। मैना के साथ सुख-दुख का खेल होता है और पानी की धार में दोनों तैरती है। एक बार मैना को डूबने से मैथरी बचाती है । इससे उसकी ख्याति बढ़ती है बाद में वह मैना को तो डूबने से बचा लेती है परन्तु खुद पानी में डूब जाती है । डूबने का समाचार ,समाचार पत्र में दीप पढ़ता है और पढ़कर अमरपुर आकरउसका क्रिया कर्म करता है परन्तु बाद में वह बीचित बच जाती है । और मैना के पास आ जाती है। कानपुर में छाया दीप की पल की दुकान से पल लेने आती है और उसका परिचय उससे हो जाता है । वह अध्यापिका है। दीप उसके घर अखबार भी दे देता है। छाया का विवाह तय हो जाता है और उसके पिता ने लड़के के पिता 6 हजार रुपये दहेज में माँगते है । जब बरात आती है तो उसमें गुरु की और साधु भी है जो कम

आदि गाते है। फेरे के समय फेरे होने से पहले एक लड़के के पिता 6 हजार रुपये माँगते है तो छाया के पिता भी तीन हजार रुपये ही देते है। इसपर लड़के के पिता और दुल्हा बिगड़ उठते है। कि पढ़ाई का आधा भी नही है। ऐसी जगह विवाह नही होगा। तो छाया लड़के के पिता के चप्पल मारती है। बरात वापिस चली जाती है। उस समय छाया के पिता कहते है कि कोई ऐसा है जो छाया के साथ शादी कर ले। दीप बरात को एक खिलाने ले को लेकर आया था। उसने कहा कि मै तुम्हारी जाति का हूँ शादी करने को तैयार हूँ। छाया की शादी दीप के साथ हो जाती है। गुरु जी आ जाते है और दीप उन्हें पहचान लेता है, कि वह उसके पिता जी है। राम लाल छाया के पिता ने कहा कि वह त्याग पत्र नही देगी। सभा उठाती रहेगी। अंगद ने कहा कि यहाँ दीप की माँ बहकर चली गयी है दीपू और बहू यहाँ थोड़े से फूल चढ़ा दे और गाँव के कुछ इष्ट मित्रों को भोजन देकर लौट आये। फिर मै बारात के साथ अयोध्या चला जाऊँगा। और बहू सहित दीप यहाँ आ जायेगा।

-: बिहार :-

गद्दी के ब्याह के समय पर कुछ वर्षों में घर घर प्रायः मन-मुटाव हो जाता है। कभी कभी मारकुटाव भी होती है। ठीक उसी तरह की भयंकर घटना का उल्लेख हम उपन्यास में किया गया है। उसी तरह की भयंकर घटना छतरपुर रियासत अन्तर्गत रायपुर ग्राम में हम उपन्यास के लिखने के पाँच वर्ष पूर्व हुई थी।

पालियों के बीचोबीच मोती लग जाने पर कुहराम पीटित मच गया। सन 1917 के करीब तहसील ललितपुर अन्तर्गत पारसट ग्राम के निवासी सेठ मोहन लाल लल मेया पर खरदाजी ग्राम के हुँवर सिंह नामक एक ठाकुर ने झूठी अदालत का मारमट चलवाने के कारण बुरी तरह मोती उतारी थी। एक हाथ की छो पालियों के बीचोबीच में छोड़ दी और उस ओर की छो पालियों के बीचोबीच होती हुई बाये हाथ की मांस पेशी में उतर गयी। घायलका वह मर गये और अभी तक जीवित है। मोती बाये हाथ में अभी तक मौजूद है। हुँवर सिंह इस घटना के बाद लापता हो गया उसके नाम का ऐसा आतंक छा गया कि लोग कहने लगे थे कि उसे दुर्गति दुर्गावती सिद्ध है। अंत में मार डाला गया।

मालवा छतरपुर रियासत अन्तर्गत महीगांव निवासी मन्नु खान ठाकुर का प्रतिशोध है। मन्नु खान सन 1925 ई० में मार डाला गया। वह बड़ा भयंकर डाकुओं का, डाकुओं की रेल तोड़कर भागा था। उसने अपने साथ कुछ पठान की रेल से निकाले थे जो डकैतियों में उसके साथ शामिल रहे। मालवा रियासतों और बच्चों पर साथ नहीं पसारता था और न उनके साथी उसके डर के मारे रियासतों और बागों पर साथ उठाते थे।

सिख लोग ये हुकूमत के लिए खतरा उत्पन्न करने के अभिप्राय से बिना विविध उपाय का अवलम्बन किये वह घटना होती की गई है और सन 1925 की है। होली की अदालत में हुकूमाना था। जो पंजाबी गिरफ्तार हुआ था उसके तब बातों से उत्तेजित होने पर और प्रमाण की कमी तथा कानून की धारा की परिभाषा में मामले की घटनाओं के न उतरने के कारण हुकूमत ताकिद कर दिया गया था।

तीसरा लाल का विवाह,नाई के साथ ने प्रारम्भ हुआ का जटिल स्थिति उत्पन्न होने पर मार डालना, कुंजाल और लालकंवर के सम्बन्ध का पूर्वार्धात और अन्य इत्यादि कुछ घटनायें भिन्न-भिन्न लेखकों की भिन्न भिन्न तरह घटनाओं के आधार पर है। उनका समय और स्थान सम्बन्धी अनेक त्रुटियाँ के अभी संशोधित होने के कारण नहीं बतलाया जा सका । बुन्देलखण्डी लोकगीतों के पूरे गीत की कुछ पंक्तियाँ उपन्यास में दी गयी है ।

हा उपन्यास में संदेह न लेने, आदिवासी न पूजने देवी का नाम न लेने की बात कही है। यहाँ की विधवा विवाह और नातरोप के पक्षपाती है।सिंगार देवर आने की प्रथा को ये गंदे घिनौना मानते है ।

कुंजाल भैरवराम का मकान नीलाम नहीं करना चाहता, और धनीराम लाली बिल्ली का भी व्यवहार अपने घर में करा कर देता है। और सोचता है कि मकान का क्या होगा । इसे प्रेरणा मिलती है कि उन्हें, घर का काम करना होगा ।

———0———

कुन्दली-गढ़

कुन्दली गढ़ उपन्यास में अजित कुमार और पूना के सम्बन्ध में घटनायें सच्ची हैं । परन्तु थोड़े से हेर-फेर के साथ लिखी गयी है । पेलु और सुद्धा से सम्बन्ध रखने वाली "प्रेत-बाधा" की घटना सत्य है और लाल की ही है । अजित कुमार जिस पात्र का प्रतिनिधि है वह अभी जीवित है। रत्ना अब नहीं है । ललितकुमार और शिव लाल के चरित्र कल्पित हैं। परन्तु उनके सदृश चरित्र समाज में मिल सकते हैं। मुकुल कुछ सुधरे हुए रूप में अभी संसार में है परन्तु यह पता नहीं कि उसने दूसरा विवाह किया है या नहीं । मुकुल से सम्बन्ध रखने वाली एक आध घटना सत्य है। अधिकांश कल्पित है ।

—o—

अमल मेरा कोई

सन 1945 के सितम्बर से लेकर 1948 तक की विशेष घटनाओं के आधार पर अमल मेरा कोई उपन्यास की रचना हुई है । जो कुछ भीतर होता रहता है उसी को समक्ष के सामने लाने का प्रयत्न अमलमेरा कोई" में किया है । कुन्ती " अमल मेरा कोई" के आगे कुछ नहीं लिख सकी ।

इस उपन्यास में चार ही प्रमुख पात्र है अमल, सुधाकर कुन्ती और निशा। इस उपन्यास में स्वतंत्रता संग्राम की घटना स्वतंत्रता संग्राम के सेनानियों की जेल यात्रा और समाज निर्माण की बात है । विधवा विवाह की बात है । गन्दे समाज की परवाह न करना, माता पिता के सम्मान और नारी रूप के सम्मान की बात है । जिस समाज में नारी साक्षी है उसका कोई कुछ नहीं बिगाड़ सकता । दूसरे के लिये अपने उत्सर्ग की बात है ।

कुन्ती अच्छा नृत्य करती है । ताल पर नृत्य करती है ।अमल उसे शिक्षा देता है । सुधाकर अमल का परिचित है ।कुन्ती की धारणा है कि यदि वे अपने शरीर को पवित्र बनाये रखे और मैं अपने शरीर को पवित्र बनाये रखूं तो किसी के मन से कोई वासना नहीं । कुन्ती अमल से भीख मांगती है कि वह निशा को अपना ले। निशा को पाकर अमल सुखी नहीं रह सकेगा क्योंकि निशा कुन्ती से बहुत अच्छी है । सुधाकर कुन्ती से कहता है कि कुन्ती की प्रकृति उग्र है और सुधारने की नहीं । कुन्ती को स्मरण आया कि सुधाकर ने उसके लिये आवारा कहा था । वह प्रण करता है कि सिवाय पत्नी के कुछ भी बाकी छिपाया नहीं । कुन्ती कहती है कि यदि कुमार और पुरुषों के अत्याचार के कारण

स्त्रियाँ ऐसा प्रश्न करने लगे तब क्या होगा ।कुन्ती कहती है कि भगवान जानते है मैं बिल्कुल निर्दोष हूं । सुबाकर पानी माँगता है । कुन्ती जाती है और कुछ क्षण उपरान्त दूसरे कमरे से आवाज आती है धड़ाम। जैसे बन्दूक चली हो । कुन्ती के सिर को फोड़कर गोली उस पार हो गई । बन्दूक एक ओर पड़ी हुई थी । कुन्ती छटपटा नहीं रही थी । एक कागज पर लिखा अन्त मेरा कोई आगे हाथ काँप गया था और केवल एक बिगड़ी हुई लकीर थी । इस प्रकार उत्सर्ग और विसर्जन की इस में कथा है तथा नारी के उज्ज्वल चरित्र का चित्रांकन है ।

.....

कभी न कभी

चिरगाँव से रामनगर तक सात मील लम्बी एक पक्की सड़क बनाई और बेतवा पर लगभग तीन फर्लांग रपटा और पुल। इस उपन्यास की अधिकांश घटनाएँ उस रपटे पर काम करने वाले मजदूरों से सम्बन्ध रखती हैं। कुछ घटनाओं को तो वर्मा जी ने भेंट मजदूरों के बिना पाये ही देखा है और कुछ दूसरों से सुनी है तब घटनाएँ एक ही समय और एक स्थान से सम्बन्ध नहीं रखती।

इस उपन्यास में छेदू लम्बरा और लीला प्रमुख पात्र हैं। लीला का चरित्र उपन्यास के अन्त तक उभरता है। लीला भी मजदूरी के साथ कार्य करती है।

भेंट लीला से कम कार्य लेता है और उसके साथ थोड़ी देर के लिये आनन्द करना चाहता है। परन्तु लीला उसको टके सा जवाब देती है तथा उसे कह देती है कि वह कुंवारी है तथा उसका विवाह होने वाला है। वह भेंट को कोई का जवाब देती है और कहती वहाँ भी उसका विवाह कर देंगे वहीं वह चली जावेगी। छेदू लीला के पास आ जाता है और कहता है कि भेंट अनुचित बात कर रहा था। छेदू के साथ उसका विवाह होने वाला था परन्तु छेदू कहता है कि वह मरने के समीप है। उसके पास एक पत्नी बहुत है और वह उसे लीला के विवाह के उपरोध के लिये ले जाता है तथा लम्बरा के साथ उसका विवाह कर देता है।

इसमें लीला का उज्ज्वल और सच्चरित्र चित्रित है। यह भी चित्रित है कि काम करने वाले मजदूरों में भेंट की दृष्टि किस प्रकार काम करने वाली लड़कियों पर रहती है। उनसे काम कम लेते हैं और पैसे कम देते हैं। मजदूरों के जीवन के चित्रण से यह उपन्यास ओत प्रोत है।

कोठी आग

कोठी आग में जिसमें हमें ऐसे का वर्णन किया गया है जो एक ऐतिहासिक घटना है। यह विकट ऐसा सन् 1729 ई० में हुआ था। उसका ब्यौरा इतिहास से लिया गया है। कुम्हार की मिट्टी से बनी बाली कोठड़ी पर अंग्रेज आक्रमणों का युद्ध मोर्चा में कूदना और कुम्हार द्वारा चीटा बाबा इत्यादि घटनायें सच्ची है कुमार जी बेगम रावन और रानी लेखी के नाम कल्पित है परन्तु घटनायें वास्तविक है। अन्य पात्रों के नाम इतिहास से ज्यों के त्यों लिये गये है। गुरु जी को कोठरी को तोड़कर उसके कमरा पर तोपों शक्ति जी की धारा को बहा दिया गया और वहीं उसकी चन्दी मस्जिद को खड़ा कर दिया गया, अंग्रेज और अन्य का युद्ध जी को कारण देकर विकट संग्राम पूर्ण आत्म त्याग का प्रदर्शन, कोठी पु की सरकों तथा उसका राजनीति पर प्रभाव इत्यादि सत्य इतिहास से लिये गये हैं। जिसमें 1729 वाले दृश्य होने से प्रकट हो जाता है कि मानव की अन्तर्निहित हिंसा जरा सी रुष्ट होने पर कितनी अभिव्यक्त हो जाती है और राजनैतिक आकांक्षी की नजर में पड़कर कितनी प्रकम्प और क्रांति हो जाती है। इसी चिनगारी को लेकर लोग जिस आग को प्रज्वलित करते है वह आवाज का व्यापक रूप धारण है जैसा कि फिर उनके ही वश की नहीं रहती। कुमार जी और रोर अकान सरीखे व्यक्तियों का त्याग और सर्व का बल की याद दिलाते है कि मानव की मानवोपता और संस्कृति आग की लौकिक लपटों तक की उपेक्षा करके आगे आती रहेगी।

उषा किरण

उषा और किरण उषा किरण उपन्यास के दो पात्र हैं। यह उपन्यास उन्हीं दो पात्रों के नाम से है उपन्यास का कथा की क्रम और गति के धीरे से बाहर क्रम क्रम से ही आ पाता है। सुंदर सिंह सरीखे पुराने बाबोरदार किसी की उपस्थिति पर चम उठे। इस उपन्यास में लेखक ने अपनी एक विचारधारा को सरकार रूप दिया है। उन्हें सहकारिता (कोआपरेटिव) प्रचार बहुत पहले रुचता था। यह सहकारी खेती समिति का पक्षपाती है। सहकारी खेती सहकारी उद्योग धन्धों आदि के यह पक्ष में है। सहकारिता संबंधी प्रायः गाँव की इन किरणों पर थोड़ा सा अनुभव होगा और अपने पन का दुहाता छाया हुआ है। यह क्षेत्र में सहकारिता के अनेक कार्य प्रारम्भ होंगे तो और खुशहाली आ जायेगी।

डाबर ग्राम में वहाँ के किसान सहकारिता से खेती करते हैं। वहाँ किसानों को दिखाने के लिये सहकारिता संबंधी नाटक खेला जाता है। उसमें उषा और किरण सक्रिय भाग लेते हैं तथा सरकारी अफसर भी देखते हैं। ग्रामीणों पर उसका बहुत प्रभाव पड़ता है। किरण सक्रिय लड़की है जो ग्राम सुधार की सोचती है और सहकारिता के कार्यों में भी भाग लेती है। सहकारिता के कार्य आदर्श से ग्राम की बड़ी तरक्की होती है। इस प्रकार आस पास की सहकारिता के कार्य आदर्शों का प्रचार प्रसार होता है। सरकार की योजना सहकारिता की सफल होती है और फिर अमरपुर गोकुलपुर जीवन का लेखा है। उसमें उषा और किरण का विवाह सम्पन्न हो जाता है। इस उपन्यास का मुख्य उद्देश्य सहकारिता की खेती तथा अन्य कार्य आदर्शों का प्रचार प्रसार करना है।

" भारत यह है "
:==========:

वर्मा जी के " भारत यह है " उपन्यास में भारत वर्ष का चित्रण है। ये विभिन्न घटनाओं के माध्यम से भारत के व्यक्तियों के चरित्र को सामने रखते है तथा भारत वर्ष की प्रमुख आध्यात्मिक,धार्मिक एवं सामाजिक विशेषताओं पर प्रकाश डालते है। उनकी दृष्टि में भारत एक महादेश है । यहाँ यौगिक क्रियाओं में बड़ी सामर्थ्य है। यदि यह कहें कि इसमें भारत की गौरव गाथा का सम्यक चित्रण है तो अतिशयोक्ति न होगी।

अल्बर्ट अमेरिकन विदेशी भारत आता है और स्थान-स्थान पर अनेक विचित्र बातें भारत वर्ष में देखता है। उसके देखने के माध्यम से लेखक ने भारत का सुन्दर चित्र निर्मित किया है। ठाकुर साहब की धारणा है कि अल्बर्ट भारत के बारे में अच्छे विचार लेकर जाये । अल्बर्ट ने भारत के अनेक तीर्थ-स्थानों को देखकर कहा कि "सचमुच अगली भारत यह सब है।" कभी नहीं भूलूंगा । " अल्बर्ट ने देखा,घोर अंध विश्वास के साथ उस योगी की योग क्रिया। भिखारियों में दानशीलता,उदारता के क्षेत्र में वह ईमानदारी, लड़कों के उपद्रवों के साथ वह विकट आत्म सम्मान। गाँधी के कार्यकर्ता में कैसा बहादुरी त्यागी लड़का, चिमटे उन्डे पर कपड़े, को दिखा कर रेल की पलटने से बचा लिया ।

वर्मा जी ने ही भारत वर्ष का सब कुछ । संसार भर का मानव विकासशील है परन्तु हमारी कर्मण्य,संस्कृति का सिलसिला अटूट है। हम गिरे उठे, हमारा भी है, और रहेंगे, हमारा कल और भी निखरेगा । यहाँ टैगोर सरीखे कवि, महात्मा गाँधी सरीखे, सन्त हुए है। कवियों की कविताये,उपन्यास, और कहानी -लेखकों की कृतियाँ पढ़ों से बैठे सुनते है। और प्रेरित होते है। यहाँ देखो यहाँ ऊँचे ऊँचे पर्वतों के हिमाच्छादित शिखर और नीचे हरी भरी विशाल भूमि- भूमि, चारों ओर फूलों का राग और सुगन्धि का रिमझिम । स्विटजरलैन्ड से भी अधिक सुन्दर । कश्मीरी नर-नारियों के सौन्दर्य को देखकर सभी प्रभावित होते है। मस्जिद में नमाज और मंदिर में पूजन दोनों एक साथ । यहाँ के हिन्दू मुसलमान एक दूसरे के त्योहारों और सामाजिक समारोहों में पूरे मेल मेल के साथ शरीक होते

-2-

है । मतभेद है ही नहीं ।

पाकिस्तान ने यों ही यहाँ के लिए द्वन्द्व क्या कर रखा है । हिन्दू नारी मुसलमान बच्चों की जान बचाती है कश्मीर की जनता के प्रतिनिधियों ने कश्मीर को भारत का ही भाग माना है। और उसे भारत में मिला दिया । यहाँके हिन्दू-मुसलमान भारत के साथ ही रहने में उसका अंग बने रहने में एक मत है ।

वृन्दावन लाल वर्मा ने छत्रसाल अन्यास पूर्व नहीं लिखा उनके पश्चि-ोः पुष्ठ ही लिखे । वे आनन्दमठ और रमा लाँग अन्यास भी नहीं लिख पाये । वे झाड मुहर अन्यास भी लिखना चाहते थे । परन्तु नहीं लिख पाये । उन्होंने सामाज अन्यास पर लगभग 250 पृष्ठ के नोट्स लिखे । भारतवर्ष और पाकिस्तान के विभाजन के बाद लखिका पाकिस्तान में चला गया और वे उनका पूर्णानुवाद न कर पाये तृतीय अन्यास न लिख पाये । उन्होंने आनन्दमठ और रामालाँग पर लगभग पश्चि-ोः पृष्ठ ही लिखे ।

ऐतिहासिक कहानियाँ

वर्मा जी की "ऐतिहासिक कहानियाँ" ग्रंथ में पंद्रह कहानियाँ हैं। इन कहानियों के नाम हैं - बुद्ध बना था ,पैर छाप,खड़ की भेंट,पलक मोच,चित्रोत्पाद तुमक,की महानुभूति,घुंघरे का चित्रण,जहाँगीर की लगन, 13 तारीख और शुक्रवार का दिन, खाना खिला,सच्ची बुद्धि,गेहूँ के साथ घुना, घोड़ी दूर और,मंत्र की पहली,वस्त्रधारी का त्याग, पति को बचाया ।

"सच्ची बुद्धि" कहानी में दिखाया है कि दोष मन का होता है, शरीर का नहीं । मन शुद्ध हो गया तो फिर बेचारे शरीर को कैद रखा नहीं कर देना चाहिए । शरीर मन का राजा नहीं है,शरीर का राजा मन है । इसमें मीना के चरित्र को दर्शाया गया है,वह राज प्रलोभन में नहीं पड़ती । वह क्षत्रिय समान है । गुजरात का राजा जयसिंह (1170-1176) गद्दी पर बैठा बना आ रहा था उसने दूर से ही मीना देखा । मीना राजा की सवारी को अपनी ओर आते देखकर एक पेड़ की ओर उसकी ओर टकटकी बाँध कर देखने लगी । राजा ने पास आकर उसकी बड़ी आँखों को टकटकी लगाये देखा । राजा ने पास जाकर मीना से पूछा-तुम्हारा नाम । वह आँखें नीचे में बोली " जी मीना"। राजा ने कहा डरो मत सुन्दरी । कौन हो तुम ? जी,आपकी धोबिन । बहुत सुन्दर हो । ऐसा रूप तो महलों में ही नहीं । दिखता है पहला । " मीना पूछ और उसका छोटा नाम होने लगे मीना पढ़ने लगा । तब राजा ने कहा कि तुम्हें तो महलों में रहना चाहिए तब मीना ने कहा " मेरे कपड़े कौन धोयेगा महाराज । राजा बोला कि " बहुत से धोबी आने मिल जायेंगे - चिन्ता मत करो । [1]

1- ऐतिहासिक कहानियाँ -सच्ची बुद्धि -पृष्ठ-39 - वृन्दावन लाल वर्मा ।

-2-

मीना कहती है " आप पीयेंगे " राजा का कंठ भर गया तब कहती गयी -" मैं अपने पति से पूँछूगी कि क्या आप भी बेंत राजा के कपड़े धोओगे? और यह भी कि क्या आप इसी राज्य में रहोगे या मालवा में जा बसोगे ?"[1] इस पर राजा ने कहा कि तुम सचमुच देवी हो - मुझे क्षमा करना ।" राजा के भीतर से बार-बार कोई कह रहा था " तुमने घोर पाप किया । तुमने बड़ा भारी अनर्थ किया । रक्षा राजा होकर अपनी प्रजा के साथ ऐसा कुकर्म ।" आचार्य के परामर्श से राजा चिता में जलना चाहता है। परन्तु फिर आचार्य कहते हैं कि तुम्हारा मन शुद्ध हो गया और तुम चिता से उतर पड़ो ।राजा मीना से पूँछता है कि तुमने " मुझे क्षमा कर दिया " इसमें मीना के आदर्श चरित्र पर प्रकाश डाला गया है ।

ऐतिहासिक कहानी मैत्री की अन्तिम कहानी " पति को बचाया " में कोशल्या के शौर्य का वर्णन वी ने वर्णन किया है । यह बड़ी वीर है और नदी में डूबते हुए अपने पति को पानी में कूदकर किनारे पर ले आती है । मध्य प्रदेश के एक गाँव के नीचे से नदी बहती थी । उस नदी का नाम सोनारी था । एक किसान की लड़की कोशल्या थी । कोशल्या की शादी हुई और विदा के समय गाड़ी में दो तीन लड़के रिश्ते में देवर लगने वाले बैठे जिन्होंने उससे बात करनी चाही । रास्ते में उसके मायके की नदी सोनारी से बड़ी नदी मिली । मल्लाहों ने कहा कि नदी बाढ़ पर है नाव का खेना जोखिम का काम होगा । दुल्हा के पिता ने पैसे देकर मल्लाहों की उमर भर ठन्डी कर दी कोशल्या और वे लड़के और बाजा ला लेकर दुल्हा और कुछ बराती बैठ गये । हवा की तेजी के कारण नाव नीचे की ओर बहने लगी । नाव बचाने वाले के कन्धे की लपेट के पास पहुँची । हवा के झोंके से नाव तिरछी हो गयी । नाव तो नहीं डूबी परन्तु दुल्हा नाव के तिरछी हो जाने के कारण धक्के से नदी में जा गिरा । कई मुँह से घबराहट आवाज निकली - बचाओ ।" और तो कोई नहीं कूदा -परन्तु कोशल्या ने एक क्षण के भीतर निश्चय किया। कूद जाकर अलग ही नहीं किया बल्कि बटोरा था, कूद वाली साड़ी से कमर में पेट बाँधी और आव देखा न ताव देखा,

---

1-ऐतिहासिक कहानियाँ -सच्ची शुद्धि पृष्ठ-39, -वृन्दावन लाल वर्मा ।

-3-

घट प्रपा में कूद पड़ी । उसी एक क्षण के भीतर । जय गुड़िया मेरा की कहने के साथ ही उसने कहा था ।" [1]

जाकल्या ने लपाटे के साथ नाव पर फेंके और लपाक से कुल्हा को पानी में से उबार लिया । फिर वह उसे साथ लिए किनारे की ओर आलगी । नाव पीछे आ पाई । वे दोनों हाँफते-काँपते किनारे पर जा बैठे । " [2]

जाकल्या नवीनी और सेवन मैमदु है । वह अपने पति को डूबने से बचाने में सक्षम है । इसकुलार वह पराक्रमी, साहसी, और कुशल है । वह पति दुलारा भी है । अपने पति को डूबने से बचाने में वह किसी प्रकार की लज्जा एवं संकोच नहीं करती । इस प्रकार यह कहानी भारतीय नारी के शौर्य की कहानी है ।

1-ऐतिहासिक कहानियाँ "- पति सोयबाया पृष्ठ-60 - वृन्दावन लाल वर्मा ।
2-ऐतिहास के कहानियाँ"- पति को बचाया पृष्ठ-60 वृन्दावन लाल वर्मा ।

"अंगार का खण्ड"

" अंगार का खण्ड" कहानी संग्रह है में अंगार का खण्ड दोनो हाथ नकली,कुरूपता की दो मूर्तियाँ,बेनाबादी बेगम, गहने की तुमेदारी और टूटी तुराही कहानियाँ संग्रहीत है। बेनाबादी बेगम और टूटी तुराही में ही नारी पात्रों का वर्णन है ।

बेनाबादी के रूपरंग का वर्णन वर्मा जी ने इस प्रकार किया है "आग की ज्वाला से हाथ पलक झिपका,उल्टा आँखों का झीना आवरण खिसका । उसके दूसरे हाथ ने झटक देकर सम्भाले कीमेंट की , वह बिल्कुल ही खिसक गया । बेनाबादी के छरहरे शरीर ने एक लंबी साँस। धरा की ओर देखकर बेनाबादी ने अपने झीने आवरण को सम्भाला और तैयारा । सिर झुकाया । गुलाब से लबालब हुआ केश जाल झूम सा गया । बेनाबादी ने कन्धों को नवनवल आकाश बनाया और हाथ जोड़कर खड़ी हो गयी । झुके हुए सिर की सफेद आँखें थोड़ी सी ऊपर उठी। पलकों से लम्बी परछाईयाँ छू गयी । गुलाबी चेहरे की मोहनी पर जादू फैल गया । [1]

बेनाबादी को हीराबाई की सखी ने खानेवाला की दुलारी गोद्दी, गोरी कहती है " मैं क्या कहू बेटा बेनाबादी उस कुली की गोद है,रखैल है, उसके पेट की चीज है वह कोठेवाल की की परवाह नहीं करता । [2]
मीरकलीम ने," बेनाबादी को उसके प्रस्फुटित मनोहर सौन्दर्य के कारण हीराबाई नाम दे रखा था जैसा कि अन्य मुसलमान नेताओं और शासकों का रिवाज था।" औरंगजेब बेनाबादी के लिए पागल हो गया था। " बेनाबादी को पाने के बाद औरंगजेब को लगा, मानों स्वर्ग मिल गया । बाल्यावस्था को पार करने के उपरांत ही वह दिल्ली के सिंहासन की मालकिन बनने लगा था । बेनाबादी

1-अंगार का खण्ड -बेनाबादी बेगम - पृष्ठ-37 वृन्दावन लाल वर्मा ।
2-अंगार का खण्ड -बेनाबादी बेगम - पृष्ठ-41 वृन्दावन लाल वर्मा ।
3-अंगार का खण्ड- बेनाबादी बेगम - पृष्ठ-43 वृन्दावन लाल वर्मा ।

-2-

जिस लावण्य पर उसने सब लालसा का भी बलिदान कर दिया। [1]
बेनाबादी नाचने गाने का काम अनोखेपन के साथ करती रही थी।[2]

रंग रूप मद,यौवन उस थोड़ी सी आयु में ही ढलान हो जाने पर एक अमर स्मृति, एक अमिट लकीर, औरंगजेब के मन में छोड़ गये ।[3]
बेनाबादी की कब्र जो बुरहानपुर के तालाब के किनारे बनी हुयी थी आज भी दिखाती है, कई दिन औरंगजेब के आँसुओं से तिरपती रही।[4]
नवाब रोये तब फिर लौट आये । दुख और गमीन बेनाबादी की कब्र में लग गये । औरंगजेब ने उनको फिर सिर नहीं उठाने दिया ।[5]

इस प्रकार हम देखते है कि बेनाबादी सुन्दरी, और गायिका है औरंगजेब तक उसके लिए व्यथित है ।

टूटी तुराही" आख्यायिका में अनन्ता की गाथा है। अनन्ता का रूप लावण्य ,सौन्दर्य ओस के पनखार जैसा था । परन्तु जरा सी बात पर उसे किले के नीचे फेंक कर चकनाचूर कर दिया गया । लेखक ने अनन्ता के रूप सौन्दर्य का वर्णन इस प्रकार किया है -" एक सीढ़ी पर खड़े हुए जहाँगीर। अनन्ता ओस जैसी आबदार। ओस के पनखार जैसा उसका रूप लावण्य,सौन्दर्य । खिल गया,मुसकान ओठों पर बरस गयी । हाथों में ओज और पैरों में चपलता आ गयी उल्लास के मारे चाँद की चाँदनी पूर्णमा में खिलखिलाती सी खिलखिलाई पड़ी और तारे उल्लास से थिरकते हुए से । अब बादशाह के हर हुक्म को पूरा करने के लिए व्यग्र हो उठी। अनगिनत उपस्थित बन्दियों में अकेली रूप । सम्राट के ओठ की फड़कन पर तुरन्त आज्ञा पालन के लिए अपने हुक्म के प्रत्येक शब्द को न्योछावर हो जाने पर अनन्ता ने अपने को उत्सर्ग पाया ।[6]

1-आकार का खण्ड बेनाबादी बेगम पृष्ठ-46 वृन्दावन लाल वर्मा ।
2-आकार का खण्ड बेनाबादी बेगम पृष्ठ-46 वृन्दावन लाल वर्मा ।
3-आकार का खण्ड बेनाबादी बेगम पृष्ठ-46 वृन्दावन लाल वर्मा ।
4-आकार का खण्ड बेनाबादी बेगम पृष्ठ-46 वृन्दावन लाल वर्मा ।
5-आकार का खण्ड बेनाबादी बेगम पृष्ठ-46 वृन्दावन लाल वर्मा ।
6-आकार का खण्ड बेनाबादी बेगम पृष्ठ-46 वृन्दावन लाल वर्मा ।
6-आकार का खण्ड बेनाबादी बेगम पृष्ठ-46 वृन्दावन लाल वर्मा ।
7-आकार का खण्ड पं टूटी तुराही । पृष्ठ-55 वृन्दावन लाल वर्मा ।

-3-

"आज्ञा पाकर शबनम ने मानो सब कुछ पा लिया । छोटी सुराही उठाने की देर थी कि हाथ में आनी, भरी और छोड़ते ही लाई । जितनी वह मुस्करा रही थी सुराही में उतनी पैक अँगूठी भी न मुस्करा रही होगी । [1]

परन्तु उसका पैर फिसल गया । प्रयास करने पर भी न सम्भल पाई और धड़ाम से जा गिरी। सुराही चकनाचूर हो गयी । अँगूठी फर्श पर फैल गयी । फर्श भी कीमती ईरानी कालीन की और बादशाह के ही सामने । जहाँ.सेज्जा और अनेकसुन्दरियाँ थी थी। वहाँ गिरने को ही थी वह । [2]

बादशाह के ओठों से निकला,। " हमारे ही सामने यह गुस्ताखी। यह कमीनी हरकत । ले जाओ इसको । इसी वक्त किले की दीवार से नीचे फेंक दो । ऐसा फेंको कि ठीक इसी तरह से चकनाचूर हो जाये । जैसे सुराही टूटी है और ठीक उसी तरह से बिखर भी जाये ।[3]

"जहाँगीर बादशाह की आज्ञा का तुरन्त पालन किया गया, रोती चिल्लाती शबनम को पहरेदारों ने पकड़ा और किले की दीवार पर से नीचे फेंक दिया । शबनम सुराही की तरह चकनाचूर हो गयी और ईरानी कालीन पर बिखरी हुई अँगूठी की तरह किले की नीचे बिखर गयी और वह चमत्कार उस अँधेरे कुएँ में समा गया । " [4]

इस प्रकार हम देखते है कि शबनम किस प्रकार सुन्दर और व लावण्य से युक्त थी परन्तु जरा सी बात पर जहाँगीर बादशाह के कोप की भाजन हुई। उसका जीवन दुखद ही रहा ।

1-अलाकार का दण्ड, सुराही टूटी, पृष्ठ 5- 55 वृन्दावन लाल वर्मा ।
2-अलाकार का दण्ड, सुराही टूटी, पृष्ठ-55 वृन्दावन लाल वर्मा ।
3-अलाकार का दण्ड, सुराही टूटी, पृष्ठ-56 वृन्दावन लाल वर्मा ।
4-अलाकार का दण्ड, सुराही टूटी, पृष्ठ-56 वृन्दावन लाल वर्मा ।

"मेढकी का ब्याह"

मेढकी का ब्याह ,कहानी संग्रह में तेरह कहानियाँ है- मेढकी का ब्याह, मुँह न दिखलाना,ऊपर से उपकर, मालिश मालिश !, कागज का हीरा, कम खाता हूँ, पूरन कवि, राजनीति या राजनियत,हार का प्रहार, सरकारी कलम दवातकही मिलेगी, घोर बाजार,की भंगोत्री,राजनीति की परिभाषा, पत्नि पूजन यज्ञ ।

पत्नि पूजन यज्ञ में नारियों की वर्णन है । पत्नि पति की अर्धांगिनी है बायां अंग । दाहिने अंग से किसी बात में कम नहीं । कुछ बातों में बहुत ज्यादा । फिर भी लखनऊ में बायें अंग से दायें की पूजा करवाई गयी । ठीक भी था । एक ने मनुस्मृति की बात कही थी । नारियों की पूजा होगी तब तो उन घरों में देवताओं का निवास होता होगा । यानि शान्ति आ विराजती होगी । घर में धरातल से लेकर अंबर आकाश तक सुख का वास होगा ।[1] कहते है कि पति देवता है उनकी पूजा करो, फूल चढ़ाओ,आरती उतारो, पैरों में सिर रखो।[2] मुहल्ले वाले घबरा रहे थे, यह तब क्या है? हुआ था कि पत्नि पूजन यज्ञ हो रहा है पर लिखा गया है द्वार पर पति पूजन यज्ञ । क्या से तब पहलवान,इतने दब गये ? इतने झुक गये ।[3] अब पंडित एक रकम लिया ली,कहा- हाँ, भाईयों । ये बातें उन स्त्रियों के पति थे ।

पहले उन्होंने अपनी पत्नि के सामने घुटने टेके और जैसे ही माथा टेकने को हुए कि पत्नियाँ पटे छोड़कर उठ कर के खड़ी हो गयी । एकदम चिल्ला पड़ी - तुम्हारा सत्यानाश जाय ।

तुम्हारी छाती जल जाय।

घर में नहीं है दाने, अम्मा चली भुनाने ।

1-मेढकी का ब्याह पत्नि पूजन यज्ञ - पृष्ठ-59 वृन्दावन लाल वर्मा ।
2-मेढकी का ब्याह पत्नि पूजन यज्ञ पृष्ठ-60 वृन्दावन लाल वर्मा ।
3-मेढकी का ब्याह पत्नि पूजन यज्ञ पृष्ठ-62 वृन्दावन लाल वर्मा ।

-2-

दई बार, हमें बदनाम करना चाहते है। हम क्या कुछ है। [illegible] मूर्तियां है ।

इतना शोर गया कि पंडित ने बाहर में ही कुछ कही । [illegible] बाहर निकल कर आया" पति पूजन " की पटटी अपने साथ लेता चलाया ।[1]

इसमें पुरुषों द्वारा नारियों के सम्मान की बात है। परन्तु नारियां अपने पतियों को सम्मान देना चाहतीहै । इसी में वे अपना गौरव समझती है ।

1-मैडकी का ब्याह -चलि पूजन यह पृष्ठ-62-63 वृन्दावन लाल वर्मा ।

-: अँगूठी का दान :-

वर्मा जी के " अँगूठी का दान " कहानी संग्रह है में अँगूठी का दान, उन फूलों को कुचला, तब और अब, थानेदार की थानातलाशी, धरती माता तो को तुमिरी, बेटी का नेह, बाढ़ फटाका, पुनाव ने बलिदान को बाट लिया, तपस्या के लिए बलिदान, इन्द्र का अटूट हथियार, यह या वह, धन में क्षमान्तर राज शास्त्री की निकुशा, उस प्रेम का पुरस्कार, कहानियाँ संगृहीत है ।

" अँगूठी का दान कहानी में गाँव वालों को श्रमदान करना था । अर्थात मजदूर या मजदूरी का पैसा देना था । गाँव में मजदूरी की कमी न थी । वे बेचारे सवाय दिन तो मुफ्त में काम (श्रमदान) कर सकते थे, परन्तु लगातार कई दिन या कई सप्ताह तो करने से रहे । सरकार के चिट्ठे में चित्रमा लगा देना तय था उससे अधिक और नहीं छोड़ा जा सकता था । अब की जो मीटिंग हुई उसमें गाँव की स्त्रियाँ भी आई । बालक तो आये ही रामा भी आई । योजना अफसर ने समझाते बुझाते अन्त में घिघियाने स्वर में कहा -" हो तो सबसे की अटक रह गयी है । आप कभी नहीं चाहेंगे कि यह पुण्य कार्य अधूरा पड़ा रह जाये । और अरे भाई अधूरा तो नहीं रह सकेगा , परन्तु पिछड़ जायेगा । किया कराया खराब हो जायेगा और फिर से शुरू करने में खर्च और भी ज्यादा पड़ जाने का डर है । वह मन ही मन पढ़ता रहा था कि चार महीने पहिले ही क्यों न पूरा सपना उगाह लिया । [1]

बालक-बालिकाओं के झुन्ड में से यकायक एक लड़की खड़ी हुई । योजना अफसर के पास आई और उसने अपनी उँगली में से सोने की अँगूठी उतार कर अफसर के हाथ में दे दी । वह लड़की रामा थी । बोली -" हमारे पिता जी पुलिया और सड़क पर से काम करके जब लौटते है तब बहुत थके से लगते है उनकी तरफ से यह अँगूठी चन्दे में मैं देती हूँ। [2]

कई व्यक्तियों ने प्रशंसा की । " राम बिहारी का गला भर

1-अँगूठी का दान पृष्ठ- 6 वृन्दावन लाल वर्मा

2-अँगूठी का दान पृष्ठ-7 वृन्दावन लाल वर्मा ।

-2-

आया और आँखों में आँसू आ गये । उसने रामा को गले लगा लिया । रामबिहारी को अपनी ऐसी संतान पर गर्व था । मुश्किल से अपने गले के अवरोध को संयत करके राम बिहारी बोला- मैं फिर कभी काम पर कभी कभी पहुँच जाया करूँगा । यह दान तो मेरी बिटिया रामा ने किया है आप अपने कागजों में इसी का नाम लिखना । [1]

मीटिंग में काम लेने वाले ग्रामीणों में लहर सी दौड़ गयी । कई लिखों ने अपने छोटे मोटे गहने योजना अफसर को दे डाले थे । चन्दा बात की बात में माँग से अधिक हो गया । योजना अफसर ने कहा- " राम बिहारी की बेटी का (रामा) का नाम कागजों में तो क्या जिले भर के माथे पर लिखा जायेगा । जिसे पढ़कर काम करने के लिए लोग कमर कसकर तैयार होंगे ।

इनमें अन्दान के लिए प्रेरणा है,के साथ रामा की अन्दान के प्रति सद्भावना है । रामा की दानशीलता तो दर्शनीय है ही लेकिन का अन्दान जैसी योजनाओं के प्रति झुकाव दिखाई देता है। रामा में त्याग और अच्छे कार्य के प्रति एक लालसा है जिससे ग्राम की उन्नति हो सके । यह भी देखने योग्य है कि सही का सदुपयोग किस प्रकार अनेक योजनाओं को सफल बना देता है ।

1-चौखटी का दान पृष्ठ-7 - वृन्दावन लाल वर्मा ।
2-चौखटी का दान पृष्ठ-7 - वृन्दावन लाल वर्मा ।

-: शरणागत :-

शरणागत कहानी संग्रह में शरणागत, कटा फटा झण्डा, सिसकने वाली राखी, हमीदा, अम्मा की पंत, मालिश-मालिश, मेरा अपराध, राखी, झोला धारपाई, अन्न बीती, रिहाई तलवार की धार पर, और सच एक गामली नगर, कहानियाँ संग्रहीत है । शरणागत और अम्मा की पंत कहानियाँ "सोधी" कहानी संग्रह में भी मिलती है। मालिश मालिश, कहानी मेहकी के ब्याह कहानी संग्रह में भी संग्रहीत है ।

"हमीदा और राखी कहानियों में नारियों के चरित्र, सुन्दर बन पड़े है। होगी में चार हिन्दुये , एक मुसलमान लड़की । यह लड़की उस गाँव के भागे हुए मुसलमानों के समूह की थी, हिन्दुओं ने मुसलमानों से पेशावर का बदला चुकाया। उन चार में से बड़ा शिक्षा आवारा घूमते-फिरते अकस्मात इस गलाशों में आ मिला था । बिना किसी बड़े प्रयास के वह मुसलमान लड़की हाथ पड़ गयी । उसको घोड़ी नदी के मझधार में डुबो देने का निश्चय कर लिया । लड़की ने कहा कि मुझे मारिये नहीं, मैंने किसी हिन्दु का कुछ नहीं बिगाड़ा। उसने कहा कि हिन्दु बिना अपराध के चींटी को भी नहीं मारते । मैं तो मनुष्य हूँ।माधव ने कहा कि हमीदा तुम जवान हो मैं जवान हूँ तुम्हें हिन्दु बना लूँगा । वह कहने लगी आपके साथ ब्याह कर लूँगी । माधव का कहना था कि इसके साथ विवाह करने से एक मुसलमान कम हो जायेगा औरएक हिन्दु बढ़ जायेगा । हमीदा का नाम शान्ति रखा गया । माधव ने हमीदा से पूछा कि तुम सुखी हो तो हमीदा कहने लगी ," आपने मेरे प्राण बचाये आपके साथ मेरा विवाह हो गया है, आप मेरे पति है । आपके साथ जीवन बिताना है, सुखी क्यों नहीं हूँ। [1]

वह पति कहता है, माधव मनुष्य प्रसन्न है, सोचता है कि " मैं मनुष्य बहुत प्रसन्न हूँ विवाह और बलात्कार बिल्कुल अलग अलग चीजें है । क्या तुम मुझे एक वचन दे सकोगी ।[2] मेरे और तुम्हारे सिवा और कोई इसे नहीं जानने जायेगा । अम्मा आपका कुछ दिक्कत में पड़ जाओ, दिन में हमलोग संसार के सामने पति पत्नि और रात में एक दूसरे से बिल्कुल अपरिचित । [3]

1- शरणागत - हमीदा पृष्ठ- 20 वृन्दावन लाल वर्मा ।
2- शरणागत - हमीदा पृष्ठ- 22 वृन्दावन लाल वर्मा ।
3- शरणागत - हमीदा पृष्ठ- 22 वृन्दावन लाल वर्मा ।

-2-

हमीदा का विश्वास है कि पवित्र कल्पना । दोनों की रक्षा करती है । वह कहती है " कि हिन्दू मुसलमान दोनों में यह रिवाज है कि जिसको कोई बहिन मान ले तो वह पवित्र कल्पना दोनों की रक्षा करने में बड़ी सहायता करती है । [1]

माधव ने हमीदा से कहा," तुम्हारे परिवार का पता लग गया है । पुलिस आई है, साथ में तुम्हारा भाई है ।" हमीदा बोली ," सोचती हूँ, मैं न जाऊ, " क्योंकि घर में मुझे सन्देह की निगाहों से देखा जायेगा । मेरी पवित्रता में विश्वास नहीं किया जायेगा । मेरा जीवन दुःखमय बीतेगा । [3]

माधव कहता है कि बिल्कुल नहीं, मैं सौगन्ध खाऊँगा,गंगाजली उठाऊँगा तुम्हारी पवित्रता पर उन लोगों को विश्वास करना पड़ेगा। [4] हमीदा कहती है," घर मैं जाना नहीं चाहती,लोग कलंकों का विश्वास बहुत कम करते है। [5]

माधव हमीदा को उसके परिवार के हवाले कर आया । विदा के समय हमीदा ने माधव को प्रणाम किया । उसकी आँखों में उसने जो कुछ उस समय देखा ,शब्दों में व्यक्त नहीं कर पाया,सोचा आज सचमुच मैंने शान्ति को पा लिया। [6]

इस प्रकार हमीदा ने पवित्र जीवन यापन किया और धर्म परिवर्तन करके अपने बच्चों को बचा लिया । वह अपने बच्चों को हर प्रकार से बचाना चाहती है । अपने जीवन को पवित्र बनाये रखती है और बहिन का धर्म परिपालन करती है, इस प्रकार उसका पवित्र जीवन है ।

1-शरणागत हमीदा पृष्ठ- 23 वृन्दावन लाल वर्मा ।
2-शरणागत हमीदा पृष्ठ- 24 वृन्दावन लाल वर्मा ।
3- शरणागत हमीदा पृष्ठ- 24 वृन्दावन लाल वर्मा ।
4-शरणागत हमीदा पृष्ठ- 24 वृन्दावन लाल वर्मा ।
5-शरणागत हमीदा पृष्ठ- 24 वृन्दावन लाल वर्मा ।
6-शरणागत हमीदा पृष्ठ- 24 वृन्दावन लाल वर्मा ।

- 3-

राखी कहानी में राखी का महत्व दिखाया गया है । गंगा और जयसेन का चरित्र चित्रण किया गया है । जयसेन मनोहर और कुन्दन को पढ़ाते है । जबतक पढ़ाता है गंगा बैठी रहती है । जयसेन के मन में रह रह कर यह बात उठ रही थी कि गंगा उससे प्रेम करती है । किस तरह का प्रेम ? प्रेम या स्नेह ? जब तक पढ़ता है मन में आनन्द छाया रहता है । एक आनन्द था । [1] गंगा बहुत दिनों से पढ़ाना ध्यान पूर्वक देखती चली आ रही है। उसके नीचे में कितनी भावुकता थी। हँसी कितनी स्पष्ट थी । उसमें कितना अंकुर आकर्षण था । जिस दिन से देखा उसी दिन से वही भाव निरन्तर चला आता है- बैठता ही जाता है। [2] परन्तु जयसेन गंगा को चिट्ठी लिखता है, " बहिन गंगा, आज मैं यदि अपने घर पर होता मेरी बहिन मुझको राखी बाँधती । यह भी मेरा घर है, और तुम बहिन के समान । इसलिए मुझको राखी बाँधो, तब भोजन करूँगा । [3] चिट्ठी पढ़ने के कारण अथवा चौके की गरमी के कारण, गंगा को पसीना आ गया और उसका मुँह लाल हो गया । उसने पसीना पोछा। गंगा ने तुरन्त कहा, अच्छा यही सही । मास्टर साहब पहले आपको राखी बाँधूगी। जयसेन का हाथ पसारा हुआ ही था, गंगा राखी बाँधकर भीतर चली गयी । जयसेन ध्यान मग्न होकर भोजन करने लगा । गंगा परोसने के लिए कई बार आई । सिर खोले शिष्टाचरित से स्थिर भोजन, बिना मुस्कान के सटे सटे हुए होंठ, उसने उसी भाव के साथ अपने भाईयों को भी राखी बाँधी और उनको खाना परोस दिया।

इस प्रकार देखते है कि मास्टर जयसेन यद्यपि गंगा से स्नेह करने लगता है परन्तु उसका प्रेम बहिन के पवित्र प्रेम में परिवर्तित हो जाता है और साथ ही गंगा भी मास्टर जयसेन को भाई के समान प्यार करती और

1-आत्मागत राखी पृष्ठ-56 वृन्दावन लाल वर्मा ।
2-आत्मागत राखी पृष्ठ-57 वृन्दावन लाल वर्मा ।
3-आत्मागत राखी पृष्ठ-58 वृन्दावन लाल वर्मा ।
4-आत्मागत राखी पृष्ठ-59 वृन्दावन लाल वर्मा ।

-4-

राखी बाँधती है । वह भाई को राखी बाँधकर रक्षाबंधन के महत्व को
ताजा करती है ।

" लोबी "

लोबी कहानी में लोबी का चरित्र चित्रण है वह किस प्रकार अपने बच्चों को बचाती है । नागपुर जिले के मझना गाँव में हिन्दु -अहिन्दु आदि का साम्प्रदायिक झगड़ा हुआ, मुसलमानों ने लोबी के घर आक्रमण करके किवाड़ तोड़ डाले, और बच्चों को मारने को हुए परन्तु लोबी ने उनको बच्चों को मारने से रोका । वह बच्चों को बचाने के लिए इस्लाम धर्म कबूल करती है और उसका नाम रहीमन हो गया । एक मुन्ने के साथ उसका निकाह कर दिया गया । पन्द्रह दिन बाद उस मुन्ने ने लोबीको तलाक दे दिया । मुन्ने ने कुछ रुपयों में लोबी को दूसरे मुन्ने के हाथ बेच दिया । इस मुन्ने ने एक ही सप्ताह में तलाक दे दिया । तीसरे निकाह की तैयारी हुई। तब लोबी ने सोचा- ऐसे बच्चों का क्या करूँगी जिनके लिए इतनी दुर्गति सहनी पड़े ?, उसने बच्चों को मार कर मर जाने का निर्णय लिया अवसर खोजने लगी । [1] हिन्दुस्तानी पुलिस और सेना जिन लिखों को निकम्मा या व्यर्थ समझा उनको हिन्दुस्तानी सरकार के हवाले कर देने में ही अपनी जिम्मेदारी को पूरा करना काफी माना ।

नैद लाल को अपने घर का कोई समाचार नहीं मिला । नैद लाल के भाई जिया राम के उसके पास कई तार आये एक पत्र में लिखा था " मुझको आशा है कि लोबी और बच्चे मिल जायेंगे । यदि लोबी के साथ कोई जबर्दस्ती की गयीहो,यदि उसको मुसलमान बना लिया गया हो तो भी मिलने पर उसको तुरन्त मुक्त कर लेना । वह गंगा के समान पवित्र है उसको देह की भलाई बुराई से कोई प्रयोजन नहीं । यदि उसकी आत्मा को कलंक नहीं लगा है तो उसको देवी की तरह अपना कर पूरे आदर के साथ घर में ले आना । मैं उसका छुआ ही नहीं, उसका कुछ तक खाने को तैयार हूँगा । मुझको तार देना । मैं तुरन्त नागपुर से आ जाऊँगा । [2]

वह मुन्ना लोबी से पीछा छुड़ाना चाहता था। उस मुन्ने के धर्म वाले के मन में लोबी के प्रति किसी प्रकार का मोह न था। लोबी से कहा गया अपने भाई -बन्दों में जाओ , अपने समाज में शामिल हो जाओ । वह कहने लगी," मैं

1-लोबी -पृष्ठ- 28 वृन्दावन लाल वर्मा ।

2-लोबी पृष्ठ- 29 वृन्दावन लाल वर्मा ।

-2-

हिन्दुस्तान में कोई नहीं है। संसार में मेरा कोई सहारा नहीं,। [1]

हिन्दुस्तानी दल के सदस्यों ने कहा -"बाई तुम्हारी बात को समझते हैं, हम बच्चों के लिए बीती रही हो, तो जाओ और जिओ । तुम्हारा साथ हमारा कुछ और चित्तौड़ नहीं है जिसका हम समझते हो । हम को यहाँ सैनिकों ने लिया जायेगा । यदि तुम्हारी इच्छा हो तो तुम लोगों के साथ चलो। हम तुम्हारे कई भाई हैं। [2]

लोधी ने बच्चों की ओर देखा । वह फूट-फूट कर रोई और हिन्दुस्तानी दल के साथ हो ली । वह सदस्य सकुशल पहुंचाया लोधी को हिन्दुस्तान के पहले शरणार्थी शिविर में ले आया । वहाँ से नैन लाल के पास दिल्ली लाया गया । नैन लाल ने जिया राम को मथुरा से बुला लिया। वह अमानती के लिए दिल्ली के रेलवे स्टेशन पर गया । जियाराम ने लोधी से कहा-"बेटी तुम गंगा की तरह पवित्र हो, जैसे राम अनन्त है उसी तरह गुंगा की पवित्रता भी अनंत है ।[3]

इस कहानी में दिखाया गया है कि लोधी की आत्मा पवित्र है वह गंगा की तरह पवित्र है । उसको मुसलमान बनाये जाने के उपरांत भी हिन्दू किस प्रकार से अपना लेते हैं। वह अपने बच्चों को बचाने के लिए किस प्रकार मुसलमान बन जाती है। उसने अपने बच्चों के प्राण बचाने उनकी रक्षा करने के लिए किस प्रकार मुसलमान धर्म को स्वीकार किया परन्तु उसकी आत्मा पवित्र है । वह गंगा की तरह निर्मल है। इस कहानी से यह भी शिक्षा मिलती है कि यदि हमें परिस्थिति के कारण दूसरा धर्म भी स्वीकार करना पड़े, तो भी हमें अपने कर्तव्य का निर्वाह करना चाहिए और पुनः अपने मूल धर्म में वापिस सम्मिलित हो जाना चाहिए । यह कहानी लोधी के व्यापक चरित्र पर प्रकाश डालती है ।

1-लोधी पृष्ठ- 30 वृन्दावन लाल वर्मा ।
2- लोधी पृष्ठ-30 वृन्दावन लाल वर्मा ।
3- लोधी पृष्ठ-31 वृन्दावन लाल वर्मा ।

* रश्मि-गुच्छ *

"रश्मि-गुच्छ" कहानी संग्रह है, मैं उनमें गाँव को बनाने से बचाया लड़की ने बुढ़े के प्राण बचाये । बारह वर्ष के लड़के ने डाकुओं का सामना कि अन्याय की अभिव्यक्ति , लड़के ने रेल दुर्घटना बचाई, लक्ष्मी कान्त का सेवा तरोध की दृढ़ता, रम्मू का अनुशासन, मैं क्या भिखारी हूँ, नौकरी से बढ़कर आत्म-सम्मान, बच्चे का निर्माण, कठिनाईयों का सामना करो, मन के भूत को साहस ने भगाया, लाडकुँवर की बहादुरी आदि कहानियाँ संग्रहीत है ।

लड़की ने बुढ़े के प्राण बचाये कहानी में अजमेर की रहने वाली एक कन्या का वर्णन है। एक बुढ़ा कुये की दीवार की बुरबुरी ईंट दोनों हाथ से पकड़े, चिल्ला रहा था कि उसे कोई कुये से बाहर निकाले, लड़की अपनी साथिन के साथ घूमने जाने थे । उसने अपनी घूमनी उतारी और सब लड़कियों से घूमनी उतार कर उनमें गांठ मारकर जोड़ने को कहा। वह रस्सी बन गयी और उसको कुये में लटका दिया । नीचे वाले सिर को बुढ़े ने अच्छी तरह पकड़ लिया और ऊपर वाला सिरा कुये में की पाट से कसकर बांध दिया गया । कुछ लोग जो रास्ते से निकले लड़कियों ने उनकी सहायता मांगी,परन्तु वे लड़कियों की खिल्ली उड़ाकर चले गये। उस लड़की को तुरन्त एक बात सूझी कि थोड़ी दूर पर एक गाँव है । मैं वहाँ दौड़कर जाती हूँ और को बाहर निकालने के लिए लोगों को लिवाये लाती हूँ। लड़की दौड़ती हुई गाँव में पहुँची । उसके कहने पर कुछ लोग बिना विलम्ब तैयार हो गये और बुढ़े को कुये से बाहर निकालने का कुछ सामान लेकर उस लड़की के साथ चले आये ।[1] बुढ़ा डूबने को ही था कि वे सब कुये पर जा पहुंचे। बुढ़े को बाहर निकाल लिया । वह बड़ी देर से कुये में पड़ा था । दूर के एक गाँव का निवासी था। पानी पीने के लिए उसने अपनी डोलची कुये में डाली थी खींचने के समय डोलची कुये की बुरबुरी ईंटों में अटक गयी । रस्सी टूट गयी और बुढ़ा कुये में जा गिरा था ।[2]

बुढ़ेने और उन सब ग्रामीणों ने उस लड़की को देवी के रूप में देखा । लड़की ने बुढ़े के प्राण बचाकर देवी का कार्य किया ।

1-रश्मि गुच्छ - लड़की ने बुढ़े के प्राण बचाये पृष्ठ-6 वृन्दावन लाल वर्मा ।
2-रश्मि गुच्छ- लड़की ने बुढ़े के प्राण बचाये पृष्ठ-6 वृन्दावन लाल वर्मा ।

-2-

" सरोज की दृढ़ता " नामक कहानी में सरोज की दृढ़ता का वर्णन है। सरोज के पिता जी के मित्र को सरोज बाबा जी सम्बोधन करती थी । बाबा जी की तबियत खराब हो गयी और वह धीरे धीरे स्वास्थ्य लाभ कर रहे थे । सरोज अस्पताल में बाबा जी के सिर की मालिश करती थी । बाबा जी ने एक दिन देखा कि सरोज के कुछ पीड़ा हो रही है । उनके हाथ में मोटी पट्टी बँधी थी, बाबा जी के पूँछने पर सरोज को बतलाना पड़ा कि "बिल्कुल फोड़ा हो गया था । चीर-फाड़ हुई। अच्छा हो गया था । कुछ दिन हुए फिर उभर आया । अब दूसरी बार चीर फाड़ हुई । थोड़ा सा ही दर्द है । और कुछ नहीं ।"[1] उन्होंने आश्चर्य प्रकट करते हुए कहा कि जब तक पूरा बिल्कुल अच्छा न हो जाये और मेरे पास मत आना । सरोज बोली नहीं आऊँगी । उसके स्वर में निर्बलता थी । पाँव में पीड़ा बढ़ गयी थी शायद । दूसरे दिन वह फिर अस्पताल में बाबा जी के पास आ गयी और अपने बायाँ हाथ को छिपाये नहीं थी । जब बाबा जी ने कहा तुम फिर आ गयी बेटी, तो वह बोली मैं नहीं हूँ। मेरा हाथ भी ठीक है । बिल्कुल ठीक है, तभी तो आई हूँ। ठीक ही कैसे आपका स्वास्थ्य । वह कहने लगी "अस्पताल वालों ने बतलाया कि आपके स्वास्थ्य के सुधार की गति बहुत धीमी है तो मैं रोज आऊँ और बराबर आती रहूँगी । आप नहीं रोक सकेंगे ।"[2]

सरोज अपने हाथ की पीड़ा को भूलकर बाबा जी की सेवा करती है । वह अपने हाथ की पीड़ा से दुखी न होकर बाबा जी की सेवा में लगी है । वह परोपकारी है और उनमें सेवा भाव है। इसमें सरोज के चारित्रिक दृढ़ता का प्रदर्शन है ।

1- रश्मि-मुख " सरोज की दृढ़ता " पृष्ठ-20 सुन्दरलाल शर्मा ।
2- रश्मि-मुख " सरोज की दृढ़ता " पृष्ठ- 21 सुन्दरलाल शर्मा ।

-3-

"वचन का निर्वाह" कहानी में गारबीदेवल की स्त्री पोडी का वर्णन है। एक जगह कहता है "अन्नदाता यह पोडी अपने गाँव की गारबी देवल जी की है। उन्हें दूर दूर के लोग मानते हैं। दुर्गा का अवतार कहते हैं। वह माता काली स्त्री है। देवल जी गारबी को उनके मायके के किसी सरदार ने पोडी भेंट की है। यह पोडी बहुत तेज है। कालमी इसका नाम है। जिन राव ने तोरे उससे ही पोडी को माँग भेजा। उसने कहा," हमारे हवाले करो अपनी पोडी यह स्त्री के काम की नहीं। राजा के योग्य है। वैसे तो हमें यों ही भेंट कर देना चाहिए थी। यह पोडी तुमको, परन्तु चाहो तो बदले में दाम दे सकता हूँ।[1] "देवल जी अधेड़ अवस्था की स्त्री थी। तन और मन से सौन्दर्य उसका बहुत समय पूजा पाठ में जाता था। गरिमा थी। और बात की धनी। बड़ी स्वाभिमानी और निडर। राजस्थान का जलवायु उसे ही तो पाया था।[2] परन्तु देवल जी ने राजा जिनराज खींची को दुरन्त कोरा उत्तर भिजवा दिया। " आप हमारे राजा हैं। भगवान ने आपको प्रजा-पालन के लिए राजा बनाया है किसी का धन सम्पत्ति छीनने के लिए नहीं। पोडी नहीं दी जा सकती।[3] जनता की श्रद्धा उस स्त्री के प्रति बहुत थी। वह कोलुगढ़ के पास गाँव जाकर रही। उसने बापू जी से कहला भेजा " मेरे मेहमान को आपसे में बहुत हानि पहुँचाई गयी। मुझे अपनी गायें बहुत प्यारी हैं। जो बची हैं उन्हें भी मैं बहुत संकट में पड़ा देख रही हूँ। यदि आप मेरी गायों की रक्षा के लिए अपना सिर देने को तैयार हों तो मैं अपनी पोडी आपके पास भिजवा सकती हूँ। मुझे दाय नहीं चाहिए। मुझे तो क्षत्रिय का केवल यह वचन चाहिए। गाय की रक्षा में अपना प्राण सौंप देना वैसे भी आपका धर्म है।[4] बापू जी ने स्वीकार कर लिया। बापू जी ने कहला भेजा - मैं अपना सिर देवल जी के चरणों में दे चुका हूँ। मेरा प्राण उनके मेहमान की रक्षा करते कभी भी जा सकता है। मेरे साथ विवाह करने से क्या लाभ होगा बापू जी की तलवार कालमा पोडी पर थी और सुनाई दिया कि वापस के जिनराज खींची ने देवल

1-रहिम ग्रन्थ वचन का निर्वाह-पृष्ठ-37 वृन्दावन लाल वर्मा।
2-रहिम ग्रन्थ वचन का निर्वाह-पृष्ठ-39 वृन्दावन लाल वर्मा।
3-रहिम ग्रन्थ वचन का निर्वाह-पृष्ठ-39 वृन्दावन लाल वर्मा।
4-रहिम ग्रन्थ वचन का निर्वाह-पृष्ठ-40 वृन्दावन लाल वर्मा।

-4-

की चारियों की गायें घेर ली है। छुड़ाये लिये जा रहे हैं । सिर पर छत्रा का मुकुट था। बापू जी को देखा जी की गायें छुड़ाने में सफलता प्राप्त हुई गये हर आ गयी । फिर घोर युद्ध हुआ। बापू जी ने जिराज के से झपटा तो छीन लिया परन्तु युद्ध में अपना सिर दे दिया । आज भी राजस्थान में बापू जी को देवता की तरह माना जाता है । और उनकी स्मृति पर उनकी कीर्ति पर फूल चढ़ाये जाते है।[1]

इस कहानी मेंदेवल जी का गायों के प्रति प्रेम लक्षित होता है, वह घोड़ी के बदले में पैसे भी नहीं लेना चाहती इसे प्रीती होता है कि उसे किसी प्रकार का भी लोभ नहीं है वह अपने बछड़ों की रक्षा करती है तथा गायों तथा घोड़ी की सुरक्षित रखना चाहती है। इस प्रकार वह स्वाभिमानी है। उसका चरित्र उज्ज्वल और आदर्श है ।

कठिनाईयों का सामना करो, कहानी में सुधा का चरित्र चित्रण किया गया है। वर्षा होने लगी और उससे उसकी माँ तथा अन्य स्कूल जाने के लिए मना करते है क्योंकि वर्षा हो रही है, मुहल्ले की एक लड़की ने सुधा की ओर देखकर बोली," क्यों दीदी ऊपर की यह मूसलाधार और सड़क पर बहने वाली धारा क्या पेशवा के उस प्रवाह से भी ज्यादा गहरी और तेज है जिसको झाँसीकी रानी लक्ष्मी बाई और उनकी सखियाँ सुन्दर और मोती बाई ने उस दिन प्रत्यंचा की तो घोड़ लगाकर पार किया था। [2] वे अब सोच रहीथी -हम लक्ष्मीबाई के कम नहीं हम तो निडर ही रहेंगे।

सुधा ने नम्रता के साथ उत्तर दिया,कि-" कठिनाईयों का सामना करना सीख रही है । हम कब । "[3]

इस कहानी में सुधा के साहस का वर्णन है । वह किस प्रकार वर्षा में भी हिम्मत करके विद्यालय जाती है। सुधा के साहस व हिम्मत का इस कहानी में वर्णन है ।

1- रश्मि लूह बसन का निर्वाह पृष्ठ- 42 सुन्दरलाल वर्मा ।
2- रश्मि लूह बसन का निर्वाह पृष्ठ- 45 सुन्दरलाल वर्मा ।
3- रश्मि लूह बसन का निर्वाह
"कठिनाईयों का सामना करो"पृष्ठ-46 सुन्दरलाल वर्मा ।

ढले पाँव (शिकारी कहानियाँ)

" ढले पाँव" वृन्दावन लाल वर्मा की शिकारी सम्बन्धी कहानियों का संग्रह है । इसमें शिकारी सम्बन्धी छोटे-बड़े तेरह कथानक है । वर्मा जी का कथन है कि " ढले पाँव" अधिकांश में मेरी शिकार सम्बन्धी आत्मकथा है जो लगभग सन 1922 से आरम्भ होती है ।[1] वे पहाड़ों और नदियों में इतना घूमे है कि घटनायें कभी भूल नहीं सकते । अनेक घटनाओं की तो उन्हें तारीखें याद है। उनका कथन है कि," शिकार कोई खेले या न खेले ,परन्तु मैं परन्तु मैं अनुरोध करूँगा कि जंगलों और पहाड़ों में घूमें जरूर । घूमे ही नहीं घटकें और दो चार अपने घटने की फोड़े ।" [2] आगे वे कहते है कि ," जंगल पहाड़ों के सांनिध्य के अभ्यास को परिश्रम जीवन की कठिनाईयों से लड़ने और क्या उनसे पार पाने की क्रिया में परिवर्तित कर दें तो किसी को क्या शिकायत हो सकती है । न भी कर सकें तो उस भ्रमण का आनन्द ही क्या कम मूल्यवान है।" [3]

इस उपन्यास के आख्यान में प्रायः वर्मा जी के जीवन से सम्बन्ध रखने वाले शिकार सम्बन्धी कथानक है। इसलिए इनमें नारियों के चरित्र सम्बन्धी वर्णन नहीं आये है। इसके कथानक वर्मा जी के शिकार सम्बन्धी वर्णनों एवं अनुभवों तक सीमित है। इस उपन्यास के अंत में वर्मा जी ने लिखा है कि," दुनाली से डरों न खाने की कसम तो बहुत पहले से ले चुके थे । अब डरों कारतूस की पेटी में न रखने का निश्चय कर लिया । [4]

1-ढले पाँव वक्तव्य पृष्ठ-1 - वृन्दावन लाल वर्मा ।
2-ढले पाँव वक्तव्य पृष्ठ-1- वृन्दावन लाल वर्मा ।
3-ढले पाँव वक्तव्य पृष्ठ-2 वृन्दावन लाल वर्मा ।
4-ढले पाँव वक्तव्य पृष्ठ-100 वृन्दावन लाल वर्मा ।

तृतीय अध्याय

वर्मा जी के उपन्यासों में नारी के विविध रूप

ऐतिहासिक

दुनयनी उपन्यास में आये हुये सभी प्रमुख पात्रों को छोड़कर ऐतिहासिक है । बोधन ब्राम्हण ऐतिहासिक व्यक्ति है । दुनयनी ने अपने व्याह के पूर्व पहले राजा मानसिंह से वचन लिये थे, उनमें से एक यह भी था कि राजा राई गाँव से ग्वालियर किले तक तोप नदी की नहर से जायेंगे । राजा ने यह नहर बनवाई उसके चिन्ह अब भी अवशेष में है ।

मान सिंह तोमर 1486 से 1516 तक ग्वालियर का राजा रहा फरिश्ता के इतिहास लेखक ने मानसिंह को वीर और योग्य शासक बताया है । अंग्रेज इतिहास लेखकों ने मानसिंह के राज्य को तो तोमर शासन का स्वर्णयुग कहा है । सिकन्दर ग्वालियर पर पाँच बार सेना ले आया । पाँचों बार उसको मानसिंह के सामने से लौट जाना पड़ा । उसके दरबारी इतिहास लेखकों अखबार नवीसों ने लिखा है कि मानसिंह ने प्रत्येक बार सोना चाँदी देने का वादा सोना चाँदी नहीं देकर टाला । यह आश्चर्य है कि सिकन्दर सरीखा कठिन योद्धा मान भी लेता था । परन्तु ग्वालियर राज्य में था उस पर शासन राजसिंह कछवाह का था । राजसिंह ने सिकन्दर का साथ दिया।नरवर वाले 11 महीने तक लगातार कुछ में छाती अड़ाये रहे । ऐसे युद्ध में इतने संकटों में भी मानसिंह हुआ ।

ग्वालियर किले के भीतर मान मन्दिर और गुजरी महल हिन्दू वास्तु कला के अत्यन्त सुन्दर और मोहक प्रतीक है । ध्रुपद और धमार की गायकी और ग्वालियर का खियाल जिसके शिरोमणि तानसेन आज

भी भारत भर में प्रसिद्ध है । मुख्य वास्तु और स्थापत्य कला मानसिंह के ग्वालियर शिल्पियों की देन है । मानसिंह मान मन्दिर और गुजरी महल को कला के प्रेमियों की मुस्कान कहते हैं ।

गुजरी रानी मृगनयनी के साथ मानसिंह का विवाह 1492 के लगभग हुआ होगा । मान मन्दिर और गुजरी महल के भवन की कल्पना को मृगनयनी से प्रेरणा मिली होगी । केलमाव नायक [पेहु आवरा] मान सिंह मृगनयनी के नायक थे । गुजरी टोड़ी, मंगल गुजरी इत्यादि राग इसी मृगनयनी के नाम पर बने हैं । मृगनयनी गुजर कुल की । राई गाँव की दरिद्र किसान कन्या अपरोरिक बल और परम सौन्दर्य के लिये विवाह से पहले ही प्रसिद्ध थी । परम्परा के अनुसार कहा गया है कि राजा मानसिंह राई गाँव के जंगल में शिकार खेलने गये तो देखा कि मृगनयनी [आरम्भ की मिन्नी बंगली बेटी की तरह पकड़कर मरोड़ रही है और उसको मोड़ रही है । राई के ऊपर ऊँची पहाड़ी पर स्थित उसके भाई की गढ़ी भी अब खण्डहर हो गई है । परन्तु उसके भाईबन्द और साथी के स्थानों के खण्डहर नहीं हुये हैं ।

साथी और उसकी कथा के साथ नटों का सम्बन्ध है । नटों और नरवर के प्रसंग में एक दोहा प्रचलित है -

नरवर गढ़ न बेहनी, कुँवी छनै न छाँट
पुलनोटा मोचन नहीं, एरच पकै न ईंट।

किम्वदन्ती है कि किसी ने एक नटिनी[बेहनी] को नरवर किले से बाहर इ रास्ते पर ले-दुने जाकर को किले के बाहर एक पेड़ से बँधा हुआ या चिड़ी से बाँधे के लिये कहा और कथन किया कि यदि

चिट्ठी बाहर पहुंचा दो तो नरवर का आधा राज्य दे दिया जायेगा । नलिनी रस्से के सहारे किले से बाहर हो गई । जब उसी सहारे शिवाजित आ रही थी तब बाज देने वाले ने रस्से को काट दिया और नलिनी नीचे खड्ड में गिर कर चकनाचूर हो गई ।

हम कह सकते है कि हुनरबानी ऐतिहासिक पात्र है और हुनरबानी उपन्यास ऐतिहासिक उपन्यास है । वर्मा जी ने इस उपन्यास में अनेक ऐतिहासिक तथ्यों का उद्घाटन किया है ।

टूटे कांटे उपन्यास के मुहम्मदशाह व नादिरशाह तो ऐतिहासिक पात्र है । डा०/वृन्दावन/लाल/वर्मा/ने/टूटे परन्तु मुरबाई भी ऐतिहासिक पात्र है । डा० वृन्दावन लाल वर्मा ने टूटे कांटे की भूमिका में लिखा है "विजेता (नादिरशाह) ने और अभियानों के उपरान्त कुछ अवकाश मनोरंजन के लिये निकाला । उसके सामने नृत्य और गान हुये । मुरबाई नाम की एक भारतीय नर्तकी ने अपनी तेजस्वी शक्ति और विजेता के सम्मान से उसे इतना मुग्ध कर दिया कि उसने मुरबाई को चार लाख रुपये दिये और साथ में ईरान ले जाने का आदेश दिया । इस अन्तिम कृपा से मुरबाई ने अत्यन्त कठिनाई के साथ अपने को बचा पाया ।"[1]

मुरबाई भारतो की गर्वीली मराठी ही थी उसे मुरलास, नन्हका नन्हदास और रसलान के पद बहुत प्रिय थे । जो सहता है वह मुरबाई ने कोई पद गाया तो मुहम्मद शाह ने नादिरशाह को सुनाया जो कि कन्हैया की तारीफ का पद आपकी ही तारीफ में है ।"[2]

---

1. टूटे कांटे की भूमिका डा० वृन्दावन लाल वर्मा
2. " " " "

-: ऐतिहासिक :-

अहिल्याबाई इतिहास प्रसिद्ध सूबेदार मल्हारराव होलकर के पुत्र खण्डेराव की पत्नि थी । उनका जन्म सन 1727 में हुआ था और देहान्त 13-8-1795 को तिथि उन दिन महाराष्ट्र कन्या चूड़ामणी थी । अहिल्याबाई किसी बड़ी भारी राज्य की रानी नहीं थी उनका कार्यक्षेत्र अपेक्षाकृत सीमित था। फिर भी उन्होंने जो कुछ किया उसे आश्चर्य होता है ।

"सन बारह वर्ष की आयु में उनका विवाह हुआ । 29 वर्ष की उम्र में विधवा हो गयी थी, परिवार सामान्य फैला और उग्र था, वह सब उन्होंने सहा । फिर जब 42-43 वर्ष की थी तो पुत्र मालेराव का देहान्त हो गया । जब अहिल्याबाई की आयु 62 वर्ष की लगभग थी दौहित्र नत्थु का अन्त । चार वर्ष पीछे प्रासाद मालेराव जब से न रहा । और उनकी सुनी सुखसर्वार्थ नहीं हो गयी । पुत्र के तत्पश्चात तुकोजीराव के पुत्र मल्हारराव पर उनका स्नेह था, सोचती थी कि आगे चलकर यही शासन सम्भालेगा ,न्याय और प्रजारंजन की ओर ध्यान देगा । पर वह अंत तक उन्हें दुख देता रहा विलास,अपेक्षाकृत पीछा ना सर्वथा अपमान में आया है ।

अहिल्याबाई ने अपने राज्य की सीमाओं के बाहर भारत भर के प्रसिद्ध तीर्थों और स्थानों में मंदिर बनवाये घाट बंधवाये ,कुओं और बावड़ियों का निर्माण किया, मार्ग बनवाये, कुओं के लिए अन्नदान सीमे, प्यासों के लिए प्याऊ बिठवाई। मंदिरों में विद्वानों की नियुक्ति शास्त्रों के मनन-चिन्तन और प्रवचन हेतु की । और आत्म प्रतिष्ठा के ऊँचे मोह का त्याग करके सदा न्याय करने का प्रयत्न करती रही मरते दम तक वे उसी परम्परा में थी । जिसमें उनके समकालीन पुणा के न्यायाधीश राम शास्त्री थे और उनके पीछे झाँसी की रानी लक्ष्मीबाई हुई । [1]

1-अहिल्याबाई पृष्ठ- 2 पुन्नालाल वर्मा ।

धार्मिक

महारानी दुर्गावती गौ रक्षा की समर्थक है । जब साधु समाज खुले में डेरा लगाकर हल चलाते है क्योंकि किसान गौ को हल में जोत रहे थे और नहीं मान रहे थे तो दुर्गावती उनसे कहती है कि वह सरकारी कोष से बैल मंगवायेगी और सुधार करेगी जिससे गौ हल में नहीं जोती जायेगी तो साधु समाज के व्यक्ति मान जाते है । पच्चीस हजार लोगों की आरतियां उसके देवर को मिली है जो वह अपने पति दलपतिशाह से कहकर उन्हें यह देकर कि प्रमाण को सही दे दे कि उसकी है समस्त आरतियों को साहूकार कौड़ीदास को लौटवा देती है । वह अधर्म नहीं चाहती । वह कर जैसा भी माफ करवा देती है । इससे उनकी धार्मिक प्रवृत्ति दृष्टिगोचर होती है ।

रूपा सोना उपन्यास की पात्र लक्ष्मी जी का ध्यान लगाती है। वह धर्म से बढ़कर धन को नहीं मानती ।[1] वह लक्ष्मी जी की पूजा करती है । रूपा को पूरा पक्का विश्वास है मेरा भगवान मेरे साथ है।उनकी रक्षा का हाथ मेरी पीठ पर यहाँ और मेरे पति की पीठ पर वहाँ है।[2] उसे भगवान पर अटूट विश्वास है। उसे आस्था है कि " जिन भगवान ने मुझको तलवार होने की मजबूरी पर भेजा है वे ही पार लगायेंगे।" मेरा सत्य अडिग है तो वे ही भगवान मेरी रखवाली करेंगे।"[3] रूपा का विश्वास है कि देवता पत्थरों को मनोहर बनाने से नहीं गरीबों के जिलाने से प्रसन्न होते है जब उसे जमीन से कहीं में मुल्यवान सिक्के मिलते है तो वह उन्हें सन्न छोड़ देती है ।

---

1. सोना पृ0 104 वृन्दावन लाल वर्मा
2. " पृ0 178 "
3. " पृ0 201 "

धार्मिक

अहिल्याबाई धार्मिक थी, पीछे की बातों से * गङ्गा की महारानी ने उत्तर में बद्रीनाथ केदारनाथ, और कुरुक्षेत्र से लेकर दक्षिण में रामेश्वर तक, और पश्चिम में द्वारका सोमनाथ से लेकर पूर्व में गया और जगन्नाथपुरी तक सैकड़ों मंदिर, धर्मशालायें, घाट, कुंये इत्यादि बनवाये थे। अन्य तन्य कीमे थे। वे सब अपनी अपनी आमदनी जागीर की आय की बचत से। [1] अहिल्याबाई ने सिद्ध क्षेत्रों के मंदिर की पिण्डारती, गोत्र यात्रा, गंगाजल, महुमने की विधि इत्यादि कार्य का प्रबन्ध किया गया। भारतके सारे बड़े-बड़े तीर्थों में उनकी उपतीर्थ, स्थान स्थान पर धर्मशाला कुंये, तुड़वाये थे, घाट और मार्ग बन वाये थे। उनके राज्य में सब बड़े और निर्भय थे गये। आमदनी जागीर और अन्य परजनों के आय-व्यय का लेखा जोखा और हिसाब किताब रखा गया। [2]

1-अहिल्याबाई पृष्ठ- 21 गुन्हाराव साल वर्मा।
2- अहिल्याबाई पृष्ठ- 23 गुन्हाराव साल वर्मा।

" धार्मिक ललितादित्य "

ललितादित्य उपन्यास में राजा ललितादित्य की पत्नि कमलावती धार्मिक नारी है । उसने मंदिर निर्माण करवाये और जब मेहतरों के निवास के स्थान पर मंदिर बनवाने की योजना बनाती है तो मेहतर और उनके परिवार सामने सहज में आते हैं विनती करते हैं कि वे अपने पूर्वजों के स्थान को नहीं छोड़ेंगे। इस विनती पर कमलिन में वह अपने निर्णय को बदल देती है। वर्मा जी लिखते हैं," भक्ति भावना के रस में उस समय ऐसी भीग गई थी कि वह किसी मंदिर की पुजारिन हो ।"[1] वे आगे लिखते हैं कि अपने मन में मुक्तमर्दिका को छुपा ले और आनन्द की लहरों में बह जाये। अचला रानी कमलावती के अन्तःपुर में जा पहुँचे। जो भक्त पूजन की ओर विशेष रूप से लग गई है ।[2] रानी कहती है," मुझे तो परिवेश की पूजा और भगवान शंकर के भजन से जो आनन्द मिलता है वही बहुत बल देता रहता है।[3] ललितादित्य रानी के सम्बन्ध में कहता है ,"मुझे अब कोई और दुःखद काम नहीं करना चाहिए । वह भजन पूजन बहुत करने लगी है, और ऊँचाई पर पहुँच गई है। [4]

मुक्तमर्दिका राजा को पत्र लिखती है। आपका जो प्रेम मुझे प्राप्त हुआ वह अपार है। उसी ने मुझे भगवान के चरणों में अर्पित किया है। भजन पूजन में मन लगा रहता है और विश्वास है कि आपकी कृपा और भगवान की दया से आजीवन उसी में लगा रहेगा।" [5]

जब रनिवास में पहुँचने पर रानी उनका स्नेह के साथ स्वागत करती है तो राजा कहते हैं," तुम भक्ति भावना से ओत प्रोत हो मुक्तमर्दिका। महारानी रहो, और हम सबकी सुख कामना के लिए भगवान से प्रार्थना करती रहो।" [6]

1-ललितादित्य पृष्ठ- 11 वृन्दावन लाल वर्मा ।
2-ललितादित्य पृष्ठ- 78 वृन्दावन लाल वर्मा ।
3-ललितादित्य पृष्ठ-230 वृन्दावन लाल वर्मा ।
4-ललितादित्य पृष्ठ-273 वृन्दावन लाल वर्मा ।
5-ललितादित्य पृष्ठ-138 वृन्दावन लाल वर्मा ।
6-ललितादित्य पृष्ठ-139 वृन्दावन लाल वर्मा ।

देवी

अब मेरा कोई उपन्यास की कुन्ती असाधारण है । उसका जीवन भी असाधारण है । वह धनेश्वर से नारियों को छुड़ाती है । वह अजय से प्रेम करती है परन्तु शिवा से विवाह करने को कहती है। वह अपने जीवन को उत्सर्ग करती है । वह अजय से कहती है" आप शिवा के साथ प्रेम करिये, उसके साथ ब्याह करके उसको अपनाइये । केवल यही त्याग और यही प्रेम का विसर्जन ।"[1] वह शिक्षक और शिष्य तक के सम्बन्ध में अधिकार नहीं मानती । वह कहती है, मैं शिक्षक और शिष्य तक का सम्बन्ध अधिकार का नाता नहीं मानती। और उनमें भी इतनी महानता या उदारता यह भी है कि इस पवित्र सम्बन्ध के मार्ग में कभी राई रत्ती इधर उधर डाँवाडोल होते नहीं दिखते ।"[2]

विराटा की पद्मिनी उपन्यास में कुमुद देवी के रूप में हमारे सम्मुख आती है । वर्मा जी लिखते हैं " उस कन्या को देवी का अवतार मानते हुये न केवल गाँव के लोग ठठ के ठठ जमा होकर उसके घर पर या मन्दिर में जाते थे बल्कि बाहर के दूर दूर के लोग भी उसे मानता मान मानकर आते थे ।"[3] परन्तु कुमुद कहती है " मैं तो दुर्गा से केवल प्रार्थना करती हूँ स्वयं किसी को कुछ नहीं दे सकती जो अपने प्रतिकूल विश्वास करते हैं वे अपने साथ अत्यन्त अन्याय और मेरे साथ क्रूरता

---

1. अब मेरा कोई पृ0 235 वृन्दावन लाल वर्मा
2. " " पृ0 126 " "
3. विराटा की पद्मिनी वृन्दावन लाल वर्मा पृ0 7

करते है ।"[1] तरुण सिंह कहते है , उस लड़की को लोग देवी का अवतार मानते हैं और वह मेरी जाति की है । मैं क्या कर सकता हूँ मैं नहीं जाता ।"[2] कुमुद कहती है" देवी सर्व व्यापिनी है । हम लोग किसी बंधन में बंधन करेंगे ।"[3] गोमती कहती है कि "क्या वह नहीं जानते कि कुमुद लोक पूज्य है और देवी का अवतार है ।"[4] कुन्दर कहता है सती गुफा में वह देवी थी । कल्याण और रूप त्रिवेणिता और वाक्य, वरदान और प्रेरणा की वह निधि उस कठोर गुफा के भीतर ।[5]

---

1. विराट की पश्चिमनी कुन्द्रावन लाल वर्मा पृ0 90
2. " " पृ0 211
3. " " पृ0 219
4. " " पृ0 222
5. " " पृ0 298

-: देवी :-

सिन्धुरी धार्मिक है। सिन्धुरी ध्यान लगाकर रात के समय पुत्र प्रेमी की बना बनाकर भविष्य की बातें लिख लिखकर देती है।-कोलिंसी है नहीं नहीं । तत्पश्चात मल्हार अपने परराष्ट्र की योजनायें कार्यान्वित करता था । [1] मल्हार कहता है," देवी की सिन्धुरी की पूर्ण उपासना से प्रसन्न हो जायेगी । यहाँ के सब केस तय मुझे मिल देगी।[2] सिन्धुरी फिर बराबर गम्भीर होकर ध्यान में डूब सी गयी और थोड़ी देर के लिए अचेत हो गयी । लोगों ने कल्पना की देवी माता उस पर छा गयी ।[3] अहिल्याबाई ने कहा," सिन्धुरी के शीघ्र कहा के साथ विवेक का मिला, है। पूर्ण मातृ की छाया भी उस पर हो गयी है। "[4] अयोध्या से अहिल्याबाई के कारवाही का एक अपना मंदिर में श्री राम चन्द्र जी की मूर्ति के नीचे लिखा हुआ है आपकी मूर्ति देखी तो आर्य हुआ । [5] अहिल्याबाई का जो कुछ देखा उसे एक शब्द में ही सोचा न पूरा कर सकी देवी, देवी । देवी ।"[6] अपने बचपन काल में ही उन्हें लगता "देवी" सामने आकर कहने लगी थी । उसका बड़ा व्यक्तित्व कलाप ने अपनी आँखों देखा ही नहीं,व्यक्त था । [7]

1-अहिल्याबाई पृष्ठ- 51 वृन्दावनलाल वर्मा ।
2-अहिल्याबाई पृष्ठ-63 वृन्दावन लाल वर्मा ।
3-अहिल्याबाई पृष्ठ-73 वृन्दावन लाल वर्मा ।
4-अहिल्याबाई पृष्ठ-110 वृन्दावन लाल वर्मा ।
5-अहिल्याबाई पृष्ठ-104 वृन्दावनलाल वर्मा ।
6-अहिल्याबाई पृष्ठ-107 वृन्दावन लाल वर्मा ।
7-अहिल्याबाई पृष्ठ- 2 वृन्दावन लाल वर्मा ।

निम्नवर्गीय

मुनमुनी सुन्दर युवती थी । वह राई गाँव की दरिद्र किसान कन्या थी । वह शारीरिक बल और परम सौन्दर्य के लिये विवाह के पहले ही प्रसिद्ध हो गई थी । वह तमाम गुणों से सम्पन्न है । वह अपने के माथे के बाँयें बाँधती है । वह जब अपना काँपता हुआ फूल भरा हाथ मानसिंह के हाथ में दे देती है तो कहती है,

" मैं नहीं जानती क्या कर रही हूँ । मेरी बात रखना ।" ग्राम के लोग इसको निम्नी कहते हैं ।" वह कन्या जिसने एक एक तीर से बड़े नाहर अपने, मेरे दोनों हाथ दुश्मन मार गिराये हैं ।ऐसा निशाना लगाती है कि आपके सामन्त भी घबरा जाये । गाती भी बहुत अच्छा है ।"[12]

लाखारानी भी निम्न वर्गीय है । वह मुनमुनी की सहेली है । पुजारी ने उसकी इस प्रकार व्याख्या की है" महाराज इसका नाम लाखारानी है । कहते हम लोग इसको लाखी है । यह अहीर है । कुमारी है । बड़ी बहादुर है । इन्हीं दोनों लड़कियों ने उन दो बैरियों को मार गिराया था और दो को भगा दिया था । यह भी बड़ा अच्छा निशाना लगाती है ।[13] लाखी बहुत भी है जब स्त्री पूछती है कि नाहर कहाँ से आई तो लाखी कहती है"इन्होंने नाहर को तीर से मारा और अपने भैंसे के सींग मोड़ दिये । इसलिये राजा ने इनाम में भैंसा दे दी ।[14] मुनमुनी की बहादुरी और लाखा के चातुर्य के दर्शन होते हैं। मुनमुनी बहुत छोटे निम्नवर्गीय घर की थी परन्तु मानसिंह के साथ उसका विवाह होता है

---

1. मुनमुनी पृ0 183 वृन्दावन लाल वर्मा
2. " पृ0 165 "
3. " पृ0 166 "
4. " पृ0 190 "

उच्च वर्गीय

महारानी दुर्गावती जबलपुर के अभिलेख गोंड कीर्तिलिखित की एक मात्र नैतृत्व थी । वह शिकार में बारूदका एवं तीर चलाने में निपुण थी। वह शेर का शिकार करने की क्षमता थी । वह युद्ध के मार्ग से मनिकाण्ड के गोंड राजा हमनिशाह के साथ आती है तथा वहाँ उसके साथ विवाह हो जाता है।और पुत्र उत्पन्न होता है । वह अपनी प्रजा का ध्यान रखती है। वह लगान बराबर तेजी से सुधार करती है । वह प्रजा की कुल वृद्धि का पूर्ण प्रचार करती है । वह साधु संतों को भी सन्तुष्ट करती है और गौरक्षा की समर्थक है। वह युद्ध घबडाती नहीं है। वह अकबर के अपना सैन्य हाथी नहीं देती और देश की रक्षा के लिए आत्म उत्सर्ग तक कर देती है। वह सौन्दर्य की प्रतिमा है और तैतीस वर्ष की वय में भी इक्कीस वर्ष की लगती है। वह युद्ध क्षेत्र भी धारण करती है तथा वहाँ की घबडाती नहीं है। वह राज कार्य संचालन में भी पूर्ण दक्ष है। वह अपने पति के साथ राजकार्य में साथ ही नहीं बटाती अपितु अकबर्र से कार्य सम्बन्ध करती है । वह अनेकानुरूप क्षेत्रों का उद्धार करती है और अन्य किसानों की सहायता करती है। उसने कर की प्रथा को भी समाप्त कर दिया । वह उच्चवर्गीय रानी की भाँति समस्त कार्य सम्पन्न करती है।

लक्ष्मीबाई उपन्यास में लक्ष्मीबाई की पत्नि जनकाबाई भी उच्चवर्गीय वर्ग में आती है। वह लक्ष्मीबाई के प्रत्येक स्थानों का हर सम्भव प्रयास करती है। वह राजा के मंदिरावास का भी प्रबन्ध करती है। वह अनेकों मंदिर निर्माण की योजना बनाती है और समय सब बन उपवास के कार्य-व्यापारों का परामर्श राजा को देती है। वह हर प्रकार से पत्नि के कर्तव्य की क्षमता से आच्छादित है। वर्मा जी ने अनेक राजा और रानियों के सम्बन्ध में लिखा है,वे सभी उच्चवर्गीय है ।

चतुर्थ अध्याय

वर्मा जी के कथा साहित्य में स्वतन्त्र व प्रगतिशील नारी की विशेषतायें

वीरत्व

झलकारी और लाली दोनों ही वीर हैं । उनकी वीरता का वर्णन कुमारी माणिक्य ने इस प्रकार करते हैं ," महाराज इस लड़की का नाम झलकारी है । गाँव के लोग इसको ~~स्नेह~~ निम्मी कहते हैं । यही है हमारी वह कन्या जिसने एक एक तीर से बड़े बड़े नाहरजरने, ~~शेरों~~, चीतों वाले तुर्क मार गिराये हैं । ऐसा निशाना लगाती है कि आपके सामन्त भी घबरा जायें । गोली भी बहुत अच्छा है हमारी निम्मी ।"[1] राजा मुरलीधर कहते हैं" शास्त्री की कन्या है वह गाँव जहाँ सब गुणों से सम्पन्न झलकारी जैसी स्त्री हो ।"[2] झलकारी बहुत वीर थी । देखिये" निम्मी का एक तीर से बड़ी बड़ी चीतों वाले तुर्कों का मारना और कन्धों पर एक भारी भरकम तुर्क को चोटों की छुरी से अपने घर उठा ले जाना तथा अपने भैया का लाली द्वारा अंतिम तीर से मारा जाना , दूर दूर तक थोड़े ही समय में विख्यात हो गया। उधर मालवा की राजधानी माण्डू , मेवाड़ की राजधानी चित्तौड़, गुजरात की राजधानी अहमदाबाद पहुँची । और भी अन्यान्य स्थानों पर साथ ही प्रसिद्ध हुआ उन दोनों युवतियों का अद्वितीय अद्वितीय असाधारण सौन्दर्य और लावण्य भी ।"[3] अटल ने तुर्कों को कोट पर से मार भगाया स्त्री कहती है तुम्हारी हो न वह मुझ ठाकुर जिन्होंने रात में तुर्कों को कोट पर से मार भगाया ।"[4]

रानियों की आँखों ने तीर कमान और तलवार को कभी अपनी सखी नहीं बनाया क्योंकि," बल्कि की सखियों ने आग और चिता को

---

1. झलकारी पृ0 165 वृन्दावन लाल वर्मा
2. " पृ0 165 "
3. " पृ0 69 "
4. " पृ0 275 "

जितना प्यार किया उसके बराबर तीर और तलवार के साथ भी करना चाहिये था । आने दीजिये वैरी को किले के निकट फिर देखिये मेरा और लाली का काम ।"[1] सुमनमयी ने कहा " मैंने महाभारत में पढ़ा है कि क्षेत्र की रक्षा शस्त्र द्वारा हो जाने पर ही शास्त्र का चिन्तन हो सकता है । मेरा यही प्रयोजन है और कुछ नहीं ।"[2] सुमनमयी किले की रक्षा के लिये लाली के साथ रहती है । सुमनमयी बोली" मैं भी यही चाहती हूँ । भैया से कहे देती हूँ राई की गढ़ी कुछ बड़ी नहीं है । हम दोनों यहाँ किले की रक्षा के लिये एक साथ रहेंगी ।"[3] सुमनमयी और लाली दोनों ही वीर है ।

गन्धर्वसेन वीर है । वह पुरुष का भी वेश धारण कर सकती है । घोड़े पर चढ़कर पानी में भीजकर भी वेश धारण कर अपनी वीरता का परिचय देती है । वह कहती है "मैं पानी का बुलबुला हूँ । आप पानी पीना चाहेंगे तो बुलबुला फूट जायगा ।"[4] जब वह घिर जाती है और गुण्डे पकड़ लेते है तो केश से पुड़िया निकालकर कटोरा में पानी डालकर खा लेती है और दुश्मनों के हाथ में न पड़कर अपने जीवन का अन्त कर देना चाहती है ।

उषा किरण उपन्यास की किरण वीर है वह डाकुओं के जीवन पर अपने पर नियन्त्रण करती है । डाकुओं का मुकाबला करती है और दूसरा डाकू उसकी बन्दूक का शिकार होता है ।किरण और पुष्पा की बन्दूकों से दो मारे जाते है और तीन डाकू घायल होकर गिर पड़ते है।[5]

---

1. सुमनमयी पृ0 321 वृन्दावन लाल वर्मा
2. " पृ0 389 "
3. " पृ0 413 "
4. माधव जी सिन्धिया पृ0 403 वृन्दावन लालवर्मा
5. उषा किरण पृ0 93 वृन्दावन लाल वर्मा

महारानी दुर्गावती वीरत्व की भावना से ओत प्रोत है। वह तीर चलाने में एक कुशल शिकार में शेर को भी एक ही तीर से मार गिराने वाली है। वह पुरुष वेश धारण कर मुद्रासा बाँधकर युद्ध कर सकती है। महावत का चलाया गज नदी के प्रवाह में डूब गया तो हाथी से कूद कर तैरकर उसे बचाने और किनारे पर लाने में समर्थ है। अकबर से भी नहीं डरती और अपने राज्य की रक्षार्थ युद्ध करती है और अपने राज्य की रक्षार्थ वह अपने प्राण तक उत्सर्ग कर देती है परन्तु झुकती नहीं है। "दुर्गावती ने उस दिन भी युद्ध किया था उसने सबको चकित कर दिया।"[1] वहाँ और औरों सबका विश्वास दुर्गावती के शौर्य, तेज, और अनन्त चिन्तन पर था।"[2] अपनी देह वह वैरी के स्पर्श में नहीं आने देना चाहती थी और कटार छाती में बाँध कर अपने प्राणान्त कर देती है।" वह बहुत अच्छा लक्ष्य वेध करती है, साक्षात की मूर्ति है।"[3]

वाशिंगटन ने सोचा रामगढ़ की रानी अवन्तीबाई विकट औरत है। गजब की हिम्मत रखती। आगे कभी इस तरफ आई तो रामगढ़ इस हालत में उसे नहीं मिलना चाहिये वरना वहीं फिर से घेरा डालने में यही दिक्कत पड़ेगी।"[4] यह महिला छोटी अधूरी आग को फिर से जला सकती है।[5] अवन्तीबाई के पास "थोड़े से किसान और साधारण सी कुछ सामग्री साथ में, फिर भी कितना तेज और कैसा शौर्य और कैसी परिस्थिति में वह कहीं से भी किसी सहायता की आशा नहीं थी।"[6]

---

1. महारानी दुर्गावती पृ0 304 वृन्दावन लाल वर्मा
2. " पृ0 269 "
3. " पृ0 79 "
4. रामगढ़ की रानी पृ0 129 वृन्दावन लाल वर्मा
5. " पृ0 130 "
6. " पृ0 131 "

चरित्र [भुवन विक्रम]

गौरी शिवजर हिमानी के षड्यंत्र को समझ लेती है कि किस प्रकार विवाह का ढोंग करके अमेय के मंदिर में पूजा के समय मार देना चाहती है। परन्तु गौरी कहती है मैं भुवन से प्रेम करती हूँ, वह चाहे या न चाहे मैं उसकी रक्षा में अपने तन के खण्ड खण्ड करा दूंगी। मैं उस अवसर पर दूर नहीं रह सकती। दूंगी भी तो दौड़ पड़ूंगी और कहती आग में कूद पड़ूंगी।[1] जब तक देह में प्राण रहेंगे उन पर अर्थात राजकुमार पर आँच नहीं आने दूंगी।[2]

गौरी बहुत धीमे स्वर में कहती है "मैया मैं तो चाहती हूँ कि उनके बचाने में मेरे प्राण जो जायें तो सब कुछ पा गई"[3] हिमानी झुक कर छुरी को भुवन की पीठ के आर पार फेंकना चाहती थी। परन्तु गौरी की छुरी पहले ही छिन आई थी।" गौरी ने प्रचण्ड वेग के साथ हिमानी की छुरी वाली बाँह को अपनी बाँह में लपेट कर और का झटका दिया। हिमानी चक्कर आ गई। गौरी ने इतने वेग के साथ उसे अपने घुटने की झुक दी कि हिमानी औंधी जा पड़ी। दोनों छुरियां दीपक के प्रकाश में चमक गईं।"[4] रोमक का क्या रूप हो गया और कहा "बेटी धन्य है वह शेर जहाँ तुम्हारी सरीखी नारियां जन्म लेती रही हैं।[5]

इस प्रकार गौरी भुवन विक्रम को बचा लेती है।

---

1. भुवन विक्रम वृन्दावन लाल वर्मा पृ0228
2. " पृ0 242
3. " पृ0 291
4. " पृ0 305-306
5. " पृ0 307

वीरता [विराट की पत्नियाँ]

रानी कहती है मैं भी सैन्य संचालन कर सकती हूँ । लड़ना , मरना और राज्य करना भी जानती हूँ ।

छोटी रानी कहती है हमारे भाग्य में राज्य लिखा है प्रजा पालन लिखा है और अर्जुन के भाग्य में प्राणदण्ड का दण्ड बदा है ।[2]

बड़ी रानी किसी से भी नहीं डरती है" मुझे कोई डर नहीं मैं डरती किसी से भी नहीं । परन्तु यह कहती हूँ कि जो कुछ करो, सोच समझकर ।[3]

कुछ जहाँ पुरुष पैर आगे नहीं बढ़ाते वहाँ स्त्रियाँ के आगे पैर बढ़ाने की पक्षपाती है । उसका कथन है" जहाँ पुरुष आगे पैर बढ़ाता है वहाँ स्त्री नहीं बढ़ाती परन्तु जहाँ पुरुष आगे नहीं बढ़ता वहाँ स्त्री को अवसर होने में क्यों संकोच होना चाहिये । [4] रानी वीर है वह कहती है "राज्य नहीं चाहिये और न कदाचित मिलेगा ।परन्तु हाथ में तलवार लेकर देवीसिंह के वध और विजय को अवश्य करूँगी और फिर मरूँगी । अभी [5] कोई नहीं रोक सकेगा यह तो मेरे भाग्य में होगा गोमती रानी फिर कहती है मैंने कपटाचारियों के छल और अधर्म के कारण जो कुछ सहा है उसे मेरे ईश्वर जानते है । मैंने कदाचारियों और विद्रोहियों के सामने कभी सिर नहीं नवाया और न कभी नवाऊँगी ।"[6]

गोमती की ओर से लड़ना चाहती है सैन्य पालन करना चाहती है। मैं भी महारानी के पास रहकर लहुरी ठाकुर की बेटी हूँ । अपना सैन्य पालन करूँगी।[7] इससे अधिक जानने से आपको कोई लाभ न होगा ।

---

1. विराट की पत्नियाँ कुन्दन लाल वर्मा पृ0 120
2. " पृ0 140
3. " पृ0 150
4. " पृ0 248
5. " पृ0 351
6. " पृ0 355
7. " पृ0 356

वीरत्व [झाँसी की रानी]

झाँसी की रानी लक्ष्मीबाई उपन्यास में रानी का चरित्र वीरत्व की भावना एवं देश भक्ति से ओत प्रोत है । वह वीर है ।सागर सिंह डाकू को काबू सागर में पकड़ने के लिये "वे सबसे आगे घोड़े पर पानी में कूद गई ।[1] घोड़ा लगकर सागर सिंह को पकड़ा ।उनका सिद्धान्त था कि "जीवन कर्तव्य पालन का नाम है कर्तव्य पालन करते हुये मरना जीवन का ही दूसरा नाम है।[2] रानी ने ब्रिगेडियर स्मिथ को हराया । देखिये ब्रिगेडियर स्मिथ को रानी ने उस दिन की बातों में और शहरबोरी में मात दी । स्मिथ उनके व्यूह को न भेद सका । उनको लक्ष्मीबाई के मुकाबले में हारकर लौटना पड़ा ।[3] सबसे बाद रानी ने आक्रमण पर आक्रमण करके दुश्मन सवारों को पीछे हटा हटाया । दोनों ओर के सवारों की बेहिसाब दौड़ से धूल के बादल छा गये। रानी के रण कौशल के मारे अंग्रेज बगलें झाँकने लगे । [4]

रानी की सभी सहेलियाँ मोतीबाई सुन्दर, मुन्दी, आदि की उसी प्रकार धीर थी जिस प्रकार झाँसी की रानी । स्वतंत्रता की लड़ाई में उनका भी पूर्ण योगदान रहा । मोतीबाई कहती है सरकार मुझको और मेरी सहेलियों को अलग अलग मोर्चे दिये जाय और फिर देखा जाय कि स्वराज्य की लड़ाई के लिये झाँसी की स्त्रियाँ अकेले क्या क्या कर सकती है ।[5] मोतीबाई सुन्दर आदि सभी नारियाँ तोप चलाती है ।

इतवारी की कहानी वीर है कि वह अंग्रेजों को भ्रम में रखने के लिये उसी प्रकार का शृंगार करती है तथा बढ़िया से बढ़िया कपड़े पहनकर जैसे लक्ष्मीबाई पहनती थी अंग्रेजी सेना को उलझाये रखती है जिससे रानी दूर निकल जाये और अंग्रेजी सेना कुछ न पाये ।

---

1. झाँसी की रानी लक्ष्मीबाई पृ0 265
2. " पृ0 373
3. " पृ0 450 456-373

वीरत्व (गढ़ कुण्डार)

तारा बड़ी वीर है । खिलजी वे जब लग जाती है और वह तारा से कहता है कि अब तुम बाजो तो वह उत्तर देती है " जब तक आपकी मरहम पट्टी नहीं हो जायेगी। , मै न जाऊंगी चाहे तुझे कोई मार डाले।)1)

खिलजी कराहते हुये कहता है , " मै निर्बल नहीं हूँ और यदि मार्ग मे मर भी जाऊं तो चिन्ता मत करना । छोड़कर चले जाना ।लेकिन , तुम रो रही हो ? कुम्भेला कन्या की आँख में संकट के समय में आँसू । यह कहाँ से सीखा ? कुल राजकुल, पवम कुल का स्मरण रखना । लेकिन तैयार हो जाओ , मेरा मोह किया तो कटार मार कर अभी मर जाऊंगी ।")2)खिलजी ने सचेत होकर कहा " मै तैयार हूँ प्रिया । तुमको अपने घोड़े पर गोद में रखकर ले चलूँगा ।")3) खिलजी वीर है ।

---

1. गढ़ कुण्डार पृष्ठ 334
2. गढ़ कुण्डार पृष्ठ 339-340
3. गढ़ कुण्डार पृष्ठ 3340

-: व्याधि-कथित :-

कमलावती गोरे रंग की प्रौढ़ सुन्दरी थी । आयु के कारण अंगों में कुछ शिथिलता आ गयी थी, परन्तु उस घड़ी के उल्लास के कारण और उसकी लावण्य से शिथिलता लुप्त प्रायः सी हो गयी थी । आँखें बड़ी-बड़ी अश्रुधारा की झड़ी देने वाली और उदारता की संकेत ।"[1]

राजा के सिर में पीड़ा होने पर वह सिर दबाने या सुलाने को तत्पर है। रानी पुरन्दर के आक्रोश को समाप्त करके राजा से कहती है "आपके सिर की पीड़ा बढ़ गयी है । दिन भर के खेले, सिर पर रात अभी बीत गयी है । लीजिये सिर दाब दूँ या सुला दूँ। [2] रानी कहती है, और जब परिवेश नाना प्रकार के कार्यों और कथित कार्यों में लगे रहते हैं, फिर भी दर्शन पाकर कृतार्थ हो जाती हूँ। [3] जब राजा कहते हैं कि वह मन को प्रसन्न बनाये रखने के लिए पी लेते हैं तो रानी कहती है ,"मुझे तो परिवेश की पूजा और भगवान श्रीहर के भजन से जो आनन्द मिलता है वही बहुत बल देता रहता है। "[4] जब राजा अधिक पीकर लुढ़क जाते हैं और कहते हैं कि मैं प्रण करता हूँ कि किसी भी परिस्थिति में कदापि मदिरापान नहीं करूँगा । राजा रानी से कहते हैं कि ," तुम्हें बहुत कष्ट हुआ है । मुझे खेद है।" तो रानी कहती है कि," भी चाहे कैसे ही पड़े पद पर हो उसे वह तो भोगना ही पड़ता है। आप सदा सुखी रहें, मुझे और कुछ चाहिए ही क्या।"[5] राजाजी कहते हैं कि इतनी पी जाती कि मैं लुढ़क गया। फिर घर जाता तो अच्छा था । रानी हिचकी के साथ कहती है,"ऐसा मत कहिये कभी मत कहिये, मैं भगवान से प्रार्थना करती रहती हूँ कि आप अमर हों। "

1- ललितादित्य पृष्ठ-41 वृन्दावन लाल वर्मा ।
2- ललितादित्य पृष्ठ-45 वृन्दावन लाल वर्मा ।
3- ललितादित्य पृष्ठ-220 वृन्दावन लाल वर्मा ।
4- ललितादित्य पृष्ठ-228 वृन्दावन लाल वर्मा ।
5- ललितादित्य पृष्ठ-275 वृन्दावन लाल वर्मा ।

स्वाभिमानिनी

आहत उपन्यास में गैरी अपने पुत्र के बाहर जाने पर अपने पति को डाँटते बैठती है। वह अपने पति से कहती है,"बलराम का काम करो। उसकी हवा से एक दिन घर लौटेगा।[1]

वह गैरी का पति वर्मा मौजूद कहता है,"देखती हो मेरे तीन लाख धोये हैं। सोच थी दिया होगा। पिताने हमें भूल-भुला और व्यक्ति गिर अपनी लाख मिले, तो गैरी कहती है ,"मेरे हाथ पैर टूट थोड़े ही गये हैं, यों हम का करने लगे हो मन्द करो का का। [2]

1-आहत पृष्ठ- 92 दुष्यन्त कुमार वर्मा।
2-आहत पृष्ठ-93 दुष्यन्त कुमार वर्मा।

" देश-भक्ति "

ललितादित्य उपन्यास में कुमारदेवी ललितादित्य को लौट आने के लिए पत्र लिखती है। और खोटकर विद्याधरियों से बचने के लिए कहती है। वह देश भक्त है। और विद्याधरियों से अपने देश और राज्य को बचा लेती है। कुमारदेवी लिखती है," तारा भेद खुल गया। खाखिला का नरेश बसन्त और नरेश मेघन के साथ मिलकर षड्यंत्र रच रहा है। आपको बसन्त वादमेघ पर्वतमाला की ओर विजय करने और सेना को नष्ट कराने के लिए ले गया है। कुल पुरोहित ने आकर आपको सेना में लौटने का आदेश दिया है। मेघन और देवली और माल निकलने का प्रयास कर रहा है। उधर बसन्त खाखिला का स्वतंत्र राजा बनने का। ये दोनों सोच रहे है कि आप परसों वादमेघ अभियान में लगे रहे और आपके खजाने को हानि पहुँचे। भगवान शंकर की दया से ऐसा कदापि नहीं होगा। मेघन अमरनाथ तीर्थ की यात्रा के बहाने श्रीनगर से बाहर जाना चाहता है। मुझे साथ चलने को कहा। मैंने उसे अटकाये रखने के लिए हामी भरदी। "[1] कुमारदेवी ने राज्य को शत्रुओं के हाथ में जाने से बचाया।

रानी ने कुमारदेवी से कहा कि " उन्होंने तुम्हारे मेरे पत्र की बात सुनाई तो तुम्हारी भक्ति और प्रीति पर न्यौछावर हो जाने के लिए मन उमड़ा। तुमने राज्य की रक्षा करने के लिए बड़ा साथ लगाया।[2]

राजा सोचने लगा कि," कुमारदेवी ने जो कुछ लिख भेजा था और जो कुछ कहा उसमें लेश मात्र भी झूठ नहीं था।[3] कुमारदेवी देशभक्त है।

1-ललितादित्य पृष्ठ- 138 वृन्दावन लाल वर्मा।
2-ललितादित्य पृष्ठ- 160 वृन्दावन लाल वर्मा।
3-ललितादित्य पृष्ठ- 262 वृन्दावन लाल वर्मा।

अवन्तीबाई देश भक्त थी । वह देश पर विदेशियों का अधिकार नहीं चाहती थी। उन्होंने कहा," देश में एक भी बूँद रक्त जब तक रहेगा हम विदेशियों से लड़ेंगी । न चैन लूँगी और न चैन लेने दूँगी । "(1) जब कलेक्टर रिचारडी ने कहलवाया कि वे आपके नाम पर कुछ जागीर रखेंगे । तो अवन्तीबाई ने कहा," मेरे नाम पर । नहीं मेरे नाम पर नहीं । देश के नाम पर, धर्म के नाम पर, राजा शंकर सिंह के नाम पर, मैं लड़ूँगी और वे सब भी इसी पर लड़े । "(2)

1- रानगढ़ की रानी पृ०- 102 , हृदयलाल वर्मा ।
2- रानगढ़ की रानी पृ०-105, हृदयलाल वर्मा ।

साहस

मिन्नी साहसी है। देखिये उसने उछलकर अपनी ओर आते एक तीर को दोनों हाथों से पकड़कर उसे प्रचण्ड वेग के साथ धक्का दिया उसका मुख गया रिस गया और अम्म से गिर गया। मिन्नी की उसके तीर को पकड़े हुये उस पर गिरी परन्तु सम्भल गई। उसका छोटा सा मुँगिया मुखड़ा कष्टों के साथ झुककर उसे पर गिरा एक और उसे पर बाकी बस्ती पर।[1] मिन्नी का एक तीर बड़ी बड़ी मूँछों वाले दुश्मनों का मारना और वहाँ पर एक भारी भरकम दुश्मन कोलोतो को छुरी से अपने घर उठा ले जाना तथा उसे मेरे का साथी दुखरा बांस के तीर से ही मारा जाना फुर फुर तब थोड़े से ही समय में विश्वास हो गया।"[2] इस प्रकार दुश्मनों और उसके मेरों को मारना मुनमुनी के साहस को द्योतक है।

मुनमुनी का कथन है।"बीमा को बचाते बचाते काम पड़ने पर यदि तुरन्त तलवार न उठा पाई, सोमल सेन पर सोते सोते संकट आने पर यदि तुरन्त ही उठ कर कमरन न कसी युध पद को गाते गाते राहु के सामने आ खड़े होने पर यदि तुरन्त नरम कर चुनौती न दे पाई, जिन कामों में थोड़े स्वरों की रसधार बह चलकर आ रही थी उन्हीं कामों में यदि कर्कश और बहुतों की धुन न लगा पाई तो मेरी"[3] बीमा सेन और सुमधुर की तानों का काम ही क्या?

मुनमुनी का कथन है कि " मैंने महाभारत में पढ़ा है कि क्षेत्र वीरता शास्त्र द्वारा ही बनने पर ही शास्त्र का चिन्तन हो सकता है। मेरा यही प्रयोजन है और कुछ नहीं।"[4] इस प्रकार विदित होता है कि उसमें अपूर्व चिन्तन और अद्वितीय साहस है।

---

1. मुनमुनी पृ0 181 वृन्दावन लाल वर्मा
2. " पृ0 69 "
3. " पृ0 322 "
4. " पृ0390 "

रामा ने एक बार कहा था कि उसके प्राण वेत्रवा में जायेंगे ।[1] वह तालाबी है । रामा मन में या गंगा मैया कहती हुई नदी में कूद पड़ी । भंवरों से डरने वाली रामा को उस अंधेरी रात में उस प्रचण्ड वेत्रवा की भंवर धारा ने डरा न पाया । विकट तालाब के साथ हाथ मारती हुई सघन बादलों में छिपे हुये चन्द्रमा की तरह रामा वेतवा की आँख से उछलती हुई लहरों के ओट हो गई ।"[2] रामा प्राणों की होड़ लगाकर प्रवाह के साथ छूट करने लगी । वह कोमल दुर्बल देह और प्रचण्ड भयानक धारा । भीषण प्रचण्ड रोमांचकारी दुस्तरता बढ़ बढ़ आने वाली लहरों की परवाह नहीं -दृष्टि केन्द्र किसी दूरोज्ज्वल दीप्त स्थान पर निहित । वेत्रवा के उद्धत कोलाहल और लहरा ध्वनि का उत्तर देने वाले केवल वे नन्हें हाथ पैर ।[3] रामा नदी तैर आई है । दुबली पतली है परन्तु बड़ी धीर है ।क्षेत्रसिंह ने हथार गुमा बहुत है ।"[4] क्षेत्रसिंह कहता है कि" हम लोगों ने अपनी चिंता और दुर्बलता से तुम दोनों की तबाह कर दिया लीला पर बहु के पुण्य प्रताप से हम सब बच गये ।"[5]

लीला से वह भेंट कहता है कि हम दोनों एक दूसरे को सुखी बनायें तो वह किस्मत की सांस खींचकर कहती है" मैं दुखारी हूँ और मेरा विवाह होने वाला है ।आप जानते है ।"[6] वह भेंट को काँटे का जवाब देती है वह केवल से कहती है भेंट की चीज केवल है। यों ही वह बन करने को उसकी आज्ञा है । व उंड कंड बोल रहा था और ये भी काँटे का जवाब काँटे से दे रही थी ।"[7]

---

1. नमन पृ0 70 वृन्दावन लाल वर्मा
2. " पृ0 73 "
3. " पृ0 74 "
4. " पृ0 76 "
5. " पृ0 79 "
6. बड़ी मैं बनी पृ0 106 "
7. " पृ0 112 "

जब देवकु कहता है कि " वह बड़ा बदमाश है । अनुचित बातें कर रहा था । मैं ठीक समय पर पहुंच गया वरना न जाने क्या होता।"[1] तो सीता बात काटकर बोलती है " तो क्या होता है, मैंने तो प्राण दे दती और ले लेती । कोई आता या न आता ।"[2]

वह बड़ी साहसी है अति ममता व सुकुमारी भावती है । शिवाकर को जब क्या किया तो शिवाकर कहता है," तारा ये लोग कौन थे और तुमने भी इतना बड़ा साहस किया ? बिना किसी हथियार के इतना पुरुषार्थ तुम दुर्गा हो ।"[3]

जब तारा को विश्वास हो गया कि कल न मिलने के कारण शिवाकर की मनोकामना सी हानत हुई है ।" तुरन्त घड़ा उठाकर बाहर भागने को हुई । न जा सकी । तब मुंह में लोटा लगाकर ऊपर चढ़ी और उसी अवस्था में बन्दरों की तरह दौड़कर नदी से लोटे में पानी भरलाई पहिले से लो बड़े को ऊपर खींचकर लोटे को सिरे से बांधा और धीरे से नीचे उतार दिया। उसके बाद स्वयं संभलकर नीचे उतर गई।"[4] तारा बड़ी साहसी है ।

---

1. कभी न कभी पृ0 112 वृन्दावन लाल वर्मा
2. " पृ0 112 "
3. गढ़ कुण्डार पृ0 335
4. " पृ0 437

अब मेरा कोई उपन्यास की दुनी लाखों है, उसमें हिम्मत है । वह थानेदार का सामना करती है और प्रतिवाद करती है," पुरुषों को स्त्रियों का भरोसा नहीं है इसलिये इस तरह के इरादोंवाले की बात करते है । जो स्त्रियाँ अपनी रक्षा का दम रखती है उनका कोई कुछ नहीं कर सकता । उस दिन थानेदार तमंचा लगाये बैठा था और उसके आस पास सिपाही थे । मैंने हिम्मत करके बंधी हुई स्त्रियों को छोड़ दिया और थानेदार के सामने खड़ी हो गई ।उसको चुनौती दी मैंने यदि तो हिम्मत हो तो परन्तु वह डर कर रह गया ।"[1]

जब महामन्तुक मंगल को मारने के लिये लाठी तानता है तो रघुमुल्ला की बीबी घोड़े से उसकी लाठी पकड़ लेती है और कहकर बोलती है नहीं मार सकोगे ।"[2] जब मंगल कहता है कि मैं" बेरहम मुसलमान हूँ पकड़ो मोपला और काटो । मार डालो ।" रघुमुल्ला की बीबी न्यायालय में कहती है " कभी नहीं "हिन्दू है । आखिर है बम्बई का रहने वाला है मंगल ने सामने खड़े रघुमुल्ला की पत्नी को हाथ जोड़ कर नमस्कार किया । बच्चे रो रहे थे ।" उसने बड़े बच्चे के सिर पर हाथ रखकर मंगल को संबोधन किया और फिर अपनी छाती पर हाथ रख दिया मानो कहती हो कि तुमको अपने छोटे बालक की तरह समझती हूँ।[3] इस प्रकार रघुमुल्ला की बीबी मंगल को मारे जाने से बचाती है । लोमड़ी पंडित जी से प्रायश्चित करने के लिये कहती है।वह बड़े ताव के साथ कहती है उस दिन हम लोगों ने खाना तक नहीं करने देता था और स्वयं सेवा रक्षकों काम किया। उसे जो सेवा प्रायश्चित करवाना चाहिये जिसे वह हिन्दू धर्म में प्रवेश कर सके ।"[4]

---

1. अब मेरा कोई पृ0 230 वृन्दावन लाल वर्मा
2. प्रत्यागत पृ0 49 वृन्दावन लाल वर्मा
3. " पृ0 64 "
4. " पृ0 154 " "

-: साहसी :-

आश्रम उपन्यास में मैकरी और मैना पानी में दूर दूर तक तैर लेती है। जब मैना एक डुबकी ले लेती है तो मैकरी की समझ में आती है कि कहीं मैना डूब न गई। तब मैकरी ने दुःख से अपने हाथों पर सिर और किनारे से आई।[1] दूसरा मैना को उसे बचाया और स्वयं बह गई लगने लगा कि वह बह गयी है परन्तु वह बचकर आई मैकरी ने अपने धैर्य साहस और कष्ट का सामना धीरे धीरे दूसरा था मैना को देखते ही मैना किनारे की ओर धकेला मैना नदी की धार का वेग न सह सकी और बह गयी। डूबती उतराती दो-तीन कोस तक चली गयी। फिर कहीं मालूम का दूसरा मैना सामने आकर रहा है कि उल्टा सीधा करके मेरे पेट का पानी बाहर निकाला जा रहा है, फिर अचेत हो गयी जब चेतना में आई तब पंचरम्भ गैरा के एक लोधी बाई के घर में अपने को पाया।[2]
मैकरी का धैर्य और साहस प्रशंसनीय था।

तीसरा उपन्यास की मैना साहसी है। जब रामचरण के साथ से लकड़ी छूट जाती है और वह डूबकियाँ खा फिर पड़ा। इसी में मैना दौड़ती हुई मैना अपनी जिह्वा में आई और कहते हुए कहा "रामचरण है, राम चरण है, महाराज हमारे पास बचाती है उनको छोड़ दो। दुःखी कम करो।[3] मैना राम चरण के प्राण बचाती है वह साहसी है। रामचरण कहता है, "यदि मैना मेरे बचाने के लिए अपने प्राण निर्भय करने को उद्यत न होती तो आपकी बाँह पर और कहा मिलती।[4]

अहिल्याबाई की वीरता का पता लगा। अहिल्याबाई के हुक्म से निकला,। "उठा लूटा। लूटों ने अपने लिये जो का पाया। सुबहगीरों को लोग के हुक्म से बाधित कर दो।[5]

1-आश्रम पृष्ठ- 123 वृन्दावन लाल वर्मा।
2-आश्रम पृष्ठ-146 वृन्दावन लाल वर्मा।
3-मैना पृष्ठ- 155 वृन्दावन लाल वर्मा।
4-मैना पृष्ठ-162 वृन्दावन लाल वर्मा।
5-अहिल्याबाई प्रथ पृष्ठ-74 वृन्दावन लाल वर्मा।

कर्मठता

क्या कर्मठ है । वह कहती है कि "तुम अगर किसी मन्दिर के बनाने के काम पर लगने से गहरा पुजा होने की मजदूरी करो तो तुमको जीवन की कदर मालूम हो और तभी वह जान पड़े कि मजदूरी का लगना ज्यादा आराम देता है या कुर्सी की सेव ।करके देखो कितना सुख मिलता है ।"[1] क्या कहती है कि लगने की मजदूरी करो वहाँ मन्दिर बन रहा हो वह कुर्सी की सेव से अच्छी रहेगी नहीं तो एक दिन लाँघ होगा और तब चौपट हो जायगा अर्थात हम भी गरीब से आगे बुरे हो जायेंगे शायद अकाल ही मरजायें।"[2] उसकी धारणा है कि" मिहनत ,लगाई और कला की उपासना से ही सच्चे जीवन का महत्व मिलता है ।"[3] उसकी कामना है कि घर चलकर मजदूरी करूँगी और उन्हें कराऊँगी ।"व न करें तो मैं किसी भी हालत में मेहनत मजदूरी करने से नहीं मानने की।"[4] अनुप की कहता है कि परिश्रम न करने वाला कभी सुखी नहीं हो सकता ।"[5] तीसरा व्यक्ति कहता है नहीं स्त्रियाँ बहुत कुछ कर सकती है और यहाँ की स्त्रियाँ कुछ नहीं कर सकती है यहाँ के पुरुष निकम्मे नहीं हो सकते है।"[6] इस प्रकार सोना उपन्यास में वर्मा जी ने कर्मठता का उपदेश दिया है । मेहनत,मजदूरी ,परिश्रम से ही जीवन प्रसन्न एवं सुखी हो सकता है ।

---

1. सोना पृ0 166 वृन्दावन लाल वर्मा
2. सोना पृ0 168 "
3. " पृ0 178 "
4. " पृ0 181
5. " पृ0 226
6. " पृ0 228

हुमायूनी के समय में कलाओं की वृद्धि हुई हुमायूनी ने अनेक राग रागनियों का प्रचार किया और कई नये नामकरण हुये। शेरू ने कई नये रागों का नाम हुमायूनी के नाम पर रखा । हुमायूनी की कर्मठता थी कि वह राग रागनियों में पूर्ण पारंगत हो गई और नये रागों का नामकरण हुआ । उसका सिद्धान्त था कि "बीणा को बजाते बजाते , काम पड़ने पर यदि तुरन्त तलवार न उठा पाई, कोमल सेज पर सोते सोते संकट आने पर यदि तुरन्त ही उठकर कमर न कस सकी ध्रुपद को गाते गाते शत्रु के सामने आ खड़े होने पर यदि तुरन्त मरकर चुनौती न दे पाई, जिन कानों में मीठे स्वरों की रसधार बह बहकर आ रही थी, उन्हीं कानों में यदि रणवाद्यों और डमरू की धुन न समा पाई तो ऐसी वीणा, सेज और ध्रुपद की तानों का काम ही क्या?"[1]

उसके चरित्र में वीरता और कला का समन्वय है । एक ओर शौर्य और पराक्रम है तो दूसरी ओर काव्य गायन और राग रागनियां वह कर्मठ है इसलिये जीवन के दोनों पहलुओं में वह सफल है ।

---

1. हुमायूनी पृ0 322 वृन्दावन लाल वर्मा

प्रेम

हुसनबानो अपने के माथे पर बहीं मारती है । मानसिंह उसके शीर्ष को देखकर उस पर आसक्त हो जाता है और कहता है "सुन्दरी हुसनबानो साक्षात नहीं होता संकोच लगता है परन्तु कहे बिना नहीं रहा जाता । क्या तुमको प्यार मैं [1] पा सकता हूँ ? क्या अपनी जन्म संगिनी बना सकता हूँ । वह फिर मैना यमुना को सौगन्ध आता है ।" मैना यमुना को सौगन्ध आता है कि जन्म संगिनी रहोगी ।[2] मदन मोहे हुये अवस्थाएँ देखते हुये बहुत सोचे और अंतिमत के साथ निम्नी ने अपना कंपित हुआ फूल भरा हाथ उसके हाथ में दे दिया।[3] वह बोली मैं नहीं जानती क्या कर रही हूँ । मेरी पत रखना।"[4] मानसिंह ने सुरम्य कहा परमात्मा मेरा साक्षी है तुम सदा मेरे हृदय की रानी और जीवन की शोभा रहोगी । समझ गई ।[5] सुन्दरी हुसनबानी राजा मानसिंह की विशेष स्नेह भाजन हो गई ।

हुसनबानो पतली छतुली पहने थी उसको स्मरण हो आता है, उस समय छतरी को पहने थी वह नाहर को एक तीर से मार गिराया जब अपने को सँभि बचाकर मोड़ने का प्रयास किया, जब राजा ने पहली बार देखा जब उन्होंने छतरी छतुली के ऊपर हीरे, मोती का चढ़ाऊ हार गले में डाला जब वह प्यार के साथ गले में बाँहे डालकर मुझसे न जाने किस कविता में बोलने लगते हैं।[6] इस प्रकार मानसिंह और हुसनबानो के परस्पर प्रेम के चर्चा हुसनबानो उपन्यास में होते हैं ।

---

1. हुसनबानी पृ0 182 हुस्नाफ्रन लाल वर्मा
2. " पृ0 183 "
3. " पृ0 183 "
4. " पृ0 183 "
5. " पृ0 183 "
6. " पृ0 298 "

वर्मा जी ने कुमार में जो प्रेमी चुन्नी चेतरिम को उभारा है । जितेन्द्र सिंह कुमार का प्रेमी है । मानसिंह रानी कमलावती के विवाह के मध्य से ही उसका प्रेमी हो जाता है । वर्मा जी कमलावती के साथ मानसिंह का विधवा विवाह करा देते हैं और रानी कुमार के साथ जीत सिंह का विवाह सम्पन्न करा देते हैं । इस प्रकार आदर्श प्रेम का अंकन उन्होंने कुमार में किया है ।

अपने मेरा कोई उपन्यास का अपने कुन्ती को मुख्य लिखता है कुन्ती का प्रेम आदर्श प्रेम है । उसमें शारीरिक सम्बन्ध की कोई बात नहीं है । अपने उसे मुख्य लिखलाते है वह सोचती है । वह इस सम्बन्ध को पवित्र मानती है और कहती है - "मैं शिक्षक और शिष्य तक का सम्बन्ध अधिकार का नाता नहीं मानती और उन्हीं की कितनी महानता या उदारता कह लो है कि इस पवित्र सम्बन्ध के मार्ग में कभी राई रत्ती इधर उधर अविवेकी होने नहीं दिया ।"[1]

---

1. अपने मेरा कोई कुन्ती 126 कुन्दनलाल लाल वर्मा

प्रेम (सुमन विक्रम)

सुमन व विक्रम में गोरी सुमन विक्रम से प्रेम करती है । वह जब ऊपर टीले पर बैठता है तो उसके पास फूल फूल लेकर जाती है । जब सुमन सौम्य खेड़ा में छात्र के नाते भीख लेने जाता है तो वहाँ भी उसकी ओर देखती है । वह जब अमरकुल में अनाज डालती है तो कुछ बिखर जाता है उसके बाद जब वह अयोध्या में लौटकर आ जाती है तो हिमानी के यहाँ नौकरी करने लगती है । परन्तु हिमानी सुमन को मारना चाहती है । विवाह का दृश्य करती है । बालेश्वर की पूजा के समय छुरी से सुमन को मारना चाहती है परन्तु गोरी सुमन की समस्त चेतावनी भुला देती है और कड़ा तोड़ कर देती है । वह कहती है कि चाहे उसके अंग अंग ही क्यों न कट जाये उसका जीवन ही क्यों न समाप्त हो जाये परन्तु सुमन को बचायेगी। बालेश्वर में जब सुमन पूजा करने जाता है तो हिमानी से कहता है कि वह दोनों छुटने नहीं छुड़ायेगा । जैसे ही हिमानी छुरी निकालती है और आर पार निकालना चाहती है गोरी अपने घुटनों से छुरा देती है । हिमानी गिर जाती है और पीछे से उसके हाथ बाँधकर दिये जाते है । बाद में गंगाधरन के साथ उसका विवाह सुमन विक्रम के साथ हो जाता है । इस प्रकार वह अपने प्रेमी के लिये अपना जीवन न्यौछावर कर उसकी जान बचा लेती है उसका प्रेम सच्चा है अनुकरणीय है । आदर्श प्रेम का निर्वाह उसके जीवन में हुआ है ।

प्रेम [टूटे कटि]

टूटे कटि में गुरबाई प्रेम पक्ष के अन्तर्गत आती है । पहले वह तारकाओं के यहाँ मुजरा किया करती थी और उसका स्नेह प्राप्त था ।उसके बाद वह मुहम्मद शाह के दरबार में आ गई । नादिरशाह उसे हैरान ने आना चाहता था परन्तु वह वहाँ नहीं जाना चाहती थी । चाहे उसकी जान ही क्यों न चली जाये । वह मोहन के साथ नादिरशाह के यहाँ से एक दासी की सहायता से भाग निकली । वह मोहन को चाहने लगी । उसको डाकुओं से बचाने के लिये उसने कुछ सोना व हीरे आदि डाकुओं को दे डाले । उसका लौकिक प्रेम पारलौकिक प्रेम की ओर उन्मुख हो गया । वह वृन्दावन में जाती और गोपियों की भाँति मोहन के प्रेम में उन्मत्त हो जाती । उसने उस दिव्य ज्योति के दर्शन भी किये और एक आवाज उस पर छा गई । जीवन पर्यन्त वह कृष्ण में रहने लगी इस प्रकार एक नर्तकी गायिका वेश्या से वह - मलिन कन्या । उसके चरित्र में एक विशिष्ट परिवर्तन आ जाता है ।

गुरबाई भारतीय स्वर में औरों के साथ कहती है "गुरबाई को तो मैंने चीजे ही गाड़ दिया है । वह सदा के लिये गई । उसका नाम कभी न लेना । अब तो वह अपने कन्हैया की गोपी है ।[1] वह कहती है कन्हैया हर जगह है कमल में । और फिर आँखों में बसे हुये मेरे कन्हैया तुम हो ।[2] मोहन मुग्ध स्वर से कहता है [कन्हैया की गोपी अपनी कन्हैया के दर्शन कर दे और यमुना मैया के पेर छूकर मेरी हो जायगी ।[3]

1. टूटे कटि वृन्दावन लाल वर्मा पृ० 149
2. " पृ० 178
3. " पृ० 178

मुरवाई गद्गद कंठ से बोलती है, मैं तो हो गुणी, जब उस नरक को छोड़कर आवाज हुई तभी तो गुणी अब तो केवल मिट्टी की मूर्ति को सिन्दूर का टीका भर लगाना है । [1] मुरवाई मोहन को बताती है कि "मैंने कन्हैया की मुरली देखी और मुरली में से निकली तान सुनी । उस समय न तो कोई और दिखाई पड़ा और न बातों बातों का कोई और सुनाई पड़ा।[2] मोहन को अब शंका होती है कि मुरवाई के रूप और मुख की चर्चा आगरा और दिल्ली में न पहुंचे तो मुरवाई कहती है " जब दुनिया का मुरलीधर साथ है मेरा प्यारा तब किसी किसी मेरा क्या कर लेगी ? मुझको अब कोई डर नहीं [3] अरे नहीं। मुरली वाले के पास पहुंचने के लिये किसी की आढ़तिये या मार्फतदार की जरूरत नहीं है जब मौत आयगी तब छूट जाऊंगी । [4]

मुरवाई को अब किसी का डर नहीं रह गया था ।मोहन से वह कहती है" अनुकरती आवाज या कोई आ जाय अब किसका डर ? तब कुछ पा लिया मोहन को पा लिया । तुमको पा लिया।"[5] कुन्ज में जब मुरवाई ने भागा और मुख से साथ पकड़कर मोहन कुन्ज में ले आया तो कम्पित स्वर में मुरवाई कहती है" क्या छवि देखी आज । तमसुख कन्हैया मन्दिरों को छोड़कर यहाँ चला आता है ।एक बार कोई उसकी उसकी सी सुना दे तो वह थोड़े थोड़े तुमने लगता है ।आज तो मुख देखा । तब देखा।[6] मेरे प्यारे मोहन तुमने ही यह सब करामात दिखाई।

---

1. टूटे कांटे वृन्दावन लाल वर्मा पृ० 178
2. " पृ० 198
3. " पृ० 199
4. " पृ० 199
5. " पृ० 204
6. " पृ० 222

* प्रेम *

राधा कृष्णार्पिता को प्रेम करते है। राधा कहते है कि, " महारानी मानती है कि मैं इनसे प्रेम करता हूँ तब फिर उन की भावना को क्यों छिपाऊँ।"[1] रानी पति की कृपा में आनन्द प्राप्त करती है। वह कहती है," मुझे तो परिवेश की कृपा और भगवान आशुतोष शंकर के भजन में जो आनन्द मिलता है वही बहुत बल देता रहता है। [2] राधा ललितादित्य कृष्णार्पिता के प्रेम से बड़ी स्फूर्ति पाते रहे। [3] अब अतीत है। वह क्या, मैं इस योग्य हूँ भी न ? । रानी भी राधा ललितादित्य को अधिक प्रेम करती है। अर्पिता को राजा का जो प्रेम मिला है महत्वपूर्ण है, राधा के लिए पत्र में वह लिखती है," आपका जो प्रेम मुझे प्राप्त हुआ है वह अलग है। उसी ने मुझे भगवान के चरणों में अलग किया है। भजन पूजन में मन लगा रहता है। और विश्वास है कि आपकी कृपा और भगवान की दया से आजीवन उसी में लगा रहेगा। [4]

1-ललितादित्य पृष्ठ- 81 वृन्दावन लाल वर्मा ।
2-ललितादित्य पृष्ठ-220 वृन्दावन लाल वर्मा ।
3-ललितादित्य पृष्ठ-275 वृन्दावन लाल वर्मा ।
4-ललितादित्य पृष्ठ-137-138 वृन्दावन लाल वर्मा ।

त्याग

बुरबाई की लालसाओं ने उसके मानस और बुद्धि पर प्रसन्न होकर मोतियों, हीरों पन्नों से जड़ा हुआ सोने का हार दिया जो पाँच लाख रुपये का था। माणिकलाल के यहाँ से निकल जाने पश्चात वह कुछ हार के टुकड़े व आभूषण साथ ले आई थी। मोहन को जब लुटेरों ने लाठी मारी तो लुटेरों को रोकते हुये आने तोता आदि दुरन्त डाकुओं को दे दिया जिससे वह बच सके। दुर्गाप्रसाद के दरबार जितना बहुत सम्मान था परन्तु वहाँ से भी अधिक माणिकलाल के यहाँ सम्मान तो मिलता ही और आभूषण और धन भी मिलता परन्तु माणिकलाल के साथ हिरन नहीं जाना चाहती थी। उसका विकल्प था कि चाहे जान ही क्यों न चली जाये वह स्वदेश छोड़कर हिरन नहीं जावेगी। अतएव उसके वह सब धन सम्मान को माणिकलाल के यहाँ मिलता त्याग दिया।

वह सोने और हीरों के टुकड़ों से कोई मोह नहीं करती। वह बोली " सोने और हीरों के इन टुकड़ों की कहानी कितनी गन्दी है तुम नहीं जानते। अब यह बताओ कि तुम मायाराम बुरबाई को चाहते हो, जो कबर में गाड़ दी गई या कुली लुगाई लक्ष्मी को मेरे सामने खड़ी है।"[1]

" बुरबाई ने खाऊ सोने के टुकड़े को बुरे धन के साथ गहरी कबर में फेंक दिया दुख से वह कुटुम्बा वहीं समा गया।"[2]

इस प्रकार जब वह मोहन की अवस्था हो गई तो उसने समस्त सोना त्याग दिया और मोहन पर सब न्योछावर कर दिया।

---

1. टूटे काँटे वृन्दावन लाल वर्मा पृ0 238
2. " पृ0 238

मानव स्वभाव है कि व्यक्ति अपनों के लिये राज्य चाहता है। जिज्ञासा में एक चित्र के आधा बाये अंग पर लिखा था आधा और दूसरे अंग पर लिखा था कर्तव्य । हुमायूनी ने मानसिंह के हाथ में एक पत्र दिया। मानसिंह ने जो पढ़ा उसमें लिखा था " राजसिंह और बाजसिंह गद्दी या जागीर के अधिकारी नहीं होंगे । वे अपने भाई की आज्ञा का पालन करते हुये केवल अपने कर्तव्य का निर्वाह करेंगे इस भेंट की एक प्रतिलिपि महारानी सुमन मोहिनी के पास आज ही भेज दी गई है ।"[1] हुमायूनी ने कहा संकल्प कर्तव्य है और भावना कला । कला और कर्तव्य का समन्वय कौन कहे एक चित्र अक्षरश पूरा करेगा । हुमायूनी का अटूट स्वाभाव है कि वह अपने कुमारों को गद्दी न लिखा कर विक्रमादित्य को राज्य लिखाया । वर्मा जी ने उपन्यास की भूमिका में लिखा है कि कुमारों की एक दूसरी परम्परा है कि हुमायूनी ने अपने पुत्र को राज्य न लिखा कर विक्रमादित्य को राज्य लिखाया वृन्दावन लाल वर्मा को भी यही मत मान्य है यह घटना हुमायूनी के स्वाभाव का जीता जागता उदाहरण है ।

---

1. हुमायूनी पृष्ठ 448 वृन्दावन लाल वर्मा

निर्णय

मधुकर उपन्यास में हेमवती महेन्द्र और मोहन बाबा को सेवकों से बचाने के लिए कुछ उपाय करती है । उसी के कहने पर महेन्द्र और सुखपाल की गति का अर्थ में और अधिक प्रयास हुई। [1] हेमवती कहती है,"यदि कल से नहीं आर सकते तो तो छल से मारो-पंडा कुछ की अमानतें तो किसी प्रकार भेजो ।"[2]

बाबर बेसहारा होने पर निम्नवर्ग तरह से कहता है कि बाबर मत जा मेरे साथ रह । इस पर लतरा की आँखें रह गयी और बोली,"मैं किसी को नहीं छोड़ती। मैं जाऊँगी । मुझे यदि आप रोकेंगे तो अभी प्राण दे दूँगी। घोड़े को तीव्र करके अभी जाती हूँ । वह निर्णय है और निडर है । वह आंधी से झुलसी और चली गयी । लतरा घोड़े को तत्पर बनाये लिये जा रही थी । कुमार के सौवार को उसने पीछे छोड़ा और सुखपाल पंडा और मैदान में आ गयी । " वन,पर्वत,मैदान और घरों उसके लिए कोई बाधा नहीं रखते हैं ।"[3]

आरुत उपन्यास की मीरी भी निर्णय है । वह मैना को पानी में डूबने से बचाती है । उसे धीरज देकर बाबर निकाल देती है।

1-मधुकर पृष्ठ- 372
2-मधुकर पृष्ठ- 372
3-मधुकर पृष्ठ- 404

क्रूरता

वर्मा जी के प्रस्तुत उपन्यास में मैना के सौतेली क्रूरता के साथ आती है,* जो हाँ परन्तु आपके प्रायश्चित से बहुत पिघल तु नहीं है।*[1] आप बालक से पुत्र है वह उसी देखने को आती है। है भी आपका वात्सल्य आज से आज पुत्र से बढ़कर ।*[2] सौतेली पण्डित जी से ऐसा प्रायश्चित कराना चाहती है जिसे वह 6 वर्षों में भी न कर सके । वह कहती है,*उस दिन हम लोगों को दर्शन का नहीं करने देता था और स्वयं ऐसा राक्षसी काम किया । उसको ऐसा प्रायश्चित कराना चाहिए जिसे वह छः वर्षों में भी न कर सके ।[3] इससे प्रतीत होता है कि सौतेली क्रूर है ।

उदारता -

महारानी दुर्गावती उदार थी । उसने अपने राज्य से कर प्रथा को समाप्त कर दिया । खेती के सुधार और उत्पादन वृद्धि हेतु उसने अनेक तालाब बनवाये । उसने पश्चात हजार स्वर्ण मुद्रें जो उसके देवर को प्राप्त हुई थी वापिस कमाने से पूर्व के उपरांत माधुकर जोशीदास को वापिस दिलवा दी । वह किसानों के प्रति उदार थी। लोगों लक्ष्य के उपरांत वह स्वयं देखने आती थी कि उसकी किसानी समाप्त हुई है । वह पूछती है कि,* आप तो यह बताइये कि लोगों ने किसानों की खेती को कितनी क्या समाप्त हुई है ।*[4]

"रानी अन्नदा बाई दीन दीन किसानों की सहायता करती थी वह ऐसे अनेक किसानों को बिना ब्याज के रुपया उन्हें देती थी अपने राज खेतों से उनके खेत तीन साल पर सुधारने का साथ भी साथ कर दिया-खाली पड़ी सौ-सवा बिघा था ।[5]

व्यापार उपन्यास में व्यापार और व्यापारी दोनों की उदार है। विशेष रूप से वह कुमार सम्पत्ति के साथ व्यापारी है। राजा से कहती है * कि सम्पत्ति को तो कोई दोष नहीं है ।

1-मृगनयनी पृष्ठ-66 वृन्दावन लाल वर्मा ।
2-मृगनयनी पृष्ठ-146 वृन्दावन लाल वर्मा ।
3-मृगनयनी पृष्ठ-159 वृन्दावन लाल वर्मा ।
4-महारानी दुर्गावती पृष्ठ-169 वृन्दावन लाल वर्मा ।
5-माधव जी राणे पृष्ठ-70 वृन्दावन लाल वर्मा ।

दया

[illegible] का राजा का अपनी बाई के आदमियों को [illegible] तो उसे यह मरवा सकती थी परन्तु उसने अपने पदाधिकारियों से कहा, " अभी थोड़े धनों और को दुरन्त ले जाओ । इसके पिता का पता लगाकर उसे लिए आओ । [1] इससे प्रतीत होता है कि वह दयालु थी । वह उदार गुण से परिपूर्ण थी ।

वारिवारित की उपेक्षा

चित्रराज की महारानी अम्बाल ने राजा ने दरिद्र को अपनाया । राजा कहते है, "यदि कोई धनिक परिवार जाकर कुछ कुल उत्पन्न हुई हो, माता पिता दरिद्र हों व रहे हों-हमारे महलों में आना चाहे तो स्वागत व आनी चाहेगी । [2] राम दयाल का कथन है कि," प्रेम के सामने बड़े और छोटे का अंतर नष्ट हो जाता है। [3]

लड़कियों प्रति दृष्टि

वर्मा जी ने कमार अम्बाल में विधवा विवाह की कई लाभदायिक व्यवस्था की रखा है। उन्होंने आजकी के परित्यक्तिओं के त्यागकर के उपरांत मानसिंह के साथ विधवा विवाह कर लिया यद्यपि उनकी जाति के कुछ व्यक्ति विधवा विवाह करते थे और कुछ नहीं करते थे । इस प्रकार समाज के अन्तर्गत होने वाले विधवाओं के प्रति अत्याचार तथा उनके निरीह एवं निःसहाय जीवन को सुखी बनाने के लिए भारी अन्तर्थ विधवा विवाह को उन्होंने युगानुरूप एवं लिए उपयुक्त सिद्ध किया है ।

"प्रेम मेरा कोई अम्बाल की सुन्दरी सोची कथन की परवाह नहीं करती। उसका कथन है कि " यदि लाख कमार गन्ध है कि उसके फूलों में भी दुर्गन्ध आती है तो हमारे आगे पता भी परवाह नहीं है। [4]

1-राजमन्द की रानी पृ०- 122 पुन्नालाल लाल वर्मा ।
2-चित्रराज की महारानी पृ०-230 पुन्नालाल लाल वर्मा ।
3-चित्रराज की रानी महारानी -पृ०-[illegible] पुन्नालाल लाल वर्मा ।
4-प्रेम मेरा कोई पृ०-250 पुन्नालाल लाल वर्मा ।

रायगढ़ की रानी आन्ती बाई पर्दा नहीं करती । वह शिकार खेलती है। साधारण जनता से बहुत मेल-जोल रखती है। इस प्रकार वह पर्दा प्रथा के विरोधी होते है।

दासी प्रथा अनिरोध

जमींदार अन्यत्र में दिखाया है कि किस प्रकार जमींदारी के साथ मानिक और जमींदार दासियाँ रखी गयी अधिकाधिक रहने पर भी उन्हें नारकीय जीवन यापन करने को बाध्य होना पड़ा। वे रानी की सेवा टहल में ही जीवन व्यतीत कर देती है। वे पशुओं के प्रेम की पात्र भी हुई। कभी कभी पर पुरुष उनके साथ व्यभिचार करने के लिए भी तत्पर हो जाते है।

स्त्रैण प्रेम

जमींदारी आन्ती में स्त्रैण प्रेम है। वह अपने पति मुक्तादित्य से कहती है कि बारह सौ स्त्रियों में से एक भी कम न हो। स्त्रियों के सेवन देने के लिए वह आजीवन भी भिखारी रख देती है। पति परायण होना उसका दूसरा गुण है। नारी में स्त्रैण बल के प्रति प्रेम होना वह नारी की पुरुषोचित है। स्त्रैणता के बने रहने तथा स्त्रियों के सेवन का प्रमाण देने में वह अपना गौरव अनुभव करती है। वह उसकी पुरुषोचित है। अपनी व मान की रक्षा के हेतु वह शरीर भी त्यागने हेतु तैयार है। वह स्वाभिमानी है।

पंचम अध्याय

वर्मा जी के कथा साहित्य में स्वतन्त्रता व प्रगतिशीलता के प्रतीक प्रमुख नारी पात्र

तारा

वह अग्निदत्त की पत्नि तारा गढ़ कुण्डार उपन्यास की प्रमुख पात्र है। वह पूजा करती है और कन्नौज के कुरूपों को देख के ऊपर चढ़ाकर अच्छे वर प्राप्ति की कामना करती है। उसके रूप सौन्दर्य को देखिये तारा जब कभी गीला सिर कर लेती है, तो नितांत कुछ लम्बे केश चमक से जाते थे और जब कभी पूजा उतार देने के लिये सिर उठाती तो ग्रीवा की सुन्दर गठन सम्पूर्ण रूप में प्रकट हो जाती थी।[1] विष्णुदत्त के यहाँ सहभोज और खिराकर एक ही समय भोजन के लिये गये। जब तारा भोजन परोसने आई तो खिराकर ने आँख घुरा कर अग्निदत्त की ओर देखा तारा और अग्निदत्त " दोनों का एक सा रूप लगभग एक सी देह, एक ही वय।"[2] खिराकर उसे सुशील और देवी के समान समझता है। वह अग्निदत्त तारा से कहता है कि " मैं इस खिराकर को बड़ा अभिमानी और सच्चा आदमी समझता था। पर देखा घूरा तो नहीं जान पड़ता।[3] तारा उत्तर के साथ कहती है नहीं देवा वह तो बड़ा श्रेष्ठ पुरुष मालूम होता है। तुम्हारे लिये इतना कष्ट तो कुमार आदि भी न उठाते।"[4] मालवती जब तारा से पूछती है कि तुम पूजा के पश्चात हाथ जोड़कर आँखें मूँदकर देवता के सामने खड़ी होगी, तब किस प्रकार के आदर्श वर की कामना करोगी तो तारा सरलता से कहती है, मुझे वह सब सोचने की कभी आवश्यकता ही नहीं हुई। देवता की जो इच्छा होगी सो होगा।"[5]

" खिराकर ने एक बार भोजन परोसने के समय आँखों में सहज सरल मुस्कराहट देखी थी, दूसरी बार अत्यन्तकोमल कृतज्ञता को देखा था, आज तीसरी बार उन आँखों में जो कुछ देखा वह क्या था ?[6] जब खिराकर अमेरे और देवी की माला को देखता है तो देवी की माला में चार आँखें मुँदे हुये थे " मेरे देव"

---

1. गढ़ कुण्डार पृ0 140
2. " पृ0 175
3. " पृ0 197
4. " पृ0 197
5. " पृ0 211
6. " पृ0 208

खिलकर तारा के सम्बन्ध में सोचता है कि " तारा खिलकर तुम सुन्दर हो , पवित्र हो , भाग्यवान व तुम्हारी सुन्दरता और पवित्रता की रक्षा करे ।[1] तारा तुम पर्वतों की गोरी हो और कुमारिका भी हो ।[2] जब खिलकर तारा के मार्ग का अवरोधन करता है और प्रश्न करता है तो वह उससे कहती है दूर हो नहीं तो ... और उसमें तुरन्त अपने अंचल में से एक चमचमाती हुई बड़ी छुरी निकाली " उसे प्रतीत होता है कि वह चोर है ।[3] खिलकर देखने पर वह कहती है, कि जब तक आपको मरहम पट्टी नहीं हो जायगी, मेरे न जाऊँगी चाहे कोई मुझे मार डाले । खिलकर को व्यापारी देख लेता है। तलवार चलाता है , तारा ये लोग कौन है और तुमने कैसे इतना बड़ा साहस किया ? किना किसी हथियार के इतना पुरुषार्थ तुम दुर्गा हो । [4] अग्निवस्त्र तारा को पवित्र और देवी मानता है ।[5] वह सही है ।उसने घेरा से कुछ सवारी और प्रतिक्रिया सोची है ।[6] वह घेरा को तरफ जाती है " मैं किसी घेरा नहीं उतरती । मैं जाऊँगी मुझे यदि आप रोकेंगे, तो कभी आती हूँ ।[7]

खिलकर को वह जेल में डाल दिया तो उसके पास पानी समाप्त हो गया और पानी के अभाव में वह अचेत हो गया । तारा वहाँ से निकल रही थी ।वह मुहासे के नीचे लटकाती है और अंगरखे को की उतार देती है "अंगरखे को उतार कर दूसरी ओर डाल दिया । साड़ी उतारने की हुई कि शरीर की लज्जा का ख्याल आ गया । एक हाथ से साड़ी का छोर पकड़े मुँह-फेरा, सिर पर दूसरा हाथ रखे चन्द्रमा की ओर देखने लगी । उस बड़े बड़े पेड़ों में से आभा झर रही थी , जिसकी मन्द मन्द पवन हिलती हुई पत्तियों में उसी छत पर बिखरा -सा रहा था ।[8]खिलकर तारा को संसार की गरिमा स्वर्ग की पवित्रता,[9] समझता है । जिस तारा लौटे में पानी भरकर नीचे उतरती है और खिलकर को पिला ती है व खिलकर कहता है " तारा तारा तुमने यह क्या किया? इस शुद्ध शरीर के लिये इतना मोह/ और किना कष्ट किना साहस किनी वीरता।[10]

---

1. यह सुन्दर पृ0 272
2. " पृ0 272
3. पृ0317
4. पृ0335
5. पृ0386
6. पृ0423
7. पृ0424
8. पृ0430
9. पृ0 439
10. पृ0440

तारा शिवाकर को न भूल सकी । तारा बहुत कोमल है । संसार बहुत कठोर है ।[1] वर्तमान व्यवस्था को विवाह हेतु तारा और शिवाकर मानने के पक्ष में नहीं है । शिवाकर कहता है " तारा हमारा संयोग अखण्ड और अनन्त है । वर्तमान धर्म हमारी देहों के संयोग का निषेध कर सकता है । परन्तु आत्माओं के संयोग का निषेध नहीं कर सकता । वही हमारा संयोग है । तारा हम लोग योग साधना करेंगे ।" [2]

तारा का चरित्र आदर्श चरित्र है । वह शिवाकर को चाहने लगती है । अपने चाहे हुये वर को प्राप्त करने के लिये व्रत रखती है और रोज कमेर के कुएं जाती है । उनकी माला बनाती है और उसमें शिवाकर को जल पिलाकर कैलाश में उतर कर उसको बचाती है तथा उसे मुक्त कर वर्तमान बाधाओं को त्यागे कर उसे प्राप्त करती है ।

इस उपन्यास में नारी की वीर तथा पुरुषों की वीरता पूर्वक सहायता करने वाली शिवाया है । नारी सुन्दर होती हुई भी वीर है । अपने मन पसन्द वरों को प्राप्त करने वाली है । संयमयुक्त नहीं है । इस प्रकार वह प्रगतिशीला है और स्वतंत्रता की भावना उसमें भर कर गई है । अन्तर्जातीय विवाह की भावना को लेखक ने इस उपन्यास में स्थान दिया है ।

---

1. गढ़ कुण्डार पृ0 442
2. " पृ0 442

हेमवती

हेमवती लोकनाथ बुन्देला की पुत्री है । वह वीर है । वह तरकश बाँधने में निपुण है । वह नाथ से कहती है "हजारियों द्वारा तरकश पीठ पर मैं बाँध लेती हूँ , तब तक आप अपना पहला तरकश बाँध लीजिये । उसके तीर छोटे हैं, वे बड़े हैं और कमान के अनुकूल ।1। उसके सौन्दर्य का वर्णन वर्मा जी ने इस प्रकार किया है " नाथ ने सोचा कोमल अंग है ,उलझती हुई घड़ी आँखें हैं सोने का रंग है, गरदनी छोटी है, सीधी नाक है । मैंने कुचलते हुये भी देख लिया है"।2। सौन्दर्य अपूर्व सौन्दर्य है । और हाथ में तलवार और तीर कमान वह तीर छोड़ने में वह है " नाथ, सहस्रेन्द्र और हेमवती ने शिकारी में होकर तीर छोड़े परन्तु उनका कोई प्रभाव होता हुआ नहीं दिखाई पड़ा । " ।3। कुन्तार का राजकुमार नाथ उससे स्नेह करने लगता है। वह महाराज कुमार को चाहती है ।।4। नाथ उसके बिना जीवित नहीं रह सकता।।5। वह नाथ की "छिपछिपा बेली कठोर मालूम होती है ।"।6।

नाथ वह हेमवती को अपने जीवन की एक मात्र आशा मानता है । ।7। तो हेमवती कहती है कि "यदि आप यहाँ से नहीं चलते हैं और न रह सकती है और हमारे राजा होने पर भी बुन्देला राजा का अपमान करने की शक्ति नहीं रखता , और वह यहाँ से दूसरी ओर चल दी ।।8।

---

1. गढ़ कुन्तार- पृ0 43
2. " पृ0 44
3. " पृ0 44
4. " पृ0 61
5. " पृ0 113
6. " पृ0 226
7. " पृ0 295
8. " पृ0 295

वह कुमारों के कार्य कर सकती है दूसरी ओर कह दी । और कहती है कि " मैं तैयार हूँ जैसा तुमको अपने घोड़े पर गोद में रखकर ले चलूँगी ।"[1] तोलनपाल की पत्नी ने हेमवती का हाथ कुलपाल को देने का निर्णय बहुत पहले कर लिया था ।[2] हेमवती राजेन्द्र और तोलनपाल को बंगारों से बचा लेने के लिये अच्छी तरह उकसाया । उसी के सुझाने पर राजेन्द्र और कुलपाल की रुचि इस कार्य में और अधिक प्रवृत्त हुई ।[3] वह कहती है "यदि इन से नहीं मार सकते हो [4] तो इन से मारो" वंशज कुल की अपकीर्ति को किसी प्रकार धोओ।

इस प्रकार हम देखते हैं कि हेमवती सुन्दरी है । अपनी जाति में आस्था रखती है । जाति के ऊँच नीच भाव से वह अनुप्राणित है । वह वीरांगना है। तरक्क कर सकती है । अपनी जाति की रक्षा करने और जाति गौरव के लिये बल और छल से काम लेने की पक्षपाती है । इस प्रकार से वह श्रेष्ठ कुल सम्पन्न है । नाम राजकुमार के चाहने पर भी अन्य जाति का होने पर वह उसके साथ विवाह करने को उद्यत नहीं है । इस प्रकार वह अपने गौरव की रक्षा करती है।

---

1. गढ़ कुण्डार पृ0 340
2. " पृ0 349
3. " पृ0 372
4. " पृ0 372

मान्यती

मान्यती तीर कमान चलाने का अभ्यास करती है, देखिये छाने में मान्यती तीर कमान लेकर आ गई । दोनों महल के आंगन में जो किले के दक्षिण भाग में था चले गये और एक लक्ष्य स्थिर करके थोड़ी दूर से वेध किया के अभ्यास के लिये एक स्थान पर जा खड़े हुये ।1।। वह अग्निदत्त से स्नान करती है। वह अग्निदत्त उसके पास कहता है कि" संसार में रहेंगे, तो हम तुम दोनों एक दूसरे के होकर कर रहेंगे और यहाँ तो पहले अग्निदत्त तुम्हारा पिता लेकर .. ।।2।।तब मान्यती अग्निदत्त से कहती है " आगे ऐसी बात कभी मत कहना । छा।।3।। सुविस्तृत संसार में हमारे तुम्हारे दोनों के लिये बहुत स्थान है ।

कुमार कहता है कि माँ जी से कहूंगा" मैं उनसे अनुरोध करूंगा कि महाराज द्वारा पहिले जाता हूं से कहना हो कि प्राग्दत्त रीति और वेदों के मंत्रों के उच्चार के साथ अग्निदत्त का शीघ्र पाणिग्रहण उस उमर यानि की कन्या के साथ करा दो, यहाँ तो लड़के से साथ दीना पड़ेगा और वह कहीं नौ-दो ग्यारह हो जायेगा ।" ।।4।।

अन्तर्जातीय विवाह की समस्या को लेखक चरित्र के माध्यम से लेखक ने रखा है । नारी की यही प्रगतिशीलता है कि वह अन्तर्जातीय विवाह को प्रोत्साहन देती है और तीर आदि चलाने का अभ्यास करती है ।

---

1. गद्य कुमार पृ0 155
2. " पृ0 157
3. " पृ0 157
4. " पृ0 161

कुमुद (विराटा की पद्मिनी)

नरपति ने कुमुद को अंगूठी पहना दी । कुमुद रत्नपाल की विरोधी है । वह नहीं चाहती कि पवित्र स्थान पर रत्नपाल की लोचन-सिंह ने कहा कि वह लड़की अवश्य देवी या किसी की अवतार है । उसका बाप बड़ा लोभी और क्रोधी मूर्ख है परन्तु बालिका शुद्ध, सरल और भोली भाली है । (1) कुमुद दुर्गा से प्रार्थना करती थी वह कहती है मैं तो दुर्गा से केवल प्रार्थना करती थी हूँ, स्वयं किसी को कुछ नहीं दे सकती । जो उसी पर विश्वास करते हैं अपने साथ अन्याय और मेरे साथ दुरता करते हैं । (2) अपने साथ अन्याय और मेरे दुरता करते हैं वह देखने में बड़ी भोली भाली दीन कन्या थी । (3) उसके सौन्दर्य में रानी जमना लिखा है, नवाब साहब को उसके सौन्दर्य के मारे आना पीना हराम है । (4) सबल सिंह के शब्दों में उस लड़की को लोग देवी का अवतार मानते हैं और वह मेरी बहिन है । (5) कुमुद को आशंका थी कि राजा और नवाब के बीच यहाँ कुछ होने वाला है कुछ कुशल पूर्वक समाप्त न हो या आशिये वह चाहती है कि गोमती औरंगनगर चली जाये। देवी सर्व शक्तिमान है । हम साथ किसी अंग्रेज से नयन करेंगे । (6) गोमती कहती है कि कुमुद लोक पूज्य है और देवी का अवतार है । (7) कुमुद को दुर्गा पर पूर्ण विश्वास है । मन्दिर की रक्षा में उसे अभी सन्देह नहीं है । दुर्गा रक्षा करेगी । (8) कुन्दर सिंह उसे संपूर्ण सुख का केन्द्र मानते हैं।

---

1. विराटा की पद्मिनी- वृन्दावन लाल वर्मा पृ0 18
2. " " पृ0 90
3. " " पृ0 211
4. " " पृ0211
5. " " पृ0 211
6. " " पृ0 219
7. " " पृ0 222
8. " " पृ0 223

वह कहते है आप मेरी पूज्य है । मेरी संपूर्ण श्रद्धा की केन्द्र है । मैंने कोई अनोखा कार्य नहीं किया ।(1)

जब कुब्जा वृन्दावन की ठेस पर खड़ी हो गयी तो उस समय के उसके रूप का वर्णन कवि ने इस प्रकार किया है ऐसा भान पड़ा जैसे प्रकाश पुंज खड़ा कर दिया गया हो । पैरों की पैजनों पर सूर्य की स्वर्ण रेखायें पिघल रही थी ।पतली धोती मन्द पवन के धीमे झकोरे से सूर्य की पताका की तरह धीरे धीरे लहरा रही थी ।उन्मत्त मान मोतियों की तरह वातावरण पर बड़े बड़े काले केशों की घटायें मोरों के पास पहुच गई थी । आँखों से बरसती हुई प्रभा ललाट पर से बहती हुई उस निर्मल स्थान को आलोकित सा करने लगी । आधे खुले हुये सिर पर से स्वर्ण को लजाने वाली बालों की एक लट मर्दन के पास बराबर चञ्चल हो रही थी (2) कुब्जा का कामना है कि जहाँ पुरुष आगे नहीं बढ़ता वहाँ स्त्री को अग्रसर होना चाहिये । कुब्जा गोपती से कहती है "जहाँ पुरुष आगे पैर बढ़ाता है वहाँ स्त्री को अग्रसर होने में संकोच क्यों होना चाहिये(3) कुब्जा गोपती से कहती है कि यदि तुम्हें मनाना हो तो तुम्हें उसके पास पहुचने में संकोच न करना चाहिये । जब गोपती ने पूछा उसने इस पंथ की बातों को कहाँ से सीखा सीखा तो कुब्जा कहती है कि, इन बातों को बिना सिखाये ही बात लेना स्त्रियों का जन्म सिद्ध अधिकार है ।(4)कुब्जा शिव को प्यार करती है शिव में सब आ गये और उसमें तो कोई दोष नहीं कि शिव को प्यार करती हूँ "(5) वह एक पश्चिमी जाति की स्त्री है रामप्रसाद कहता है उसी मंदिर में पालन वाली वह दासी की सन्तान लड़की थी। वह पश्चिमी की जाति की स्त्री है ।

---

1. विहार का पश्चिमी वृन्दावन लाल वर्मा पृ0 243
2. " " पृ0245
3. " " पृ0248
4. " " पृ0 248
5. " " पृ0 249

कुशल है विराट में बने रहने से सब की कुशल है । सहदेवसिंह ने कहा "मैं फिर यही कहूंगा कि उनके यहां बने रहने में हम लोगों की कुशल है । उन्हें यहां हटाओ तो मूर्ति को हटाओ, मंदिरको हटाओ ।[1] वह नहीं चाहती कि देवी के मन्दिर में रक्त बहे वह कोमल किन्तु दृढ़ स्वर में देवीसिंह से कहती है कि "देवी के मन्दिर में रक्त न बहाया जाय [2] गोमती कुशल देवी स्वयं कभी न खिलेगी ।[3]

अलीमर्दन कहता है कि पहाड़ की उस छोटी सी कोठ पर जो मिट्टी है उसके पास मत जाना उसमें पद्मिनी के पैर का और लरकने का चिन्ह बना हुआ है उसे दूर रखना ।[4] देवी सिंह कहता है "विराट का गर्व किसी अन्य की जागीर में वह कभी नहीं लिया जायगा ।[5] जब तक घाटियों में कोई भी बचेगा उसी के साथ में वह गर्व रहेगा ।

---

1. विराट की पद्मिनी – वृन्दावन लाल वर्मा पृ0271
2. " " पृ0274
3. " " पृ0309
4. " " पृ0309
5. " " पृ0391

गोमती

गोमती उन्हे हुये सौन्दर्य की मूर्ति थी । परन्तु किसी चिन्ता और दुःख बनावट ने उसे मेघाछन्न चाँदनी की तरह बना रखा था।"[1] गोमती दुःख तलवार बना सकती है उसे किसी का आसरा नहीं है ।गोमती कहती है "जब मैं स्वयं तलवार बना सकती हूँ तब किसी के आसरे की कोई जरूरत नहीं है ।[2]

---

1. चित्रलेखा की परिक्रमा - वृन्दावन लाल वर्मा पृ० 65
2. चित्रलेखा की परिक्रमा- वृन्दावन लाल वर्मा पृ0352

धरवारी वाली

दतिया में छोप सिंह कोठेरा धरमपुर फाटक से लगा हुआ था । उसकी पत्नी धरवारी के राजा की बेटी थी ।" वे भी उतनी ही उदार थी । अटक पड़ने पर अनेक बार उन्होंने मुसाहिब जी अपने बहुमूल्य आभूषण दे दिये थे । कई बार सेना खर्च के कारण उनके पास बहुत थोड़े आभूषण बचे थे । मुसाहिब के सैनिक भी इस बात को जानते थे और उनमें से कई तो कभी कभी इस बात की चिन्ता में पड़ जाया करते थे कि मुसाहिब की पत्नी के उपकारों का बदला कैसे चुकाया जाय ।" धरवारी वाली सरकार कहलाती थी । वह समझदारी से काम लेती थी । शिकार से आने के बाद जब छोप सिंह ने समस्त आदमियों को इनाम लाने को कहा और घर में कोई अधिक न निकली तो धरवारी वाली ने मुसाहिब जू को इनाम और अन्य लोगों के लिये जिन्दा बन लाने के लिये कह दिया ।

पुरन के शिकार के समय सैंधुले ने उसकी जाँघ में दो बार दिये थे । मुसाहिब जू ने कहा कि पुरन को आज और कल पन्द्रह दिन तक विशेष भोजन का प्रबन्ध करना पड़ेगा तो धरवारी वाली के हृदय की भावना इस प्रकार हृदयोद्गार होती है। वे कहती हैं" उसने अपने निमक की कमाई है। उसकी सुश्रूषा बहुत अच्छी तरह होनी चाहिए ।

धरवारी वाली का अन्त में धरवारी राज्य का सहारा था ।[1] उसकी कामना थी कि उसके पति की अपनी सेना को अच्छे हथियार हैं। वह चाहती है कि उसके पति कभी चिन्ता न करें। सिपाहियों के बाकी वेतन चुकाने के लिये वह अपनी नथ गिरवी रखने को दे देती है जो कम से कम तीन हजार रुपये की होगी । वह कहती हुई कहती है "लल्ला मामे की मारफत किसी बड़े साहूकार के यहाँ से रुपया मँगवा लीजिये । मेरे पास एक नथ कम से कम तीन हजार रुपये का है ।" [2]

---

[1] मुसाहिब जू पृ० 29
[2] " पृ० 30

सरकारी वाली चाहती है कि उनके पति का नाम बड़ा बना रहे और उनकी सेवा में सुसज्जित रहे जिससे गाढ़े समय में उनके पति के नाम को बट्टा न लगे । अतिथियों के भोजन व आदर सत्कार तथा सिपाहियों के वेतन आदि के लिये उनने अपने पूरे आभूषण गिरवी रख दिये।[5] और अब थोड़ी सी अंगुठियाँ और कुछ साधारण सोने के आभूषणों को छोड़कर और कुछ न था [2]

इसमास में एक उत्सव हुआ था परन्तु आभूषण न होने के कारण उसमें बीमारी का बहाना करके उत्सव में आने को मना कर दिया ।अपनी परिचारिका से सरकारी वाली ने कहा" इस उत्सव में अब अन्य वागीश्वरों और सेठ साहूकारों तथा अफसरों की बहु बेटियाँ सजधजी होंगी । मेरे पास कोई आभूषण नहीं है । सबकी दृष्टि मेरे ऊपर पड़ेगी । मायका सरकारी न होता तो कोई बात न थी अब मैंने हाथ और गला लेकर महलों में क्या मुंह दिखाऊंगी ? वहाँ तमाम स्त्रियाँ आनाकानी करेंगी । मेरी अवस्था की आड़ लेकर और लोगों का नाम वाद-विवाद और मजाक में घसीटा जायेगा। मैं अपने कानों को कहाँ तक मूँदे रहूंगी ।"[3] उन्हें सांसारिक रेल पेल से अत्यन्त तकलीफ थी । परन्तु स्त्रियाँ आनाकानी कर रही थी कि सरकारी वाली सरकार के घर में सुखी दुखी काटते है-उनकी गांठ में कुछ नहीं । यह तो कोरे मूर्ख है ।"[4] सरकारी वाली सरकार की उदारता,पद की महत्ता और परिस्थिति उनकी शोभता सभी के मन को भी स्थगित कर चुकी थी " [5] उनके सिपाहियों की बोली थी " कि हमारे ही पेट भरने के लिये सरकार ने अपने गहने एक एक करके साहूकारों को बेंच कर दिये हमारे ही पैसे साहूकारों के पास है ।[6]

---

1. मुसाफिर मु कुछ पृ० 30
2. " " 31
3. " " 34-35
4. " " 37
5. " " 39
6. " " 40

[illegible] आज आनन्द आमुक्त से लिये जाये । बीमों ने आज आना और सोने के आमुक्त कार्यवाही को लिखा के बाद गढ़ा हुआ था अचानक लिख जाने की बात लगा ही। कार्यवाही ने ऐ क्या आमुक्त सरकारी बाली तलवार को है लिये । सरकारी बाली के मन में रात को प्रश्न उठा कि" क्या सोचा घर में रखने योग्य है परन्तु फिर आत्मलाना की कि "क-[illegible] ने और लाल पर लाचारा की है।"[1] सरकारी बाली की धारणा है कि उनके रिश्तेदार बड़े लापरवाही है। [illegible] कहते है कि [illegible] प्रचार की महिमा आपकी थी तो सरकारी बाली बात लिखने की [illegible] लगती है कि " आजकल प्रचार ने बहुत से गहने अलमारी लिख जाते है।"[2]

सरकारी बाली अपने आदमियों को बचाने की पक्षपाती थी और वह कहती है,"अपने आदमियों के बचाने के लिए कोई कसर नहीं रखनी चाहिए।"[3]

सरकारी बाली दीन दयालु है। उसे आमुक्तों से कोई मोह नहीं है। परन्तु दूसरों की चर्चा का विषय न हो यही दुःख है । वह आमुक्तनिवासी रख [illegible] पर भी अपने रिश्तेदारों का सेवा लिख सकती है तथा सच्ची प्रेमी है। घर पर आये हुए अतिथियों को भोजन देना तथा उनकी सेवा सुश्रूषा करना वह अपना धर्म समझती है उसके हृदय में आमुक्तों के प्रति थोड़ा प्रेम झलकता है कि समाज के व्यक्ति उसकी टीका-टिप्पणी न करें कि उसके पास कुछ नहीं है। [illegible] के आमुक्त स्वीकार करना ही उसके परिश्रम में दोष है। परन्तु उसके रिश्तेदारों ने ऐसा लगाया कि लड़कों की छूट और लड़कियों की छूट में विशेष अन्तर नहीं है। अपने कर्तव्य के प्रति वह सजग है शारीरिक उसका परिश्रम उच्चकोटि का है।

1-गुलाबिन पृ पृष्ठ- 46 वृन्दावन लाल वर्मा ।
2-गुलाबिन पृ पृष्ठ- 55 वृन्दावन लाल वर्मा ।
3-गुलाबिन पृ पृष्ठ-46 वृन्दावन लाल वर्मा ।

सुभद्रा

छः कुन्दों की सुभद्रा एक प्राप्त लड़की थी । सुभद्रा को अपने बुरे दिनों में भी संतोष है । उसका कथन है " न कोई दिन मीठे होते हैं और न कड़वे अपने मन की दशा पर निर्भर है । वह मन में सुखी है और केवल रोटी खाने को मिला है यहाँ मिल जाती है वह बहुत है । वह सखी से कहती है न मुझको गहने से प्रयोजन है और न रुपये से । मुझको तो केवल रोटी खाने को मिल जाती है । और मुझको करना ही क्या है ।[1] उसके पिता को विश्वास है कि वह होशियार है और थोड़ी सी पूंजी का जो मेरा लेन-देन है, खा लेगी [2] रास्ते में डाके वालों द्वारा लूटे जाने पर भी पहचानने के उपरान्त भी वह भेद नहीं खोलती । वह स चतुर है ।

वह सखी सुभद्रा के देखने को इकेली में मिले थे उन्हें गिरवी रखने आया तो सुभद्रा कहती है, वह सब उठा ले जाओ और जिसकी वस्तुएँ हैं आये हो, उसी को वह भी दे आओ।[3] वह सखी के साथ थोड़ा हास परिहास भी कर लेती है । उसका थोड़ा चरित्र ही प्रकाश में आया है।

---

1. सुदर्शन सु पृ0 21
2. " पृ0 22
3. " पृ0 60

झाँसी की रानी लक्ष्मीबाई (मनु)

जब बचपन में नाना घोड़े से गिरा और चोट आई तो मनु कहती है कि आप लोग हमको जो पुराना इतिहास सुनाते हैं, उनमें कुछ क्या रेशम के डोरों और कपास की पोनियों से हुआ करते थे।"(1) इतने बचपन से ही उनमें वीर भावना झलकती है। वह और है कहती है " मैं डरपोक कभी नहीं हो सकती।"(2) मनु की बुद्धि उसकी अवस्था से बहुत आगे निकल चुकी है की वह चपल थी।(4) मनु को विश्वास था कि उसके भाग्य में एक नहीं छः हाथी लिखे हैं। (5) वह बहुत सुन्दर थी बड़ी कुशाग्र बुद्धि और होनहार। घोड़े की सवारी में पुरुषों के कान पकड़ती थी। मराठी, संस्कृत और हिन्दी पढ़ी थी। शास्त्रों में उसकी रुचि थी।(6) मनुबाई के विशाल भाल पर घोड़े को लगाने वाले चमकीले बाल स्वर्ण सा रंग सम्पूर्ण चेहरे का अतीव सुन्दर बनाए था।(7) उन्हें तुलसी कृत दास की रामायण बड़ी प्रिय लगती थी परन्तु तलवार चलाना, मल्लयुद्ध मांजना, घोड़े की सवारी ये उससे भी बढ़कर आते थे। (8) मोरोपन्त की पत्नी भागीरथीबाई से मनुबाई कार्तिक वदी 14 से 1891 (11 नवम्बर सन 1836) को काशी में उत्पन्न हुई। मनु जब चार वर्ष की थी उसकी माता भगीरथबाई का देहान्त हो गया मनु चपल हठीली और बहुत तेजी बुद्धि की थी। कम आयु की होने पर भी वह इन हुनरों में आगे थी। स्त्रियों को संगति कम प्राप्त होने के कारण वह लाज संकोच की अतीव चपल और हिलक से दूर चलती गई थी।(9) छत्रपति शिवाजी इत्यादि के आधुनिक और अर्जुन भीम इत्यादि के पुरातन आख्यानों ने मनु की और/अर्जुन कल्पना को एकत्रपट और

1. झाँसी की रानी लक्ष्मीबाई पृ0 17
2. " पृ0 18
3. " पृ0 18
4. " पृ0 19
5. " पृ0 22
6. " पृ0 26
7. " पृ0 27
8. " पृ0 27 पृ030

अवश्य मुस्कुरा दे रही थी ।[1] दीक्षित सोचते थे कि मनुबाई सुन्दर है, रानी बनने योग्य सब गुण उसमें है । धन और उच्च है । पैतृक और है । किसी और घर में जाएगी तो न कुछ सुखी हो सकेगी और न अपने पति को सुखी बना सकेगी।[2] दीक्षित ने महाराज से कहा कि "बहुत सुन्दर और कुशाग्र बुद्धि है ।उसमें रानी होने योग्य समस्त गुण हैं ।[3] जब मनुबाई ने श्रृंगार किया तो मनुबाई के बड़े बड़े गोल नेत्र मानो सुहागों को आमंत्रण दे रहे थे । भुजाएँ तो बाल थुलती थी । [4] उसको घोड़े की सवारी पसन्द थी । छाती सुन्दर जब उसके पास विवाह के समय आई तो मनु ने कहा मेरी छाती कोई न छू सकेगी । मेरी सहेली होकर रहेगी [5] मनु को गाने बजाने का शौक कम था। उसको तलवारी, हथियार चलाना, मल्लयुद्ध, कुश्ती प्राचीन गाथाओं का सुनना अधिक भाता था[6] मनु की धारणा थी कि " पुरुषों को पुरुषार्थ सिखाने के लिये स्त्रियों को मल्लयुद्ध ,कुश्ती, इत्यादि सीखना ही चाहिये । कुछ तेज दौड़ना भी । गाने-बाने से भी स्त्रियों का स्वास्थ्य सुधरता है । परन्तु अपने को मोहक बना लेना ही तो स्त्री का समस्त कर्तव्य नहीं है "[7] मनु के साथ जो रहना चाहे उसके सम्बन्ध में उनका अभिमत देखिये" मेरे साथ जो रहना चाहे उसको घोड़े की सवारी अच्छी तरह आनी चाहिये । तलवार बन्दूक, बर्छी, छुरी, कटार, तीर ,तमन्चा इत्यादि का चलाना अच्छी तरह सीखना पड़ेगा ।दोनों हाथों से हथियार एक से चलाना सीख जाये तो और भी अच्छा ।"[8] स्त्रियों को सुहाग का कवच पहनने के से पक्ष में थी । स्त्रियाँ सुहाग का कवच पहिने तो फिर [9] संसार में ऐसा कुछ कोई हो ही नहीं सकता जो उनको लूट ले ।

---

1. झाँसी की रानी लक्ष्मीबाई पृ030
2. " पृ0 31
3. " पृ0 33
4. " पृ0 34
5. " पृ0 58
6. " पृ0 60
7. " पृ0 60
8. " पृ0 62
9. " पृ0 63

वे गाँव से नाता रखने की पक्षपाती थी । उनका कथनथा कि नहीं फूलों से नाता बनाये रखो परन्तु मिट्टी से सम्बन्ध तोड़कर नहीं ।[1] वह चाहती थी कि विवाह का सम्बन्ध चिरस्थायी हो । गाँठ बाँधते समय पंडित से कहती है कि गाँठ ऐसी बाँधिये कि कभी छूट टूटे नहीं ।"[2] वह छोटे आदमियों को आदर मानती थी ।[3] वह अपनी सखी सहेलियों तथा किले के भीतर रहने वाली स्त्रियों को सवारी शास्त्र, प्रयोग , शस्त्रास्त्र, घुड़सी का अभ्यास कराती थी । खेले हुये समय में धार्मिक ग्रन्थों का थोड़ा सा परन्तु नियम पूर्वक अध्ययन करती ।[4] इसके अतिरिक्त उन्हें सहेलियों को अपना सा बनाया । उनको अक्सर दुःखसर बड़े पुरुषों की सहायता करने में थोड़े पैर न देने की सीख देना , घर की सफाई, स्वच्छता इत्यादि बनाये रखना काफी काम था ।[5] गंगाधर राव की मार्डन से बात होने पर वे बहुत प्रसन्न थी । उन्हें अपने राजा पर अपनी झाँसी पर अभिमान था ।मन को केवल एक बात खटक रही कि उनसे और मार्डन से बात हुई होती तो वह ऐसी करारी सुनाती कि उनको अपने कुछ पुरुषे याद आ जाये ।[6]रानी में शक्ति भावना थी थी । उन्होंने गवराशि में गौर की प्रतिमा स्थापित की । लालाभाऊ की पत्नी बक्षिन से उन्होंने कहा कि फूलों के साथ पहनों, माता को रिझाओ और वो भावना धारे गाये । वे शरीर और आत्मा पुष्ट और प्रबल बनाने की पक्षपाती थी । उनका कथन है परन्तु हम सब स्त्रियों का पोषक यह शरीर और उसके भीतर आत्मा है । उनको पुष्ट करो और प्रबल बनाओ।"[7] रानी स्वयं भी गंगाधर राव के कठोर शासन में जहाँ कहीं क्या शिकायत पहुंचते थी, उसमें उनका रानी के प्रभाव के आभास की कल्पना करती थी ।[8]

---

1. झाँसी की रानी लक्ष्मीबाई पृ0 63
2. " पृ0 65
3. " पृ0 70
4. " पृ0 72
5. " पृ0 73
6. " पृ0 88
7. " पृ0 95
8. " पृ0 96

नाना साहब और राव साहब को उनके विवेक और सेवा का भरोसा था ।1। उनका अभिमत था कि हम लोगों के आपसी झगड़ों ने अंग्रेजों को जन्म दिया है । उनको थोड़ा सोचने योग्य बना गये थे । समर्थ रामदास का दिया हुआ स्वराज्य -सन्देश, छत्रपति शिवाजी का पाला हुआ वह आदर्श छत्रसाल का वह अनुशीलन अमर और अक्षय है । ।2। राजा को विश्वास था कि बड़े बड़े मर्द रानी के पैरों को छू अपने माथे पर चढ़ायेंगे । राजा साहब मेजर साहब से कहते हैं मेजर साहब हमारी रानी स्त्री जरूर है परन्तु हमें ऐसे मुझे हैं कि बड़े बड़े मर्द इसके पैरों को छू अपने माथे पर चढ़ायेंगे ।।3। रानी सुन्दर थी और अच्छी घुड़सवार थी । रानी बिल्कुल बहुत कम होती थी । रानी को विश्वास था कि जनता असली शक्ति है वह अक्षय है छत्रपति ने जनता के भरोसे ही इतने बड़े दिल्ली सम्राट को ललकारा था । राजाओं के भरोसे नहीं । उनका मत था कि जो साधन जहाँ मिले उनका उपयोग करमायाहिये । जनता मुख्य साधन है ।।4। राजा ने दुर्गावती को डेरा निकाला दे दिया था परन्तु रानी ने उसे रहने की आज्ञा दे दी थी ।रानी की दैनिक क्रिया इस प्रकार थी ग्यारह बजे के उपरान्त उठी फिर स्नान करती और पूजा को निपटाकर तथा कुछ दान धर्म करके तब भोजन करती भोजन के उपरान्त थोड़ा सा विश्राम । फिर तीन बजे तक ग्यारह सौ रामनाम लिखकर आटे की गोलियाँ मछलियों को खिलाती । उस समय वे किसी से बातचीत नहीं करती थी और न कोई उस समय उनके पास बैठ सकता था । वे किसी गुप्त चिन्तन किसी गुप्त विचार में निमग्न रहती थी । तीन बजे के उपरान्त सन्ध्या तक फिर वे ही सदाचार करते शरीर को श्रृंगार बनाने की क्रियायें ।" ।5।

---

1. झाँसी की रानी लक्ष्मीबाई पृ0 108
2. " पृ0 109
3. " पृ0 114
4. " पृ0 132
5. " पृ0 146

रानी जनप्रिय थी । झलकर को नवर्मर जनरल ने नामंजूर कर दिया और पलित ने झाँसी का अंग्रेजी बन्दोबस्त आरम्भ कर दिया तो मुन्दर, सुन्दर और काशीबाई आभूषण उतारकर जब रानी के पास आई तो रानी ने कहा कि आभूषण क्यों उतार आई और कहा" ये चिन्ह तो आसक्ति और आशक्ति के हैं । अपने सब आभूषण पहनो और इस प्रकार रहो मानो कुछ हुआ ही नहीं है ।"[1] इससे रानी के धैर्यधारण की शक्ति का पता चलता है । वह कर्मशील थी उनका कथन था कि भगवान कृष्ण की आज्ञा को याद रखो कि हमको केवल कर्म करने का अधिकार है । कर्म के फल का नहीं। [2] वह स्वराज्य - धारा को आगे बढ़ाने की पक्षधर थी । उनका वक्तव्य देखिये," मान लो कि मैं सफल न हो पाई तो भी चित स्वराज्य -धारा को आगे बढ़ा जाऊँगी वह अक्षय रहेगी । उसी उसी महाराज्य को याद रखो हमको केवल कर्म करने का अधिकार है, फल का कभी नहीं । हमको एक बड़ा सन्तोष है जनता हमारे साथ है । जनता सब कुछ है। जनता ऊपर है । हमको स्वराज्य के हेतु में [illegible] बाँधना चाहिये । राजाओं को ठोक लो ही गिरा दें परन्तु जनता को नहीं गिरा सकते । हजारों आयेंगे जब हमी जनता के आगे होकर मैं स्वराज्य की पताका फहराऊँगी । [3] रानी राजनीति में कुशल थी। एकदम क्रांति न करके बेहतर मौके की प्रतीक्षा में ही । वह ऐसी चतुरनार थी कि पुरुष दाँतों तले ऊँगली दबाते थे ।[4] वे अनावटी लड़ाइयों के नकली काम पर बनाती और बिगाड़ती । अपनी सहेलियों वह के साथ भिन्न भिन्न प्रकार की अनेक कुछ परिस्थितियों पर वाद-विवाद करती।"[4] रानी की धारणा थी

1. झाँसी की रानी लक्ष्मीबाई पृ0 151
2. " पृ0 152
3. " पृ0 153
4. " पृ0 161

कि शरीर को इतना कमाओ कि फौलाद हो जाये, तभी मन दृढ़ता पूर्वक भगवान की ओर जायगा ।"[1] उनका कलाओं का ओर शीघ्र विकास हो गया । रानी का बाह्य रूप प्रचण्ड तेज पूर्ण था, परन्तु अन्तर बहुत कोमल उदार । [2] उनके मधुर आचरण में फौलादी आदर्श निहित थे । वे तलवार से बोलो अदी कुछ विलक्ष और है । सब तक महत्वपूर्ण स्थानों के भूगोल का बारीकी के साथ अध्ययन कर लो । कहो किस प्रकार सेनाओं को ले जाना चाहिए कहाँ आसानी के साथ युद्ध किया जा सकता है और अपने अभीष्ट स्थान पर किस प्रकार शत्रु पक्ष करके लड़ाई करके लड़ाई के लिये विवश किया जा सकता है । इन विषयों पर काफी समय और परिश्रम खर्च करने की आवश्यकता है।"[3] उन्होंने बारूदी विधान की भी स्थापना कर दी। वह नहीं चाहती थी कि तलवार छोटी छोटी बात पर खिंचे अपितु अवसर आने पर ही तलवार म्यान से बाहर निकले ।"[4]उनका मत था कि छोटी जाति के पुरुष या स्त्री को गरीब से गरीब है मजदूर या किसान को कदापि छोटा न समझा जाये । [5] वे अत्याचार और अत्याचार को प्रोत्साहन एक बार मिला कि वह बार बार सिर उठाता है ।"[6] स्मरण शक्ति उनकी इतनी विशाल थी कि लोगों को आश्चर्य होता था [7] रानी लक्ष्मी को भी मीरा के भजन बहुत पसंद थे [8] वे बहुत उदार थी। उनका निजी खर्च तो बहुत कम था । दान पुण्य में वे डालती थी । बहुत नेक थी और इधर उधर के आने जाने वाले नाते रिश्ते के लोग पुराने मुलाजिमों को कुछ न कुछ देती ही थी । [9]

---

1. झाँसी की रानी लक्ष्मीबाई पृ0 168
2. " पृ0 169
3. " पृ0 169
4. " पृ0 170
5. " पृ0 171
6. " पृ0 178-179
7. " पृ0 179
8. " पृ0 185
9. " पृ0 190

रानी जब से युद्धसवारी के लिये बाहर निकलने लगी, तब से वह मर्दाना पोशाक पहनने लगी थी -सिर पर लोहे का टोप , ऊपर ताका अंगरखा, पैजामा, अंगरखे और पैजामे पर कसी हुई पेटी । दोनों कंधों में पिस्तौलें और दोनों ओर परतलों में तलवारें । कभी कभी इतने सब हथियारों के अलावा तेगा भी हाथ में साथ लेती थी । इस पर घोड़ेका बहुत तेज चलाने में कसर नहीं करती थी। इस उनको काठियावाड़ी घोड़े अधिक पसन्द थे और सफेद रंग की खास तौर पर । घोड़ों की उनको विलक्षण पहचान थी "।1।रानी ने प्रण किया कि "मैं फेरा युद्ध तभी कराऊंगी , जब हिन्दुस्थान को स्वराज्य मिल जायेगा नहीं तो श्मशान में अग्निदेव युद्ध करेंगे ।"।2। हर काम की योजना वे पहले बना लेती थी , तब व्यवस्था के साथ उसको व्यवहार का रूप देती थी।"।3। उनको वेद शास्त्र, गीता पुराण , धार्मिक काव्य में आस्था थी और कराये जाने पर विश्वास थी । उन्होंने कहा कि " मैं लड़ूंगी । उन गरीबों के गीतों की रक्षा के लिये । इन पुस्तकों के लिये और जो कुछ इनके भीतर लिखा है उसके लिये ऋषियों का रक्त ऐसा हीन और क्षीण नहीं हो गया है कि उनकी सन्तान तपस्या न कर सके । थोड़े मनोहों की तरह यों ही विलीन हो जाय ।"।4।फिर आगे कहने लगी " नहीं कुछ अमर हैं । गीता अक्षय है । हम लोग अमिट हैं । भगवान की छाया से शंकर के प्रताप से, मैं बतलाऊंगी कि अभी भारत में कितनी तो शक्ति है । और यदि मैं इस प्रयत्न में मर गई तो क्या होगा । कोई दूसरा तपस्वी मुझसे अच्छा बड़ा हो जायेगा और इस भूमि का उद्धार करेगा। तपस्या का क्रम कभी विच्छिन्न नहीं होगा । ।5।

1.झांसी की रानी लक्ष्मीबाई पृ0 190
2. " पृ0 199
3. " पृ0 200
4. " पृ0 201
5. " पृ0 230-230

रानी उदार थी उन्होंने गार्डन के कहने पर ग्रेनेड वाले बच्चों को किले में आश्रय दिया । उनका कथन था कि "[1] हमारी लड़ाई ग्रेनेडियरों से है उनके बाल बच्चों से नहीं ।उन्होंने दो मन रोटियाँ बनवाकर ग्रेनेडों के पास पहुँचवाई ।उनका कथन था कि ग्रेनेड पी कर हम अपने और उनके बीच के अन्तर को क्या मिटाए ? और फिर हम लोगों को भूखा मार कर अपने वाले अनुष्ठान को स्थगित करना है ।"[2] रानी ने कालेजा को मौत का शेरों का कण्ठ उठा कर दिया कि इतने सारी कत्लें पूरी हो जायेंगी और कहा कि मनुष्यों की तरह यहाँ से जाओ । कहीं लूट मार बिल्कुल न करना , अच्छे कायदे के साथ दिल्ली पहुँचे ।[3] हिन्दुओं की गंगा और मुसलमानों की कुरान की सौगन्ध है ।वह चाहती थी कि जनता त्रस्त न होने पाये ।

रानी ने सागर सिंह डाकू को दमन करने के लिये बुंदेलखण्ड से कहा और जब उसके साथ हुआ और दमन न कर सका तो रानी स्वयंसेवक कन्दालागर गई उन्होंने नदी में कूद कर नदी पार की और उसे जीवित पकड़ लिया । घोड़े को सटाकर उसकी कमर में हाथ डाला । सागर सिंह को उसके गिरोह के साथ अपनी सेना में भर्ती कर लिया ।

रानी को घबराया हुआ या चिंतित कभी किसी ने नहीं देखा । उनका कार्य सतत अनवरत जारी था ।[4] वे अपने युग के उपकरण और साधन काम में लाती थी वे अपने युग से आगे निकल गई थी , किन्तु उन्होंने अपने युग और समाज को साथ ले चलने का अथक प्रयत्न किया झाँसी में और विशेष बुन्देलखण्ड में साधारणतया की स्त्री की की अपेक्षाकृत स्वतन्त्रता और चारित्र्य की [5] स्वतंत्रता लक्ष्मीबाई के नाम से बहुत सम्बद्ध है ।

---

1. झाँसी की रानी लक्ष्मीबाई पृ0 239
2. " पृ0 241
3. " पृ0 246
4. " पृ0 300
5. " पृ0 301

"मंगल और शुक्र के दिन रानी महालक्ष्मी के मन्दिर जाया करती थी जो लक्ष्मी फाटक के बाहर लक्ष्मी तालाब के ऊपर है। कभी पालकी में, कभी घोड़े पर। कभी पालकी पर दिन डालकर, कभी बिना दिन के। कभी साड़ी पहनकर कभी पुरुष वेश में सुन्दर साफा बांधे हुये। कभी बिल्कुल अकेली और कभी पुरुषों के साथ। जब पालकी पर जाती कुछ स्त्रियाँ अंगरक्षों से नहीं, लाल मखमली कुर्ते पहने परदों में पिस्तौल लटकाये पालकी का पायदान पकड़े साथ दौड़ती हुई जाती थी। पालकी के आगे सवार भेजा झण्डा फहराता हुआ चलता था। उसके आगे तो पुरुषवाद्यों में रणवाद्य, नौबत। घोड़े पठानों भेड़ारियों और बुन्देलखण्डियों का रिसाला। बाद में प्रायः बाईस सखी घोड़े पर सवार।"[1] वे अब नौच के भेद को नहीं मानती थी "हमारे देश में अंग्रेज का भेद न होता तो कितना अच्छा होता।"[2] लक्ष्मीबाई ने जब पूछा कि कुछ वास्तव में है जिस निमित्त तो रानी मुकाबला उत्तर देती है, अपने जीवन और देश की रक्षा के लिये अपनी संस्कृति और अपनी कला के बचाने के लिये नहीं तो कुछ एक अर्थ का रक्षावास है।"[3] वे अपने को महाराष्ट्र का न समझकर विंध्यखण्डीय समझती थी। उनकी हाँसी की भाषा हिन्दी थी।[4] वे ललित कलाओं की प्रेमी थीं।"[5] रानी ने पठानों को सब प्रकार की सुविधायें दी।

---

1. झाँसी की रानी लक्ष्मीबाई पृ0301
2. " पृ0306
3. " पृ0314
4. " पृ0314
5. " पृ0315

सभी को जब जवाहर सिंह ने शहर की बातें सुनाई तो रानी ने कहा "आप लोगों को घबराना नहीं चाहिये । मान लो कि बेशायद सेना न आती तो क्या हम लोग हथियार डालकर झाँसी के मुँह पर कालिख पोतते ? अपने पुरखों का स्मरण करो । स्वराज्य की स्थापना हम अपने जीवन काल में ही देख लें । सोढ़ी के झण्डे पर पैर रखते ही हम सब परमधाम पहुँच जाते । एक ही स्वाम, एक ही मरण स्वराज्य नहीं मिलता ।स्मरण रखो-हमको केवल कर्म करने का अधिकार है फल पर नहीं । हम उद्देश्य और निरन्तर कर्म हमारा केवल ध्येय है । जीवन कर्तव्य पालन का नाम है कर्तव्य पालन करते हुये मरना जीवन का ही दूसरा नाम है । जो लोग शत्रुओं से डरते हो, मौत से डरते हो वे हथियार रखकर आराम के साथ अपने घर चले जायें । जो लोग स्वराज्य के लिये प्राण निछावर करना चाहते हों वे मेरे पास बने रहें'।[1] रानी कभी-भूलती तो कभी कुछ थी ही नहीं ।"[2] रानी ने लोगों को अपना निश्चय सुनाया बाहर निकल कर लड़ो गोरों को शहर से निकालो और झाँसी की रक्षा करो । [3] उनका कथन था कि " आप प्रमाणित कर दो कि हिन्दुस्तानी सिपाही की तलवार के सामने संसार का कोई योद्धा नहीं टिक सकता ।[4] रानी को पुस्तकालय से विशेष प्रेम था ।"जिसको किसी कष्ट , किसी समस्या किसी विपत्ति ने कभी नहीं हिला पाया था , वह आते हुये पुस्तकालय को देखकर मूर्छित होने को हुई ,[5] सुन्दर ने सम्भाल लिया ।

---

1. झाँसी की रानी लक्ष्मीबाई पृ0 373
2. " पृ0 379
3. " पृ0 386
4. " पृ0 387
5. " पृ0 391

रानी ने जब मोतीबाई के सिर को अपनी गोद में रख लिया तो रानी ने उससे कहा नहीं तू रुद्र की नहीं तू चण्डि है । देख तोरा एक दिन सबको मरना है , किन्तु तलवार से प्राण देना, भगवान का ध्यान करते करते मरना यह जन्म भर की अच्छी कमाई से प्राप्त होता है ।"[1] जब रानी चित्तौल मारकर आत्म घात करने को तैयार हुई तो नाना बोपट ने कहा " आप आत्म घात करने जा रही हैं ।यही नं 9 कृष्ण की पुरी गीता जिसको कंठाग्र याद है, और जो गीता के अठारहवें अध्याय को अपने जीवन में उतारी गयी आई है और जो प्रत्येक परिस्थिति में स्वराज्य की स्थापना के यज्ञ की वेदी पर संकल्प कर चुकी है , वह आत्म घात करेगी।[2] रानी उठी और उन्होंने नाना बोपट जर के पैर छुये और सबके सामने प्रण किया कि यदि सकल [3] अंग्रेजों का मुझको अकेले सामना करना पड़े तो भी करूँगी । जब रानी ने राव साहब से कहा कि मेरे पुर्वजों ने और मैंने भी इस तलवार का उचित उपयोग किया परन्तु अब आपकी कृपा से यह तलवार वंचित हो गई है इसलिये इसे वापिस लीजिये तो रानी से राव साहब ने कहा उसके पुर्वजों ने और आपने स्वराज्य की स्थापना के लिये जो कुछ किया है वह चिरस्मरणीय है । आपने झाँसी में अंग्रेजों का जैसा करारा मुकाबिला किया वह अवर्णनीय है । कौंच में हमारी सेना और युद्ध सामग्री को ब्यावर से लाने में आपका बहुत बड़ा हिस्सा है । अ आप जैसा निपुण सेनापति शायद ही कोई हो ।"[4]रानी ने छः महीने तुर्की के साथ झाँसी का राज्य किया ऐसा कि प्रजा उन पर कुर्बान हो गई [5] रानी के ऊपर वाहे जैसी पीड़ा सिर पर आ जाय वे कभी घबराती नहीं थी [6] वह जैसी निर्भय थी वैसा कोई नहीं था [7] रानी का स्वभाव था कि वे जहाँ जाती थी उसके सोचिई बारीकी के साथ निरीक्षण करती थी । इस निरीक्षण

---

1. झाँसी की रानी लक्ष्मीबाई पृ0 393
2. " " पृ0 395
3. " " पृ0 396
4. " " पृ0 417
5. " " पृ0 428-430

ने उनको युद्ध के लिये मोर्चे बनाने मे बड़ी दुविधा होती थी । उनकी रणनीति मे छल क्रिया का विशेष स्थान था । [1] रानी ने बुद्धी से कहा " स्वराज्य के वृक्ष को नींव एक दो पत्थरों से नहीं होगी। "[2] रानी ने ह्यूरोज़िवर रिम्य को मात दी । रिम्य अपने उनके व्यूह को न भेद सका । उसको लक्ष्मीबाई के मुकाबले मे हार कर लौटना पड़ा । रानी ने आक्रमण कर सवारों को पीछे हटाया । रानी के अद्भुत कौशल के मारे अंग्रेज घबरा गये । रानी के सिर पर तलवार का वार पड़ा और सिर का वह हिस्सा कट गया और दाईं आँख बाहर निकल पड़ी । रामचन्द्र ने अपनी बहीं पर रानी को लिटाया और झाँसी का सूर्य अस्त हो गया। गुलमुहम्मद ने मन मे कहा कि औरत कभी नहीं । वो मरा नहीं । वो कभी नही मरेगा । वो युद्धों को जान बचाता रहेगा। अंग्रेजी सेना के अफसर ने गुलमुहम्मद से पूंछा कि वह जिसका मजार है तो उसने उत्तर दिया अमारे पीर का, वो कैसा बड़ा ज्ञानी था ।

---

1. झाँसी की रानी लक्ष्मीबाई पृष्ठ 443

2. झाँसी की रानी लक्ष्मीबाई पृष्ठ 440

झलकारी

झलकारी कोरिन थी । वर्मा जी ने उसके रूपरंग का वर्णन इस प्रकार किया है उन्नत भाल में लोने में जड़ी हुई एक मणमय माला लिये बैठी । उसके कपड़े बहुत रंग बिरंगे थे । पाँवों के बेसर पहिने थी । सोने का एकाध ही था । तब ठाठ सोलह आना बुन्देलखण्डी । पैर के पैजनों से लेकर सिर की पाउनी (पागिनी) तक सब आकृति स्वाभाविक रंग भरा सजिला। पक्की घेहरा रानी की आकृति , अंग ,नाक से बहुत मिलता जुलता । रानी से झलकारी ने विनती की कि " महाराज मेरे मोरे घर में पुरिया पूरने को और कपड़ा बुनने को काम होत आयो है । पै उनमें अब कम कर दओ है । मलखम कुश्ती और घामे का का करन लगे । अब सरकार घर कैसे चले ? (1) झलकारी ने रानी से कहा कि सरकार/घर/कैसे/ यह तो तुम्हारे पति बहुत अच्छा काम करते हैं(2)तुम भी मलखम ,कुश्ती सीखो । हथियार चलाओ । घोड़े की सवारी भी सीखो ।

उन्नाव फाटक के उत्तर में एक टोरिया है जिसको उन्नावी का टोरिया कहते हैं । उसके दक्षिणी सिरे पर अंजनी और हनुमान का एक छोटा सा चबूतरा है । झाँसी से चढ़ कर वह चिल्लायेवाली करने लगी । अकस्मात झलकारी की गौरी एक बछिया को लगी बछिया एक ब्राम्हण की थी यह ज्वाहुर हुआ कि बछिया मर गई। वह पुरुष ने रानी को अपनी विपत्ति सुनाई और कहा कि सरकार बछिया मरी नहीं है । रानी ने ब्राम्हण से सोमन्त्र जिलाकर पूंछा । ब्राम्हण ने कहा कि बछिया मरी नहीं है । वह मेरे एक नातेदार के यहाँ क्षत्रियों राज्य में भेज दी गई है रानी ब्राम्हण को हैंड देना चाहती थी परन्तु मुखिया चौधरी आड़े आ गये । ब्राम्हण छोड़ दिया गया पुरुष को बछिया के घायल होने के कारण एक दंगा तो होनी चाही।

---

1. झाँसी की रानी/मोहाई पृ0 91
2. पृ0 92

झलकारी को जैसे ही मालूम हुआ कि रानी मंदिरी गेट से बाहर निकल गई है उसने चैन की सांस ली । फ्रा घर के कोने में थोड़ी देर पड़ी रही । फिर झलकारी ने अपना श्रृंगार किया । बढ़िया से बढ़िया कपड़े पहिने ठीक उसी तरह जैसे लक्ष्मीबाई करती थी । गले के लिये हार न था परन्तु कांच की मुरियों का हार था उसको गले में डाल लिया चोली में केवल एक छुरी रख ली । झलकारी के भीतर साहस और शक्ति की कमी थी ।जब एक गोरा ने पूछा कौन? झलकारीनेझट्टी हेकड़ी से जवाब दिया झांसी की रानी लक्ष्मीबाई । झलकारी ने रानी लक्ष्मीबाई को बचाने के लिये यह सब किया था । उसको विश्वास था कि उसकी कांच पहचान में जब-तक और हत्या में जब तक अंग्रेज उलझेंगे तब तक रानी को इतना समय मिल जायेगा कि वह काफी दूर निकल जायेगी । उसकी शक्ल सूरत वैसी ही सुन्दर थी परन्तु केवल रंग वह नहीं था । दूल्हा जू ने रोज के पास आकर शक्ल दिया कि वह रानी नहीं है झलकारी कोरिन है । रोज ने दूल्हा को समझाया कि वह स्त्री हम लोगों को अपने धोखे में उलझा कर रानी के साथ निकलने का समय रानी के लिये यह प्रयत्न करकर आई है ।जनरल रोज ने झलकारी को तंग नहीं किया केवल जेल में डाल दिया एक सप्ताह उपरान्त छोड़ दिया । झलकारी का यह कृत्य स्वतन्त्रता संग्राम में अमिट योगदान है ।

सुन्दर

सुन्दर झाँसी की रानी लक्ष्मीबाई की सहेली थी । रात्रि में तीसरी बार स्नान के बाद रानी कुछ देर का एकान्त ध्यान करती थी और फिर व्यायाम भोजन के बाद सुन्दर, मुन्दर और काशीबाई के साथ थोड़ा सा वार्तालाप करती थी । अंग्रेज सेना में से जब रानी का युद्ध हुआ तो सुन्दर ने रघुनाथ सिंह की की जगह ली पाँचे पहर से लेकर सन्ध्या तक सुन्दर और स्त्री सेविकाओं ने सतर्कपूर्वक कार्य किया रात को भी सुन्दर को काम पर रहना था ।

कृष्णाबु से सुन्दर ने गोलन्दाजी सीखी थी इसलिये वह उनका आदर करती थी ।सुन्दर को फिर रात में कृष्णाबु की कुछ सेवा गई । सन्ध्या के उपरान्त सुन्दर ओरछा फाटक के ऊपर कृष्णाबु के पास पहुच गई। कृष्णाबु ने दिन में कुछ तोप चलाई सुन्दर उस दिन के काम से संतुष्ट थी । कृष्णाबु जब सुन्दर से कहा कि मैं बहुत थक गया हूँ सारा शरीर दुख रहा है तो सुन्दर उनसे विश्राम करने को कहती है और कहती है कि मैं रात भर सावधान रहूँगी "। वह दिन में भी उनकी जगह काम करने को तैयार रहती है । रात को भी कह कर दूँगी करती दिन में आप तोपखाना संभाल लेना । मैं तो दूँगी रात का काम फिर पकड़ दूँगी । कृष्णाबु उस पर कहते हैं कि, सुन्दर तुम बहुत प्रसन्न हो । और अत्यन्त सुन्दर ।।1।। कृष्णाबु कहते हैं कि तुमको देखते ही तुम्हारे प्रति करते ही न जाने मेरा चित्त कैसा हो जाता है । तुम तो महल की रानी होने योग्य हो ।"।2। सुन्दर कहती है" रानी तो एक ही है और एक ही हो सकती है " जब वह सुन्दर को बुरा से लगाने का प्रस्ताव रखता है तो वह कहती है यही कि आप बहुत नीच हैं ।।3।।

---

1. झाँसी की रानी लक्ष्मीबाई पृ0 349
2. " पृ0 349
3. " पृ0 349

वह कहती है कि" जानती हो मैं कुन की हूँ जिस जाति की सहायता से झाँसी में एक छत्र राज्य स्थापित किया था ।"[1] । कुन्दाबु ने कहा कि" मैंने तुम्हारी परीक्षा लेने के लिये ही यह सब कहा था ।[2] सुन्दर का क्रोध जाग्रत हुआ और स्त्रीत्व छोड़कर अपने मन में कहा " दो मुँह पर न लगाए पड़ेंगे । बड़ा तलवार चला लिया है । मेरे स्त्रीत्व को हमारा दुर्बल समझा।" इससे प्रतीत होता है कि वह अपने स्त्रीत्व की रक्षा करने में समर्थ थी ।

कुन्दा बु ने केवल वाक्य पर वरवर तोप चलाई उसमें से गोले नहीं निकले सुन्दर ने उसके वक्षस्थल की ओर जरा हटकर ऊँची सुर्ख परसे तोप चलाई ।उसके साथी गोलन्दाज मारे जा चुके थे ।उसने कुन्दाबु का व्यापार देख लिया। सुन्दर की तोप कुछ काम कर रही थी ।[3] सुन्दर ने देखा कि कुन्दाबु ~~क्रोध~~/~~क्रोध~~ गोले ~~कुछ~~/~~काम~~/~~कर~~/~~रही~~/~~थी~~ को एक छड़ हाथ में लेकर बु र्ज से नीचे तुरन्त उतरा । सुन्दर बुद्धिमान थी उसे समझने में जरा भी देर नहीं लगी । वह भी तलवार लेकर अपनी सुर्ख से नीचे उतरी। वहाँ से औरछा फाटक जरा दूर पड़ता था। कुन्दाबु ने उछलकर फाटक के ताले में छड़ डाली । तीन ताले तोड़ दिये । दो साँकलों को भी तोड़ दिया । तीसरी साँकल खोल दी । नंगी तलवार लिये सुन्दर आ पहुँची और कहा "खेल ~~क्रोधी~~, नरक के कीड़े , तू औरतों से कुछ नहीं पायेगा ।[4] सुन्दर कुन्दाबु पर टूट पड़ी । उसकी तलवार का वार कुन्दाबु ने लोहे की छड़ पर झेला । खनखनाहट कर टूट गई । तलवार का जो टुकड़ा सुन्दर की मुट्ठी में था उसी को तान कर कुन्दाबु पर उसकी कुन्दा बु ने छड़ का सीधा ~~त~~ ~~प्रहार~~/ वार किया । वह छल से बायें अंस पर लगा । चोट की परवाह न करके सुन्दरने फिर वार किया । कुन्दाबु पीछे हटा । परन्तु उसने सुन्दर के पेट में छड़ अड़ा दी । गोरों ने धक्के से फाटक

1. झाँसी की रानी लक्ष्मीबाई पृ0349
2. " पृ0349
3. " पृ0383
4. " पृ0384

ओल दिया । सुन्दर के मुंह से हर हर महादेव , निकला था कि एक गोरे की गोली ने सौन्दर्यमयी सुन्दर को अमर कर दिया ।गोली उसके सिर पर पड़ी थी । [1] अकबर ने कहा वह रानी है । कुन्दाबु ने उत्तर दिया नहीं साहब सहब नौकरानी । अकबर ने अपने सैनिकों से कहा एक ए सौन्दर । जो दिल देव [2] ए सौन्दर्य आवर लेकिन सिपाही है सिपाही की हुकमत उसे दिलेगी। स्वर्गवासिनी सुन्दर की मुट्ठी अभी खोली नहीं हुई थी । तलवार का छोटा सा टुकड़ा अब भी उसकी मुट्ठी में था । दो गोरे उसके शरीर को बाहर ले गये और पत्थरों से ढाक दिया । वहाँ उनके और भी कई सैकड़ों सिपाही दबे हुये थे ।

---

1. 1. झाँसी की रानी लक्ष्मीबाई पृ0 384
2. झाँसी की रानी लक्ष्मीबाई पृ0 384

काशीबाई

काशीबाई दासी के रूप में लाई गई परन्तु झाँसी की रानी लक्ष्मीबाई की सहेली बनी । * काशी बड़ा छोटे कद की और सुगठित शरीर वाली थी।[1] काशी की अति कुछ बड़ी और स्थिर थी । रानी जब सहेलियों से पूछती है कि सेना का सेनापति बनाने योग्य कौन है तो काशीबाई कहती है जवाहरसिंह काशीबाई ने रानी लक्ष्मीबाई के पास संवाद देने का कार्य किया । काशीबाई पूरी के साथ भरत के सामान के साथ सहास्त्र पुरोहित कालपी के लिये रवाना हुई । तात्या को उसने बताया कि वह लड़ना जानती है ।

टोरियों के बीचों बीच आते ही उसों पर अंग्रेजी तोपखानों ने गोले बरसाये । ठोस और पोले भी जो फटकर तात्या के घुड़सवारों का सर्वनाश कर रहे थे । घुड़ें तितर बितर होने लगे । काशीबाई एक ओर पड़ गई । काशीबाई का घोड़ा अंग्रेज घुड़सवारों के बीच फस गया । पहले पिस्तौल चली फिर तलवारें चिंघी । काशीबाई ने हर हर महादेव कहा और घिर पड़ी । उसका स्वर कोयल का सा था । अंग्रेज घुड़सवार समझ गये कि युद्ध क्षेत्र में स्त्री है, उनको भ्रम हुआ रानी है । दूसरे ने कहा झाँसी की रानी उसको घिरना पड़ी । काशीबाई वीरता से लड़ी परन्तु काशीबाई की तलवार ने यकायक असफल कर दिया । पैसो बताई कि दो तलवार तो अब तक कट गये । कई घायल हो गये । परन्तु एक सवार की तलवार से उसका घोड़ा मारा गया ।काशीबाई घेरा पड़ी । उस स्थिति में भी उसने कई सवारों को घायल किया । अन्त में काशीबाई के सिर पर एक तलवार पड़ी । लोहे की टोपी के कारण सिर बचगया परन्तु कन्धा कट गया तो भी काशीबाई शिथिलता नहीं हुई । फिर दूसरी तलवार काशीबाई का अन्त हो गया उस समय उसके मुंह से निकला हर हर महादेव गोरे प्रसन्न हो गये ।[2] उठाकर रोज के पास ले गये और कहा" यह बहुत

---

1. झाँसी की रानी लक्ष्मीबाई पृ0 59
2. पृ0 37।

नहीं सुन्दर । अंकित है रारोर में रोताम है । [1] वह वीर और धैर्य वाला था ।

---

1. हंसाबाई की रानी नहीं लक्ष्मीबाई कुल सं0 371

मोतीबाई

गंगाधर राव ने स्त्रियों का अभिनय करने के लिये बहुत सुन्दर नाचने गाने वाली नियुक्त कर रक्खी थी । इनमें मोतीबाई बहुत प्रसिद्ध थी । मोतीबाई बुद्धावस्था के प्रति आकृष्ट हुई । मोतीबाई सावधानी और लगन के साथ नाटक शाला में काम करती थी ।[1] मोतीबाई ने वासवदत्ता का अभिनय किया । रानी को मोती बाई की बुद्धि और अभिनय कला पर भरोसा था ।[2] वह अत्यन्त युक्ति वाली औरत थी ।[3] जब बुद्धावस्था ने कहा कि "कभी तो कह सकूँगा कि मैं आपका कैदी हो गया तो मोतीबाई तुरन्तराव कहती है जिस दिन रानी साहब स्वराज्य कायम करके उत्सव मनायेगी मैं आखिरी बार नाचूँगी और उस दिन आपकी कैद में हो जाऊँगी । तब तक आपकी और मेरी अपना दोनों की उस देवी के हाथों रहेगी जो झाँसी की रानी कहलाती है और कहलाएगी ।[4] मोती बाई को पक्का भरोसा था कि एक कौसदी भी हिन्दू या मुसलमान सिपाही किसी लालच में आकर अपने धर्म ईमान को नहीं बिगड़ेगा ।[5] जब मोती बाई ने तात्या से कहा कि उनकी औरतों से बहुत सोचना है । तात्या ने देखा "मोतीबाई के "[6] प्रश्न सौन्दर्य में विलक्षण ढंग की है और बोली में कोई दर्द रूप मोतीबाई ने बुद्धावस्था औरतों में प्रेम को पकड़ने का प्रयत्न किया[7] मोतीबाई और बुद्धी जैसे दिवानी मानती थी वैसे ही तारिफदारी भी करती थी और उसी

---

1. झाँसी की रानी लक्ष्मीबाई पृ0 193
2. " पृ0 194
3. " पृ0 195
4. " पृ0 198
5. " पृ0 214
6. " पृ0 216
7. " पृ0 269

उत्साह के साथ वे "सुरमी मनोहर" के मन्दिर में जिस समय रानी शक्ति के लिये आती थी रूप और नाम की बहनों की उन्हीं दिनों मुहर्रम के आगे हैं परन्तु उनके उस कार्य पर मुसलमान किसी प्रकार का आक्षेप नहीं कर रहे थे, क्योंकि वे प्रायः रानी के साथ रहा करती थी ।"[1] मोतीबाई स्वराज्य की लड़ाई में लड़ सकती थी । उसने रानी से कहा" सरकार मुझको और मेरी संगीनों को अस्त्र शस्त्र दिये जाये और फिर देखा जाय कि स्वराज्य की लड़ाई के लिये क्रांति की स्त्रियाँ क्या क्या कर सकती है ।

जब औरछा फाटक पर का तोपखाना कुछ धीमा पड़ा तो मोतीबाई ने कहा अनुभव किया , मुझ को उस ओर जाने दीजिए । सुन्दर[2] अकेली है। कुन्दा दू के साथ पंक्ति व टीले हो गये हैं ।"[3] रानी कहती है "जाओ मोती । हीरा अकेर लौटना । "तेवर फाटक की दाहिनी बगल में जब दो अंग्रेज अफसरों ने देह की सीढ़ी बनाई उन पर से बाकी दोनों चढ़ गये ।इन दोनों ने अपनी सेना के एक दूसरे को संकेत किया दस्ता आगे बढ़ा आगे में तलवार लिये मोती बाई टूट पड़ी । लेफ्टिनेंट ने पिस्तौल चलाई चली गई । मोतीबाई ने एक वार में ही उसको खत्म कर दिया । दू दूसरे लेफ्टिनेंट ने तलवार के साथ किये परन्तु मोती बाई ने उसको भी समाप्त किया ।"

मोतीबाई को हिन्दुस्थान के प्रति प्रेम था । मोतीबाई ने रानी से कहा कि मैं चिट्ठी के सिरहाने पर लिखदाती । मेम साहब होश को मोतीबाई का सलाम । सुबहान हिन्दुस्थान की पीठ दिखाओ और अपनी विलायत में जब मारो ।"[4] तेवर फाटक की तोपखाने परस्पर बरसने लगे और एक गोली

---

1. झाँसी की रानी लक्ष्मीबाई पृ0 281
2. " पृ0 380
3. " पृ0 380
4. " पृ0 320

बुंदावन्ना को लगी । तैयर काटक का तोपखाना बन्द हुआ। एक अंग्रेज दीवार पर चढ़ा । मोतीबाई ने तलवार से उसका सिर काट कर दिया और बुंदावन्ना की लाश को टांगकर नीचे उतर आई। रानी ने कहा मोतीबाई"तुम लोगों का आज कार्य मेरे अपनी आंखों देखा है ।"[1] रानी ने मोतीबाई से कहा कि मैं बुंदावन्ना के शव को जलाने का प्रबन्ध करती हूँ ।बुंदावन्ना के शव के मोह में मोतीबाई बड़ा घबराई । मोतीबाई तोप पर चली गई । कुछ गोलियां मोतीबाई के आस पास से निकल गई परन्तु एक ने अन्धा नीचे से फोड़ दिया। हृदय उसका बच गया शत्रु अन्धकारवादी थी । मोतीबाई का सिर रानी ने गोद में रख लिया । मोती बाई की आंखों में आंसू भर आये । मोती "इस गोदी में सिर रखे हुये मरना किसी और के भाग्य में नहीं था, बाई साहब रानी ने सिर पर हाथ फेरते हुये कहा," मेरी मोती बाई तू आज हीरा हो गई ।"[2] मोतीबाई ने व्याकुल स्वर में कहा" मैं कुछ भी हूँ परन्तु शुद्ध हूँ।" वह शुद्ध ही नहीं बल्कि थी रानी ने कहा ," नहीं तू शुद्ध ही नहीं " तू पवित्र है । जैसे हीरा एक दिन सबको मरना है, परन्तु तलवार में प्राण लेना भगवान का ध्यान करते मरना, यह जन्म भर की अच्छी कमाई से प्राप्त होता है ।" मोतीबाई ने आंखें मीची । उसका चेहरा पीला पड़ गया । रानी ने कहा " आत्मा अमर है ।जीव शरीर का चाहे जो कुछ हो वही एक प्रकार शेष रहता है । रानी की गोदी मोती बाई के खून से तर हो गई ।मोती बाई का पीला मुर्झाया चेहरा एकदम प्रकाश हुआ । आंखें अधमुंदी हुई। होंठ खुले । उसके मुंह से निकला रानी उजाला था और वह मुर्झाया हुआ अन्धेरा प्रकाश पाकर बिखर गया। मोतीबाई को बुंदावन्ना और ग्वालियर मोतीबाई के पास जला दिया गया । बुंदावन्ना महल के दक्षिणी कोने पर अब भी स्थित है । उसकी चिनाई होती है और बातें चढ़ती है ।

---

1. झांसी की रानी लक्ष्मीबाई पृ0 305
2. पृ0 393

बुद्धी

रानी की अंजर की रस्म पूरी होने के बाद बुद्धी ने मोती बाई से कहा" असली राजा तो झाँसी को अब मिला, बाई जी ।[1] बुद्धी के व्यक्तित्व का वर्णन वर्मा जी ने इस प्रकार किया है," मकान के बाहर खिंचे घरने की रस्म के बाद बुद्धी मोतीबाई के घर आई। बुद्धी यौवन के अन्त में थी । बड़ी आँखों में चमक । नीचे देखने के समय लम्बी बरौनियाँ लाज के पर्दे में डालने लगी ।"[2] मोतीबाई ने कहा कि ,वे आए हैं-खिचुरवाले सरदार । बुद्धी ने मोती बाई से कहा कि" उनको देखकर न जाने मन में कैसी उथल पुथल हो जाया करती थी । उन्होंने देखा अक्सर । उसी कमरे के भीतर कुछ इस प्रकार हैरे कि मुझको ऐसा लगा मानो घण्टों देखते रहे हों। मैंने तो सीधी आँख हटा ली थी । फिर मकान के पास से निकले । मैं आड़ पाकर आँख के रास्ते में आ गई । उन्होंने बहुत कम देखा , परन्तु मैं बहुत देर, बार बार देखती रही । वे चले गये । मुझे बहुत अच्छा।[3] दो तीन रोज आते समय कुछ समय मिला और घर आने की हुआ की । बुद्धी कहने लगी " मैं सहम गई । सिर नीचा किये खड़ी रह गई । बोले यदि मुझको कुछ करना चाहती हो, तो मोतीबाई जी जो कुछ काम बतायें उनको बहुत होशियारी के साथ किया करो ।"[4]

बुद्धी ने मोतीबाई से कहा कि फिर हिम्मत करके बतलाया कि देश के हिन्दू- मुसलमानों को ईसाई बनाने की कोशिश की जा रही है उन्होंने चकोरा माँगा । मैंने कहा कि सिपाहियों को लोभ दिया जा रहा है कि यदि वे ईसाई हो जायें तो उनका वेतन अरसा बढ़ा दिया जायेगा और जो

---

1. झाँसी की रानी लक्ष्मीबाई पृ0207
2. " पृ0208
3. " पृ0209
4. " पृ0210

सिपाही पहले कैदाई होगा उसको तुरन्त हथकड़ी का पद दे दिया जाये।[1] झलकारी ने फिर मोतीबाई से कहा कि " उनके सामने तो रोमान्च हो ही आता है- पसीना सा आ जाता है, सिट्टी ही भूल जाती है । क्या आप उनसे कुछ कहेंगी ।[2] मुल्कमान द्वारा संकेती किया अंग्रेजी सेना में वह जो कुछ किया करती थी वह उसने अक्षरशः तात्या को सुनाया । " बात की समाप्ति पर तात्या ने उठकर झलकारी के सिर पर हाथ फेरा। हाथ फेरने में एक फूल टूट कर नीचे गिर पड़ा । तात्या ने फिर बाँधने की कोशिश की।[3]

झलकारी छावनी में गुप्तचर का कार्य करती थी, उसका छावनी में आना जाना बढ़ गया । उसके मुल्क मान की कला में और भी मौलिकता आ गई । उसने किसी सिपाही या अफसर से अपने को कम बराबर भी नहीं कहा । वे समझते थे कि झलकारी कुलीन है । झलकारी ने हर पल्टन में तीन तीन उपयुक्त अफसर कोड़ ढूढ़ लिये । इन अफसरों केवल यही मालूम हो गया कि हम लोगों को किसी एक दिन महान कार्य करना है । [4] झलकारी ने उसे छावनी में आने के लिये मना किया । झलकारी को याद आया कि " एक दिन आयेगा जब झाँसी की मुक्तिकार क्षेत्र की मुक्ति का सम्मेलन होगा।"[5] वह चाहती थी कि उसके शेर निकाली जाती तो अच्छा होता, उसके शरीर से कहीं थोड़ा सा खून निकल पड़ता तो और भी अच्छा होता।"[6]

मोती बाई और झलकारी को शिक्षणी मानती थी जैसे ही तात्यिपाहाड़ी की करती थी । और उसी उत्साह के साथ वे झलकारी मनोहर के मन्दिर में जिस समय रानी शान्ति के लिये जाती थी नृत्य और गान की करती थी , उन्हीं दिनों मुहर्रम के जमाने में । परन्तु उनके इस कार्य पर मुसलमान किसी

---

1. झाँसी की रानी लक्ष्मीबाई पृ0 212
2. " पृ0 212-213
3. " पृ0 221
4. " पृ0 222
5. " पृ0 223
6. " पृ0 224

प्रकार का आदेश नहीं कर रहे थे , क्योंकि वे प्रायः रानी के साथ रहा करती थी ।"[1]

राव साहब ने कहा" उसका नाम मुन्दरी है । बड़ा सुन्दर नाम है । तिरछीभौंहों की करती है और दुरचमान भी । झाँसी की नाट्यशाला में बढ़िया अभिनय करती थी । केवल हावभाव -भाव ।"[2] मुन्दरी तारपा से कहती है कि ," परन्तु सरदार साहब, मेरी रानी का स्वराज्य संग्राम पहले सफल हो और मैं आपकी धर्म संगिनी बनकर रहूँ । बहुत दिनों से इस बात को कहने के लिये संकल्प पर संकल्प किये परन्तु आज सफल संकोच त्याग कर कह पा रही हूँ ।[3] अन्त में युद्ध में रानी ने मुन्दरी से कहा था मुन्दरी अपने तोपखाने पर डटा तो है इन बैरियों को आज ।"[4] मुन्दरी प्रणाम करके जाते हुये कह गई" इस जीवन का अनोखित अभिनय आपको न दिखायाया ।[5] मुन्दरी की तोपों ने गजब ढाया । अंग्रेज नायक ने इन तोपों का मुंह बन्द करना तय किया । सामने तलवार बढ़ते आते थे मरते आते थे परन्तु उन्होंने इस तरफ की तोपों को युद्ध करने का निश्चय करलिया था । उधर सामने तलवार मुन्दरी के तोपखाने पर जा टूटे ।" मुन्दरी तलवार से बिंध गई । घिर गई और मारी गई । मरते समय उसने आह तक नहीं की । घिर गई परन्तु शत्रु की तलवार छीनने में, जिस बात में असमर्थ रही वह भी मुन्दरी की वीर मुखमुद्रा को उसके होठों पर अनन्त विजयता की मोहर से ~~मु~~ अंकित गई ।[6]

इस प्रकार मुन्दरी सुन्दर नाम से प्रसिद्ध, बातूनी करने में चतुर , मेवाड़ी तोपची और स्वतंत्रता की उपासक थी ।

---

1. झाँसी की रानी लक्ष्मीबाई पृ0281
2. " पृ0413
3. " पृ0413
4. " पृ0413
5. " पृ0 553
6. " पृ0 455

कुमार

कीर्ति सिंह ने जब कुमार का हाथ पकड़कर कहा तो मांगोगी कुंवा। मेरे पिता बहुत मूल्य वस्त्रालंकारों का भण्डार छोड़ गये हैं। जितनी इच्छा करो, कुंवा और लेता रहूंगा।"[1] उस समय कुमार कहती है," मैं गोद कन्या हूं, कुमी की छाल से अपना शरीर ढक सकती हूं।" उसका कथन है कि " मेरे साथ ब्याह डालिये। मुझे अपनी पत्नी की प्रतिष्ठा दीजिये। अपनी जीवन सहचरी बनाइये। वचन दीजिये। मैं आपके धर्मों में बेला अंगरक्षा नहीं बन सकती तो वह धारा उतार कर फेंक दिया। वह अपने नारीत्व की रक्षा चाहती है। वह कीर्ति सिंह से कहती है," मैं तो आपकी प्रार्थना से प्रेम कर सकती हूं, परन्तु अपना नारीत्व नष्ट करके नहीं। कुमार ने मन्त्री को न्याय के आधार पर बचा लिया। कुमार कहती है "न्याय। जिससे राजनैतिक गोद के नाम पर कपटा न लगे, वरन लोग अपराध न फैलाते फिरें।[4]

कीर्ति सिंह के स्वर्गवास के उपरान्त ललिता कुमार से कहती है कि" मुझको रामकथन अच्छा लग उठा है। उसी में सार है और सब व्यर्थ है"[5] जब ललिता कहती है अरी दीदी संसार है, सब आता जाता बना रहता है देखो न आजकल रानी फिर से ही हंसने गाने लगी है और प्रसन्न है। तुम न जाने किस लोक में फिरकर हमें भुला जा रही हो।[6] कुमार कहती है, मुझको जो अच्छा लग रहा है वह मैं कर रही हूं तुमको जो अच्छा लगे वह तुम करो, न मैंने पहले तुमको कभी रोका टोका और न अभी कुछ कहती हूं।[7]

---

1. कुमार वृन्दावन लाल वर्मा पृ0 25
2. " पृ0 25
3. " पृ0 25
4. " पृ0 75
5. " पृ0 137
6. " पृ0 137
7. " पृ0 140

वह स्वावलम्बी है । शास्त्र अध्ययन करती है और निपुण है । वह मलिन है, कृष्ण में उसकी आस्था है । वह कहती है" मेरा विवाह कृष्ण के साथ हो गया । अब किसके साथ जाऊँगी ।"[8] कुमार भजन पूजन में लगी रहती है [2] कुमार का खेल कुछ न जाने कहाँ जाग गया है वह तो अब व्रत उपवास, भजन, पूजन और न जाने कहे में लगी रहती है । कभी मंगल का उपवास, कभी शनिवार का कभी तीज कभी बधि ।"[3]

कुमार सोचती है कि उसके भाग्य में सुख नहीं है ।[4]

कुमार धर्म के कार्य में वाणी वाणी के विलम्ब से नहीं करती ।[5] कुमार मानसिंह से शब्दों में " प्यारी कुमार तुम आम की पकी कोयल की तरह चिकनी और कोमल हो, लगता है कि परीक्षा में भी मुझको कष्ट होगा।[6] यदि मानसिंह परीक्षा करते है तो वह अपनी सुरक्षा छुरी से करने को उद्यत है।[7] उसे सन्यास की दीक्षा में आस्था है यदि दीक्षा मिलगई तो उसे सुख ही सुख है । वह ललिता से कहती है," मैं महन्त महाराज की सेवा में सन्यास की दीक्षा के लिये जा रही हूँ । यदि मिलगई तो मेरे लिये मरने तक सुख ही है। यदि महाराज ने दीक्षा दी तो किसी तीर्थ में चली जाऊँगी । यदि महाराज ने तुम्हारे कहने से मेरा परीक्षा किया तो वह छुरी मुझको क्या लेगी। [8] वह छुरी प्रसिद्ध है मन्दोलेपुरी से कहती है कि यदि महन्त जी को यहाँ शरण न मिली तो आत्म हत्या करेगी । वह कहती है असम्भव नहीं है महाराज मैं सताई हुई हूँ शरण में आई हूँ ।यदि शरण न मिली तो आत्म हत्याकरूँगी। वह छुरी हाथमें ले मेरी हत्या का पाप लगेगा।[9]

---

1. कुमार कुम्हावत लक्ष्म वर्मा पृ0 159
2. " पृ0 164 -167
3. " पृ0 168
4. " पृ0 168
5. " पृ0 171
6. " पृ0 175
7. " पृ0 175
8. " पृ0 177

वह मानसिंह द्वारा अत्याचार किये जाने का विरोध करती है । उसे विश्वास है कि उसकी देह और आत्मा को कोई नाश नहीं कर सकेगा।[1] वह मानसिंह पिशाच से अपनी आत्मा और देह को बचाने के लिये महन्त के पास जाती है और महन्त से कहती है, उस पिशाच से अपनी देह तथा आत्मा को बचाने के लिये आपकी शरण में आई हूँ तपस्या करूँगी और सन्यास लूँगी और जिस प्रकार का जीवन बीतने की आज्ञा होगी वैसी ही करूँगी। यदि मुझे शरण नहीं मिलती है तो झील झरना झील स्थान पर अपना वध करूँगी।[2] वह नारी होकर साधना करके योगबल उपार्जित कर महाराजाओं से भी बल और ऐश्वर्य प्राप्त करने की आकांक्षी है । वह मन्दोदरी से कहती है" मैं स्त्री होकर अपने लिये इस लोक और परलोक में तपस्या और सन्यास की साधना द्वारा ऐसा स्थान बनाऊँगी । जैसा पुरुष भी नहीं बना सकते। बड़े से बड़ा युद्ध जो योग क्रियायें करता होगा उसको मैं भी करूँगी अलख जगाऊँगी और उस योग बल को उपार्जित करूँगी जिसके सामने बड़े बड़े राजा महाराजाओं का बल और ऐश्वर्य कुछ नहीं है । मानसिंह अब मेरा कुछ नहीं कर सकता।[3]

वह माया से मुक्त चाहती है ।"[4] मानसिंह के शब्दों में वह जैसी कुछ भी काली अच्छी थी ।"[5] कुमार की तपस्या ने मन, पवन, योगाभ्यास और प्राकृतिक ने तत्सम्बन्धी का रंग दे दिया था । जैसे धरती और गैरिक का सम्मेलन हो गया हो । माथे पर भस्म का त्रिपुण्ड । कानों में बड़ी बड़ी रुद्राक्ष माला पर चौड़े चौड़े काले चिकने लम्बे बाल केशों की लटों के होने से कभी भी आ जाना कुमार की हिमालय से कोई नाता रखने

---

1. कुमार वृन्दावन लाल वर्मा पृ0 179
2. " पृ0 180
3. " पृ0 181
4. " पृ0 187
5. " पृ0 200

बाबा बतलाते थे । घुटने के पास रखा हुआ त्रिशूल उनकी मेरठी का नाम देने में कसर नहीं लगा रहा था । " [1] अनार की समझ में आया कि अनादि बहन झूट बना कर में है और कहीं भी ध्यान जमाने से कूट की सिद्धि हो सकती है ।"अनार को धर्म पर अटूट श्रद्धा है। [2]वह निष्ठावान है, उसकी श्रद्धा के विरुद्ध उसकी ओर कोई नहीं देख भी नहीं सकता ।महन्त कहते है अंधसुरी की श्रद्धा के विरुद्ध उसकी ओर कोई देख भी नहीं सकता। वह निष्ठावान है "[3] वह योग्य है । महन्त को उस पर स्नेह है।[4]गुरु चरणों में उसे पूर्ण आस्था है महन्त से वह कहती है गुरु चरण इस प्रकार सुलभ हो जाय तो इससे बढ़कर मेरा सौभाग्य और हो ही क्या सकता है [5] उसकी मनोवृत्ति शुद्ध है जिससे आत्मा के रूप में परमात्मा का अंश मनोरूप के सहायतासे किसी जन्म में मनुष्य को मुक्ति दे सके । वह महन्त से कहती है " महाराज आपने कहा था, मनोवृत्ति को शुद्धरखना चाहिये, आत्मा के रूप में परमात्मा का अंश मनोरूप की सहायता से किसी न किसी जन्म में मनुष्य को मुक्ति दे देता है ,वासनाओं से अलग रहकर कर्म किया जाता है वही सुकर्म है वर्तमान जन्म की तपस्या से पूर्व जन्म काअसफल मनोरथ सिद्ध हो जायगा।[6] उसके चरित्र का महन्त पर इतना प्रभाव पड़ा कि वह कहने लगे "मारी जितनी महान हो सकती है, आज मैंने जाना ।"[7]

---

1. अनार वृन्दावन लाल वर्मा पृ0217
2. " पृ0 233
3. " पृ0 234
4. " पृ0 236
5. " पृ0 285
6. " पृ0 286
7. " पृ0 287

वह कूट नीति में भी पारंगत है । वह कहती है कि अपने पास काफी सेनाएँ है । कुछ अनोखी बातों की मिल जायेगी । किले में होकर हम लोग किसी भी बड़ी संख्या वाली सेना का संतोष करके और सामना कर सकेंगे ।(1) महन्त को विश्वास है कि कुमार के संयोग और सहयोग से लोधसिंह को कुछ भी कुछ मिलेगा ।(2)

इस प्रकार हम देखते है कि कुमार के चरित्र में कोई दोष नहीं है । वह कूटनीति में पारंगत है और पराक्रम है । उसमें शोभा कम है । आत्मा और परमात्मा की एकता का आभास उसे है । वह स्वावलम्बी है और अपने शरीर और नारीत्व की रक्षा करने की उसमें सामर्थ्य है । वह सुन्दर है और साथी से लोध सिंह की रानी बनकर सर्वोच्च पद प्राप्त कर लेती है ।उसने सदैव अपने चरित्र की रक्षा की है । इस प्रकार वह सर्वगुण सम्पन्न और महान नारी है ।

---

1. कुमार- वृन्दावन लाल वर्मा पृ० 301
2. कुमार- वृन्दावन लाल वर्मा पृ० 336

लावणी

लावणी क्रोध सिंह की पत्नी है । मन्मथ के कहने पर कि "मैं बाकी रह गई हूँ, मुझे भी मार डालो" लावणी मानसिंह से कहती है कि मैं कहती हूँ । तुम भी अभी कहो । मौके की बात में बैठे रहोगे तो सियाही कुछ और अर्थ कर डालेगे । (1) इस प्रकार मन्मथ की बराबर अपनी उदारता का परिचय देती है । रानी लावणी के सम्बन्ध में मन्त्रीलेपुरी से कहती है कि " यदि मान गई तो वह पुन विवाह कर लेगा।" वह भाग्यवादी है और भविष्य की चिन्ता के लिये आतुर है । वह मानसिंह से कहती है, "तुमने मुझको कभी नहीं बुलाया और कभी बुलाओगे । भाग्य में जो कुछ था हो गया, अब आगे की चिन्ता करनी चाहिये ।(2) वह नहीं चाहती कि मानसिंह अकेले में उससे मिले । विवाह के समय से ही उसके हृदय में मानसिंह के लिये स्थान हो गया था । जब मानसिंह लावणी से लिपट गया तो उसने अपने को धीरे से आलिंगन से छुड़ाया । जब मानसिंह लावणी से कहता है कि मेरे तुम्हारे मन मे एक दूसरे को साथ विवाह कर लिया परन्तु समाज और धर्म के सामने होना बाकी है ।(3) लावणी पुनर्विवाह को उचित बताती है "मुझको तो उचित मालूम पड़ता है । परन्तु अभी बहुत बड़ा कुछ नहीं हुआ है, पुनर्विवाह की प्रथा बन्द हो जाने पर भी लावणी प्रगतिशीला है क्योंकि वह पुनर्विवाह को उचित ठहराती है और बाद में मानसिंह के साथ पुनर्विवाह कर भी लेती है । वह समझदारी से काम लेती है और मन्मथ को भी न्योतने को कहती है। क्योंकि वह दुखिया है । वह चाहती है कि उसको किसी

---

1. कुमार पृष्ठ 67
2. " पृष्ठ 128
3. " पृष्ठ 141

प्रकार का कष्ट न हो । विधवाविवाह के वह पक्ष में है और चाहती है कि
वो ऐसा कर ले । वह आधुनिक नारी सुधार और विधवा विवाह की
विचारधारा से उसके विचार मिलते हैं । वह निःसंकोच कहती है "हमारी
जाति के कुछ लोगों में विधवा विवाह की रीति है ।उनको अच्छा समझने
लगे हैं पर है वे हमारी जाति के ही । जिनका निभाव नहीं हो सकता उनको
अपना कर लाना पड़ता है । मैं ऐसा ही करना चाहती हूँ "[1]

वह मान सिंह को हर प्रकार से सुखी बनाने में प्रयत्नशील थी [2]
लावण्यी का यौवन विकसित था , मन हिलोरें पर आकांक्षायें समर्पण पर [3]
मानसिंह को उसका सुन्दर मुख और भी अधिक सलोना लगा । उसकी बड़े
देवता के साथ छोटे देवता को पूजने में भी आस्था है । उसका कथन है,लोग
बड़े देवता की पूजा करते हैं और छोटे की भी ।[4] लावण्यी इस पक्ष में
नहीं है कि स्त्री अपने मन को मारे । लावण्यी सम्पा से कुमार के संबंध में
कहती है, पूजा तो वह सचमुच करती थी, स्त्री ही तो थी, कहाँ तक अपने
मन को मारती ? लावण्यी के एक गुण की अपना होता है । वह रानी की
भाँति जीवन व्यतीत करती है । इसमें लेखक ने लावण्यी द्वारा विधवा कराकर
प्रगति शीलता का परिचय दिया है और लावण्यी के चरित्र को आधुनिक
समाज के अनुरूप विधि चित्रित किया है ।

---

1. कुमार पृ0 141
2. " पृ0 150
3. " पृ0150
4. " पृ0 157-204

मन्ना

अनार उपन्यास में मन्ना की एक प्रमुख पात्र के रूप में उभरी है । उसका पति बाद विवाद और दुष्कर्मों के कारण मार दिया गया। वह कलावती के पास निरन्तर किले में वापस आती रहती है और अनेक कार्य कलापों में सहयोग प्रदान करती है जब कुंवर मानसिंह से पूछता है कि मन्ना घबराई हुई है मानसिंह उत्तर देता है कि " थोड़ी घबराई हुई अवश्य है परन्तु वह विवेकशील धीरज वाली है । "[1] कलावती के आश्वासन देने पर कि तुम्हारा कुछ नहीं होगा , मन्ना कहती है और कुंवर तब छीन लिये जब मैं क्या करूंगी ? कितनी बड़ी उमर कैसे काटूंगी । मेरा कौन बैठा है ।[2] कलावती ने मानसिंह को बुलवाया । मानसिंह के आते ही मन्ना का सन्ताप और बढ़ा । कुहराम मचाने लगी । चीत्कार करते करते गला भर्रा गया था । उसे गले से बोली "कुंवर साहब, मेरे लाला को ले आओ । तुमने वचन दिया था कि बाल बांका न होगा ।

---

1. अनार पृ० 61 [1] केवमाय मारा गया
2. अनार पृ० 66 [2] ललिता - दासी

गुरबाई

टूटे कंटि उपन्यास में गुरबाई प्रमुख पात्र है । वह पहले ताजाखाँ की महफिल में थी । थोड़े समय बाद वह मुहम्मदशाह के दरबार में पहुंच गई । ताजा खाँ को बुरा लगा । उसे फिर नादिरशाह ईरान ले जाना चाहता था। परन्तु वह निकलकर भाग गई और ईरान नहीं गई । उसे स्वीय प्रेम था । देश के प्रति अगाध प्रेम उसमें दृष्टिगत होता है । गुरबाई फारसी की गजल गाती थी उसे सरदाना नन्दराम और रसखान के पद बहुत प्रिय थे ।

गुरबाई ने सुख के साथ ताजाखाँ के बिल्कुल पास आकर गजल गाई ताजाखा के मन में ऊँची लहरें उठ रही थी और उसने कहा कोई इनाम नहीं जो हम कमाल के पास जाकर बैठ भी सके ।1। गुरबाई ने मांगा कि बादशाह सलामत के सामने एक बार मुजरा करा दिया जाय ।"।2। ताजाखाँ ने गुरबाई को उसके गायन और सुख पर प्रसन्न होकर हार दिया । जब गुरबाई ने पूछा कि बहुत कीमती होगा यह तो हुजूर ।।3। ताजाखाँ ने उल्लास के साथ उत्तर दिया" बहुत कीमती तो नहीं है सिर्फ पाँच लाख रुपये का है।4। गुरबाई सोचने लगी कि यदि बादशाह सलामत मेरे गान और सौन्दर्य पर रीझ गये तो वे क्या न देंगे ?।5। गुरबाई मुहम्मद शाह के रंगमहल में एक बार पहुंची तो फिर कभी लौटकर नहीं आई। गुरबाई का अवसरण उसके टूटे कंटी की तरह चुभ रहा था । मुहम्मदशाह के शिविर में गुरबाई थी ।ताजाखाँ को उसके रूप लावण्य का स्मरण हो रहा था फिर भी रूपबाई के रूप की मोहनी उसकी धमनियों को पुकार पुकार लेती थी । वहाँ क्या हो रहा होगा ?

---

1. टूटे कंटि -चुन्न डावन लाल वर्मा पृ0 27
2. " पृ0 28
3. " पृ0 67
4. " पृ067
5. " पृ0 67

जिन नाच नखरों को कमाकर मैंने अपनी सम्पत्ति बनाया था वे जिस तरह से जिस कमाल के थोड़े हु टूट रहे होंगे ? आँख की वह कोर , गोल की वह बाँक, गर्दन की वह ऊँच नखरा , उभरे हुये अंगों की वह कुच चिबुक जिन आँखों का निशाना बन रही होगी? और वे पैर । मेहदी के रंग को मात करने वाले उन पुष्पों की वह छनक जो तरंगों के पंचम स्वर को भी लोजा-पन प्रदान करती थी । तबले के सम पर मोटी थाप पर कम घुन का वह सामुहिक योग ? जैसे कुन कुन होते होते जा रही हो । वे झिलमिल मिलावें और उन पर मोतियों जैसे चमकते हुये आँसुओं में होकर रिस रिसकर बहने वाली मुस्कान जो उन ओठों पर रोज रोज बहती थी । हीरों का वह हार और वे पहुचियाँ ओह "[1]मुरबाई के गले के स्वर का वर्णन वर्मा जी ने उस प्रकार किया जैसे कुन कुन बिना पंखे पुत्रों पुकारते हुये रपटे चले जाते हैं , जैसे कई झरने अपने अपने स्रोतों से मंद स्निग्ध गति से लोटे, गिरते, चलकर रश्मियों की झिलमिलाहट को समेटते हुये किसी निस्तब्ध सरोवर में जाकर मिल रहे हों "[2]

मुरबाई उस जमाने की दुनिया की सबसे बड़ी कलावन्त थी । वह जैसी बाहर से नजर आती थी वैसी ही भीतर से थी । मुहम्मदशाह का कथन देखिये" तुम जैसी बाहर से नजर आती हो वैसी ही भीतर से भी हो ।कमाल की कला है तुम्हारी इस दुनिया और इस जमाने की तुम्हीसबसे बड़ी कलावन्त हो ।"[3]

मुरबाई अपना देश भारत वर्ष छोड़कर नादिरशाह के साथ ईरान नहीं जाना चाहती थी । उसे प्रतीत होता है कि उसमें देशभक्ति थी , अपने देश के प्रति राग था । वह वह आबाद होना चाहती है और एक बेटी से

---

1. टूटे कड़ि कुन्दावन लाल वर्मा पृ0 82
2. " पृ0 85
3. " पृ0 85
4. " पृ0 105

कहती है, " मैं नहीं जाना चाहती । मैंने निश्चय कर लिया है कि जाम वाँह को ही गंवारी पड़े पर हैरान नहीं जाऊंगी ।1। आचार होने में मदद करोगी ? बहुत इनाम दूंगी ।

सोने व जवाहर के लिये उसके हृदय में कोई विशेष मोह नहीं है । मोहन से दूर जाई की सहायता निकल भागने में की वह उसे व सोना जवाहर देना चाहती है । वह अपनी कमर में हाथ डालते हुये कहती है, मेरे पास सोना जवाहरात है । थोड़ा सा लेते जाओ । काम आयेगा ।।2।

उसका हृदय कृष्ण की भक्ति से ओत प्रोत है और वह कन्हैया से बढ़कर किसी को छाया नहीं मानती । मोहन से वह कहती है "छाया कन्हैया की जिसकी छाया के बराबर और कोई छाया नहीं ।।3।वह तो कन्हैया को हो चुकी है । वह कहती है मैं तो कबके कन्हैया को हो चुकी हूँ आपकी छाया में हूँ । " वह अपने कन्हैया के सामने संगीत पेश करना चाहती है। उसके मुंह से स्वर निकला, मैं अपने कन्हैया के सामने ऐसा संगीत पेश करूंगी कि जैसा मैंने कभी न करवाया होगा । वो चाहता है कि इसी समय कोई पद गाऊं।5। वह बहुत बातूनी है मैं मोहन से कहती है मैं तो बहुत बातूनी हूँ तुम कम बोलते हो । ।6।वह तो अपने को कन्हैया की गोपी समझती है, अब तो वह अपने कन्हैया को मेहबी है। रूपा, कुरूपा, उसका कुछ भी नाम रख लो, जो तुम्हारी इच्छा करे ।।7। वह मोहन के प्रति आत्म समर्पण करती है और सब सोना हीरे जवाहरात उसे देना चाहती है" मेरे पास अब मेरा कुछ भी नहीं है सब तुम्हारा है । मैं इस बोझ को कमर में बांधे बांधे फिरती हूँ ।_सम

---

1. हुये कटि कृष्णावन लाल वर्मा पृ0105
2. " पृ0 115
3. " पृ0 122
4. " पृ0 128
5. " पृ0 140
6. " पृ0 146
7. " पृ0 148

कहते थे आओ हुकुमी भी नहीं । मैं कहती हूँ मुझको कहि ता महता है । यह लो और रखो अपने पास "[1]

मुरबाई मानती है कि कनकन मे कन्हैया है और मोहन आँखों में बसा हुआ कन्हैया है, कन्हैया हर जगह है, कनकन मे । और फिर आँखों में बसे हुए मेरे कन्हैया तुम हो [2] जब मोहन कहता है कि" कन्हैया की गोपी असली कन्हैया के दर्शन करके और जमुना मैया के पैर छूकर मेरी बावली,[3] तो मुरबाई बोल उठती है" मैं तो हो चुकी, जब उस नरक को छोड़कर आजाद हुई तभी हो चुकी, अब तो केवल मिट्टी की मूर्ति को सिन्दूर का टीका कर लगाना है ।"[4]

मुरबाई और मोहन जब मथुरा नगरी में जाते हैं तो मार्ग में डाकू व चिन्तामणि लूटने आजाते हैं तो जब बड़ी चतुराई और बहादुरी से मोहन को बचा लेती है, मुरबाई के कांपते हुये अंग रुक गये जैसे किसी त्याग, बलिदान व तपस्या के लिये संयत हो गये हों । वह तन मनवाला और भी ऊँचा हो गया। गोरे गोरे कमल जैसे हाथों को ऊपर करके निःकम्प ओज भरे स्वर में बोली, क्या करते हो ? मैं तुम्हारे सामने नंगी, बिल्कुल नंगी हुई जाती हूँ।आखिर तुम्हारे भी तो मेरी ही जैसी माँ बहिन होगी।[5]बड़ी चतुराई से कुछ धन डाकुओं को देकर कुछ क्या भी लेती है तो गड़रिया व जब मुझ मोहन के लिये मारा है तो वह उसके प्रति कृतज्ञता प्रकट करती है । वह गड़रिया से कहती है तुम्हीं सरीखे लोगों के पुण्य से दुनिया टिकी हुई है ।[6]तुमसाली और लक्ष्मी की संज्ञा देता है । अपने तुमको कभी ठीक तौर से नहीं समझ पाया ।

---

1. हूँ कहि कृष्णावन लाल वर्मा पृ0 149
2. " पृ0 178
3. " पृ0 179
4. " पृ0 178
5. " पृ0 184
6. " पृ0 186

मेरी बहिन कैसी लगती है ।[1] उसे किसी का कोई डर नहीं है क्योंकि वह मुरलीधर के प्रेम में प्रसन्न हो गई है । वह कहती है जब दुनिया का मुरलीधर साथ है मेरा प्यारा तब किसी किसी मेरा क्या कर लेगी ? मुझको अब कोई डर नहीं ।" [2] जब मौज आती थी तो वह खूब गाती थी। उसने सचमुच कुछ पा लिया था है "मोहन को रोमांच हो आया ।उसने भी आँखें मूँदी और लगा जैसे उसने भी कुछ देखा हो । जब आँखें खोली तो मुरलाई को स्थिर स्थिति पाया । माथे की रत्न जिन्दी किरणों की रिफ्ट के कारण चमक सी रही थी । आँखों में एक चिरन्तन आलोक कर रही थी । उसने मुरलाई को इतना सुन्दर, लावण्य पूर्ण और गौरव मय कभी नहीं देखा था ।उसको विश्वास हुआ उसने सचमुच कुछ पाया है"। [3]

मुरलाई अब निडर है क्योंकि उसने मोहन को पा लिया । मुरलाई मोहन से कहती है, घबराओ आ जाय या कोई और आ जाय । अब किस का डर सब कुछ पा लिया । मोहन को पा लिया । तुमको पा लिया [4] वह अब को नहीं छोड़ना चाहती थी । उसकी धारणा थी" यहाँ मन को बहला कर लो यहाँ मन्दिर है ।"[5]

यमुना के किनारे जब मुरलाई नाचने लगी तो कुंज में से मोहन उसे कुन्ज में ले आया। मोहन हाथ पकड़कर कुन्ज में ले आया मुरलाई के मन तक में । कम्पित स्वर में उसने कहा क्या छवि देखी आज । सचमुच कन्हैया मंदिरों को छोड़कर यहाँ चला आता है । एक बार कोई उसको उसकी ही सुना दे तो

---

1. टूटे कटि कृष्णदास लाल वर्मा पृ0 194
2. " पृ0 199
3. " पृ0 203
4. " पृ0 204
5. " पृ0 203

वह थोड़े थोड़े घुंघरू लगाता है । आप तो कुछ देखा । सब देखा ।[1]

मुरबाई सत्य को स्वीकार करती है । वह मोहन से कहती है "कुछ गये कि तुम पुरुष हो और मैं केवल एक नारी ? और कैसी नारी ? जिसको नाचने गाने की सुन्दर कला अंत में अपने को खेद डालने के लिये सिखलाई गई, जिसने अपने शरीर को बड़ी से बड़ी बोली बोलने वालों को देखा, जिसने हाथ में छुरी होते हुये भी नाजिशाही पुरुष से अपने को न बचा पाया।"[2] वह सोचती है कि यही कि काम और मन को छोड़कर आगे मु ग्रम और ग्रमता में न पड़ो ।"[3]

मुरबाई को अनेकों अवतारवाले है " अलो प्रभुराय के सामने किसी की अत्याचारी की नहीं चल सकती ।"कोई महल सजाता है कोई मंदिर को सजाता है, पर मन को सजाये बिना काम नहीं चल सकता ।" हाँ वह देखा को सबको देखा है अगर उसमें कोई माँगे तो ।[4]"सेवा अपने मन से और पसीने से तैयार करो । खून सीने से तैयार की हुई सेवा कभी ग्रुप की रक्षा न कर सकेगी। "[5] सब त्यागी है धन से उसे कोई मोह नहीं । वह सोने व सेवा को यमुना फेंक देती है , मुरबाई ने जड़ाऊ सोने के उस टुकड़े को पूरे धन के साथ गहरी धार में फेंक दिया । कुछ से वह टुकड़ा वहीं समाप्त।[6]

---

1. कुछ टूटे कड़ि वृन्दावन लाल वर्मा पृ0 222
2. " पृ0 219
3. " पृ0 235
4. " पृ0 236
5. " पृ0 237
6. " पृ0 238

सुरबाई बड़ी चतुर, संगीत कला में निपुण, नृत्यकला में दक्ष, रूप सौन्दर्य की प्राप्त वैश्या थी जिसे पहले धन की भी चाह थी। परन्तु बाद में वही सुरबाई स्थायी धन का स्थान करने वाली, कृष्ण के वचन से मदन और मोहन की प्रेमिका बन गई। मोहन के प्रथम प्रेम में प्रथम में सुख मान करने वाली और उसके रूप सौन्दर्य की उपासक बन गई। उसमें केवल प्रेम की वासना था। वह स्वदेश को छोड़कर हैरान नहीं होना चाहती थी चाहे धन ही क्यों न चली जाये। मोहन को अपने पातुर्य के कारण साहूकारों से भी क्या लेती है; वैश्या होते हुये भी उसका चरित्र बड़ा उज्ज्वल और सात्विक है। हुये कवि उपन्यास की वह प्रमुख पात्र है। वैश्या से वेश्यमोह चरित्र के रूप में हमारे सम्मुख आती है।

— —|— x —

रोनी

टूटे कटि मे दूसरा प्रमुख पात्र रोनी है । वह मोहन किसान की विधवा पत्नी है । वह एक साधारण स्त्री है । उसकी बातें तीखी होती थी। तथा स्वभाव बढ़कीला है । देखिये" रोनी का ब्याह हुये कुछ महीने ही हुये थे, परन्तु उसकी तीखी बातों और ।।।बढ़कीले स्वभाव की आदु व बरतों की बात बढ़ती थी ।।2।रोनी सहन ही करने वाली नहीं थी और पैसारे की वाली थी । रोनी मोहन से कहती है "और तुम कायर घर मे ही मुंछोरी बनाती है । बाहर जैसे हो जाते हो वैसे किसी के सामने पुहा 3। मोहन कहता है"अब न रहूंगा इस घर में मैं । जिस घर मे तुम सरीखी लक्ष्मी हो उस घर मुझ सरीखा कोई रह भी नहीं सकता ।" ।4। रोनी के गाली गलौच लड़ाई झगड़े के कारण मोहन घर छोड़कर चला जाता है और फिर कभी नहीं लौटता ।

रोनी बैल को प्यार करती है । घर गृहस्थी का कार्य करती है । खेत/ कपड़े पालती है । जैसे श्रम करने की प्रेरणा देती है वह पतुर भी है जब आनुनयी आता है तो बैल को बाहर कर देती है । बहाने बना देती है रोने लगती है । वह पश्चाताप करती है वह मेरी ही गलतियों के कारण घर छोड़कर चले गये थे और लड़ाई मे मारे गये । न मै ऐसा सलूक उनके साथ करती और न यह सब उत्पात खड़ा होता। हे भगवान मुझको क्षमा कर दो, मै बिल्कुल साधिनी, अहल्या की तरह जीवन बिताऊंगी , मुझको बचाओ"।5।

रोनी का रूप कर्कश है वह चाहती है कि मरदों से तो कुछ डरना चाहिये । वह कहती है" यों ही बातों बातों में हम लोग भी सुन

---

1. टूटे कटि वृन्दावन लाल वर्मा पृ0 10
2. " पृ0 14
3. " पृ0 18
4-5. " पृ0 18-19

लेती है तुम मरदों की बातों को । फिर भी उन लोगों से तो खटक लेना चाहिये था । कुछ तो भी होगा उनके पास । "[1]उसे कपड़ों और गहनों से प्रेम है । वह तीर्थों में अनेकिना नहीं जाना चाहती " ऐसे नहीं जाने की मैं । तीर्थों में जाने के लिये कपड़े चाहिये, कुछ गहना गुरिया । चौंडी बन हुंगी क्या ? ऐसे ही [2]रोमी तोता से कुट का माल लाने को भी कहती है । मोहन ने कहा हूँ मोहन बबा - यह भी कुछ न कराये तो थोड़ा है । मुझको घर से निकालकर तुमको मरवा डालने की ठानी होगी क्यों ।"[3] रोमी गाली बहुत बकती है । मुरवाई उसको पुष्टि करती है" हाँ गाली बहुत बकती है । गलियों की कॉति की ।" हाँ एक बारा, एक मारा, निपूता कोढ़ी- पिसती करना बेकार है, क्योंकि उसकी गालियों का खजाना अनगिनत है ।[4]रोमी की सुन्दर गंगाजल की तरह उज्ज्वल है । रोमी कांपते स्वर में कहती हूँ "मैं गंगाजल की तरह उजली हूँ और तोता भी । यहाँ तीर्थ यात्रा को आये हूँ ठीक बात।"[5] वह गाली न बकने के लिये सौगन्ध खाने को भी तैयार है परन्तु मोहन को उसका कोई भरोसा नहीं । वह कहता है"वह वृन्दावन और मथुरा के भी सारे मंदिरों को सिर पर उठाकर घर ले और सौगंध खा जाये तो भी मुझे भरोसा नहीं होने का ।[6]

रोमी का चरित्र यथार्थवादी है उसमें गाली देने का दोष है परन्तु पति परायणा है । वह गंगा कीतरह उज्ज्वल है । तोता के साथ रहकर भी

---

1. टूटे कटि वृन्दावन लाल वर्मा पृ0 134
2. " पृ0 135
3. " पृ0 211
4. " पृ0 220, 221
5. " पृ0209
6. " पृ0 221

उनमें कोई चारित्रिक दोष नहीं है । वह एक ग्रामीण किसान का जीवन अभावों में व्यतीत करती है । अभावग्रस्त और अकुलीनों के प्रति आकर्षित होने के कारण वह तोता को डाकू का गलत काम करके भी धन अर्जन करने के लिये प्रोत्साहित करती है तोतों का प्रयत्न करने की अभिलाषी है । विषम परिस्थितियों में भी कठिनाईयों का सामना करते हुये जीवन यापन करने की शिक्षा उसे मिलती है । हमें सदैव सच्चरित्र रहकर ही जीवन यापन करना चाहिये यह की शिक्षा उसके जीवन से मिलती है । अन्त में पुनः उसे अपने पति की प्राप्ति हो जाती है । वह ऊपर से गाली देने वाली परन्तु अन्तर्मन से स्निग्ध नारी है । विषम परिस्थितियों में भी लड़ते हुये जीवन यापन करने की शिक्षाउसके जीवन से मिलती है ।

मृगनयनी

मृगनयनी उपन्यास की मृगनयनी का आरम्भ का नाम निम्नी था । कुंवरी रानी मृगनयनी के साथ मानसिंह का विवाह 1462 के लगभग हुआ होगा । मान मन्दिर और कुंवरी महल के भवन की कल्पना को मृगनयनी से प्रेरणा मिली होगी । केलनाथ नायक (बैजू बावरा) मानसिंह मृगनयनी के गायक थे । कुंवरी टोड़ी मंगल कुंवरी इत्यादि राग स्त्री मृगनयनी के नाम पर बने हैं । मृगनयनी शौर्य और कला दोनों के लिये विख्यात थी ।

मृगनयनी गूजर कुल की थी । वह राई गाँव की दरिद्र किसान कन्या थी शारीरिक बल और परम सौन्दर्य के लिये ब्याह के पहले ही प्रसिद्ध हो गई थी । उसके विषय में परम्परा में यहाँ तक कहा गया है कि राजा मानसिंह राई गाँव के जंगल में शिकार खेलने गये तो देखा कि मृग नयनी ने जंगली भैंसे के सींग पकड़कर मोड़ दिये । वृन्दावन लाल वर्मा की एक साक्ष्य ने परम विश्वास के साथ बताया कि राजा मानसिंह अपने महल में बैठे हुये थे नीचे देखा जंगली भैंसों के सींग पकड़कर मृगनयनी मरोड़ रही है और उनको मोड़ रही है । ग्वालियर जिले के भीतर जंगली भैंसा बहुत था और राई गाँव तो ग्वालियर से पश्चिम दक्षिण में ।। मील है, मृगनयनी जंगली भैंसे को मोड़ने, मरोड़ने के लिये आ गई । गुजरों की एक दूसरी परम्परा है कि मृगनयनी ने अपने पुत्र को राज्य न दिलाकर विक्रमादित्य को राज्य दिलाया। वर्मा जी की यही मान्य मान्य है ।

निम्मी की आयु लगभग पन्द्रह सोलह वर्ष की थी । परन्तु निम्मी बलिष्ठ और पुष्टकाय थी लाली लुनी और छरेरी ।"[1]

निम्मी शिकार करने में बहुत होशियार थी । सुअर को मार गिराती थी । देखिये "निम्मी ने तीर कमान संभालकर आसन जमाई । साँस साधकर लक्ष्य बाँधा तीर एक तरं के साथ सुअर के एक बाजू को फोड़कर गर्दन के पार आधा निकल गया । सुअर हुड़ हुड़ करके वहीं चक्कर खाने लगा। अटल बाँध पड़ा। निम्मी के कमान की डोर पर दूसरा तीर साध लिया था । एक क्षण उपरान्त सुअर समाप्त हो गया।[2] वह मेहुआओं को ही नहीं निकल जाने देती और मोर को न मारती ।"[3] वह सुन्दर और दृढ़ शरीर की है जैसी ही तीर चलाने में बड़ी निपुण है । सुअर मारकर मेहुओं को एक ही तीर में मार गिराती है ।"[4] निम्मी की शक्ति पहली वाली जैसे मेहुओं चलाने वाले किसी पहलवान की हो ।"[5]

उसका उद्देश्य है कि कुछ देश सुनकर ही मरना चाहिये । वह कहती है" कुछ जीकर अच्छी तरह जीकर क्यों न मरें ? सबको मरना है परन्तु जीवन का कुछ देश सुनकर ही मरना चाहिए।"[6] निम्मी का नाम चारों दिशाओं में फैल गया है । वह चारों सुअर को अकेली पीठ पर लाद लेती है । " निम्मी का नाम चारों दिशाओं में फैल गया है कि बड़ी लक्ष्य वेधिन है ।"[7] यश और कीर्ति फैलेगी ।

---

1. सुनयनी पृ0 5 सुन्दरलाल लाल वर्मा
2. " पृ017 "
3. " पृ026 "
4. " पृ040 "
5. " पृ058 "
6. " पृ0 60
7. " पृ0 60

हमारी मिन्नी भारी से भारी सुअर को अकेली पीठ पर लाद लाती है।"[1] वह अक्सर शिकार नहीं मिलता तो जंगल में कंद मूल से पेट भरती है। कई अवसरों में पैबन्द नहीं लगा पाती तो जंगली पेड़ों के पत्तों से तन ढक लेती है, हुजूर ने एक बार उस काफिर शायर कालिदास की प्रेमिका का जैसा जिक्र सुना था वैसी ही।"[2] उसके गाँव का नाम रहई है। ग्वालियर से करीब 6 कोस दूर।

पुजारी राजा से कहता है" महाराज इस लड़की का नाम हुसनवती है। गाँव के लोग इसको मिन्नी कहते हैं। यही है हमारी वह कन्या जैसे एक एक तीर से बड़े बड़े नाहर जरने, भैंसे सींगों वाले सुअर मार गिराये हैं। ऐसा निशाना लगाती है कि आपके सामन्त भी घबरा जायें। नाती भी बहुत अच्छा है। हमारी मिन्नी। तब[3] गुणों से सम्पन्न है। राजा मुस्कराकर कहते हैं"आपकी जो धन्य है वह गाँव जहाँ सब गुणों से सम्पन्न हुसनवती जैसी स्त्री हो।"[4] सुन्दरी हुसनवती राजा मानसिंह की विशेष स्नेह भाजन हो गई।"[5] वह विवाह करने को तैयार है वह पढ़ना लिखना शिकारी करना व गाना बजाना सीखना चाहती है। वह कहती है " मैं पढ़ूँगी लिखूँगी और गाना- बजाना तो इतना अपनाऊँगी, इतना अपनाऊँगी कि जब कभी आप हुने तो ध्यान मग्न हो जाऊँ।"[6] हुसनवती संगीत सीखती है लिखना पढ़ना शिकारी और न जाने क्या तो क्यों ? राजा उसके

---

1. हुसनवती पृ0 63 वृन्दावनलाल वर्मा
2. " पृ0 165 "
3. " पृ0165 "
4. " पृ0186 "
5. " पृ0229 "
6. " पृ0286 "

बात अधिक नहीं बैठती उसे ।"[1] समय पड़ने पर वह लड़ना चाहती है। वह कहती है।"समय पड़ने पर मैं लड़ूंगी ।"[2] उसका कथन है कि क्षत्रियों को आग और चिता को छोड़कर तीर और तलवार के साथ प्यार करना चाहिये था । वह कहती है, पहले की क्षत्रियाँ ने आग और चिता को जितना प्यार किया उसके बराबर तीर और तलवार के साथ भी करना चाहिये था । आगे दीजिये मेरी को किले के निकट फिर देखिये मेरा और बाकी का काम।"[3] वह मानसिंह को प्रेरणा देती है कि उसे वही कार्य करना चाहिये जो क्षत्रियों के लिये उचित है ।वह कहती है"छोड़िये मुझको क्षत्रिय के लिये अब समय की उचित है उसी के करने में जुट जाइये। रनवास की रक्षा की चिन्ता को दूर कर दीजिये मैं उसकी रक्षा का प्रबन्ध करूंगी ।"[4] वह किसी पुरुष के सामने मुख नहीं करना चाहती । वह कहती है "सिवाय आपके और किसी पुरुष के सामने न मैं मुख करूंगी और न बाकी ।"[5] उसकी धारणा है कि " मैंने महाभारत में पढ़ा है कि क्षेत्र की रक्षा शस्त्र द्वारा हो जाने पर ही शास्त्र का चिंतन हो सकता है । मेरा यही प्रयोजन है और कुछ नहीं ।"[6] शुभ ने वह राय दुर्गावती के सुझाव प्रेरणा और सहकारिता से[7] बनाये जो गुजरी, मालगुजरी, बहुल गुजरी और मंगलगुजरी दुर्गावती ने अपने पुत्र रावसिंह और मानसिंह को जागीर का अधिकारी नहीं बनाया यह उसका अमिट स्थान था ।

---

1. दुर्गावती पृ0 320 वृन्दावन लाल वर्मा
2. " पृ0 321 "
3. " पृ0 323 "
4. " पृ0 383 "
5. " पृ0 389 "
6. " पृ0 439

हुमायूँ ने मानसिंह के हाथ में एक पत्र दिया । मानसिंह ने पढ़ा ।" उसमें लिखा था रायसिंह और मानसिंह गढ़ी या जागीर के अधिकारी नहीं होंगे ।"[1]

हुमायूँ वीरांगना नायिका और देशभक्त है । वह चाहती तो ग्वालियर का राज्य उसके पुत्रों को मिल सकता था । परन्तु उसने पूर्ण त्याग किया जिससे प्रतीत होता है कि उसे धन मान की कोई वांछा नहीं है यों उसने मानसिंह पर अधिकार होते हुये भी संपूर्ण राज्य छोड़ दिया । इस प्रकार उसका चरित्र उज्ज्वल और आदर्श है ।

सं. 1. हुमायूँ पृ0 448 वृन्दावन लाल वर्मा

लाडी

लाडी मुनमुनी या निम्मी की सहेली है । लाडी और मुनमुनी दोनों समवयस्क थी । उनकी आयु लगभग पन्द्रह सोलह वर्ष की थी । लाडी सुखी और छरहरी थी ।"[1] आने को नहीं बुढ़ा तो शिकार से मुकर जाया करती थी । वर्मा जी लिखते हैं" दोनों गाँव के गरीब घर की छोकरियाँ है आने को नहीं बुढ़ा तो शिकार से मुकर जाया कर उठी। कपड़े पहिनने को नहीं । घर मड़ैया पर सिर्फ फूस, जिसे बरसातें की मूसलाधार थोड़ी सी ही बच सकती है ।पैर में जूते नहीं ।"[2] अक्सर शिकार नहीं मिलता तो जंगल बेर बेंट से पेट भरती है । फटे कपड़ों में पैबन्द नहीं लगा पाती तो जंगली पेड़ों के पत्तों से तन ढक लेती है।"[3] उसमें अद्वितीय असाधारण सौन्दर्य और लावण्य था तथा वह भैंसे को बाँस के तीर से मार डालती थी ।"जरनी भैंसे का लाडी द्वारा बाँस के तीर से ही मारा जाना , दूर दूर तक पाड़े से ही समय में विख्यात हो गया । उधर मालवा की राजधानी माडू मेवाड़ की राजधानी चित्तौड़ गुजरात की राजधानी, अहमदाबाद बहुधा और भी अन्यत्र स्थानों पर। सा० ही प्रसिद्ध हुआ उन दोनों युवतियों का अप्रतिम अद्वितीय,असाधारण सौन्दर्य और लावण्य भी ।"[4] वह बाँधो के छलने की अपेक्षा करती पसन्द करती है । वह कहती है" रब मरती मेरे लिये भी । मुझे बाँधो का छलना नहीं चाहिये।"[5] लाडी भी बहुत वीर है । राजा ने पगड़ियों में से मोतियों की माला खोली और लाडी के गले में डाल दी तथा उसे कहा " तुम भी बहुत वीर हो ।" [6]

---

1. मुनमुनी पृ० 5 वृन्दावन लाल वर्मा
2. " पृ०63
3. " पृ०63
4. " पृ०69
5. " पृ०105-106

लाली को अपनी भुजाओं पर भरोसा है और वह नहीं चाहती कि कोई उसे चेरी कहे । उसने गाँव के निम्बाचार को सुनाते हुये कहा" कोई मुझको यदि किसी की चेरी कह जाये वह मेरी निज नजर ही क्यों न हो तो मैं नहीं सह सकूंगी और न यह सह सकूंगी कि तुमको राजा का दास या रोटियारा कहे । हम लोगों को भगवान ने भुजाओं में बल दिया है और काम करने की लगन।"[1] वह सुमनवती कहती है कि मैं सब तरह की विपत्ति झेलने को तैयार हूँ तो लाली भी कहती है मैं पीछे नहीं रहूंगी ।"[2] वह लाली है । राजा कहता है" इतना साहस लाली में ही हो सकता है ।"[3] वह किसी के सामने नृत्य नहीं कर सकती । सुमनवती कहती है सिवाय आपके और किसी पुरुष के सामने न मैं नृत्य करूंगी और न लाली ।"[4]

लाली के चरित्र में लगभग सभी सुमनवती की विशेषतायें है । वह भी वीर है स्वामी भक्त है और सुमनवती की हर कार्य में सहयोगिनी है । लाली भी अपनी, मेरी के विचार में सुमनवती की सहयोगिनी है । इस प्रकार उसका भी चरित्र एक आदर्श नारी के रूप में सामने आया है ।

---

1. सुमनवती पृ0 210 वृन्दावन लाल वर्मा
2. " पृ0 200 "
3. " पृ0 273 "
4. " पृ0 283 "

गौरी

गौरी बड़ी भोली है । अम्बिका जब पूछती है कि इसका क्या नाम है तो उसके पिता उत्तर देते हैं ।" इसका नाम गौरी है, पुत्री है । बड़ी भोली है"(1) गौरी अपने पशु चराने और वन संग्रह के लिये वन में आया जाया करती थी । उसका चेहरा भाला था । वह मैत्रिवारुण की टेकड़ी पर अवन से मिलती और जब वह न होता तो फूल रख आती थी ।(2) गौरी ने कुमन के लोटे में सांडी से नाकर दूध डाल दिया ।(3) जब कुमन ने पूछा कि आप बेट काटकर इतना दूध क्यों दे दिया तो वह कहती है "हमारे पास देने के लिये है ही क्या ? (4) कुमन कहता है कि "जो कुछ तुम्हारे पास है वह और कहीं नहीं है मैं उसके पाने के योग्य कब हो पाता हूँ । "(5) गौरी कुमन विद्रूप को प्रेम करने लगती है । देखिये अम्बिका कहती है" पर यहाँ किसी ने तुम्हारे प्रेम की बात नहीं छिपी है ।"

गौरी जब किसान के साथ वापिस गाँव जाती है और मकान की कगड़ान पाती है तो किसान कहता है कि लौट चलो यहाँ से तो अमना वह गाँव अच्छा तो गौरी कहती है कि नहीं मेरा लौटूंगी नहीं । तुम जाओ । कहीं न कहीं कोई नौकरी चाकरी मिल जायेगी।"(7) इससे प्रतीत होता है कि वह लालची है । वह भिखारिन बनकर कुमन बनकर नहीं जाना चाहती क्योंकि उसने उसका तिरस्कार किया था । गौरी तु बहुत सुन्दर है यहाँ तक कि किसानी भी अपने सौन्दर्य की तुलना गौरी के रूप और बहुत सुन्दर रूप रेखाओं के साथ करती है।(8)

---

1. कुमन विद्रूप विष्णुप्रभाकर लाल वर्मा पृ0 39
2. " पृ0 120
3. " पृ0 132
4. " पृ0 132
5. " पृ0 138
6. " पृ0 169
7. " पृ0 180
8. " पृ0 183

जब शिवानी सुमन चित्र के मारने का संकल्प रखती है तो वह सुमन को क्षमा देने की प्रार्थना करती है वह प्रार्थना में सुमधाय कह रही थी दुर्भाग्य मुझे ले लेना पर उन्हें क्षमा देना उनके पास तक न जाना ।[1] जब शिवानी के साथ सुमन के विवाह का प्रस्ताव होता है तो सुमन सोचता है कि और एक वर्षा । कोमलता स्नेह सौन्दर्य और निर्मलता की मूर्ति । जिसे जीवन संगिनी बनाने का शपथ पूर्वक चयन किया था । मेरे दुर्भाग्य ने उसे मुझसे छीन लिया । [2] वह कामना करती है कि इन हत्यारों के हाथ से वे बच जाये । [3] वह अपना प्रेम देकर भी सुमन को बचाना चाहती है। " मैं अपना प्राण देकर भी उन्हें कैसे क्षमा पाऊंगी "[4] वह कपिञ्जल से कहती है " मैं सुमन से प्रेम करती हूँ वह चाहे या न चाहे मैं उसकी रक्षा में अपने तन के कण कण करा दूंगी । मैं उस अवसर पर दूर नहीं रह सकती । दूंगी भी तो दौड़ पड़ूंगी और जलती आग में कूद पड़ूंगी ।"[5] मैं विचार करती है "वहाँ तत्काल क्यों नहीं । कदापि नहीं ।उसकी रक्षा करते करते मर्जूंगी फिर चाहे वे मेरे ही रोयें, मैं तो मृत्यु के साथ खेलती जाऊंगी । और मस्तिष्क में विचार न हुआ और उन्होंने कुछ ऐसी बातें करनी चाही तो कह दूंगी ,मेरे प्राणों के स्वामी तुम्हारे विरुद्ध यह और वह जाल बिछाया जा रहा है ।"[6] उसके भीतर साहस है और वह चाहती है कि भगवान उसे बचाये ।[7] मेरी प्राण रहते राजकुमार पर आँच नहीं आने देना। कपिञ्जल से वह कहती है" सुमन के भीतर मन्दिर के आस पास के कुछ बहुत से हाँथी और हम तुम घोड़े ले ही पर चलते चलो । जब तक देह में प्राण रहेंगे उन पर अर्थात राजकुमार पर आँच नहीं आने दूंगी ।[8]

वह कपड़ती थी जब एक माला उसने अपने हाथ की पहना दी और दूसरी गले में डाल ली। आँख में अपना प्रतिबिम्ब देखकर मुस्कराई मैं कितनी कपड़ती हूँ [9] वह बड़ी संकोचित है ।[10] वह नहीं चाहती कि अपने वचन से डिगे ।

---

1. सुमन चित्र वृन्दावन लाल वर्मा पृ0211
2. " पृ0 214
3. " पृ0 225
4. " पृ0 227
5. " पृ0 228
6. " पृ0 233
7. " पृ0 234
8. " पृ0 242
9. " पृ0 243
10. " पृ0 247

वह कर्तव्यनिष्ठ है । वह कर्तव्य पालन करने के लिये भगवान से शक्ति की याचना करती है । वह हाथ जोड़कर प्रार्थना करती है, हे परमात्मा तुम उजाले का मार्ग सुझाओ। मैं अपने बचन से न डिगूं । मुझे कर्तव्य पालन करने की शक्ति दो मुझे माता पिता का ऋण चुकाने योग्य बनाओ।"[1] गौरी अपने को न किसी से डरी गिरी समझती है और न किसी से डरती है। वह किशोरी से कहती है "आँखों के नाम से ही रोग भाग गया । आप मुझे डरी गिरी नहीं पायेंगी । मैं किसी से नहीं डरूंगी ।"[2] महत्वपूर्ण समाचार सुनने के लिये उसका मन बहुत व्यग्र है । [3] कर्पिंजल वेद से गौरी के सम्बन्ध में कहता है कि वह बहुत पढ़ी लिखी है, बहुत ऊँचे चरित्र की है और सुन्दर मन की है । उसी ने सुवन के सम्बन्ध में षड्यंत्र को अपने कानों से सुना और बतलाया देखिये कर्पिंजल रोककर कहता है" एक लड़की है वहाँ जो बहुत पढ़ी लिखी बहुत ऊँचे चरित्र की और बड़ी सुन्दर मन की है । मैंने उसे अपनी बहिन बना लिया है । उसका सारा पुण्य उसी को है । सबसे पहले उसी ने इस षड्यंत्र को अपने कानों सुना और मुझे बतलाया और उसी की कृपा का फल है जो मुझे यह पत्र हाथ में लगा ।" [4] वह बाप बेटे की रक्षा करने में अंग अंग कटवा देगी । बड़ी भोली और दुखिया है । कर्पिंजल कहता है" एक दिन कह रही थी कि बाप बेटे की रक्षा करने में अपना अंग अंग कटवा दूंगी । बड़ी भोली और दुखिया है ।"[5] वेद कहता है कि सुवन से उसका प्रेम था और उसी के साथ उसका विवाह होगा ।" सुवन का उससे बरसों का प्रेम था । अब उसी के साथ उसका विवाह होगा ।अब।"[6] वह सुवन के बचाने में अपने प्राण तक खोने को तत्पर है । वह कर्पिंजल से कहती है ," मेरा मैं चाहती हूँ कि बचाने में मेरे प्राण

---

1. सुवन विजय वृन्दावन लाल वर्मा पृ0 251
2. " पृ0 270
3. " पृ0 271
4. " पृ0 277
5. " पृ0 277
6. " पृ0 278

बने बाँधें तो सब कुछ बन गई "[1] सुमन की रक्षा करने के लिये देखिये वह किस प्रकार प्रयत्न करती और सफल होती है :" गौरी ने प्रचण्ड वेग के साथ हिमानी की छुरि वाली बाँह को अपनी बाँह में लपेट कर जोर का झटका दिया । हिमानी चक्कर खाकर गिर गई । गौरी ने इतने वेग के साथ उसे अपने घुटने की झुक दी कि हिमानी औंधी जा पड़ी । दोनों छुरियां दीपक के प्रकाश में चमक गईं - कोई इस दिशा में कोई उस दिशा में । गौरी की छुरी उस प्रपात में टूटकर गिर गई । वह हिमानी की पीठ पर चढ़ बैठी ।"[2]

रोमक गौरी को धन्यवाद देता है , बेटी धन्य है वह देश जहाँ तुम्हारी तरीकी नारियाँ जन्म लेती रही है । उसमें गौरी के सिर पर हाथ फेरा- तुम मेरे सुमन से भी अधिक प्यारी हो बेटी।[3] गौरी अपने पिता के धन्य को भी पुकारती है । उसके पिता ने जब वे अयोध्या से मेजियारण्य जाने को थे रोमक से जन्म लिया था । " झुककर उसने अपने उत्तरीय अन्चल में से तीन के कण निकाले और रोमक के पैरों के निकट रख दिये हाथ जोड़कर नतमस्तक खड़ी हो गई।"[4] रोमक देखता कि गौरी ने जो किया है वह अयोग्य है । फिर "अस्फुट पवित्रता के भीतरी लावण्य की सुकुमारता , बीती के विषाद की कथा और वर्तमान की निर्भरता ने गौरी को आँखों को और भी झुका दिया जैसे नीचे दूर पाताल में से कुछ खोज रही हो । "[5] गौरी और सुमन का विवाह होम हवन के मंत्रों के बीच सम्पन्न हो गया ।

---

1. सुमन विक्रम विश्वम्भर नाथ शर्मा पृष्ठ 281
2. " पृष्ठ 306
3. " पृष्ठ 307
4. " पृष्ठ 314
5. " पृष्ठ 315

हिमानी

हिमानी का पिता नीलमणि था जिसका नाम समुद्रों के पार भी प्रसिद्ध था। हिमानी तीखी तल्खी और नुकीली थी ।[1] सुन्दर रेखाओं वाली हिमानी बड़ी भयानक और कुछ ऐसे में लगती थी ।[2] हिमानी नौकरों के काम पर जैसी सतर्क दृष्टि रखती थी वैसी ही उनके जीवन पर थी।[3] अरे इतना मत खाओ बीमार पड़ जाओगे । कुकुरों के कारण रोग वैसे ही बहुत बढ़ रहे हैं। पेट को इतना भर लोगे तो रात को पेट की रखवाली कैसा कर सकोगे ? उधर तुम सोये इधर अनाज ढेर सारी चाल पर कर चौपट कर डालेगें । शाम को उजेले रहा करो । कल का दिन फिर मिलेगा "।[4] उसकी पत्नियों पर धार थी ।

वह कुमुद और रोमक से खफ़ा है ।" उन्हें काम करने का ढंग बहुत है । कुमुद और रोमक से वह है भी खफ़ा । उसे कुमुद ने कोई लगाये में पाट है न ?[5] वह कुमुद के साथ विवाह करने का अहंकार रखती है जिससे उसे मार सके ।" वह कुछ स्वभाव की है । जीवन भर का साथ । उसके कुमुद के किसी कोने में कुछ भी कोमलता होती तो ।"[6] कुमुद अपनी माता से कहता है , सोचता हूँ माता की कैसे मिलेगी हिमानी के साथ ।[7] हिमानी आयु में बड़ी होने के कारण लय लय सा कर उठी है ।" आखिर मैं तोचा हिमानी लड़की की नहीं है । बड़ी आयु की होने के कारण ही वह कुछ लय लयक सी कर उठी है "।[8] उसमें जो कुमुद के मारने का अहंकार रखा , मैत्र, दीर्घायु, नीम और न जाने कौन कौन उस अहंकार में एक हो गये हैं । मैत्र ने कहा कि नीलमणि के परिवार में रीति चली आई है कि वह वधु अपने बालमित्र की पूजा करते है फिर विवाह होता है । हिमानी ने कुमुद से कहा कि मैत्र सुंदर करिश्मा कि हिमानी का जीवन सुखी हो।

---

1. कुमुद विप्र वृन्दावन लाल वर्मा पृ0 31
2. " पृ0 124
3. " पृ0 140
4. " पृ0 141
5. " पृ0 203
6. " पृ0 214
7. " पृ0 220
8. " पृ0 253

मदन ने बहुत छोटे से कण में देख लिया कि हिमानी के बराबर कुरूपा कदाचित ही कोई स्त्री हो । हिमानी की छुरी बालेश्वर के मन्दिर में निकल पड़ी। वह छुरी को कुमन की पीठ के आर पार भेजना चाहती थी । परन्तु गौरी के छुरी चलते ही छिन आई थी । गौरी ने प्रचण्ड वेग के साथ हिमानी की छुरी वाली बाहों को अपनी बांह में लपेट कर जोर का झटका दिया । हिमानी तड़का खा गई । गौरी ने इतने वेग के साथ उसे अपने छुटने की हुल दी कि - हिमानी औंधी जा पड़ी । वह हिमानी की पीठ पर चढ़ बैठी । कुमन ने कहा कि हिमानी के हाथ पीछे से बांध लो । छुरी अब भी लिये है । इस प्रकार हिमानी के कुकर्मों का कच्चाकोड़ हो गया । वह दीर्घ बाहु के साथ विवाह करने की आकांक्षी थी । उसे स्नेह करती थी । कुमन से धोखे मारे जाने के कारण बदला लेना चाहती थी ।

वह कूट चरित्र के रूप में हमारे सम्मुख आती है परन्तु उसके कारण ही गौरी का चरित्र उभर के सामने आया है । वह क्रूर निर्दयी और बदले की भावना से ग्रस्त है । परन्तु वह कुमन विरचित उपन्यास में एक प्रमुख पात्र के रूप में हमारे सम्मुख आती है उसके पास सुन्दर आकृति है और सुन्दर वस्त्रों का साधन है उसका चरित्र समाज में एक कलंक के रूप में हमारे सम्मुख आता है।

[अहिल्याबाई]

अहिल्याबाई अपने किसी सेवक या सेविका की सहायता की अपेक्षा नहीं करती थी अपने को ही मो ही कुछ कष्ट हो जाये। वे थोड़े साँझे नौकर चाकर को अधिक रखने के पक्ष में नहीं थी । उन्होंने अपनी खानी जागीर की आय की बचत से बद्रीनाथ केदारनाथ और सुमेरु से लेकर दक्षिण में रामेश्वर तक, और पश्चिम में द्वारका सोमनाथ से लेकर पूर्व में गया और जगन्नाथपुरी तक सैकड़ों मंदिर,धर्मशालायें,घाट कुएँ इत्यादि बनवाये । अन्न सत्र खोले । एक बार की बात है कि आप अपने किसी पर किसी बोझ लाद करती है तो अहिल्याबाई कहती है,* मेरा यह तन कुछ नहीं है। जिसका है उसी के पास लौटती हूँ। जो कुछ लेती हूँ वह मेरे पास धन है। न जाने कौन कुछ कहेगी । भविष्य में ऐसी बात कभी मेरे सामने न कहना । अर्थात्रीयंत्र कहना हुँगी । यहाँ कभी न आने पाओगे । [1]

उन्होंने टीकमगढ़ की धर्मशाला की मरम्मत के लिए कुछ रुपया अर्पित किया । फिर वहाँ के मंदिर की शिखा बनी मोम ज्वारी नैवेद्यादि, पहुचने की विधि इत्यादि कार्य का प्रबन्ध किया गया। भारत के सारे बड़े तीर्थों,उपतीर्थों, स्थान-स्थान पर जो बावड़ी कुँए,कुआँ से घाट और मार्ग बनवाये थे उनके जीर्णोद्धार में धन खर्च और खिलवाये । खानी जागीर और ग्राम पंचायतों का लेखा जोखा और हिसाब किताब लिया गया । एक शिकायत कुछ सार्वजनिक थी,परिवारों का निर्णय लोक वाद था । दक्षिणी प्रान्त के मीमाम,वाजपेय,में कई बड़े गोलों ने बगावती की थी उत्तर पूर्व में भीलों ने उपद्रव किया था और विष्णु भिक्ष की बागवाट की बाजार पर गंगाराम महाराज नाम का एक डाकू डाकों और चोरियों की घटनाओं में हाथ बढ़ा था । [2] अहिल्याबाई की बहुत सहायता की उन्हें देवी का अवतार बताया गया था । परन्तु वह कुछ कमजोर की थी।* अहिल्याबाई आवश्यकता से अधिक नौकर चाकर नहीं रखती थी। अंधे-लूले बहिरे,गूंगे,

---

1-अहिल्याबाई पृष्ठ- 21 कृष्णदास राय वर्मा ।
2-अहिल्याबाई-पृष्ठ-23 कृष्णदास राय वर्मा ।

पुत्रों, और अन्यभिलाषियों के लिए उनकी ओर से अन्न-वस्त्र था। वहाँ से उन्हें भोजन और वस्त्र भी मिलते थे। केवल इतनी इतनी अधिक हो गयी थी कि पुजारियों का व्यवसाय उत्कर्ष पर पहुँच गया था। मंदिर और मूर्तियों के बनाने वाले राज कारीगर इत्यादि बाजारों और मोटे तथा सुन्दर वाले राज कारीगर महेश्वर में आकर बस गये थे। तभी से महेश्वर की ख्याति प्रसिद्धि वहाँ के मंदिरों और कारीगरों मजदूरों के कारण हुई। उन पर अहिल्याबाई का बहुत स्नेह था। वह कारीगर-मजदूरों के पास रहने के मकानों का अभाव हो गया, तब उन्होंने उनके लिए मकान बनवा दिये। किसी को भी घर की कमी नहीं रही।[1] वह वीर और न्यायप्रिय थी, उन्होंने तुकोजी राव को सेना के मुख्य में नियुक्त कर दिया। वे धर्म और दान में लगी रहती थी। अहिल्याबाई में लेखिकों के प्रति प्रेम है। वह स्वयं बालक तिम्मुजी को खिलाती है। और उसके पास बैठी रहती कि उसकी पीड़ा समाप्त हो जाती है तब उठती है। वे कवि में भी विश्वास करती है। कष्ट सहने और ज्वर होने पर भी वे अपना नित्य-नियम स्नान पूजा पाठ इत्यादि नहीं छोड़ती। वे तिम्मुजी के लिए में कहानी लेख डालती है।

एक दरबारी धर्म के साथ कहता है, "जिन महारानी ने हिन्दुस्तान के चारों कोनों तक धर्म की ध्वजा फहराई जिन महारानी की देवी ने उत्तर में बद्रीनाथ, केदारनाथ, हृषीकेश से लेकर मथुरा वृन्दावन काशी, प्रयाग और दीपु राज्य, रामेश्वर तक धर्म शास्त्रों और तीर्थस्थान से लेकर जगन्नाथ पुरी तक मंदिर घाट मठ और धर्मशालायें बनवायी और व्यापारों के लिए व्यापार रास्तायें जिन देवी ने तीर्थ क्षेत्रों के मंदिरों में संस्कृत पढ़वाने का प्रबन्ध किया।[2] एक कवि का कथन था कि देवी अहिल्याबाई, तीर्थ, साधु की भोरी पार्वती अहिल्या ने भी कह भरी है।[3] परन्तु अहिल्याबाई बहुत

1-अहिल्याबाई पृष्ठ- 59-60 वृन्दावन लाल वर्मा।
2-अहिल्याबाई पृष्ठ-112-113 वृन्दावन लाल वर्मा।
3-अहिल्याबाई पृष्ठ-115 वृन्दावन लाल वर्मा।

है कि "हमें कुछ नहीं चिंता आज भगवान की कृपा से कुछ दिन
शोक से हमारा परिवार सार्थक होता । वह योगी मर्यादा की ओर को
लौट की जायेगी ।[1] दूसरा विचार है कि " प्यार से जो काम बनता है
काम होने से नहीं हो सकता ।[2] वर्मा जी अहिल्याबाई के सम्बन्ध में लिख
ते हैं,"अहिल्याबाई किसी राधा-रानीजी सखी न थी जो पहले पाने में ही
मन चलकर कुमारता की गोद में खेली होंगे वह भी ग्राम पांडी के साधा-
रण कृषक माणिकों की बिन्दे की पुत्री बिन्दों कुछ देखकर ही कुमार मल्हार
राव ने अपने लाडले खण्डेराव का विवाह सम्बन्ध किया था। और जीवन पर
कठोर परिस्थितियों में पहले पहले कमी बड़ी हुई थी।[3] मालवा में मार्ग
के आरम्भ होने वाले खटक के और एक विवरण तक था उस पर लिखा था
कि,"प्रसन्न वर्ष सवार मल्हारराव की पुत्रवधू खण्डेराव की पत्नि अहिल्याबाई
ने यह मार्ग विक्रम सम्वत 1847 में बनवाया ।[4] से पिछरराओं के लौटने
उनके मार्ग के मार्ग बना जाने के लिए यह स्थान से भी सहायक नहीं थी। "
अहिल्याबाई जीती जीती का विवाह रहती थी, और विवाह के सम्बन्ध
में कुछ की उपाधि से भी बड़ी आशा करती थी।[5] अहिल्याबाई मल्हारराव
और खण्डेराव इत्यादि सीमें की सम्मत के लिए गयी । मोहसर लौटने पर वह
इन्दौर के अधिकारी ने और पैनी स्त्री के साथ जाने और गये पर
विवाहित नगर में उनका कुछ निकालने की आज्ञा दी गयी तो अहिल्याबाई
ने बिल्कुल मना कर दिया और दुःख छोड़ देने का आदेश दिया ।[6]

उनके ससुर कुमार मल्हारराव ने थोड़े अरसे में बहुत का अपना
पालीन वर्ष पहले उधार लिया था,साहूकार के पाँच ने वह अहिल्याबाई के
सामने आया मेरा लिया तो उन्होंने विवाह विवाह देकर दुःख दूर अपना
दूर लिया ।

1-अहिल्याबाई पृष्ठ-116 इन्दौर नाम वर्मा ।
2-अहिल्याबाई पृष्ठ-117 इन्दौर नाम वर्मा ।
3-अहिल्याबाई पृष्ठ-120 इन्दौर नाम वर्मा ।
4-अहिल्याबाई पृष्ठ-147 इन्दौर नाम वर्मा ।
5-अहिल्याबाई पृष्ठ-150 इन्दौर नाम वर्मा ।
6-अहिल्याबाई पृष्ठ-159 इन्दौर नाम वर्मा ।

एक राजपूत का पुत्र अन्य व्यक्ति था । राजपूत मर गया । रतोड़िया प्रबन्ध करने लगा । रतोड़िया निःसंतान मर गया। घर में और कुछ नहीं छोड़ी । परन्तु अकबर ने बेगारिन बाबाराम [illegible] सरकारी खाने में जमा जब्त कर लिया था । अतिरिक्ताधार्ड के सामने मामला पहुँचा । उन्होंने राज्य के कानून के अनुसार धोबाई जब्तकर आगे धार्ड से बाकी का पुत्र राजपूत के पुत्र को लौटा दिया ।

दो भाई थे । दोनों बहुत दिनों से अलग रहते थे । एक बाहर चला गया । बहुत बाद लौटा तो उसे चोरी के अपराध में पकड़ लिया गया पुराने माल का मूल्य आठ आना था । सरकारी पदाधिकारी ने पूरे धार्ड का एक हजार जमा जब्त कर लिया । अतिरिक्ताधार्ड ने सरकारी मामला खारिज जमा लौटा दिया ।

आदेश में लिखवाया धार्ड कि पुलिस ने बड़ा अन्याय किया है। मारवाड़ छान के लिए भेजा गया । उसे मालूम हुआ कि अपने ही दिमाग से एक पदाधिकारी ने पुलिस का काम किया है। मारवाड़ ने उस पर चार सौ रुपये जुर्माना किया । बहुतों खाने में दाखिल की । पदाधिकारी ने अतिरिक्ताधार्ड के सामने पुकार की उन्होंने उसे निर्दोष पाया । मारवाड़ की आज्ञा रद्द कर दी और खाने से जमा उसे लौटा दिया ।

पिछले राज्य में भी कलाम मारवाड़ तीर्थ पर सीधा और बाजार बनवाने के पक्षे आ गये । उनके पास कुछ दिनों और बाकी जब बाकी लिखा में थे ।

"उपदाधिकारी की ओर भावना से पिताजी की गोदी स्थिति ने उन्हें छाया कुछ किया था किसी भी पदार्थ की अति कामना अभीष्ट पदार्थ का भी मूल्यांकन नहीं करने देती उनके ध्यान में बन्दी आ गया । और वह [illegible] मारवाड़ में बड़े हुए लेख से लौट गयी । [1] अतिरिक्ताधार्ड पिताजी के साथ प्रबन्ध करती थी, जब राज्य में बहुतों लेख एक जगह की की जाने वाली थी तो आदि-आदि मर गयी । अतिरिक्ताधार्ड ने हुकम्मा निकाल कर दिया और उन्होंने आदेश दिया कि किसानों के साथ अच्छा सलूक किया जाये ।

1-अतिरिक्ताधार्ड पृष्ठ- 165 हुकुमचन्द लाल वर्मा ।

तथा और उच्चस्तरीय शिक्षा में भी काम करती रहती थी उनकी धारणा थी कि देश कार्य पालन के लिए है। अहिल्याबाई कुछ ने पिछी रही और पिछी रहेंगी । उन्होंने जीवन का क्रम अपने सन्तानों से तो पूजवा दी, कार्य पालन में जो कष्ट सहे उनके द्वारा कहीं अधिक पूजवा। [1]

मीराबाई प्रेमा की एक महान शिक्षा का भरमना लाकने आया पति के बीच का एक पुण्य सम्मिलन को प्रायश्चित हुआ । पिताजी अपना सारा धन अहिल्याबाई को देना चाहती थी, उन्होंने निर्णय किया कि," मैं यह नहीं यह लेती। कुछ वाक्यों को सरकार पुण्य भोगी ने लेती तो उनका दो तो का सम्मिलित का उपयोग कुछ स्थायी करो। धर्म कार्यों में लगाओं से बहुत अच्छा । पिताजी ने यह धन अनेक धर्म कार्यों में लगाया ।

कुछ की ने पांच लाख रुपये का पत्रक हुआ कि उत्तर में कुछ के माहन रुपये हुए हैं। बड़ी आवश्यकता है: यह बहुत बीमार थी । परन्तु पिता की काम करती रही कम पूजा में कुछ नहीं होती थी। [2] उन्होंने डेढ़ लाख रुपये निकाल दिया और प्रस्तुत किया कि अहिल्याबाई पर जो साढ़े तीन लाख रुपये उधार पड़े हैं, उन्हें बहुत सारे पूरे पांच लाख रुपये कर दो । यह निष्ठुरी से लगती है कि बेटी निकल-नैका से सम्मान, क्या कुछ रहेगी ।

इस प्रकार यह प्रशासक, दानी, वीर, अडिग, न्याय की पक्षधर और छोटे अधिकारों को सम्मान देने वाली महारानी थी। उनका चरित्र उज्ज्वल है।

1-अहिल्याबाई पृष्ठ- 105 कुन्दनलाल लाल वर्मा ।
2-अहिल्याबाई पृष्ठ-106 कुन्दनलाल लाल वर्मा ।।

-: सिन्धुरी :-

घोषणा करता है कि,"यहाँ आज सिन्धुरी है कैसी है तलवार। मल्हार के मन में बोध गया कि,कैसी और कहरी थी। कितनी तलवारी और कितनी अवाजिब,।[1] वह धर्म की वहिन है। माँ बाप उसके बुढ़ापे में ही वह गजाई में मारे गये थे। व्यास की नहीं पूजा है। वह सुन्दर तलवारी है। रणमाल में रखने योग्य है। जो दुर्गावती सिद्ध है। सिन्धुरी व्यास समाज रात के समय बुलन्दियों की बराबर भाँति य की भी मारे सिद्ध सिद्ध कर देती है। बोलती नहीं।[2] वह दुर्गा आराधना करती है वह नाचती है सिन्धा, सिन्धाकर हुए नाती है। सिद्ध यकायक गम्भीर होकर व्यास में हुए ली नहीं और कोई देह के सिद्ध अलेत हो गयी।[3] माँ ने अपना भी कि देखिमात उस पर रह नहीं वह वह व्यक्ति खड़ा और हुपचाप सहन के एक भाग से दूसरे भाग की ओर जा रहा था और दीवार के किनारे किनारे वह रह कर तलवार चाटा था। तो सिन्धुरी वीरता से उसे पकड़ लेती थी और लोहू-लुहान हो जाती थी। वह घोषण को पकड़ लेती है। सिन्धुरी वह घोड़े में से एक घोड़ी सिंहासन पर पहन लेती है और उसे पहिन कर कोठरी में हुए घुसपुसाती है नाती रही। नाची थी तो,उसे मन रहा था जैसे देवी ने आँखों की चकचौंध मारा ने कोई वह गर्व शक्ति थी तो उसका कारण बड़ा प्रबल है।[4]

अहिल्याबाई कहती है कि,सिन्धुरी के वीरता कार्य के साथ विवेक आ गिरा है। दुर्गावरा की दुआ भी उस पर हो गयी।[5] मल्हारराव का सिन्धुरी से कहना है कि तुम मेरे संग चलो, तुम के साथ साथ कोकिल भी विजेगी तो सिन्धुरी नहीं कर देती है। वह सिन्धुरी का साथ पाने के लिए मल्हार ने साथ बताया और उसकी कहानी सेना में आ गयी तो, सिन्धुरी सहन से उस पर लोटी, प्रकृत आँधी के तीव्र झोंके की तरह उस पर हमारी दुसरे साथ की टूटती का दुःख और के साथ मल्हार की आरोपर

1-अहिल्याबाई पृष्ठ- 40 वृन्दावन लाल वर्मा ।
2-अहिल्याबाई पृष्ठ- 51 वृन्दावन लाल वर्मा ।
3-अहिल्याबाई पृष्ठ- 73 वृन्दावन लाल वर्मा ।
4-अहिल्याबाई पृष्ठ- 99 वृन्दावन लाल वर्मा ।
5-अहिल्याबाई पृष्ठ-110 वृन्दावन लाल वर्मा ।
6-अहिल्याबाई पृष्ठ-173 वृन्दावन लाल वर्मा ।

[illegible] और पूरी शक्ति के साथ चिल्लाई । [1]

सिन्धुरी कहती है, "मैं [illegible] लाल की ओर से अनाथ हो गई माँ बाप ने बिलखा बहाया था आगे आगे न पड़ सकी। भोपत पुर के नाते का कोई [illegible] था। उसके साथ रहने लगी । [illegible] मेरे [illegible] उधर आया [illegible] उधर उतरा [illegible] मैं दुखी [illegible] । एक दिन [illegible] उठी तो आँखों की [illegible] के सामने अपनी [illegible] की [illegible] [illegible]। [illegible] कि [illegible] [illegible] [illegible] । [illegible] मेरे [illegible] [illegible] । [illegible] [illegible] [illegible] । [illegible] [illegible] [illegible] । [illegible]

गन्ना बेगम

गन्ना बेगम ग्वालियर गायने गाने वाली है । मगर उसने एक सरदार के साथ विवाह कर लेने के बाद पेशा छोड़ दिया ।[1] उसका हुस्न और स्वर सुन्दर है, इसलिये मुझे उसको पेशा और सुबचाव उसका रस कायम रखना । पेशा हुस्न पेशा स्वर तो सरकार न कभी पेशा और न कभी हुना। हुजूर पेशवा बहुत खुश होंगे ।"[2] शिवराव ने अपने दामाद को पुरस्कार देते समय कहा " पेशा तुझे मालवा का उससे भी बड़ी जागीर है बेगम[3] अब चिन्ताओं के लिये कोई मौका नहीं है । जब गन्ना ने मेरी ही आंखु आ गये तो बोली हुजूर का रहम मेरे ऊपर है और वे भी पेशा ही कहते है ।मुझे चिन्ताओं के लिये और चाहिये ही क्या ?"[4] जब से उसकी माँ मर गई तब से दिल टूट गया । [5] उसको हंसी मजा नहीं कहा कभी गई ।वह कहती है हंसी तो मेरी न जाने कहाँ चली गई । उमर कभी बुढ़ा ने हंसाया तो हंसुगी भी ।[6] गन्ना चमाहर सिंह से कहती है अपने मेरे लिये बड़ी बड़ी आशाएँ देती है । मैं कुछ कर न सकी । अपने को मार भी न सकी । आपके किसी काम मे न आ सकी ।"[7] गन्ना चमाहर सिंह से कहती है" मैं" अब एक पल आपसे जुदा नहीं रहना चाहती हूँ । मालूम नहीं किस तरह वियोग के दुख सहती रहती हूँ । कब तक होगा पेशा ?

---

1. मालव की शिंदिया पृ0 70 वृन्दावन लाल वर्मा
2. " पृ0 71 "
3. " पृ0 83
4. " पृ0 142 "
5. " पृ0 144 "
6. " पृ0 147 "
7. " पृ0 297

सुनीसिंह के नाम से सुन्दर वेशधारण कर वसन्तराव की कला है और उनके प्राण उसमें व्याप्त है । माधव को देख लगी - वह स्त्री है परम सुन्दरी युवती सामने मेरे प्राण व्याप्त है मेरी कला है जो कुछ शक्ति मैं अपना देखे छोड़ जाऊं ।[1] उसका स्वर गायन, वादन और नृत्य का एक साथ ही समन्वय है ।[2] वह माधव की चिन्ता या सेवा में बाकी चिन्तनी चिता देना चाहती है और उसकी मान मर्यादा के सम्बन्ध में सोचना चाहती है ।[3] सुनीसिंह बनकर रहना चाहती है । वह जब कुन्दों के कठोर हाथों से दबा दी गई तो अपने प्राण अपने प्राण विसर्जन करना चाहती है, चम्पा ने छाती से रक्त लौटी तो पुड़िया छुटकियों और अंगूठे से खोलकर सुरम्य पानी में डाल दी और उसका कटोरे का पूरा पानी पी गई ।पुड़िया की शीश पानी की तली में देखने को नहीं पाई थी ।[4] वह माधो से" मो प्यारो माधव कहाँ मोहि बताओ पियोरि "।[5] जब शिवाय बाण पढ़ता है तो उसमें करुणा उभरी और करुणा बाधा में लिखा था आज मन्दे चम्पा देवम अर्थात अफसोस चम्पा देवम के लिये रोइये । माधव भी उसकी समाधि पर फूल चढ़ाने आया माधव को सुरीले कण्ठ का स्मरण हो आता था और आंसू निकल पड़ते थे तथा वह उसी से -[6] मो प्यारो माधव कहाँ मोहि बताओ पियोरि । उसने कहा था कि "आत्मा के अनुशीलन में सहायक बनूंगी माधव को यही सत्य मालूम पड़ा मानो चम्पा सम्पूरा लिये सामने खड़ी हो घेरा कलम कुन्दों से सना हुआ आँखों से स्नेह का प्रवाह कण्ठ में अमृत की मधुर धारा सम्पूरे के स्वरों की हुंकार के साथ मो प्यारो माधव कहाँ।"[7]

चम्पा और है उसके स्वर में माधुर्य है । मेरा के लिये बलि है ।सुन्दर वेश धारण करने का सका है। वह साधु के हाथों में पड़ने से बेहतर अपने जीवन को स्वयमेव उत्सर्ग करना उत्तम समझती है ।वह अपार सुन्दरी है । उसका चरित्र शक्ति और पराक्रम की मूर्ति है।

---

1. माधव का सोपान पृ0 384- 390 कुन्दावन लाल वर्मा
2. " पृ0 402, 420, 421 " "
3. " पृ0 464, 530

राधा (लगन)

राधा को अच्छा नहीं लगता कि उसके माँ बाप उसे ससुराल न भेजकर अन्यत्र कहीं विवाह करें। वह सुभद्रा से कहती है" सुभद्रा यदि तुम्हारे माँ बाप तुमको तुम्हारी ससुराल न भेजकर अन्यत्र बिठाने के लिये बातचीत करें तो तुमको कैसा लगे।[2] राधा का हाथ कुन्दन से बढ़कर आभा के रखने वाला है।[2] राधा मुस्कराने की चेष्टा न करके भी मुस्कराती ही रहती थी। वह उसकी सहज सम्पत्ति थी। चेहरा गुलाब की तरह खिला हुआ था। कपोल लगाये हुये थी। देह-लता स्वयं आवरणों से आच्छादित न होने के कारण स्फुट अंगों में खिल रही थी। काले चिकने बालों की एक घुंघराली लट उन्नत भाल पर होकर कानों के पास लटक आई थी। नेत्रों में से निखरी प्रभा झर रही थी और सम्पूर्ण मुख मण्डल को उत्तेजना दे रही थी।"[3] वह होड़ झूठी की विरोधी है। वह ऐश्वर्य को छोड़कर और किसी को नहीं देखना चाहती। ऐश्वर्य रात को उसकी खिड़की के पास आता है और वह पूछता है कि वह उसके बीते की किसी दूसरे की होने वाली है तो वह उत्तर देती है अन्यथा।

उसकी आकृति का वर्णन लेखक ने इस प्रकार किया है"वही स्वर्ण गुलाब का सा मुख। बड़ी बड़ी प्रणयमयी आँखें। सहज मन्द मुस्कराहट उन्नत चिकना ललाट। काले काले बाल और लाल होठ जिनकी सम्पत्ति वह सहज स्वाभाविक मुस्कराहट थी। गोल ग्रीवा जिसकी वे प्रकाश में देखी थी और

---

1. लगन पृ0 26 वृन्दावन लाल वर्मा
2. " पृ0 26 " "
3. " पृ0 49 " "

योगा की हुंकार सहज स्वर मेह की रिम झिम में स्पष्ट सुन लिया था ।[1]।
जब बिल्ली की राह से केसरी सिंह राधा के पास आता है तो राधा उसे
कहती है कि वेश बाजे । कब तक इस तरह खड़े रहेंगे तो केसरीसिंह कहता है
बहुत न ? आपके घर कोई आय पड़ेगा तो न जाने आप पर क्या बीतेगी।
इस पर राधा कहती है " मुझे डरना क्या कब है ? मेरे देवता मेरे पास है।
मेरा कोई क्या कर सकता है ? बहुत होगा अभी आपके साथ जाने की कह
देने वाली बाकी ।[2]।

राधा बदनामी के मारे सोचने लगती है कि अब किसी को मुंह न
दिखा सकूंगी । माता देवता की गोदी में शरण लेती हूँ । परन्तु मन में
सोचती है कि " उनकी क्या सोचा ? मुझको न पाकर क्या वह अपने प्राण[3]
रखेंगे ? तब क्या करूं ? गांव वाले न जाने क्या कहेंगे ।

जब देवताली घोड़े से आता है पूंछता है कौन है तो राधा मन में "जय
गंगा मैया की कहती हुई नदी में कूद पड़ी। मगरों से डरने वाली राधा को
उस अंधेरी रात में उस प्रचंड वेगवा की भयंकर धारा ने न डरा पाया।विकट
तरंग के साथ साथ मारती हुई, तान बाणों में छिपे हुये वज्रपात की तरह
राधा देवताली की आंख से उछलती हुई लहरों के ओट हो गई ।"[4]।

राधा प्राणों को छोड़ लगाकर प्रवाह के साथ कूद करने लगी। वह
कोमल कुसुम सा और वह प्रचण्ड व्यालक धारा । कोकिला प्रवाह ,रामचं-
द्रारी हुलास ,बड़ बड़ आने वाली लहरों की परवाह नहीं

---

1. लगन पृ0 55 वृन्दावन लाल वर्मा
2. " पृ0 55 " "
3. " पृ0 73 " "
4. " पृ0 73 " "

दृष्टि केन्द्र किसी दूसरे उच्चतम और स्थान पर निहित चेतना के उत्कट आवेग और उद्भट उद्दाम महत्वाकांक्षा का उत्तर देने वाले केवल वे नन्हें हाथ थे ।[1] किसी दूसरे के घर जाकर ठहरने की अपेक्षा उसने अपने ही घर में प्रवेश करने का निश्चय किया।"[2] किन्तु लगता है कि वह आ गई है । केशरिंह लिखा लाया है । आया लाली है आज सुहाग में है कल आयायेगा । बलराम ने उसे अकेलापन बहुत दिया है । नदी तैर कर आई है । हमनी पलाली [3] है परन्तु बड़ी और है । केशरिंह ने स्वयं सुना बढ़कर है ।किंतु लोगा" वह तो हीरा से बढ़कर निम्न गई है।"[4] बाप ने स्वाभाविक संकोच मिटाने की चेष्टा की और बोला हम लोगों ने अपनी विद्य और मुक्ता से तुम दोनों की तलाश कर लिया होता पर वह के पुण्य प्रताप से हम सब बच गये ।"[5]

जब सरोज में दुबारा मिली तो उसने कुछ बातचीत के बाद राजा बोली "हम कुलीनों की है क्या वह - एक दिन वहाँ मैं तुम्हारे घरवालों पर न्योछावर हूँ क्या ऐसी बदली बात कभी किसी ने कहनी चाहिये ।"[6] जिसके साथ उसका सम्बन्ध तय हुआ वह उसी के साथ विवाह करना चाहती है । वह अपने पिता और श्वसुर के मानी मतीय और मन मुटाव से उत्पन्न विद्वेष को मिटाकर दोनों में सद्भाव उत्पन्न करती है ।

---

1. नवम पृ0 74 कुन्दनिका कपाड़िया
2. " पृ0 74 " "
3. " पृ0 76 " "
4. " पृ0 77 " "
5. " पृ0 78 " "
6. " पृ0 79 " "

-: बानगी :-

बानगी तैयार में कबीरदास को ही अपना पिता बानगी की बानगी का वर्णन इस प्रकार किया गया है,* बानगी की माट मोह के घाट से डोली हुई नो के नीचे मटक आईगी। और छुट्ट पीछे हट गया। दीपक के प्रकाश में थोड़ी-थोड़ी फूली हुई मुरझी आँखें और रब सबके लिए छुटती हुई माट के घाट से देखने के लिए तैयार हुई,बानगी हुदे में ते बाल-बाँध दीपक रखिए लिए बनी हो। [1] तीसरा नाम की जो बानगी पिता एक न एक अवहेलना देती है। वह घर गृहस्थी की मालकी नहीं है और मथुरा वृन्दावन नाम की तीर्थयात्रा करती है वह कबीरदास से कहती है * आपके साथ दौड़ती हूँ, जाऊ, चार-दो। दिन के लिए मथुरा वृन्दावन चले-चलें। मामा का कुछ ठीक नहीं है। कहाँ हो। कहाँपर रही और कौन गये हो। उनकी बन-सम्पत्ति के मामले में मत पड़े रहो। [2] वह समझता है कि साथ पूर्व पुत्रों के लिए अपना बलिदान करने के लिए ऐसे स्वीकार कारण किया । स्वयं अपनी विमुख कराया । और जिसके बीच खड़ा पायेगा। तब बानगी के नेत्र प्रतीक्षा हो उठे और वह कुछ के लाल बोली,* मुझे इन बातों से क्या मतलब है,तुम मेरे देवता हो। देवता के सामने कुछ की मेरी चाहत नहीं है। तुम केवल सुखी मत हो। [3] उसमें धनि भीगता है।

1-गीता पृष्ठ- 67 वृन्दावन लाल वर्मा ।
2-गीता पृष्ठ- 127,वृन्दावन लाल वर्मा।
3-गीता पृष्ठ-152 वृन्दावन लाल वर्मा ।

-: गैना :-

"गैना अठारह वीस वर्ष की जवान लड़की थी। उसके तब तीन बुलौवा-नाथ थे। वह भी बुलाव में ही भिखारी हो गयी थी। उसका बाप बुलाल का काम साथ किया करता था। उसके मरने पर बुलाल ने उसका पालन पोषण किया था। उसके मरने के बाद वह भिखारी हो गयी थी। अभी तक बुढ़ी अवस्था न बैठी थी। और न उसके मन में बुलाल का घर छोड़ने की इच्छा थी। उसके साथ आ कमरा का तो बरताव किया करता था।[1] गैना मुकद्दमा लड़ने के पक्ष में नहीं है। वह गैंदाराम से कहती है कि," और जो मुकद्दमा न लड़ें तो क्या हानि होगी।[2] गैना आज्ञाकारी और कर्तव्य परायण है। वह माँ के साथ कहती है," और क्या मैं बैठी रहूँगी पानी भरूँगी,बरतन मांजूँगी और कोई घाटी भी कर लूँगी। क्योंकि भाई बेटे के थोड़े पेट भरने के लिए भी तो कुछ करना पड़ेगा।[3] गैना मजदूरी करने और अपने घर के रखने के पक्ष में है। वह आराम करना चाहती। गैना मजदूरी करके जिन्दगी बिता सकती थी। वह ऐसा प्रायः किया भी करती थी।[4] गैना कहती है कि," अब तक हाथ पैर में बल है आराम न करेंगी। मजदूरी करेंगी, अपना घर रखेंगी। बेटे,कमाने का तो बेटे रखते हैं।"[5] गैना साहसी व बहादुर है वह अब व्यक्ति राम चरण की अमानती पर मन्दिर का दुन्दा लेने लगे से मारता है कि राम चरण के हाथ से लाठी छूट जाती है और वह मूर्छित कर गिर पड़ता है। तो गैना अपनी पिता से छोड़कर आती है। पिताजी दोनों आपस व्यक्ति आये थे। वह रोकते हुए कहती है,"रामचरण है,राम चरण है, महाराज हमारे पाँव पड़ती हूँ, उनको छोड़ दो। कुछ -कुछ कहा करो। गैना के प्रेम छोड़कर गिरने का वर्णन वर्मा जी ने इस प्रकार किया है,"गैना के दोनों हाथ दुन्दी पर थे, छाती रामचरण के सिर पर थी और सिर पर और मुख पर झुके हुए अन्धकार की ओर हो गया था,बालों की घन घटा मानों

1-गैना पृष्ठ-44 दुन्दाराम सहग वर्मा ।
2-गैना पृष्ठ-45 दुन्दाराम सहग वर्मा ।
3-गैना पृष्ठ-119 दुन्दाराम सहग वर्मा ।
4-गैना पृष्ठ-134 दुन्दाराम सहग वर्मा ।
5-गैना पृष्ठ-134 दुन्दाराम सहग वर्मा ।

पर कैद कर दी थी । आँखें मूँदी हुई थीं। बड़े-बड़े बालों पर मैल चिपके चिपट रही थी। चेहरा सूखा गया था। परन्तु इस समय उस अनाथ शिशुका वह सौन्दर्य परिमुख से छोड़ नहीं रहा था । परन्तु उस समय उस अनाथ शिशुका वह सौन्दर्य परिमुख से छोड़ नहीं गया । एकाएक शिविका के नीचे शिशु गया। [1] गंगा सहज धर्म के बचाने के लिए अपने प्राणों को विसर्जन करने के लिए उद्यत हो गयी और जो बचा लिया । रामचरण कहता है, " रामचरण के मेरी छाती पर चढ़ते ही गंगा आ गयी। उन्होंने अपने शरीर से मुझे ढक लिया । पिछली कोठी की ओर मुझे ले रहा था, गंगा के शरीर पर निरन्तर लाठियों का प्रहार हो रहा । यदि गंगा मेरे बचाने के लिए अपने प्राण विसर्जन करने को उद्यत न हो जाती तो आपको यहाँ पर और नाश मिलती । [2]

इस प्रकार गंगा के वीर,साहसी,त्यागमयी,धर्मज्ञ,और देशभक्ति है।

1-गोदान पृष्ठ- 155 पुस्तकालय साहित्य सदन ।
2-गोदान पृष्ठ- 162 पुस्तकालय साहित्य सदन ।

सरस्वती प्रेम की है।

प्रेम की भेंट उपन्यास की नायिका के रूप में सरस्वती का चरित्र चित्रित किया है। वीरेन्द्र नायक उपन्यास का नायक है। वीरेन्द्र युवा के कारण तालमेल आ जाता है और कम्मोद के घर रहने लगता है। वह अन्तःकरण से सरस्वती के सौन्दर्य के कारण उससे प्रेम करने लगता है और सरस्वती भी उसे प्रेम करने लगती है। वर्मा जी ने सरस्वती के शरीर सौन्दर्य का वर्णन इस प्रकार किया है।" सद्यः विकसित कली के रोम कण सदृश सुकुमार रेखायें उसके सौन्दर्य को प्रभात कालीन नभ की ओजस्विनी आभा दे रही थी। लड़की ने कुछ खुले हुये किये हुये नेत्रों से बिना किसी संकोच के वीरेन्द्र की ओर वीरेन्द्र की पोशाकी की ओर देखकर उसके हाथ में पानी का लोटा दे दिया एक ओर खड़ी होकर अपने पैरों के पंजों को देखने लगी।[1]

उसकी रूप संवार सलोनी थी पानी भरने कुए पर जाते समय का वर्णन देखिये" मुँह आधा खोले हुये थी, और अंचल खो थी। पैरों में तलवा का चिन्ह था। रूप स्वर उसकी सलोनी थी।"[2] वह कुशल, कुशाग्र बुद्धि और स्वाभिमानी थी। कम्मोद ने वीरेन्द्र को सरस्वती को पढ़ाने का काम बताया, वह खेती का मौका नहीं आया है सरस्वती को पढ़ाओ। उसने कुछ दिनों पाठशाला में पढ़ा है। वही कुशाग्र बुद्धि है। पहली अध्यापिका ने भी लगाकर पढ़ाती थी, वह चली गई। दूसरी आई वह कुशाग्र बुद्धि थी से बड़ी स्वाभिमानी है, आने छोड़ दिया सरस्वती वीरेन्द्र संग आने में वही प्रखर थी। सरस्वती आलोचना और सलोनी करने में भी चतुर थी।[3] सरस्वती का लगाव उन्नत था और उसका प्रेम आकर्ष

---

1. प्रेम की भेंट - वृन्दावन लाल वर्मा पृ05 आज्ञा संस्करण 1987
2. " " पृ07
3. " " पृ09
4. " " पृ011

प्रेम था । उसके बड़े बड़े केश उलझाये हुये थे उन पर निद्रा की छाप थी उज्ज्वल उन्नत ललाट पर बसीने की कुछ अनगिनी मोतियों की तरह जम रही थी बंद हुये होठों को जरा खोलकर सरस्वती ने धीरे पूछा क्या है "[1] उर्मिलाजी के शब्दों में सरस्वती के हृदय में वीरेन्द्र के प्रति प्रेम का उदय इस प्रकार हुआ कोने में पानी भरके लोटा रखे आया । भोजन कराने के लिये जल्दी जल्दी बार बार बार बुलाना था। आँख उठाकर देखना था और वह कम कोने में बातचीत करते हों तब कोने से चिपक कर चुपचाप सुनना । बोलती करते करते इधर उधर दृष्टि फेंकना ।[2] जब सरस्वती वीरेन्द्र के पास पुस्तक रखने पहुची तो वीरेन्द्र मन ही मन में सोचने लगा " सरस्वती का कण्ठ कहा मधुर है जैसे नदी कुलवती ग्राम पर बैठकर नाद करने वाली कोकिल हो । कैसा स्वर्ण को लजाने वाला सुन्दर मुख है । जब हंसती होगी अपने आस पास खिलता सोफिलेर देती होगी । परन्तु मुझको क्या ज्ञान था एक पामर कृषक है । देख लिया । चले गये ।"[3] सरस्वती की बोली उज्ज्वल कुंति मधुर है ।[4] सरस्वती के शरीर का सौन्दर्य देखिये " उन्नतललाट, स्वर्ण लता कृष्ण केश, प्रकृति को स्वर्ण करने वाली कपोलिका किरणों की आभा से शोभा लगाने वाली लोचन प्रभा, लगे हुये सोने को भी लजाने वाले गोरे कपोल, रक्त कमल के रंग जैसे होंठ, ओष्ठ पल्लवों के किनारों पर सहज स्वाभाविक सरल मुक्त मुस्कराहट । सुडौल कण्ठ वीरेन्द्र ने एक क्षण एक क्षण में देख लिया , ऐसा जीवन में पहले कभी न देखा। जैसे मन्दिर आंगन की अधिष्ठात्री हो । मानो अर्द्ध विकसित कुसुम की प्रभात सदृश सुगन्ध हो । जैसे प्रभात कालीन चन्द्र का चित्र प्रकाश हो ।

---

1. प्रेम की भेंट - वृन्दावन लाल वर्मा पृ0 13
2. " " पृ0 29
3. " " पृ0 51
4. " " पृ0 53

जैसे स्वर्गीय संगीत के मनोमुग्धकारी स्वरों ने मीठे आकाश में कुछ अभिनव वृद्धि कर दी हो । जैसे अनन्त प्रकाश पुञ्ज से अखण्ड धारा बह निकली हो ।"[1]

वह नहीं जानती कि वीरेन्द्र रोज सवेरे ही पानी भरे या दौड़ों की तरह काम सुधारा । वीरेन्द्र की ओर देखकर और फिर दरवाजे की ओर टकटकी बाँधकर उसने कहा " यह सब क्यों किया करते हो ?[2] वह वीरेन्द्र की पुस्तक क्या देती है । वीरेन्द्र ने कहना की "तुमने मेरी पुस्तकें क्यों सवाईं सरस्वती देन दी । जैसे दो प्रकार पंक्तियों के बीचों बीच मुक्त माला बन गई हो [3] वीरेन्द्र ने एक साड़ी सरस्वती को भेंट की और उसके अन्त में कोने पर खोदा किये हुये स्वरूपों में लिखा था "प्रेम की भेंट"सरस्वती को पहले थोड़े की थोड़ा कोमल पैरों में हुई फिर ज्वर हो गया । वीरेन्द्र ने ये हुए में कुछ चीजों ने की और एक ही दिन में समाप्त कर दी । गर्मी लगने के कारण उसे भी बहुत तेज ज्वर हो गया । परन्तु उपचारों की विधि भरी कीरकाने से उसका स्वास्थ्य बिगड़ गया और वह गम्भीर रूप से बीमार पड़ गया । सरस्वती बोलती कम थी । हृदय की बात को भीतर ही छिपाये रहती ।वह वीरेन्द्र से प्रेम करती थी। वीरेन्द्र बेहोशी की हालत में बड़बड़ाता रहा तुम बोलती कम हो । क्यों? हृदय की बात क्यों भीतर छिपाये रहती हो? मेरे सिर पर हाथ फेर कर क्यों नहीं कहती हो कि प्रियतम मैं तुमसे प्रेम करती हूँ तुम्हारी हूँ और सदा रहूँगी। [4] वीरेन्द्र द्वारा दी गई साड़ी को वह कमोद पंक्तियाँ उड़ाने की कमजोर देता है तो सरस्वती कहती हैरी भी हो कर डालो वह अपने के मेरे के [5] सरस्वती के कोमल हाथ और साड़ी मशीन कमोद में

---

1. प्रेम की भेंट - गुन्द्रावन लाल वर्मा पृ0 54-55
2. " " पृ0 58
3. " " पृ0 62
4. " " पृ0 94
5. " " पृ0 97

टुकड़े टुकड़े करके सरस्वती के सिरहाने से खिसका दी । केवल एक टुकड़ा सरस्वती के हाथ की मुट्ठी में रह गया। जब हीरक के प्राण थोड़े उड़ने की बाते थे कि सरस्वती की कामना होती है कि उसे एक बार देख ले । वह उन्धियारी से कहती है, जरा देख तो लेना एक बार । फिर ले आना। मैं कहती हूँ बीच सम्भाल लोगी । जब अम्मोद सरस्वती से साड़ी छीनकर फाड़ देता है और एक टुकड़ा उसके हाथ में शेष रह गया तो कहती है । साड़ी छीन ली खिसके, किसकी हिम्मत है ? मेरी चीज मेरे पास है । देखा ।"[1] वह के क्या देने पर फिर पूछती है वह आ गये ?उन्धियारी जब सरस्वती से क्या पाने के लिये कहती है तो सरस्वती बोली देखो यह वह साड़ी उन्होंने दी थी । कहाँ लिखा है बाबती की ? और मुट्ठी खोलकर दोनों हाथों से साड़ी का एक छोटा सा क्या हुआ टुकड़ा केलाया वह ने पहाड़ों को छोड़ा लिये हुये दो शब्द थे -"प्रेम की भेंट "

जब हीरक अन्य भूमि के लिये जा रहा था तो उसने देखे सूर्य की मृदुल किरणें धीरे से आ रही है । सरस्वती बहुत्रे पर बैठी मुस्करा रही है मुट्ठी के ऊपर का ललाट मुस्कानों से चकित है । आँखों से अमृत ज्योत्सना झर रही है । कुन्तल का सवारने वाले कपोलों पर सूर्य की कोमल रश्मियों की आभा खिल रही है, और खिलखिलाई पड़ रही है प्रवालों की सी लालिमा रखने वाले होठों के बीच में उस मुस्कराहट के कारण मोतियों की लड़ी ।" वह कहता है मेरी सरस्वती कहाँ है ? उसकी गोद में सिर रखी सी अटका हो जाऊँगा । हीरक ने देखा की विकसित आँखियों का मुकुट बाँधे और गले में फूलों का हार पहने

1. प्रेम की भेंट वृन्दावन लाल वर्मा पृष्ठ 103

सरस्वती पास ही बैठी है और उसके सिर को आश्रय देने के लिये उसकी जंघा प्रस्तुत है। वीरेन्द्र ने कहा तुम्हारा कोड़ा न छूट जाय। सरस्वती ने कहा वह तो कभी का अच्छा हो गया अब तो केवल उसका चिन्ह है। वीरेन्द्र ने अपना सिर उसकी जंघा पर रख लिया और मुग्ध नेत्रों से उसकी ओर देखने लगा। सरस्वती उसके मस्तक पर हाथ फेरने लगी एक क्षण पश्चात सरस्वती उसके अपने गले का हार उतारकर वीरेन्द्र के गले में डाल दिया। वीरेन्द्र सब कष्ट दूर हो गया [1] सरस्वती ने साड़ी के उस टुकड़े को हाथ में लिये हुये पूछा - आ गये वह ?

इस प्रकार सरस्वती आदर्श प्रेम की प्रतिमा है और अन्यत्रतम के प्रेम सबको उत्सर्ग कर देती है। वह वास्तव में छोटे साड़ी के टुकड़े के साथ ही अपने को उस प्रेम की भेंट कर देती है जो इस संसार में अनुकरणीय है। वह प्रेम की देवी, प्रेम की मूर्ति है।

---

1. प्रेम की भेंट गुन्डाराम लाल वर्मा पृ० 106

सरस्वती

प्रेम की भेंट उपन्यास में सरस्वती का चरित्र बड़ा सुन्दर बन पड़ा। वह प्रेम के लिये अपने जीवन का उत्सर्ग कर देती है। सरस्वती कुशाग्र बुद्धि है और स्वाभिमानिनी है। उदियारी सरस्वती के सम्बन्ध में कहती है अकेले में पानी भरके लौटा रख आना। भोजन कराने के लिये बन्दी बन्दी बार बार बुलाना। आँख ब्याकर देखना। उनका औरत्व जब अकेले में बातचीत करते हो तब कोने से चिपक कर चुपचाप सुनना। बोलती करते करते इधर उधर दृष्टि फेंकना। [1] वीरेन्द्र सोचता है "सरस्वती का कण्ठ बड़ामधुर है। जैसे नदी कूलवाली आम पर बैठकर नाद करने वाली कोकिल हो। जैसा स्वर्ण को लजाने वाला रूप है। जब संतती सोचीत अपने आस पास शिक्षता की चिलेर देती होगी। परन्तु मुझको क्यों क्या। उधान का एक प्रसून कुम्हले[2] उसकी भोली मूर्ति मधुर है। वर्मा जी ने सरस्वती का वर्णन इस प्रकार किया है" उच्च ललाट स्वर्ण लहरा कृष्ण केश कुटिल की स्वर्ण करने वाली घरी-घियाँ किसीकी आशा से होठ लजाने वाली लोचन प्रभा, तपे हुये सोने को भी लजाने वाले गोरे कपोल, प्रभात के रंग जैसे होठ ओष्ठ पल्लवों के किनारों पर तरुण, स्वाभाविक सुरम, सुकुल मुस्कराहट सुडोल कण्ठ। जैसे मन्दाक्ष - लावण्य की अभिलाषी हो। मानो अर्द्ध विकसित कुसुम की आभा सुगन्धि हो। जैसे प्रभातकालीन नभ का चिर प्रकाश हो। जैसे स्वर्गीय संगीत के मनोमुग्ध कारी स्वरों ने नील आकाश में कुछ वन्दिका खड़ी कर दी हो। जैसे अनन्त प्रकाश पुन्ज से अखण्ड धारा बह निकली हो।[3] वह वीरेन्द्र के कक्ष में बाहरी है। आज आना ऐसा है जैसे दो प्रेम पंक्तियों के बीचों बीच मुक्ता माला लटक रही हो वह वीरेन्द्र के कक्ष में बैठी है। कम्पोट बन पतली साड़ी को टुकड़े टुकड़े करके सरस्वती के सिरहाने से निकाल लेती है। तो एक टुकड़ा सरस्वती के

1. प्रेम का भेंट पृ० 29 वृन्दावन लाल वर्मा
2. " पृ० 31
3. " पृ० 55 " "

हाथ में मुट्ठी में रह जाता है जब उजियारी सरस्वती से क्या बोले के लिये कहती है तो सरस्वती उससे कहती है कि "देखो यह साड़ी उन्होंने दी थी । जाओ जा लिखा है जाकर दो । सरस्वती ने मुट्ठी खोलकर दोनों हाथों से साड़ी का एक छोटा सा फटा हुआ टुकड़ा निकाला । वैद्य ने पढ़ा । उसमें लिखा हुआ था "राधा ने-प्रेम की भेंट"।1। वह साड़ी के उस टुकड़े को हाथ में लिये हुये पूंछती है" आगे क्या ।"

इस प्रकार इस उपन्यास में सरस्वती का कृष्ण धीरज के प्रति प्रेम से ओत प्रोत है ।उसकी भोली अवस्था मधुर है ।

---

1. प्रेम की भेंट पृष्ठ नंबर- 105 वृन्दावन लाल वर्मा

उजियारी

उजियारी के सम्बन्ध में वीरेन्द्र ने मन में कहा " यह स्त्री कितनी महान व्यापक है, जानियों जाने सौन्दर्य में गम्भीरता छिपा गई है । लावण्य से उन्मादन है, और इस दुर्बल के कारण आकर्षण कुछ नहीं है।" [1] सरस्वती उजियारी के सम्बन्ध में कहती है" यही कि बुलाने पर जवाब देना, काम की कहने पर अनुमती कर लेना, एक बाने पर भी कुछ पूर्वक बीच छोड़ने चले जाना, फिर चाहे वे खेत में गड़े चाहे न गड़े ।"[2] उजियारी बड़ी नटखट औरत है । वह वास्तव में सुन्दर है ।[3] प्रेम की भेंट में सरस्वती के अतिरिक्त उजियारी दूसरी प्रमुख पात्र है ।

---

1. प्रेम की भेंट पृष्ठ सं0 16 वृन्दावन लाल वर्मा
2. " पृष्ठ सं0 30 वृन्दावन लाल वर्मा
3. " पृष्ठ सं0 41 वृन्दावन लाल वर्मा

"रत्ना"

वर्मा की रत्ना के सम्बन्ध में लिखते हैं।," रत्ना आई। पढ़ी-लिखी थी। भाई विलायती था और वहाँ का पारंगत था, इस घर की रत्ना ने अपना घरानाना न छोड़ा था उसका नाम भी अनुरूप था । कुछ लजती थी, परन्तु तुरंत । आँखें बड़ी बड़ी चेहरा गोल, नाक तीखी, और कुछ छोटी ।"[1] रत्ना का भाई कहता है, मेरी बहिन रत्ना कुमारी है। हम लोग उसको रत्ना कहकर बुलाया करते हैं। हिन्दी पढ़ी है। थोड़ी अंग्रेजी भी जानती है। [2] रत्ना थोड़ा-बहुत बाधा भी डाला करती है। [3] रत्ना युवती है, और अपने भाई के विवाह की कामना करती है। वह कहती है,"यही बेताबी यही हाय चाहती हूँ। अब मत करो यह घर मायका पिता ने हरा-भरा छोड़ा था । उसे सूना मत रखो ।"[4] उस मुकदमा कहता है कि बाबू जी तुम्हारे या मेरे नाम से जमींदारी खरीदना चाहते हैं तो रत्ना कहती है," मेरे नाम से । मैं जमींदारी क्या करूँ । ... आप उधर रहे, मुझे जमींदारी का क्या करना है । " वह अपने पैसे और बाप्पदाद के कामों को नहीं जानती। परन्तु उस लड़की के लिए कोई मकान हड़ लेने के पक्ष में है । [6] वह अपने गौरव की रक्षा की पक्षपाती है। वह कहती है," हमें केवल अपने गौरव की रक्षा का अधिकार है। यही हमारा धर्म है । यही हमारा सत्य है। [7] लेखिका उसे देवी मानता है। वह कहता है," रत्ना तो देवी है। हम लोग मनुष्य हैं। देवी का अपमान मुझसे न देखा जायेगा । मैं तिलमिला जाता हूँ। [8] इस प्रकार हम देखते हैं कि रत्ना देवी प्रकृति की अच्छी स्त्री है ।

1-कुमकुमी पृष्ठ पृष्ठ-2 वृन्दावन लाल वर्मा ।
2-कुमकुमी पृष्ठ पृष्ठ-5 वृन्दावन लाल वर्मा ।
3-कुमकुमी पृष्ठ पृष्ठ-9 वृन्दावन लाल वर्मा ।
4-कुमकुमी पृष्ठ पृष्ठ-42 वृन्दावन लाल वर्मा ।
5-कुमकुमी पृष्ठ पृष्ठ-103, वृन्दावन लाल वर्मा ।
6-कुमकुमी पृष्ठ पृष्ठ-142 वृन्दावनलाल वर्मा ।
7-कुमकुमी पृष्ठ पृष्ठ-192 वृन्दावन लाल वर्मा ।
8-कुमकुमी पृष्ठ पृष्ठ-195 वृन्दावन लाल वर्मा ।

" पुन्ना "

कुन्ना कहता है कि ," मेरी घो वाली पुन्ना है लगानी हो गयी है। कहीं उसके विवाह का ठीक नहीं पड़ता। उसकी माँ इसी चिंता में बीमार हो गयी ।"[2] पुन्ना के वदन और नेत्रों के सम्बन्ध में वर्मा जी वर्णन करते है, "पुन्ना का प्रसन्न वदन, हेमवर्ण और अंग विशेषतः लचीले नेत्र विविध भाँति के आकर्षक उल्लेख और मोहक रूप धारण कर उसके आँखों के सामने आने लगे और उसकी अनिमिष अनिमिषित ध्यान को बढ़ाने लगे।"[3] पुन्ना का आगे वह देखती "प्रकाश और छाया की मादक रेखायें कम्पित लहरों की किरणों में पुन्ना के भीगे हुए को अंतरंगी परिकर्म प्रदान कर रही थी । आज अचानक पुन्ना खड़ी हो गयी । उस निर्जन अंधकार मय गलियारे में भीतर की आँखों से आलस्य भाव सा टूटने लगी ।"[4] लाल सिंह उस घर देवी जी की पुजारी मानते है।" पुन्ना भीतर चली गयी। लाल सिंह ने मिट्टी के लेप के दीपक के घड़े को डालते हुए मन में कहा-" पेहरा कैसा लगता रहा था। उसे कैसी भयानक की तरह खा रही थी । और कैसी विचित्र चाल ढाल थी । अवश्य देवी जी की पुजारी हो रही थी ।"[5] अचित जो देवी मानता है वह कहता है,"तुम्हारी सुन्दर देवी किस भगवान के पास हो, उसे अभी कष्ट हो नहीं सकता,परन्तु ऐसा न हो कि मेरी पतंगाओं,[6] उसकी प्रतिष्ठा की मारी है ।

1-कुन्ना वही, पृष्ठ- 130 वृन्दावन लाल वर्मा ।
2-कुन्ना वही, पृष्ठ- 135 वृन्दावन लाल वर्मा ।
3-कुन्ना वही, पृष्ठ- 162 वृन्दावन लाल वर्मा ।
4-कुन्ना वही, पृष्ठ- 164 वृन्दावन लाल वर्मा ।
5-कुन्ना वही, पृष्ठ-201 वृन्दावन लाल वर्मा ।

लीला

मैं लीला से बहुत कम काम लेता हूँ उसके पिता से भी बहुत कम काम लेता हूँ फिर भी वैसे अधिक खिलाता है ।[1] लीला के सम्बन्ध में व उसके शारीरिक गठन के सम्बन्ध में वर्मा जी लिखते हैं, लड़की 16, 17 साल की है । घर का काम सहज ही सम्भाल लेगी। सुन्दर है और अच्छे कुल की है । बात दरिद्र है तो हम लोग भी कौन बड़े सजधजी है।उसकी लम्बी घनेरी डेरी आँख के नीचे का खिंचा और प्रकाशमान आँखें हमारे घर में और हमारे बेटे के हृदय में उजियाला कर देगी। उसकी काली पुतलियाँ वात्सल्य में डूब सन्देशों से भरी हुई है । उसका शरीर कैसा छरेरा है । जब बेटे अच्छी तरह देखेंगे प्रसन्न हो जायेंगे ।"[2] सहसा सोचने लगा"यदि मेरे बेटे के साथ इसका विवाह न हो पाया तो इसकी लड़की का क्या होगा? इसकी कितनी भोली बातें है । कितनी हँसमुख और सरल है। कितनी लाजवती है यदि बेटे के साथ उसका सम्बन्ध न हुआ तो मुझे तो लगता है न हो यह फूल न मालूम किन काँटों में फेंक दिया जायेगा।"[3] मैं हीरा से कहता हूँ सभी हीरा -सी लड़की को यों ही और देखे हो[4] वह काम के सभी स्थानों को एक सा मानती है और कहती है"तिलोंगे लिये तो मनसुख ने सभी स्थान एक से बनाये है।"[5] वह साथ मजदूरों की पक्षपाती है । वह हरनाथ से कहती है क्या यहाँ मजदूरों में कोई ऐसा नहीं जिसके आदमी हो और वैसे की ओर न देखकर अपनी पत की ओर देखे।

---

1. कभी न कभी पृ0 65 वृन्दावन लाल वर्मा
2. " पृ0 68 " "
3. " पृ0 73 " "
4. " पृ. 77 " "
5. " पृ0 78 " "

वह मेट के द्वारा पैसे काटने और लूट करने के पक्ष में नहीं है कहती है-[1] "मजदूरों के पैसे काट लेता है उनको तंग करता है । हमारे तुम्हारे पैसे न काटे तो क्या हुआ और सबों को कुछ न कुछ हैरान किया ही करता है । "[2] लीला बहुत कुलीन है । देवदु महमन से कहता है, लीला बहुत कुलीन है । उसकी कुलीनता बोली वाणी कुलराहट बहुत पाक आती होगी।"[3] जब मेट लीला से अपने साथ अकेले चलने को कहता है तो वह मना करती है और लोक अपवाद का ख्याल रखती है वह कहती है आपके डेरे पर अकेले क्या करूंगी ? आपके डेरे पर इस समय अकेला दिखकर कोई कुछ कहने लगेगा तो क्या करेंगे ? "[4]

लीला सशंकित है जब मेट जब लीला को अपने कन्धे से चिपटा लेता है तो वह भयभीत स्वर में विरोध करती है और कहती है"मुझे बहुत डर लग रहा है । ये लोग देखें हैं देख लेंगे तो मार ही डालेंगे।"[5] वह मेट से दूर चलने को कहती है और बातचीत करने के लिये मना करती है । जब मेट कहता है कि हम दोनों एक दूसरे को थोड़ी देर के लिये सुखी बनाये तो लीला हिम्मत के साथ सांस खींचकर कहती है" मैं कुंवारी हूं और मेरा विवाह होने वाला है आप बाबो है।"[6] वह अपने पिता का सम्मान करती है और कहती है," मेरे लिये चाहने न चाहने का सवाल नहीं है । पिताजी जिसके साथ कर देंगे उसी की जाऊंगी का पालन

---

1. कभी न कभी पृ0 80 पुस्तकालय साथ कर्मी
2. " पृ0 85 "
3. " पृ0 99 "
4. " पृ0 105 "
5. " पृ0 106 "
6. " पृ0 106 "

कहूँगी"[1] जब मेट कहता है कि अभाव ने तभी तो दुख दिया है तो वह कहती है" वह मोर मोर जिसने के लिये या मटकने के लिये नहीं दिया गया है।[2] वह पवित्रता के लिये गंगा की तरह सम्मान करती है। वह बात बढ़ाना भी नहीं चाहती। जब देवु मेट को दुख डालने का निश्चय करता है तो वह कहती है कि" तरह संसार में काम नहीं चल सकता है"[3] जब मेट उससे ऊँच नीच बोलता है तो गुंटे का भाव देती है। वह मेट के सम्बन्ध में कहती है" मेट की जीभ बेलगाम है। हँसी बन बन करने की उसकी आदत है। ऊँच नीच बोल रहा था।"[4] और इसी गुंटे का भाव गुंटे से दे रही थी। जब देवु कहता है कि मेट अनुचित बातें कर रहा था। मैं ठीक समय पर पहुंच गया वरना न जाने क्या हो जाता। लीला बात काट कर कहती है " मेटने से प्राण दे देती और ले लेती। कोई आता न आता।"[5]

इस प्रकार लीला सच्चरित्र नारी है। वह साहसी है और किसी प्रकार के प्रलोभन में नहीं आ जाती। वह बुद्धिमती सम्यक प्रकार कार्य करने वाली नारी है और उसका आदर्श चरित्र है।

---

1. कभी न कभी पृ० 107 वृन्दावन लाल वर्मा
2. " पृ० 107 "
3. " पृ०110 "
4. " पृ० 112 "
5. " पृ० 112 "

कुन्ती

कुन्ती बहुत अच्छा गाती है । वह नृत्य भी करती है।"कुन्ती ने गाये हुये गाय को दुहराया । उसी ताल में वे ही पाने वही पद -चरण। वही हाव भाव ' वाह्य भंगिमा का वही प्रदर्शन'। उसमें एक तादात्म्य भी था । वही लहर देह लता और उसी तरह खिली, कमल के पत्तों पर जैसे कमल लहरा जाय उसी प्रकार उसके उभरे हुये अंग लहराये ।[1] उसका नृत्य अनोखा था परन्तु गाना ताल में नहीं था ।"कुन्ती का सौन्दर्य अधिक आकर्षक है उसमें उत्तेजना है और प्रेरणा ।[2]वह औरतों के साथ नृत्य करती है । कुन्ती अनन्य है , कुन्ती रहस्यमयी है । उसकी "देह की किरन उरोजों पर से जाकर ग्रीवा और मुखमण्डल पर लहराती थी और फिर उरोजों पर कुछ भाग रमकर समा जाती थी ।[3] वह अन्न का आदर करती है ।" कुन्ती साधारण नहीं है । वह असाधारण है ।उसका जीवन भी असाधारण है । [4] वह अपने माता पिता का अपमान नहीं करती। उसका कथन है कि "मान लो मैं अन्न को या किसी को चाहने लगूं तो उन का मार्ग अलग मेरा अलग , परन्तु जब तक वे अपने शरीर को और मैं अपने शरीर को पवित्र बनाये रहे तब तक किसी के मन से किसी को क्या वास्ता ।"[5]उसे विश्वास है कि जो स्त्रियाँ अपनी रक्षा करती है उनका कोई कुछ नहीं कर सकता । उसमें हिम्मत है, वह जमींदार का सामना करती है, दुनीती देती है । उसमें/विश्वास/है वह प्रतिवाद करती है.

---

1. अन्न मेरा कोई पु0,कुन्दावन लाल वर्मा
2. " " पृ057 " "
3. " " पृ0 105 " "
4. " " पृ0 128 " "
5. " " पृ0 196 " "

पुरुषों को स्त्रियों का भरोसा ही नहीं है, इसलिये इस तरह के डरपोकपने की बात करते हैं। जो स्त्रियाँ अपनी रक्षा का दम रखती है उनका कोई कुछ नहीं कर सकता। उस दिन थानेदार तमंचा लगाये बैठा था और उसके आस पास सिपाही थे। मैंने हिम्मत करके बंधी हुई स्त्रियों को खोल दिया और थानेदार के सामने खड़ा हो गई। उसको चुनौती दी मैंने कहा लो हिम्मत हो तो परन्तु वह दुबक कर रह गया।"[1]

कुन्ती के हृदय में त्याग है और अन्त के हृदय में उसके लिये आदर या कुछ प्रिय रहा हो परन्तु वह आँचल पसार कर भीख माँगती है कि वह निशा को पाकर सुखी नहीं होगा क्योंकि निशा कुन्ती से बहुत अच्छी है।[2] वह दोष्यी समाज की परवाह नहीं करती, उसका कथन है कि यदि "समाज इतना गन्दा है कि उसकी फूलों में भी दुर्गन्ध आती है तो हमको उसकी जरा भी परवाह नहीं।"[3] वह तनकीली है "कुन्ती अगम्य है, कुन्ती रहस्यमयी है बहरहाई घर के काम की देखभाल स्वयं करती है फिर वह सोचती है कि स्त्री के लिये उसका घर ही राज्य और रनवास है। वह निर्दोष है। अन्त में वह अपना जीवन बन्दूक मार कर समाप्त कर देती है।

इस प्रकार कह सकते है कि कुन्ती साहसी, स्वतन्त्र समाज से विद्रोह करने वाली नारी के अस्तित्व पर विश्वास करने वाली नारी है। वह बन्दूक की गोली अपने सिर में मार लेती है और एक कागज पर लिखती है अब मेरा मेरा कोई... आगे हाथ बंध जाता है और रेखा एक बिगड़ी हुई लकीर बनती है।

---

1. अब मेरा कोई पृ0 230 वृन्दावनलाल वर्मा
2. " पृ0235 " "
3. " पृ0250 " "

कथा

कथा सन्तोषी है । वह कुछ नहीं चाहती , मुझे कुछ नहीं चाहिये । मैं तो ऐसी ही अच्छी"।(1) वह गन्दे राजा के साथ चाह नहीं करना चाहती चाहे वह राजा नहीं, राजा का बाप ही क्यों न हो ।(2)वह स्वाभिमानिनी है, बिना बुलाये सोना की परछाहीं के पास तक नहीं जाना चाहती ।(3) वह कुछ स्वयंम ऐसना चाहती है । वह कहती है"तुमने कैसा तो चाँद सर की स्त्रियाँ मुझको कहेंगी कि हाथ पैर वाली घर वाली के होते हुए साहब कुंवारा होने लगे है ।"(4) आज तक तुमको जिन लोगों ने सिर उठाये देखा है वे कभी उठाये देखेंगे तो मैं कभी अपना मुँह नहीं दिखलाऊँगी।(5) वह मनमें सोचने लगी कि यहाँ मेरे हाथ से उसको हार गिरा कि उसके मन में मेरे लिये जगह बराबर घटती जायगी । जितनी प्रसन्न होगी वह राजा की जितना कुछ हो जायगा मेरे अन्दर।(6) सोना की सोचा राजा हाथ में और कुछ अनाज की अन्दर से वह भक्ति की भावना से ओत प्रोत है। उसकी धारणा है कि मुँह से कभी ऐसी बात मत निकालो जिससे लक्ष्मी की या किसी की देवता का घर की हेरायन हो जाय ।"(7)उसे गौरव है कि हम गरीब हैं तो क्या हुआ, मैं और अभिमान में किसी से कम नहीं । वह निश्चय करती है कि यदि हमना भूखा रह लेने पर भी यदि वह सम्मान के साथनहीं बुलाती तो कदापि नहीं जाऊँगी ।(8) क्या सोचती है कि देवता धनियों को मँगोड़े खिलाने से नहीं गरीबों को खिलाने से प्रसन्न होते है और वहपक अनाजम कीन देती है ।

---

1. सोना - पृ०सं० 40 वृन्दावन लाल वर्मा
2. " " 41 " "
3. " " 79 " "
4. " " 94 " "
5. " " 94 " "
6. " " 101 " "
7. " " 102 " "
8. " " 119 " "

एक बार वे उनकी देह के सम्बन्ध में कहती है कि " सरकार की देह है क्या है, कुन्दन लज्जित हो रहा है । देह के अरेपन से गहनों की शोभा मिल रही है, न कि गहनों से अंगों की ।[1]" जब महावर लगे पैरों वाली है तब लगता है जैसे गुलाब के फूल बिखरते जो जाते हों [2]

रूपा सीधी है चन्दी तंज वाली है मान वाली है और रीस वाली है। वह गोपे गोपियों को विदा करने के पक्ष में है । रोजगार करने के पक्ष में है । वह कहती है "मेरी बात मानो । गोपो गोपो को विदा कर दो। खेतों पर बंधिया डालकर खेती करो । जो कुछ मेरे पास है, उसमें से कुछ लेकर कोई रोजगार करो । निकम्मेपन से काम नहीं होगा।"[3]उसको विश्वास है कि काम करने से नाक नहीं कटती ।"[4] उसका कथन है कि मेहनत सफाई और कला की उपासना से ही जीवन को सच्चा सौन्दर्य मिलता है।" तुम अगर किसी "चित्र के बनाने के काम पर लगने से मजदूर पुना होने की मजदूरी करो तो तुमको जीवन की कदर मालूम हो, और तभी यह जान पड़े कि मजदूरी का लगना ज्यादा आराम देता है [5]या फूलों की सेज । करके देखो कितना सुख मिलता है ।वह ज्ञान शीलता से रहने को जीवन नहीं मानती " ज्ञान शीलता की रहन जीवन नहीं है । बहुत धन वाले कुरूप और दुखी संसार में रूप और सुख तो उस धन से खरीद सकते है लगने की मजदूरी करो जहाँ मंदिर बन रहा हो वह फूलों सेजेव से अच्छी रहेगी नहीं तो एक दिन सर्प होगा ।और तब चोपट हो जायगा अर्थात हम जैसे गरीब है[6] उसके दो पुत्र हो जायेंगे हम शायद उसान हो मर जाये । उसका सिद्धान्त है-

---

1. सोना पृ0 40 कुन्दावन लाल वर्मा
2. " पृ0 136 " "
3. " पृ0 160 " "
4. " पृ0 160 " "
5. " पृ0 166 " "
6. " पृ0 168 " "

कि" मिहनत सच्चाई, और कला की उपासना से ही सच्चे जीवन का महत्व मिलता है ।"[1] "काम में मिहनत में क्या घटिया और क्या बढ़िया हो ऐसा काम न हो जिसे सत्य दिल काम अक्सर में घटता लगे ।"[2] वह किसी भी हालत में मेहनत मजदूरी करने से नहीं मानने की । कला की आकृति देखिये" सुन्दर, सुडौल गोरी बाहें उघड़ी हुई थीं । ढोंग की धार पर चुड़िया वाली कलाई पर से देखती तब सुने की कुछ सफेद नीले, सुने सुने की सफेदी से सने हुये, घुटनों के नीचे गोरी सुडौल पिंडलियाँ पर सुने के कई छोटे बड़े धब्बे ।"[3]" कमल का जैसा चेहरा गोलाई है। रानी से अधिक सुन्दर है, जिसकी महीनी आँखे है झाकी ।[4] जो भगवान पर विश्वास है मेरा सत्य अडिग है तो वे ही भगवान मेरी रखवाली करेंगे ।"[5] महाराज जी बहुत प्यार करते है । वह राधा से कहती है "आप क्या समझते है कि मथुर का तरह अपनी कृष्ण लेते फिरते हैं ।[6] उसका विश्वास है कि लक्ष्मी जी का वरदान तुम्हारे जैसी की छोटी और मेरी बेटियों की मिहनत से ही मिल सकता है ।[7]

---

1. सोना पृ0 176 वृन्दावन लाल वर्मा
2. " पृ0 177 " "
3. " पृ0 182 " "
4. " पृ0 187 " "
5. " पृ0 201 " "
6. " पृ0 221 " "
7. " पृ0 227 " "

सोना

सम्पत सोना के ऊपर अपने आपको न्यौछावर करने को तैयार था ।"गावके के ग्राम्यता का केन्द्र में उसकी ही छाया और छितिजिन में रहना सोना को बहुत अच्छा लगा। उसमें बहुपन का उसका छाट बाँट था और चमत्कार था । सोना का पति उसके देह के सम्बन्ध में कहता है कि "कुंआ कि हीरे -मोतियों के बने कपड़ों से तुम्हारी देह छिप जेगी ।"[1] सोना बीमों के कपोड़े छिनाती है ।सोना का मातृ हृदय जाग उठता है । वह चीख से उठकर लड़के के पास आ जाती है । लड़के को उठाकर चीख में मिटा लेती है और भीतर उसके पास बैठ जाती है । उसके मुंह से निकले हुये रक्त को अपने कपड़े से पोंछती है । मुरिन कहती है कि राखी हो तो ऐसी हो । गरीब लड़के को फूल कीतरह उठाकर गोद में रख लिया ।"[2] वह उदार है ।

---

1. सोना पृ0 73 वृन्दावन लाल वर्मा
2. " पृ0 94 " "

* अंजना *

वर्मा जी ने अंजना को अमरबेल का नाम दिया है। यह अफीम का कार्य करती है। और अफीम के आरम्भ एवं अन्त की सीमाओं को एक स्थान से दूसरे स्थान पर ले जाती है। लेखक की धारणा है कि अमरबेल शक्तिहीन से पुरुषार्थी है। अन्य तो बाजो तो कोई बेल कुछ नहीं कर सकती, अपना होने के लिए हवा और औरों का सहारा, लोग में सभी, ऊपर में निराधार, बहुत बादी है। [1] अंजना का परिचय दो-शब्दों में है और वह किसी प्रकार की शिक्षा नहीं देता केवल वह संगीतज्ञ है और अभिनय करने में निपुण है। वह प्रसिद्ध गीत गाती है और भारत में घूम घूम कर कला का रंग बदलाती बनाती रहती है। [2] वह सुन्दर युवती है। युवती भोली अनारी, परम सुन्दरी है, बात बेबसाही के साथ निकले हुए भी अपने एक अलग ढंग के सहारे में होते। कोई लिपि कला से पुते न होने पर भी भरी हुई लगती है। नाती बहुमूल्य, रेशमी, नेत्र-मुग्ध चटकदार रंगों से सजी हुई। छोटे छबकोदार लाल जिलीन वाली कोली पर बुंदकियों वाली हरी साड़ी लगी।" [3]

देवराज हँसते हुए और की ओर देखकर अंजना से कहता है अब तो मेरी अमरबेल। [4] अंजना कहती है, "तुमने भी मेरा क्या उपनाम रखा। कहाँ तो वह पत्तों पर छाई हुई बेल, न खिलती बल, न कुछ और कहाँ मैं धरती में गड़ी हुई सभी। [5] उसके हृदय में मजदूरों और गरीबों के प्रति सहानुभूति है। वह चाहती है कि गरीबों को पेट भर खाने को घर में मजदूरी मिल जाये। वह देवराज से कहती है," ये बिचारे छः पैसों की दिहाड़ी में मरते-खपते रहते हैं। यदि घरों में पहुँच जाये तो पेटभर खाने के लिए इन्हें मजदूरी मिल जाये और घर में मजदूरों, नौकरों, का अभाव मिट जाये। तनख्वाहें भी बहुत बढ़ें। [6] वह अपने नव नवरे और संगीत के करिश्मों से भिन्न-भिन्न विभागों के कर्मचारियों को परखे देती और धन बता देती है। [7] कुंदी लाल उसके सम्बन्ध में कहता है, "देखी जी अंजना। वैसा नव वैसा ही गुण। जा जमाल का गाती हो, सारे तो पुरुषों ने ही ऐसा कभी नहीं गाया। बाजो

1-अमरबेल पृष्ठ-207 इन्द्रनाथ लाल वर्मा।
2-अमरबेल पृष्ठ-15 इन्द्रनाथ लाल वर्मा।
3-अमरबेल पृष्ठ-16 इन्द्रनाथ लाल वर्मा।
4-अमरबेल पृष्ठ-23 इन्द्रनाथ लाल वर्मा।
5-अमरबेल पृष्ठ-23 इन्द्रनाथ लाल वर्मा।
6-अमरबेल पृष्ठ-28 इन्द्रनाथ लाल वर्मा।
7-अमरबेल पृष्ठ-28 इन्द्रनाथ लाल वर्मा।

न होगी। रोओगी तुम। फिर उनकी भी ।[1] वह कविता का लोकगीत गाती है देवराज कहता है,"टाल बाबू, एक गीत सुनोगे। अंजना देवी का । वैसा गीत नहीं जिसे तुम्हारी आदत है बल्कि लोकगीत कला का गीत।[2] जब वह अभिनय करती है तो उसका रूप बहुत भड़कीला और चीखता लगता है।"[3] वह बहुत चलती है। परन्तु फैशन वाले काम को अपनाये हुए है।[4] वह 'नदार' के अभिनय को पाँच भी नहीं देती है। वह कहती है,"मैं पाँच भी नहीं दूँगी,लाइसेंस की लागिति के लिए जो मशीनों की मद में जमा कर दिये जायें।[5] देवराज उसे मजाक भी करते है। अंजना कहती है," कलाओं में हम लोग पले और कलाओं ही हमारा सुनहरा पुष्टिकारक बोझा है।"[6] देवराज उसे आदर्श कहता हुआ कहता है "शब्दों में सच्चे अर्थ में मेरी आदर्शता।[7] अंजना कहती है,"मुझे संगीत छुटपन से ही प्रिय है। माँ ने सिखाया। और बड़े बड़े उस्तादों से शिक्षा दिलवाई। सुख और कलेश में भी कुछ पाया । मुझे स्वयं बहुत अच्छा लगता है और जब दूसरों को रस में भिगो देती हूँ तो बड़ा आनन्द मिलता है।[8] राधाराम की धारणा है कि वह"अपनी भिखारन को मन्त्रमुग्ध कर जाती है। संगीत के घूँट पिला पिला कर।[9] परन्तु देवराज का मानना है कि उसका व्यक्तित्व उससे भी बढ़कर है जो किसी बनी बनी परिभाषा के भीतर नहीं आता।[10] अंजना को विभिन्न अभिनय करने पड़ते है। उसका कथन है "ऐसे ऐसे अभिनय करने पड़ते है कि आश्चर्य, कभी रिझाती कभी मोर, कभी लोरिक, कभी पड़ती है । उन्मादनी ,कभी मेनका,कभी उस अप्सरा, कभी उस अप्सरा की भूमिका में उतरना पड़ता है। मैं खुद अपने अभिनय पर कभी कभी डर जाती हूँ," फिर निडर होती,"कभी कभी ऐसी भिन्न देहाकृति बन जाती हूँ कि ऐसे ऐसे लोचदार दिखलाती हूँ कि अपनी ही ऐसी भूमिका से रोक जाती हूँ, एक बार बीमारी बनी थी, उसी बात में सब तेरा माल लिया जाई थी ।[11]

1-आदर्श पृष्ठ- 36, वृन्दावन लाल वर्मा ।
2-आदर्श पृष्ठ-38 वृन्दावन लाल वर्मा ।
3-आदर्श पृष्ठ-73 वृन्दावन लाल वर्मा ।
4-आदर्श पृष्ठ-77 वृन्दावन लाल वर्मा ।
5-आदर्श पृष्ठ-94 वृन्दावन लाल वर्मा ।
6-आदर्श पृष्ठ-101 वृन्दावन लाल वर्मा ।
7-आदर्श पृष्ठ-101 वृन्दावन लाल वर्मा ।
8-आदर्श पृष्ठ-115 वृन्दावन लाल वर्मा ।
9-आदर्श पृष्ठ-115 वृन्दावन लाल वर्मा ।
10-आदर्श पृष्ठ-11 वृन्दावन लाल वर्मा ।
11-आदर्श पृष्ठ-11 वृन्दावन लाल वर्मा ।

-3-

कालीसिंह कहता है कि वह किसी वैश्या की पुत्री है। जो किसी तरह पढ़ लिख जाने पर भी वैश्या है, पर है काम की।[1] वर्मा जी का मानना है कि "समाज के दुख को तरह तरह की अमरबेलें उसे खा रही"। दुख अपने नये जीवन के लिए इन अमरबेलों पर मारे जाने वाला कहाँ पाती है। अमरबेलें तो शोषण के अपने अस्तित्व का कानून बनाती है।[2] वह जानती है, कहती है, "मैंने देख लिया है कि आधीनता किस की कला और गीत कलाकारों द्वारा कला की सेवा करती रहूँगी।"[3] वह ग्रह पर अधीश कर लेती है। जिसे वह अपना मानना चाहती है। वह गुरु है उसने एक दिन मैनेजर को अपनी ओर खींचते पाया। वह कहती है, "मैंने सोचा ही नहीं कई वर्षों की रंगीनियों का नतीजा है, मैनेजर को अपनाये रखना जरूरी था, क्योंकि पुलिस अफसरों के आने जाने की सूचना उससे सहज मिल सकती थी, मैंने बहुत जल्दी भाँप लिया कि मैनेजर मेरे और कमरा मुग्ध नहीं है जितना मेरे सामान की जाँच किया करने पर।"[4] राधारमण की धारणा है कि वह कभी झुक नहीं सकती। वह कहता है कि बड़े-बड़े खिलाड़ी तक झुक जाते हैं अंजना तो गजब की है। वह नहीं झुकी। उसकी मस्ती से काम नहीं निकला।[5] अंजना के मादक की मधुरिता के साथ घटक-घटक और लोचन तक की भी प्रतिद्वन्द्विता की हो रही थी। अंजना को नष्ट में छाने की उन्हें कला सिखा सकती हूँ।[6] वह राधारमण की छाती पर एक थपेली मार देती है। वह न परेशान होती है न हिम्मत हारती है। उसने देवराज को पत्र में लिखा" परेशानी की कोई बात नहीं। हिम्मत मत हारना अपना काम फिर चलेगा। फिर मैं उसकी कलम को मसल रही हूँ रात में सेलखाप ही चिल्लाई पड़ते है। आपकी यही अमरबेल।[7] देवराज का कहना है तरुण पर छाई अमरबेल को उसी क्षण छिन्न-भिन्न करके अलग करना हो, तरुण की कुछ डालों को तो वह काट गयी है, किसी दिन सारे पेड़ को काट खायेगी। तब कहीं कुछ कला होगी।[8] इस प्रकार लेखक ने ऐसी अमरबेल और बुरे कुलों को समाप्त करने की प्रेरणा दी है।

1-आधार शिला पृष्ठ- 115 वृन्दावन लाल वर्मा।
2-अमरबेल पृष्ठ- 134 वृन्दावन लाल वर्मा।
3-आधार शिला पृष्ठ- 141 वृन्दावन लाल वर्मा।
4-अमरबेल पृष्ठ- 243 वृन्दावन लाल वर्मा।
5-आधार शिला पृष्ठ- 252 वृन्दावन लाल वर्मा।
6-आधार शिला पृष्ठ-271 वृन्दावन लाल वर्मा।
7-अमरबेल पृष्ठ-308 वृन्दावन लाल वर्मा।

-: प्रमिला :-

प्रमिला बहुत सुन्दर और संस्कार है, वर्मा की प्रमिला के सम्बन्ध में सीधा और सरल में लगते हैं उन छोटी सी बालक में बुद्धि की ऐसी प्रखरता और धारण करने की इतनी विलक्षणता सभी को अच्छी लगी। माता के मन में उत्सा और चाव। छा लड़की को अपने बाप के लिए पुत्रों का बहुत मलकाया है, बड़ी संस्कार है। *[1] विद्या प्राप्त करने में उसका मन बहुत लगा। वह प्रमिला के नाकेदार ने प्रमिला के विवाह की चर्चा उठाई क्योंकि वह सीधार रहने लगा था तो प्रमिला ने मना करवा दिया। और पिता और भाई कोई भी नहीं रहे। मैं भी मंदिर में देवार्चना करती हुई जीवन बिताऊँगी। वह था उसका सुर-सुन्दरी बनने का लक्ष्य क्योंकि सुर-सुन्दरी-देवदासी का जीवन स्वतंत्र रहता था। और उसे बहुत आदर सम्मान भी मिलता था।[2] प्रमिला के व्यक्तित्व के सम्बन्ध में वर्मा जी लिखते हैं उसका वह महीना देह छरहरी, थोड़ी पीले रंग की प्रमिला लाली लिए पर छोटे होंठों के सपने और किनारी कामदार घाघरेदारी की, लम्बुली उभरी हुई। जाड़ों पर वर्मा के माथे और भौं में भी आकर्षण। छोटा लगाये थोड़ी पुतली के बहुत नीचे तक, परन्तु नाक थोड़ी छोटी हुई और सामने आर से नीचे तक छरहरा धार के लेखों का पुट पीछे लिये हुआ फूल माला से लिपटे हुआ। गोरा रंग चेहरा गोल ठोड़ी की ओर बड़ा सच्चा, नाक तीखी, सरल भोला लिए पर होंठों की बड़ी सुन्दरी कामदार घोड़ों वाली बड़ी आँखें। बरौनियाँ लम्बी वह भीतर को मुड़ी। ठीक उसकी दृष्टि की कमानीदार भौंहों का सहारा छोर देकर रख गया। उसे लगा जैसे चिड़ी खोल गयी हो। लक्ष्य के लिए उसकी लय-धन। *[3] मंदिर में सुर सुन्दरी का अभिनय नाच, गान, और पूरी साज सज्जा प्रस्तुत करती है। उसकी कला में बहुत निपुण है।[4]

1-सीधा और सरल पृष्ठ-10 सुन्दरलाल शास्त्री।
2-सीधा और सरल पृष्ठ-16 सुन्दरलाल शास्त्री।
3-सीधा और सरल पृष्ठ-24 सुन्दरलाल शास्त्री।
4-सीधा और सरल पृष्ठ-25 सुन्दरलाल शास्त्री।

मुख के साथ के विशेष सम्बन्धानुसार उत्तर पर भी बहुत सुन्दर लगती थी। वह पूर्ण सुन्दरी थी। मंदिर के देवालय से सम्बन्ध रखने वाली, देव मूर्ति सी ही अर्चित। [11] ईश्वर उसके पैरों की सुगठी गति और शरीर के गठन का सूक्ष्म सुनी आँखों देखा। [12] वह ईश्वर की है वह कहती है कि मैं तो सुन्दरी ही हूँ। हूँ न ? [13] वह महासुन्दरी है। उसकी कला सबसे बड़ी है ईश्वर उसीसे ... से देखा दीपके हुए व्यक्ति से मैंने कहा था कि .....
कि आपके मुख जैसा सुन्दर मुखड़ों और नेत्रों के अनुठी अद्भुत सामन्जस्य को देखकर मुग्ध हो गया था। और मुझे ऐसा लगा था कि मेरे सम्मुख सन्, की अप्सरा उतर आई हो।" [14] वह अपनी कला से बहुत ऊपर पर अवश्य पहुँचना चाहती है। उसने कर्तव्य पालन किया और सभी के प्रति समता का भाव धारा।

कृतिका के चरित्र में देवमूर्ति बनने की भावना है अपनी कला में अपने को उत्कर्षता है। सेवा भाव है। समस्त व्यक्तियों के प्रति समता का भाव है। समता की भावना के दृष्टिकोण से उसमें गुणग्राहकता है। आधुनिक नारी की सँवार भावना का अब उसमें दृष्टिकोण है। सँवार और सुन्दर परिधानों के साथ वह भी सुन्दर लगती है।

1-गीत और कला पृष्ठ-68 दुष्यन्त साथ वर्मा।
2-गीत और कला पृष्ठ-76 दुष्यन्त साथ वर्मा।
3-गीत और कला पृष्ठ-96 दुष्यन्त साथ वर्मा।
4-गीत और कला पृष्ठ-120 दुष्यन्त साथ वर्मा।

-: रिजली :-

रिज की है दो भाई थे। उस की आयु बीस के लगभग हुनरा सरदार अठारह वर्ष का। रिजली अठारह वर्ष का आयु की थी। रंग लाल आँखें बड़ी-बड़ी नाक तीखी बेली लड़कियों की प्रायः नहीं होती थी।"[1] रिजली स्वाभिमानी और परिश्रमी है। वह कहती है,"हम कुछ महुवे बीनती हूँ। जंगल चलती हूँ, रोटी बनाती हूँ, बैल से चलती, कपड़े सीना जानती हूँ। और काम जानती हूँ। [2] रिजली आत्मनिर्भर है। वह कहती अपने सहारे से खाना है कि हमारे कुछ खाना है तो वे रिजली हुकुम करती है," हम भीख भिखारी थोड़े ही है। [3] वह स्वयं से राम का नाम न जानती हुई भी भजन गाती है।रिजली सीधी मोटी रंगीन छोटनी और अपनी सहेलियों के साथ खिल रही थी। उसके मन में उस खेल का और न जानती नदीनी लगती है। "[4] वह रेल के आँख खोपड़ी में भीख लुटाने वाले को तैयार है ये सारवेरी गिरा उसे देंगे। रेल का रिजली से कहना है कि मैं तुमसे उसी दिन से प्यार करता हूँ जब पहली बार देखा। पोंडी के चार गिलसे गिरा दिया कलेजा। उस मेरे को लग गया। वह कुछ सोचने लगती है। उसकी लाख में आकर्षण की भावना हुकुम आ गयी और वैसे सीधे भाव में बोली,अरे लग जाये कुछ मैं। भाव से की है,मर जा जाग जा पुरुष में।"[5] उसे वह मारने को उद्यत है। वह विष्णु कहता है भीख में कुछ खाने के लिए उद्यत है। जब आकर्षण रिजली को भागी देता है,मुझे-आँखों की साक्षी,पिताजी,के रिजली हुक्म कर कहती है," अरे लग जाये तुम्हें,मुझे को अपनी। [6] रिजली बहादुर है। वह अपमान को सहिया देती है, रिजली ने उसे गालियाँ दी, मारी लाठी, और अपमान लिखित की भावना की तो उसे रोकती पकड़ ली। [7]

1-दोनाद की [illegible] पृष्ठ-3 [illegible] भाग वर्ष।
2-दोनाद की [illegible] पृष्ठ-10 [illegible] भाग वर्ष।
3-दोनाद की [illegible] पृष्ठ-20 [illegible] भाग वर्ष।
4-दोनाद की [illegible] पृष्ठ-26 [illegible] भाग वर्ष।
5-दोनाद की [illegible] पृष्ठ-42 [illegible] भाग वर्ष।
6-दोनाद की [illegible] पृष्ठ-60 [illegible] भाग वर्ष।
7-दोनाद की [illegible] पृष्ठ-[illegible] [illegible] भाग वर्ष।

भगवान को छोड़ी आ जाती है और वह अपनी पुत्री को लिखती है तथा वन में जाता है, लिखती बड़े लाड़ वाली है आज अपमान नहीं सहेगा।[1] लिखती बहुत निडर है, "यह लिखती बहुत निडर और तेजी है अब वहाँ वह कार्यक्रम समाप्त करके विष्णु मंदिर में उन फूलों को चढ़ाने के लिए सोमेश। ये तीनों साथ रहेंगे।[2] वह मन्दिरों पर फुलवारी लेने वह हुआ और विष्णु के साथ आ जाती है। वह महाराज मंदिर में छिप जाते हैं अरिसुन्दर्य अपने भाई को पकड़ लेते हैं तो लिखती उन्हीं से एक को पहचान लेती है वह लिखती पुकार जाती है तो वह आ ही जाती है, "महाराजाधिराज मैं इनका नाम तो नहीं जानती परन्तु पहचानती हूँ। यह लड़कवाली है, छाया एक ओर जाकर रात हो जाये। पहले ये छोड़ी रहाये था। अब पुकारती हमने। माया बड़ा निडर था मैंने तो वाली ने पीछा था।[3] राधा ने तेजी रोष कर पूछा, "क्या बात थी, क्यों पीछा। लिखती कहती है, "महाराज की उन मान्यता के साथ वह पुरा व्यवहार करने के लिए पूछने की कामना था, कि मैं आ गयी। वेश ने अपनी खोजने के लिए गाड़ी लेकर आई थी, अपनी नहीं खोज पाई। और न छाया लिखकोश पाया। एक ही गाड़ी छोड़ी कि कुछ भया। उन्होंने मान्यता को महाराज की ने दास में क्या लिया। मैंने महाराज की को तुरन्त पहिचान लिया था।"[4] राधा ने तेजी कहा, "तू राम की बेटी है हमारी। वेश का पुरस्कार लिखेगा।[5] एक पीछा ने कहा कि श्रीमहाराज पुजारी की मंदिरों में को ही नहीं आने दिया जाता है नीची जात के को ऐसे मंदिर में नहीं पहुच पाते। मुनि रत्नाभिषि पुरुषा कर बोले, "मंदिरों में स्नान करने से पुजारा पुजारा नहीं हुआ हो जाते हैं मंदिर पूजा से ही नहीं होता है। छाछूत नीची और ऐसी जाति के वेदनाम को कलंक है। लिखती बहादुर लड़की, महाविरम, नाम में बहु और लिख नारी है।

1-मेरानाद की पुस्तक, पृष्ठ- 140, पुस्तकालय लाल वर्मा ।
2-मेरानाद की पुस्तक पृष्ठ- 195 पुस्तकालय लाल वर्मा ।
3-मेरानाद की पुस्तक पृष्ठ-210 पुस्तकालय लाल वर्मा ।
4-मेरानाद की पुस्तक पृष्ठ-210 पुस्तकालय लाल वर्मा ।
5-मेरानाद की पुस्तक पृष्ठ-210 पुस्तकालय लाल वर्मा ।

-: अम्बापाली :-

रानी का नाम अम्बापाली था। अम्बापाली गोरे रंग की प्रौढ़ सुन्दरी थी। आयु के कारणों से केशों में कुछ सिलवटें आ गयी थी, परन्तु उस रानी के उत्साह के कारण और उसकी लगन के कारण चिकनाई सुन्दराय हो गयी थी। अपने बड़ी-बड़ी महत्वाकांक्षा को जन्म देने वाली और आत्मबल की घोषक। श्रीकृष्णाराधना के रस में उस समय रोती थीं। जो वह जिसी मंदिर की पुजारिन हो। [1] वह पति भक्त है। पति के सिर में पीड़ा होने पर सिर को थामने के लिए तत्पर है। वह राधा से कहती है," आपके सिर की पीड़ा बढ़ गयी है। सिरदर्द के थोड़े दिन पर रात छाती पीड़ा गयी है। पतिये सिर थाम लूँगी या क्या हूँ।" [2] महारानी बड़ी कृपालु है, बड़ी दयावान। [3] महारानी को दासियों पर पूरा विश्वास है। अम्बापाली काम पूजन में विशेष रूप से रम गयी है। रानी की धारणा है कि "संगीत जन्म ही जीवन को मधुर बनाती है। [4] महारानी धर्म कर्म की बात बताती है। चित्रकार कार है अभी तक हमारा जीवन चित्रमय व्यतित रहा है, भविष्य में हमें भगवान के चरणों में आत्म समर्पण कर देना चाहिए। जहाँ रहना होगा और जो पुरुष देवदासी धर्म में दीक्षित हो जाने पर हमारे जीवन को अधिक चिन्तनी और पुण्य केन्द्र की आधार बना।" [5]

रानी पति भक्त है, और भगवान केशव के भजन में तल्लीन। वह कहती है," मुझे तो पति देव की पूजा और भगवान केशव की भजन से जो आनन्द मिलता है वही अमृत का देवता है। राधा ने कहा कि वह है मुख्य भगवान का मंदिर। दूसरा बने भगवान केशव का, छोटा होने पर भी सुन्दर चित्रों नाम होगा। उपनगर मंदिर। वह मेहतरों ने कहा कि उस स्थान पर मंदिर बनने से उनके घर उजड़ जायेंगे तो रानी ने कहा कि वे लोग घबराएँ नहीं न हटाये जायेंगे उन लोगों को और भी प्रचार कर देने के लिए उन सभी सहायता की जायेगी। मंदिर अन्य स्थान पर बनाया जायेगा। [6]

1-अम्बापाली पृष्ठ- 11 दुष्यन्त लाल वर्मा।
2-अम्बापाली पृष्ठ- 45 दुष्यन्त लाल वर्मा।
3-अम्बापाली पृष्ठ-63 दुष्यन्त लाल वर्मा।
4-अम्बापाली पृष्ठ-85 दुष्यन्त लाल वर्मा।
5-अम्बापाली पृष्ठ-88 दुष्यन्त लाल वर्मा।

आगे रानी की अनता प्रेमिका एवं उदारता का परिचय मिलता है।

रानी मदिरा पीने के विरोध में है। वह कहती है,* मैं तो बहुत बहुत पहले से कहती आई हूँ। कि आप मदिरा पान छोड़ देंगे।*[1] महारानी काम-भूषण में अधिक रुचि रखती है। और वह आर्य पर मुग्ध थी। उन्हें अपने पति में पूर्ण आस्था है और कहा है कि नारी को यह तब शोभता पड़ता है। वे कहती है,* स्त्री चाहे कैसे भी क्यों न हो पर जो उसे तो यह तब शोभता ही पड़ता है। आप सदा सुखी रहें, सुखी और कुछ शान्तिमय ही क्या +?*[2]

इस प्रकार हम देखते हैं कि नाटककार ने अपने पति के प्रति अगाध रुचि और उनके प्रति आज्ञा पालन की भावना पति के लिए सब कुछ होने की आकांक्षा, पुत्र के लिए उनके भविष्य की भावना, भगवान के प्रति, अगाध भक्ति + देखने को मिलती है। उनका चरित्र आदर्श नारी चरित्र है। जिससे अनुसरण से साधारण मुसलमानी का परिवार सुखी हो सकता है। उनका चरित्र सामान्य गृहस्थि नारियों को आदर्श की ओर उन्मुख करता है। भगवान की भक्ति की ओर प्रेरित करता है।

---

* [1] [illegible] पृष्ठ- 250 [illegible]
[2] [illegible] पृष्ठ- 275 [illegible]

-: कुमारिका :-

कुमारिका मणिकर्णिका का सिर काटती है। कुमारिका महान है। वह मणिमय है, मन पवन में अभी रहती है। वह राजा को वन में निकाली है, "आपका जो प्रेम मुझे प्राप्त हुआ है वह अक्षय है। उसी ने मुझे भगवान के चरणों से अलग किया है। मन पवन में मन लगा रहता है। और मुझे विश्वास है कि आपकी कृपा और भगवान की दया से अधीनता उसी में लगा रहेगा। [1] उसकी बड़ी महानता है। मणिकर्णिका कुमारिका के सम्बन्ध में कहते है, तुम मणिमय मानस से ओत प्रोत हो कुमारिका । तुम सुखी रहो और तुम रानी सुख जीवन के लिए भगवान से प्रार्थना करती रहो। [2]

वह देख चुका है। रानी धीरे से कहती है," अभी अभी महाराज के आते ही मैंने तुम्हारे सम्बन्ध में चलने की बात कही। रानी की कि तुम लखनौर में अपनी पहली रानी मेनुका से होती तो बहुत अच्छा लगता। उन्होंने तुम्हारे मेरे मन की बात सुनकर तो तुम्हारी मणि और प्रीति पर न्योछावर हो जाने के लिए मन उमड़ा । तुमने राजा की रक्षा करने में बड़ा साथ लगाया । [3]

---

1. मणिकर्णिका पृष्ठ 158 तुन्दाराम सास वर्मा ।
2. मणिकर्णिका पृष्ठ 159 तुन्दाराम सास वर्मा ।
3. मणिकर्णिका पृष्ठ- 160 तुन्दाराम सास वर्मा ।

-: गैंदरी :-

गैंदरी नहीं चाहती कि ईश्वर चोरी छोटी कुछ करे। वह यह कहता है कि" चोरी छोटी बात की नहीं करना तो गैंदरी प्रतिवाद करती है। कि ," अरे यह व या कहते हो।"[1] वह नहीं चाहती कि ईश्वर पुजारी बड़े व्यक्ति क्योंकि वर्षे व्यक्ति में धर्म होगें। वह कहती है कि," क्या किया तो भी न माने किसी दिन हो गया है।"[2] वह नहीं चाहती कि ईश्वर बाहर जाने वाले। वह कहती है"मुझे और डर कभी वो किसी सहारे छोड़ जाओगे।"[3] वह सुन्दर और कर्मशील है। वह कहती है"चलो तब बीत हुंगी,और बीतते है काम-काज कपड़ना-सीनना,कपड़े लीना,कर्म करना, लगेरह-लगेरह। मैं थोड़े से क्यों जोड़ हुंगी,और ये क्या मुझे काम करते देखेंगे तो कुछ ही सहायेगें।"[4] वह पड़ोसिन से बात बड़े काम की खोज करती है। वह स्वाभिमानी है मजदूरिन न कहलाकर,पर्दा करना पसन्द करती है। वह निश्चय करती है कि कुछ घर काम की याचना न करेंगी पर्दा जाएगी,बड़े बड़े लोग आते है। काम का काम और आर से नाम कुछ पर्दा काम किसी मजदूरिन करेगी मुझे- एक घर के तो कहर बनायेगी।[5] वह एक पर्दा से लेती है और लड़के को पति से बचाती है। उसमें वात्सल्य भाव है। वह पुत्र को पीटने से बचाती है। वह पति से कहती है," मुझे क्या एक घर हो फिर तो घी में आते करना।[6] वह पुत्र के उपद्रव को बचाती है वह भगवान में आस्था रखती है। और उसमें धैर्य है वह कहती है। भगवान का फल करो, उसकी कृपा से एक दिन घर लौटेगा।[7] वह सती साध्वी है। वह पति मरता है तब पति मर्म मांगते है तो कहती है। मेरे हाथ पैर टूट छोड़े गये है वो तुम यह कहने लगे हो बन्द करो यह तक।[8]

1- आदर्श पृष्ठ- 51 वृन्दावन लाल वर्मा ।
2- आदर्श पृष्ठ- 52 वृन्दावन लाल वर्मा ।
3- आदर्श पृष्ठ- 52 वृन्दावन लाल वर्मा ।
4- आदर्श पृष्ठ- 53 वृन्दावन लाल वर्मा ।
5- आदर्श पृष्ठ- 59 वृन्दावन लाल वर्मा ।
6- आदर्श पृष्ठ- 64 वृन्दावन लाल वर्मा ।
7- आदर्श पृष्ठ- 92 वृन्दावन लाल वर्मा ।
8- आदर्श पृष्ठ- 95 वृन्दावन लाल वर्मा ।

-2-

वह मैया की बात में झूले में बैठती है लेकिन अचेत हो जाती है। वह डूबती उतराती पानी में बही जाती है तो कुछ लोग उसे निकाल लेते है। और वह बच जाती है। वह अपने शरीर त्याग, और कष्ट का वर्णन धीरे-धीरे सुनाती है।" मैत्री के चरित्र की धारा भीतर-भीतर सबके मन पर छा गयी[1]। वह स्वाभिमानिनी है कहती है," नहीं दीदी, शरीर के ठीक होते ही पहले मैया की जाय करेंगी फिर फाटूंगी और घूमूंगी-फिरूंगी। तुम्हारा काम करके ही तुझे सुख होगा।"[2]

इस प्रकार हम कह सकते है कि मैत्री का चरित्र उज्ज्वल और आदर्श है वह नारियों को आत्मनिर्भर रहना, अपने मेहनत से रुपये अर्जन कर जीना, पति की सेवा कर भारतीय नारी के आदर्श का पालन करना, और पुत्र से प्रेम कर उसे पति के मारने से बचाया पाती है। उसके जीवन से नारियों को स्वाभिमानी बनकर जीवन यापन करने की प्रेरणा मिलती है, उसे अपने जीवन को उत्सर्ग कर दूसरे को बचाने की प्रेरणा मिलती है। इस प्रकार उसका चरित्र आदर्श चरित्र है। वह साहसी और कर्मशील है।

1- आठवां पृष्ठ- 147 वृन्दावन लाल वर्मा।
2- आठवां पृष्ठ- 148 वृन्दावन लाल वर्मा।

महारानी दुर्गावती

दुर्गावती कालन्जर के अन्तिम चंदेल कीर्तिसिंह की एक मात्र संतान थी, न कोई पुत्र था और न कोई पुत्री थी। जनश्रुति में लिखा है कि दुर्गावती के तीर और कन्दुक का निशाना अचूक था और शेर की शिकार की तो इनकी विकट लोकोक्ति थी कि शेर का पता चलते ही पानी पीना छोड़कर शिकार के लिये चल देती थी।"[1] दुर्गावती ने और अनेक तालाब बनवाये खुदवाये। मन्दिरों का निर्माण गढ़ा में, मंडला के प्रसिद्ध स्थान नेहरापाट पर और कई स्थानों पर करवाया। इनमें आज भी कई विद्यमान है।"[2] वह बचपन की सुन्दरता लावण्यमय और तारुण्य की हिलोर अनोखी मूर्ति थी।[3] दुर्गावती की बड़ी बड़ी आँखें तीखी तो अनुपमा मानो कुहूँ की पंखुड़ी के खिले सपने की टटोल रही हो।"[4]"दुखमनों को उसने बहुत प्यार पाया था। अपनी माता के देहान्त के बाद उस पर कीर्तिसिंह का स्नेह और भी अधिक हो गया था। उसे पुरोहितों से प्राप्त की। वाल विद्या में निपुण हुई और तलवार इत्यादि चलाने में भी उसकी बराबरी बहुत थोड़े लोग कर सकते थे। दुर्गाशक्ति भी थी, आसुरी लक्षण अठारह थे।"[5] जब उसके पिता की अपनी जाति के लोगों पर ध्यान रखने की बात करते हैं तो वह कहती है "वह सब तो यहाँ की है पिता को उसे प्रतीत होता है कि वास्तविकता में कोई विश्वास नहीं रखती वह वह अपनी से प्रेम करने लगती है और उसको वह लिखती है"अब मेरा सर्वस्व आपके ही साथ है है क्या मुझे आपकी जीवन सहचरी बनने का सौभाग्य प्राप्त हो सकेगा ? यदि न हुआ तो मैं आजीवन कुमारी रहूँगी।

---

1. दुर्गावती पृ० 4 महारानी दुर्गावती
2. " पृ० 7 "
3. महारानी दुर्गावती पृ०5 वृन्दावन लाल वर्मा
4. " पृ०18
5. " पृ०25 " "

आन बान की बाधा बीच में रोड़े अटकायेगी। मैं उसकी बिल्कुल चिन्ता नहीं करती । हम दोनों अभिन्न हैं ।1।वह घोड़े की सवारी जानती है और सौन्दर्य की सजीव प्रतिमा थी। जब महारानी ने दुर्गावती को उस पानीदार घोड़े पर सवारी करते देखा मुहाना बांधे शस्त्र सुसज्जित सौन्दर्य की सजीव प्रतिमा दुर्गावती को तब वह आश्चर्य और सराहना में डूबने उतराने लगे-वह मेरी है मेरी जीवन संगिनी है । धन्य मेरा भाग्य वह अच्छा मध्यवेश करती थी साहस की मूर्ति थी ।।2। शिकार की शौकीन थी और रणकाज में भी चतुर थी । वह महारानी आज से कहती है"शिकार तो कभी खेलूंगी ही, आपकी सेवा सहायता रणकाज से करनी है ।"।3।वह शिकारी और संगीत की शौकीन थी । रानमेरी से कहती है " तुम शिकारों और संगीत कारों का पता लगाना " जब विवाह के लिये महारानी दुर्गावती को फूलों से सजाते हैं तो वह झुककर उनके पैर पकड़ लेती है और कहती है " आप मेरे पति हैं।हिन्दू नारी का यह कर्तव्य है । ।4।वह रणकाज में महाराज की सहायता करने का अडिग निश्चय करती है ।।5। वह चाहती है कि तालाब बुलवाये जाय जिससे किसानों को कष्ट न उठाना पड़े और राज्य की आय बढ़ जाये ।वह कहती है"तालाब बुलवाये बंधवाये जायें तो किसानों को कष्ट नहीं उठाना पड़ेगा और राज्य की आय बढ़ जायेगी। उधर खिलजी में बन्देलों ने सदा इस पर ध्यान दिया। वहाँ के राजाओं ने लगातार बड़े बांध बनवाये सहरे बुलवाये और किसानों के घरों में सोना बरसाया ।।6।

---

1. महारानी दुर्गावती पृ0 78 वृन्दावन लाल वर्मा
2. " पृ0 79 "
3. " पृ0 144 "
4. " पृ0 152 "
5. " पृ0 158
6. " पृ0 159 "

अलवर्ति अब कहते है कि किंवदंति में एक कहावत है कि सन्तेनों के पास पारस पथरी थी । लोहे की पारस पथरी छुवाई गई कि सोना बन गया तो दुर्गावती किंचित कुपित हो कहती है" अब लगन परिश्रम और ज्ञान बीज वह थी उनकी पारस पथरी ।[1] आगे सिंह आदि सोचने लगे कि "यह तो विकट नारी है । राज्य के सारे काम की राई रत्ती संभालकर करना है । "[2] वह किसानों की हालत निरखना परखना चाहती है जिससे उनकी सहायता का प्रबन्ध हो सके । अलवर्ति से कहती है जो भी काम हुआ गढ़ा की धारा पर है । मेहराघाट तीर्थ पर स्नान पूजन किया जाय , गाँव गाँव जाकर किसानों की हालत की निरख परख की जाये और उनकी सहायता का प्रबन्ध किया जाय।"[3] आधारसिंह के साथ सब दुर्गावती के सम्बन्ध में अवाक आये परन्तु उसने आगे नहीं कहने दिया। उसका मंतव्य है कि हमारी रानी बहुत प्रखर बुद्धि है और सलाहकारों से घिरी वे अपने सामने मूर्ख और बेहूदे है- प्रजा साधु की न सही, भरत सु की न सही सहायता तोड़ की है ।[4]

जहाँ जहाँ जाते बढ़े वे वहाँ किसानों की दशा को देखने के लिये अलवर्ति और दुर्गावती अपने दीवान और कर्म संचालकों के साथ निरीक्षण निकल पड़े । मार्ग में पानी में महावत का मगरा पानी में बह गया । रानी प्रखर पानी के प्रवाह में मगरे को बचाने के लिये कूद पड़ी ।अन्त में दुर्गावती का मगरे को लेकर किनारे लग गई। सभी साथी दूर मगरे मनु का उन्दा कर उसका पानी निकाला अलवर्ति ने मस्तक झुक से कहा "

1. महारानी दुर्गावती पृ0 160 वृन्दावन लाल वर्मा
2. " पृ0 160 "
3. " पृ0 161 "
4. " पृ0 162 "

आपके इस पुण्य कार्य से हमारे पुरखे स्वर्ग में नाच उठे होंगे।"[1] जो वह अपना धर्मपत्नी है मैंने तोरना तोड़ा है, अच्छी तरह तोड़ा है। इस कारण डर नहीं लगा। उस बिचारे बालक को बचाना अपना धर्म था, इसलिये कुछ बड़ी बातों में शंका की कष्ट नहीं हुआ। तेरसी बहती गई। वह बिचारा ईश्वर की कृपा से बच गया इसका बड़ा अत्यन्त आनन्द मन में था [2] वह पूछती है कि आप यह बतलाइये कि लोगों ने किसानों की खेती को कितनी क्या हानि हुई है। फरियाद सुनाने वालों में एक ने कहा" उस गोंड़ लोंडे की जान बचाने के लिये तो महारानी साक्षात बहती धार में कूद पड़ी थी एक इस बिचारे लिये हम से निरक्षर-चरक होगी। दुर्गावती ने वर्षा के बीच कहा, " ये बाधाएँ धन्धेनों के गोरखदुर्गावती के काम में थी। मार्ग सुधरवाये-बनवाये गये, जनहित के कार्य किये गये सेना का विशेष सम्बर्धन किया और प्रजासुखी रहने लगी।"[3] अपने घर की यह सब किया बायना। जनपति ने अंधकार में दुर्गावती की गोलियाँ हाथ में लेकर चन्दी चन्दी कहा" इन कोमल अंगुलियों में बल की शक्ति और कठोरता। आँखों में आग की किरणों की मधुरता होठों पर खिले कमल की सुकुल प्रेरणा।"[4] जब जनपत ने कीर्ति सिंह को मारे जाने की बात दुर्गावती को बताई तो उसने निश्चय किया कि" मैं अपने पिता की लाड़ली बेटी हूँ, जीवन पर्यन्त दुःख के साथ काम करूँगी कृपया पालन करूँगी।"[5] रानी का बहुत के शिकार थी। जनपति को बड़ी मर्यादित-

---

1. महारानी दुर्गावती पृ0166 वृन्दावन लाल वर्मा
2. " पृ0169 "
3. " पृ0173 "
4. " पृ0 174 "
5. " पृ0 205-206

हजार की स्वर्ण मुद्राएँ मिली थी कोड़ीयाल की गिर गई थी । रानी ने कमाति से कहा" मैं तुमसे यह प्रार्थना कर रही थी और करती हूँ कि जब आप के रहूँ दिन से आकर बहुली को उस अर्थ को स्वाम रहे हो तो वह थैली उस साहूकार को लौटा दो ।[1] कमातिगढ़ ने वर बहुली की प्रथा को समाप्त कर दिया और वेश महारानी दुर्गावती को को दिया। बनता हूँ तुरन्त वास थैली । दुर्गावती की ओर वहा का प्रवास उमड़ पड़ा। दीवान आर सिंह ने भी सुना दौड़े आये और ब्याने हूँ बनी हो जाने की बात कही । कमाति ने कहा"ब्याना पीछे, बनाति पहिले महारानी साहब की यही वाहती है ब्याने की कोई बड़ी वेश नहीं पहुँचेगी व्यवहुल कम कर दिया जाये वा सब कुछ सम्भल जायगा।[2] चन्द्रसिंह महारानी दुर्गावती से बोला, बाबी रानी जी अपने उस वर बहुली की जिस प्रथा को बन्द करवाया है उससे जन जन का मन फूल रहा है आशीषें बरस रही हैं । सचमुच आज का दिन बहुत रहूँ है।"[3] पच्चीस हजार रुपयों के मुद्राएँ की थैली के सम्बन्ध दुर्गावती कहती है "उसे नहीं रखा या सकता कोड़ी पिल्लाई बापनी जिसकी होगी प्रमाणित करके ले जायगा। हमें उसके रखने का कोई अधिकार नहीं । [4]

कमाति के स्वर्गवास होने के उपरान्त चन्द्र सिंह जब कहता है कि अपने घराने में सती का चलन चला आया है फिर वेश आप की समझे । दुर्गावती ने कहा मैं सती नहीं होऊँगी । और नारायण और राज्य का हित चाहते है । उस बड़ी का आवश्यक कार्य करिये।"[5] महारानी दुर्गावती के हिरदय में और नारायण के नाम से राज्य चला। दुर्गावती ने स्पष्ट कह

---

1. महारानी दुर्गावती पृ0 212 वृन्दावन लाल वर्मा
2. " पृ0 213 "
3. " पृ0 214 "
4. " पृ0 214
5. " पृ0 219 "

दिया है वहाँ वहाँ बिल्कुल नहीं लगेगी । हाथी की सवारी के समय डरूँगी नहीं डाटूँगी , अत्यार मेहुँह खोलकर देखूँगी, जब मन चाहेगा तब घुलाँगी का खेल धारण करूँगी ।"[1]

"अब हैं तो इन बातों की सुधार का काम शुरू हो ही गया ..वर्ग-वती ने अपनी यात्रा में जहाँ जहाँ ताल बँधवाने का वचन दिया था वहाँ वहाँ की भिन्न भिन्न कार्य कर्ताओं को हिदेश में काम चलाने का आयोजन कर दिया । मेहा घाट और अन्य स्थानों पर मन्दिर के निर्माण कार्य का भी प्रारम्भ हो गया । इन सभी कार्यों के साथ ही उन्होंने सेना के सुधार, बढ़ाव और सुसज्जित करने की भी योजना कार्यान्वित की "[2]

अकबर ने दुर्गावती को फरमान भेजा कि आप अपना सफेद हाथी हमारे पास भेज दें । आप महज एक औरत हैं । आपका काम राज करना नहीं है ।महल में मौज करें । मन चाहे तो शिकार खेल लिया करें। राज के कामों से वास्ता न रखें ।"[3] दुर्गावती ने सदैव साधे साधे कहा हमने अकबर के या किसी के भी राज्य पर कभी कोई चढ़ाई नहीं की । इस पर भी वह हमारे देश को रौंदने की अपनी इच्छा है हम अपने धर्म और अपने देश की रक्षा में अपना सब कुछ स्वाहा कर देंगे, परन्तु ऐसे दुष्ट के सामने एक क्षण से दीन मोड़ की सिर नहीं झुकायेगा।"[4]

कुछ विद्वान भी मराठाओं की इस में मौजूद इस बात रहे थे । साधुओं ने भी से सब चलाने को मना किया और साधुओं ने कार्यों से दुर्गा बनाया तो दुर्गावती ने साधुओं से कहा कि आप दुर्गा उतार कर दुर्गे बात करें दुर्गावती कहने लगी हैं गोरखा के बारे में आपकी पूरी सलाह है

1. महारानी दुर्गावती पृ0 220 वृन्दावन लाल वर्मा
2. " पृ0 231 "
3. " पृ0 243 "
4. " पृ0 243

परन्तु उसका साधन यह नहीं है । विदेशियों के आक्रमणों से उजाड़ पड़े हो गोंडवाने में अच्छे लोगों की संख्या बढ़ाऊंगी, राज्य की ओर से मंगवा कर इन दीन दरिद्रों को दूंगी फिर गायों का दल में घोलना अपने आप बन्द हो जायगा। ।1। मुझे प्रतीत होता है कि वह सौजन्यता की प्रतिमा और शिक्षाओं की दुलारक थी ।दुर्गावती नीच के प्रति नीच नहीं बनना चाहती थी ।।2। उसका विश्वास दुर्गावती के धैर्य, और अनहित चिन्तन पर था ।।3। दुर्गावती को जब यह आभास हुआ कि उसके साथ लड़ाकुओं का आमने का मन है तो वह उत्तेजित होकर बोली अब स्वार्थों से सैनिक सहायता के अपने पास आने का यही मार्ग है हम उस शिला में बाण छेड़े हुये तो आये वाले लौट जायेंगे और समझेंगे कि हम बिना युद्ध के ही हार गये । जिनको भागना हो वे चले जाये । मैं तो यहीं से लड़ूंगी । अब हम पेड़ों की छाया में अधिक समय तक नहीं पड़े रह सकते । मेरे लिये तो तुरन्त युद्ध छेड़ देने के सिवाय और कुछ नहीं है । या तो जीतूंगी या मरूंगी ।।4। वह औजस्वी स्वर में कहती है सामना करने के लिये युद्धता के साथ तैयार रहो । समान भाव से कठिनाइयों का सामना करो ।भिखारिन देती है न लोहे की भिखारी। जब तक हमारी तुम्हारी स्थिति भिखारी की जैसी है तब तक धीरज धर के रहो और जब स्थिति उन की हथौड़े की हो जाय तब लगाओ ठोको और बढ़ो ।।5।

रानी दुर्गावती ने प्रचण्ड युद्ध किया । सभी मोर्चों पर विजय हुई थी । दुर्गावती ने उस दिन जो युद्ध किया था उसने सबको प्रभावित कर दिया । *।6। जब वह हारने लगी तो उसने आंखर सिंह से कहा कि

---

1. महारानी दुर्गावती पृ0 263 वृन्दावन लाल वर्मा
2. " पृ0 268 "
3. " पृ0 269 "
4. " पृ0 302 "
5. " पृ0 303 "
6. " पृ0 304 "

" अपनी कटारे से मुझे तुरन्त समाप्त कर दो । मैं कुछ कर रही हूँ परन्तु अपनी देह को तेरी के स्पर्श में नहीं आने दूंगी । मारेंगे।"[1]।
अकबर सिंह ने अपनी स्वामिनी का बात नहीं माना । गजु ने दुर्गावती के पैर छुये और कटार दे दी।" उन्होंने तुरन्त अपने बड़ा सा से छाती में भोंक ली कटार छाती से चिपक छमपति आ के पिता को देखती हुई पार हो गई और वह दुर्गावती अपना ही कह सकीं । गिर पड़ी।"[2]दुर्गावती स्वाभिमानी देश प्रेमिका, विद्वान सुंदरी, ईमानदार और वीरांगना थी ।

---

1. महारानी दुर्गावती पृ0 306 वृन्दावन लाल वर्मा
2. महारानी दुर्गावती पृ0 307 वृन्दावन लाल वर्मा

अवन्ती बाई (रामगढ़ की रानी)

उमराव सिंह ने डिप्टी कमिश्नर से कहा कि वह पर्दा नहीं करती । किसानों की जनता की मदद के लिये तैयार रहती है ।उनके हाथ में रियासत का प्रबन्ध सौंप दिया जाय तो सब कष्ट दूर हो जायेंगे। कोई दिक्कत नहीं रहेगी । "(1) उनकी आयु छब्बीस सत्ताईस के लगभग होगी देह छरेरी कुछ रंग गोरा आँखे बड़ीबड़ी । माथे ऊंची और लम्बी खिंची हुई । नाक सीधी चेहरा गोल । सुन्दर तो थी ही चेहरे पर दीप्ति छाई हुई थी । (2) रानी का कथन था कि " एक ही बन्दूकों से कुछ नहीं होगा । मैं जनता को तैयार करूंगी और हथियार इकट्ठे करूंगी ।"(3)इस बहुत की लोग कुछ न समझ सके इस कारण पुड़िया फेंकी गई ।" राज्य पर विजय या देश की रक्षा करने के लिये या तो अमर बनो या मुट्ठीभर पहिनकर घर में बन्द हो जाओ। तुम्हें भी ईश्वर की सौगन्ध है जो इस कागज वालों पता फेंको को देश ।"(4) रानीअवन्ती बाई ने क्रान्ति की योजना बनाई । डॉक्टरलाल रानी अवन्ती बाई की बड़ी सराहना करते हैं " अपने देश में महारानी दुर्गावती की परम्परा अमर है । रानी अवन्तीबाई पर उनकी प्रजा का साथ देखकर मैं पूरा नहीं समझाहूँ । अवन्तीबाई अवन्ती देवी है ।"(5) उन्हें अडिग साहस है और उन्हें विश्वास है कि मण्डला का पूरा देश उनका साथ देगा । वे कहती है, हमारे पास सौंप एक ही है परन्तु बन्दूकें है और अडिग साहस जैसे ही आपके पर्दा की देवी शस्त्र हथियार उठाये हमें सुचना देने की कृपा कीजिये । मैं उसी बड़ी मैदान में आ जुटूंगी(6) मुझे विश्वास है कि

---

1. रामगढ़ की रानी, वृन्दावन लाल वर्मा पृ0 6
2. " " पृ0 20
3. " " पृ0 25
4. " " पृ0 40
5. " " पृ0 43
6. " " पृ0 49

मण्डला का पूरा क्षेत्र हमारा साथ देगा ।वह अपना समय जनता के हित कार्य में लगाती थी और अपने पति की सेवा सुश्रूषा भी करती थी रानी अवन्ती बाई को कहीं चैन था ? अपने राज्य के गाँव गाँव गई । योजना बैठक प्रमुख लोगों को बुलाई । साधारण जनता के हित कार्य पर लगी रही और सिपाहियों को तैयार करती रही ।[1] अपने पति की सेवा सुश्रूषा में भी कसर नहीं लगाती थी । अफसर के प्रश्न करने पर अंग्रेज ने कहा "अभी वह तो मुग्ध औरत है । पर्दा नहीं करती ।शिकार खेलती है और साधारण जनता से बहुत हेलमेल रखती है यह बात जरूर कुछ खटका पैदा करती है, मगर इससे कर कोई नहीं है ।[2]रामगढ़ की रानी बहुत सयेत चतुर और बहादुर है "[3] रानी अवन्तीबाई दीन हीन सिपाहियों की सहायता करती थी । वह ऐसे अनेक सिपाहियों का चिकित्सा के लिया हित देने लगी थी । अपने इन लोगों से उनके खेत ठीक समय पर बुवाने का साधन भी सहज कर दिया बढ़ाती चलिये हो ।[4] विदेशी सरकार के अधिकारी से कहते है कहाँ हमारी रानी की हमारी लड़ाई के लिये अपना नुकसान करते हुये हमारा सरकार करती है ।[5]

रानी का सद्व्यवहार सारे इलाके में विदित हो गया जैसे बड़े सब उनके प्रति आदर के भाव से भर गये ।[6] रानी अवन्तीबाई तो इतनी लोकप्रिय हो गई थी कि जनता उनके लिये अपना सिर दे देने पर तैयार थी ।[7] अवन्तीबाई ने युद्ध के साधन जुटा लिये थे उनका आत्म विश्वास प्रबल और सशक्त था ।[8] रानीका कथन था कि जब तक देह

---

1. रामगढ़ की रानी – वृन्दावन लाल वर्मा पृ0 54
2. " " पृ0 57
3. " " पृ0 60
4. " पृ0 70
5. " " पृ0 71
6. " " पृ0 72
7. " " पृ0 101
8. " " पृ0 101

में एक भी बूंद रक्त जब तक रहेगा हम फिरंगियों से लड़ेंगी । न चैन लेंगी और न चैन लेने देंगी ।[1] वह अपने नाम पर नहीं अपितु देश के नाम पर और के नाम पर राजा शंकर सिंह के नाम पर लड़ना चाहती थी[2] शंकर शाह और राजकुमार को जब अंग्रेजों ने तोप से उड़ा दिया तो वह नहीं चाहती थी कि कोई तोप से उड़ाया जाये उन्होंने कहा मैं नहीं चाहती कि उनमें से कोई भी फिरंगियों के हाथ में पड़ने पर तोप से उड़ाया जाये इसलिये मैं अपने को आगे करने में रत्ती भर भी संकोच नहीं करती मैंने ये पुड़िया लिखायी थी , लड़ाई के मैदान में सबसे आगे रहने के लिये तैयार नहीं मैं बल्कि बहुत उत्सुक हूँ । दुर्गावती और शंकरशाह के नाम पर लड़ेंगी और फिरंगियों के दांत खट्टे करके ही मानेंगी । [3] वह घोड़ों पर सवार रहती थी ।परन्तु अनेक बार उतर कर पैदल भी चलना पड़ता था ।"

अन्तोबाई बड़ी उदार एवं दयावान थी कैप्टिन वार्डिंगटन के लड़के को उन्होंने पिता के पास पहुंचाने के लिये कहा अपने पदाधिकारियों से कहा "अभी घोड़े लाओ और इसे तुरन्त ले जाओ इसके पिता का पता लगाकर उसे सौंप आओ ।"[4] जो लड़ाई में मारे गये उनके कुटुम्बों के पालन पोषण का रानी ने प्रबन्ध किया । वह बड़ी लड़ाई में भी चैन नहीं लेती थी । सेना को कई टुकड़ियां लेकर निकल पड़ी "। [5] वार्डिंगटन ने सोचा विकट औरत है चलो की दिल्लगानी । आगे कभी इस तरफ आई तो रामगढ़ का राजा मैं उसे नहीं मिलना चाहिये वरन फिर से घेरा

---

1. रामगढ़ की रानी – वृन्दावन लाल वर्मा पृ0 102
2. " " पृ0 103
3. " " पृ0 104
4. " " पृ0 108
5. " " पृ0 122

डालने में बड़ी दिक्कत पड़ेगी । [1] रानी के पास जब आपका सन्देश का संदेशा भेजा तो रानी ने कहा" कहो मर जाने दो जाऊँ परन्तु परदेशियों के घर से कुछ लूँगी नहीं ।"[2] उनका धैर्य अडिग था । थोड़े से खिलाव और साधारण सी कुछ सामग्री साथ में, फिर भी कितना धैर्य और कैसा शौर्य । और ऐसी परिस्थिति में जब कहीं से भी किसी सहायता की आशा नहीं थी । वह दुर्गावती की भक्त थी और सीख ली थी पूर्व की अतिहास प्रसिद्ध महारानी दुर्गावती के आदर्श का पालन करने वाली ।"[3] रानी ने वही तलवार को म्यान से निकाल कर उमराव सिंह को दे दिया । म्यान से निकाल तो न मालूम कब अटक पड़ जाय ।"[4] अमन्ती बाई का कुछ पराक्रम देखने योग्य था। उन्होंने उमरावसिंह से तलवार माँगी और"रानी ने तुरन्त तलवार पेट में घोंपली ।"[5] वार्डिंगटन ने कहा कि मुझे क्या कहना आपकी सुकीर्ति का ।[6] जब वार्डिंगटन ने उससे पूछा कि ये सब खिलाव किसके कहने पर आपके साथ लगे ? तो वह ओ स्पष्ट स्वर में बोली किसानों को सिवाय मेरे और किसी ने भी नहीं बहकाया भड़काया। ये बिल्कुल मेरे हैं इनका और कोई दोष नहीं ।[7] रानी अमन्तीबाई की समाधि नहीं बन पाई परन्तु वातावरण की उनकी वीरता की छाप अमिट है ।[8]

---

1. रामगढ़ की रानी– वृन्दावन लाल वर्मा पृ0 124
2. " " पृ0 129
3. " " पृ0 131
4. " " पृ0 131
5. " " पृ0 132
6. " " पृ0 133
7. " " पृ0 134
8. " " पृ0 135-136

कोकी बु

कोकीबु का मुहम्मदशाह पर काबू कर पाया। बादशाह के मन में कोकी सवार रहा करती थी। कोकी ने बहादुरशाह को छुड़ाया दोनों व्यक्तित्व वाली कोकीबु को ऐसा था कि रौशन दौला को सम्पत्ति मिली कोकी बु उसे पकड़वाने, बेइज्जत करने और मरवा डालने तक के साधन रखती थी। उसका अभिमत था कि और कोई बात नहीं है। जहां सीधे लोगों की जिनका असर भी कम हो हमें डर क्या कोई बड़ी औरत भी नहीं है। और फिर अपना कुछ बिगाड़ नहीं सकी, उनकी लड़की भी अपने घर में है। "[1] फर्रुखसीयर को कोकीबु बहुत सहारा देती रही। पर्दे के पीछे से कोकीबु बोली ऊपर हुआ। मुनसबदारों को सजा मिल गई। उसकी मुस्तैदी के लिये बहादुरशाह ने इनाम में आपके पास अपनी बिन की पगड़ी औरत भेजी "[2] कुम्हार को सजा दी जाती परन्तु बदनामी की वजह से चुप है कोकीबु को भी इसका गम है।

वह राजनीति में चतुर है और अपनी बुद्धि और कौशल से बड़े बड़े राजनीतिज्ञों को भी अपने से प्रभावित कर लेती है। वह मशुर से कहती है" हो सके तो अकबर के यहां की खबर देना कि वह मराठों के खिलाफ निजाम की मदद के लिये किस सरकार को भेज रहे हैं। और कितने सिपाहियों के साथ वह तख्त ताऊस पर बैठी है। वह फर्रुखसीयर को कान पकड़कर निकाल देगी कहती है [3] कम्बख्त फर्रुखसीयर कहता था गंदी औरत तख्त ताऊस पर बैठी है अभी तो नहीं बैठी है पर किसी दिन बैठेगी और तब उस गंदी फर्रुखसीयर को कान पकड़कर निकाल देगी।"[4] वह इतना नहीं बोलती थी कि हवास ही खो बैठे [5] कोकीबु मुहम्मदशाह को बाहर नहीं निकालने देती क्योंकि इस खतरे की नौबत आ गई थी। इसलिये वह घोर है।

---

1. तोती आप पृ0 38 वृन्दावन लाल वर्मा
2. " पृ0 114 "
3. " 23 " "
4. " पृ0 39, 41 " "

शबनम

शबनम होगी लगभग सोलहसत्रह वर्ष की । गोरा रंग सुन्दर बड़ी आँखें हैं मद । मद के साथ मदमाती घुली मिली।"[1] शबनमआजमगढ़ की लड़की का नाम था । शबनम के वालिद का कथन था कि इस रिश्ते से गुलाब का दिल टूट जायगा । गुलाब शबनम से कहता है तुम हसरतों की बहार हो, दिल की महक और बाहों की कली ।[2] शबनम का विवाह रोशनुद्दौला के साथ हो गया । रोशनुद्दौला की नवीन पत्नी शबनम बेगम के साथ होली खेलने हजूर बर्क की पत्नी आती है । अन्तःपुर में गुलाब का आना शबनम को अच्छा नहीं लगा। वह हजूरबक्स और उनके साथी को बाहर नहीं जाने देना चाहती ।" गैर मुमकिन और नाजायज़ ही होगा उनका जाना"[3] हैदरबर्क और उसकी पत्नी की रक्षा करती है। हैदरबर्क और गोमती के सुरक्षित स्थान पर जाने पर शबनम अकेली रह जाने पर रात में अनेक बार रोती है । शबनम गुलाब बाँ के आने पर चिन्तित हुई थी और मारे जाने पर व्यथित हुई थी ।शबनम का गुलाब की कब्र पर आने का वर्णन वर्मा जी ने इस प्रकार किया है "गुलाब की कब्र पर जब शबनम पहुँची उसके पैर काँप रहे थे ।आज बैठे बैठे और फूल बहाये।फिर स्थिर हो गई।ईश्वर से उसने गुलाब की आत्मा की शान्ति के लिये प्रार्थना की और रो पड़ी।झुर्री चेहरे पर आँसुओं बहे और मन ही मन कहा गुलाब गुलाब। मुझे माफ कर देना"[4]

---

1. सोती आग पृ० 2- वृन्दावन लाल वर्मा
2. " पृ० 9 "
3. " पृ०100 "
4. " पृ०128 "

सोम्बती (प्रस्थान)

सोम्बती मंगल की पत्नि है वह अपने पति की पुजारिन है कहती है मैं आपके मन्दिर की पुजारिन हूँ । आपकी कृपा कटाक्ष की भिखारिनी।[1] सोम्बती अपनी सास की सेवा करती है और उपचार करती है "सोम्बती ने फुलरानी की प्रपात और पत्थ से कम के कमरे में कर लिया आवशानी में चारपाई पर लिटा कर उपचार किया।"[2] वह धार्मिक है जब तक मंगल प्रायश्चित न कर ले तब तक अपने पति के पास नहीं आती । सोम्बती कहता है सब बोली" परन्तु आपके प्रायश्चित में कुछ विलम्ब नहीं है।"[3] मंगल कहता है कि "धर्म की हानी बड़ी बाधा ।"[4] वह वासिवादी में विश्वास नहीं करते । वह कहती है जाति वाले बड़े किन्तर होते है मौजी इन पर कभी ऐसा वज्र टूटे तो जान पड़े ।"[5] वह अपने पति का सम्मान करती है और उसके मन में जगमगा डालती है" मंगल के प्रवेश करते ही तारा कर माला इस तरह डाली कि कुछ मोती के दाने झूमने लगी और अधिकांश छाती पर।"[6] वह कहती है मेरे तो भाग्य का उदय हुआ है ।"[7] "परन्तु प्रायश्चित करके आप फिर इन लोगों में आ मिलेंगे और मैं फिर इसी तरह की जगमग को मैं डालूँगी । "[8] वह मंगल के पुरुषार्थ पर विश्वास करते है। वह कहती है आप वास्तव में पुरुष है वह अभी देखने को बाकी है । है भी आपका वाक्य रूप कहर से कहर पुरुष से बढ़कर।"[9] नवल बिहारी अपने मन्दिर में मंगल को दर्शन नहीं करने देता । जब वह मूर्तियों उल्टा कर देता है तो सोम्बती कहती है कि उसे ऐसा प्रायश्चित करवाना चाहिये

---

1. प्रस्थान पृ0 51 वृन्दावन लाल वर्मा
2. " पृ0 81 " "
3. " पृ0 86 " "
4. " पृ0 86 " "
5. " पृ0 100 " "
6. " पृ0 144 " "
7. " पृ0 144-145 "

जो न कर सके " उस दिन हम लोगों को दर्शन नहीं करने देता था और स्वयं वेश राक्षसी धारण किया । उससे तो वेश प्रायश्चित कर जाना चाहिये जिसे वह छः जन्मों में भी न कर सके ।"[1]

वह व्यक्ति पराधीन धार्मिक अपने कर्तव्य निर्वाह में पटु और आडम्बर वाले पंडितों से प्रायश्चित करवाने वाली है । वह आदर्श नारी के रूप में हमारे सम्मुख आती है ।

---

1. प्रत्यागत पृ० 154 वृन्दावन लाल वर्मा

फुलरानी (प्रत्यान्त)

फुलरानी मंगल की माँ है। वह इस बात को स्वीकार करने को राजी नहीं है कि मंगल मुसलमान हो सकता है। वह कहती है "बाप तेरा ब्राह्मण माँ तेरी ब्राह्मणी फिर तू मुसलमान कैसे हो सकता है।"[1] फुलरानी को विश्वास है कि केशवदेव से जो एक को पुत्र मिलता है वही पुत्र औरों को भी मिलता है। वह नवल बिहारी से कहती है आपकी अनुमति से केशवदेव का जो पुत्र हम लोगों को प्राप्त होगा।"[2] उसका कथन है कि जैसे गंगा का जल सबको पवित्र करता है वैसे ही देवता के दर्शन से सब पवित्र होते हैं "परन्तु आप और देवता तो पतित पावन हैं गंगा जी के पानी तक स्नान करते ही अपने पापों से मुक्त हो जाता है परन्तु गंगा जी को वह पाप छुआ भी नहीं है।"[3] फुलरानी केशवदेव को सदा ही सुखदायक मानती है तथा भगवान के दर्शन को सब लाभों में अच्छा मानती है। वह कहती है वैसे तो केशवदेव सदा ही सुखदायक है तो भी प्रायश्चित के सम्बन्ध में उसके पवित्रकारी प्रभाव पर दृढ़ करने से मुझको आश्चर्य लगा होगा परन्तु सच्चा भगवान का स्मरण सब लाभों में अच्छा होता है।"[4] वह अपने कोख से आ जन्मे मंगल के द्वारा कुकृत्य करने को अच्छा नहीं समझती। नवल बिहारी से किसी प्रकार के वैर चुकाने को भी अच्छा नहीं समझती है। वह कहती है "बाबा तू या तेरे पिता ठाकुर जी को सिंहासन से उतारकर कहीं फेंक देंगे। मेरे कुल से जन्म लेकर भी कुत्य

---

1. प्रत्यान्त पृ0 85 वृन्दावन लाल वर्मा
2. " पृ0 125 " "
3. " पृ0 125 " "
4. " पृ0 132 " "

फुलरानी बोली बहनका बिहारी के साथ मेरे सुमना कलायना या तारे हिन्दु तलाब के पेड़ों तले रोजना लगा आयना ।" [1]

मेरी तबा में मैंने कुछ नहीं कहा वह फुलरानी को अच्छा लगा । वह कहती है" और भी बहुत मेरे पड़े है" जिसे का हुस्न ऊपर उतरा पड़ता है और जिसी का जिया रहता है । तुमने मेरी तबा में कुछ नहीं कहा तो अच्छा कीजिया ।"[2] वह व्यावहारिकता को अच्छा नहीं समझती इससे कुछ प्रसन्न होते है कुछ अप्रसन्न वह कहती है, तुम्हें जो करना हो मेरे पर व्याख्यान लगोगी ।"[3] बाट कर तो इससे चार प्रसन्न होते है तो छः अप्रसन्न ।

वह धार्मिक प्रवृत्ति की सात्विक नारी है । अपने पुत्र से उसे बहुत प्रेम है । वह सदविचारों की भारतीय नारी है । धार्मिक आडम्बरों से वह स्वतंत्र एवं परे है ।

---

1. प्रत्यागत पृ0 134 वृन्दावन लाल वर्मा
2. " पृ0 155 " "
3. " पृ0 155 " "

किरण

किरण उषा किरण उपन्यास की प्रमुख नारी पात्र है अथवा यदि यह कहे कि वह एक मात्र नारी पात्र है तो अत्युक्ति नहीं होगी। मुख्य पात्र भी वही है परन्तु उषा सक्रिय पात्र है जो नाटक में प्रमुख भूमिका निभाता है। किरण का बचपन का नाम किन्नी है। किरण बड़ी आँखें चढ़ाकर टेढ़ी कमाये कलक्टर की ओर देखती है जब सहकारिता की योजना हेतु गाँव में आता है। कलक्टर किरण से कहता है, "बहुत अच्छा तुम्हारे पिता को मालूम मिल जायेगा और तुमने निशाने बाजी अच्छी तरह सीख ली तो सरकार से तुम्हें एक बन्दूक इनाम में दिलवाने का प्रयत्न करूँगा"।1। किरण निशाना साधती है और बन्दूक मारती है परन्तु लड़खड़ाती है। उषा ने कई बार किरण की सहायता बन्दूक साफ करने और निशाना साधने में की। किरण चतुर है वह बाबू से प्रस्ताव रखती है कि हमारे लिये भैया एक मौसम बनाना पड़ेगा क्योंकि अपने यहाँ कहीं कोई नहीं जब अन्न को अच्छी हालत में रखे रहने के लिये नहीं है।।2। किरण कहती है " हमें अपने गाँव में पाठशाला पंचायत घर और छोटा सा चिकित्सालय भी बनाना है।।3। वह गीत और नाच स्त्रियों के बीच ही करने की पक्षपाती है, कहती है हम लोग अपने गीत और नाच अपने ही बीच में करेंगी। खिड़की बन्द करके आँगन में।।4।किरण अपने खिड़की बन्द करके थोड़ा सा आ पीछे ओर की खुली छत पर आकर डाकुओं का मुकाबला करने के लिये तैयार हो गई।"।5। वह बन्दूक हाथ में लेती है।कलक्टर उसके हाथ में बन्दूक देखकर कहता है "अच्छा बेटी तुमने आज रक्षा का मैं नाम लिखाया है।बन्दूकथमाना

---

1. उषा किरण पृ0 64
2. " पृ0 88
3. " पृ0 88
4. " पृ0 87
5. " पृ0 91

तोड़ लिया है न ? वह कहती है " मेरा कौशल यही है ।[1] वह तालती है । इन्सपेक्टर उसके तालाब को ध्यान नहीं पाता था ।[2] जब दूर के गाँव के एक वर के बारे में कहा तो किरण के सम्बन्ध में कहा किन्नी ऐसे कबाड़ी जैसे खिलाड़ी के साथ नहीं निभ पायेगी ।प्यार प्यार की बातें अपनी इकलौती सन्तान है । [3] किरण ने डाकुओं को मार गिराया, गाँव का काम किया नाटक की रेखा और लोकगीत की गाथा ।उसका कहना है"वह बड़ी है उसर मतो की पुत्री जिन्होंने डाकुओं को मार भगाया था और जो गाँव के काम में किसी से पीछे नहीं रही "[4] वह नायक कहता है वही है न जिसके शिक्षा प्रचार की चर्चा की आपने हमें बहुत सी बातें बतलाई है [5]" और जिन्होंने अपने गाँव में नाटक की रेखा खिलवाया । "[6] जब नायक पूछता है कि "ये सब लोकगीत की गाती होंगी? तो मधन उत्तर देती है " गाती है ।[7] शिक्षा इत्यादि का काम भी ऐसा था कि उसे किरण दोनों को बहुत रूचता था और उन्हें मिलकर करना था ।

इस प्रकार किरण धीर है सह कारिता के कार्य में पूर्ण सहयोग देती है। वह अपने ऊपर नियंत्रण करती है । दूसरा डाकु किरण की बन्दूक का शिकार होता है

---

1. उषा किरण पृ० 92
2. " " पृ० 92
3. " " पृ०121
4. " " पृ० 141
5. " " पृ० 141
6. " " पृ० 141
7. " " पृ० 141

षष्ठ अध्याय

स्वातन्त्र्य एवं प्रगतिशीलता की दृष्टि से वर्मा जी के प्रमुख नारी पात्रों का अन्य उपन्यासकारों के नारी पात्रों से तुलनात्मक अध्ययन

वृन्दावन लाल वर्मा और प्रेम चन्द्र

प्रेम चन्द्र कथा साहित्य के सम्राट हैं। आधुनिक युग जीवन एवं युग चेतना की हिलोरें उनके साहित्य में मिलती हैं। उन्होंने समकालीन श्रेणी संघर्ष ,रोमे रोला की कला,सिनेमा और जीवन,समाचार पत्रों के गुलाम और दास,समाज में दुष्कर्मों का प्रचार, आदि की विभिन्न आदि अनेक विषयों पर खुले विचार प्रकट किये । कथा साहित्य की दोनों विधाओं कहानी और उपन्यास के शैल्पिक रूप पर भी उन्होंने विचार प्रकट किया है । हिन्दी कथा साहित्य का यहाँ तक सम्बन्ध है व युग प्रवर्तक हैं। उन्होंने सेवा सदन,गबन,प्रेमाश्रम, रंगभूमि,कायाकल्प,निर्मला प्रतिज्ञा,गबन, कर्मभूमि,गोदान,और मंगलसूत्र युग ग्यारह उपन्यास लिखे । सभी उपन्यासों का सर्वांग जीवन की समस्याओं से सम्बन्ध है । उनका एक मात्र ऐतिहासिक उपन्यास " सती रानी" है। इसमें मारवाड़ के राजा मालदेव और उसकी रानी सती रानी "उमादे" की कहानी है ।

प्रेम चन्द्र जी के प्रथम उपन्यास सेवा सदन में उन्होंने वेश्याओं के सुधार की समस्या उठाई है । उनका दृष्टिकोण सुधारवादी है। गबन,गृह में लिखे गये परिवार प्रधान का हिन्दी साम्राज्य है। प्रेमाश्रम में उन्होंने भारतीय ग्रामीण जीवन की विकृतियों का चित्र किया है । इसमें किसानों की दुर्दशा या जमींदारों के अत्याचार,बड़े साहूकारों का विलास मय जीवन,जमीनों की बेदखली पटवारियों,कानिन्दों और हुंडीयों के झूठे कारनामे पुलिस की ज्यादती अदालतों की पोल,अफसरों की धाँधली, आदि को उन्होंने चित्रित किया है। उपन्यास में मनोहर की आत्महत्या,विद्यावती का विष खाकर प्राण देना,गायत्री का जल, सेंधु और पशु की तेज धारा में मृत्यु को चिल्लाकर उन्होंने कथानक को शीघ्र मोड़ने का प्रयत्न किया है । रंगभूमि में भारतीय जन जीवन का चित्र है। इसमें उन्होंने औद्योगिक समस्या के दुष्परिणामों की ओर सभी आदर्शवादी की तरह दृष्टिपात किया है। साथ ही औद्योगिक और ग्राम जीवन की तुलना,पूँजी केन्द्रीकरण,का विरोध औद्योगिक सभ्यता का विरोध, राष्ट्रीय चेतना के लिए जनान्दोलन का आर्थिक देशी राज्यों की राजनीति,अंग्रेजी साम्राज्यवाद की भर्त्सना और पश्चिमी आदर्शवादिता

का चित्रण हुआ है । उनका कला को अधिक महत्व है । कहानी कला में जगदीशपुर की रानी देवप्रिया की विलास-लीलाओं का उल्लेख है। वह अतृप्त कामिनी और अनन्त है उसका प्रेमी बार बार बन्धन तोड़ता है और रानी की तृप्त लालसा की अग्नि में जल जाता है ।

उन्होंने कर्मभूमि में नागरिक और ग्रामीण दोनों जीवन धाराओं में राजनैतिक चेतना फूँकी है । इसमें मंदिर में अछूतों का प्रवेश निषेध ,महन्तों का आडम्बर और भोग विलास,जनता का अंधविश्वास,मदिरा सेवन की अनैतिकता आदि सामाजिक और धार्मिक समस्याओं के साथ,मजदूरों और किसानों की दीनावस्था,सरकारी दमन,पूँजीपतियों का शोषण आदि समस्याओं को उठाया है ।

कर्मभूमि में अछूत समस्या,-निषेध,महन्तों का आडम्बर,और भोगलिप्सा जनता का अंधविश्वास ,मदिरा सेवन की अनैतिकता,मजदूरों और किसानों की दीनावस्था,सरकारी दमन,पूँजीपतियों का शोषण आदि राजनैतिक और आर्थिक समस्याओं का वर्णन किया है । कर्मभूमि के कथा शिल्प में स्वाभाविकता है । कथा में पारिवारिक जीवन का मनोवैज्ञानिक चित्र उपस्थित हुआ है । नारी का आजन्म प्रियता और पुरुष का आत्म पूर्णता इन दोनों मनोवैज्ञानिक तत्वों को पति पत्नी के जीवन में तैयार कर विकास प्रकट हुआ है । प्रधान ने कथानायक आनन्द पूर्णतः पारिवारिक है । कथा प्रेम का अवसान है ।

गोदान प्रेमचन्द कृति है । इसमें समग्र जीवन का अनुभव है । होरी अवसान का नायक है । मजदूरों की लड़ाई पर उठीमाति मजदूर हड़ताल करते हैं अवसान के अंत में वे मालिक को लाचार नहीं,लाचारी अनुभव कर देते हैं । "धनिया दीन की मूर्ति उठी,आज वो दुखी बेटी थी,उसके जीवन आने वाले भाई और पति के दुःख में स्वयं सामने खड़े,दासत्वहीन ने बोली-खबरदार जो मेरे न भाई है न पतिया न पैसा। यही पैसे है,यही हमारा गोदान है और पाँव खाकर गिर पड़ी।"[1]

1-गोदान पृष्ठ- 361 प्रेमचन्द ।

प्रतिज्ञा और निर्मला प्रेम चन्द्र के प्रारम्भिक छोटे छोटे उपन्यास है। प्रतिज्ञा सामाजिक उपन्यास है जो सुधारवादी है। निर्मला में दहेज की समस्या और अनमेल विवाह का जीवन परिचय है, चित्रण है। प्रेम चन्द्र की अन्तिम कृति " गोदान " है। जो अधूरी है इसमें प्रेमचन्द्र की जीवनगाथा है। वेदकुमार जी उपन्यास लेखक मानते है एक लेखक है।

प्रेम चन्द्र सदैव सामाजिक और राजनीतिक प्रगति के साथ रहे। उनकी कृतियों में आर्य समाज की सुधार भावना, गांधीयुग की राष्ट्रीयता तथा समाजवादी युग की वर्ग चेतना तथा यथार्थवादी कला का व्य देखने को मिलता है। उन्होंने भारतवर्ष की व्यापक भूमि का तिरस्कार नहीं किया। उनका किसी वर्ग विशेष से सम्बन्ध नहीं है। उन्हें सभी से सहानुभूति है। उनके उपन्यास केवल मनोरंजक ही नहीं है अपितु उनकी सामयिक उपादेयता है। उनकी उपन्यास में आदर्शमय यथार्थवाद प्रतिबिम्बित हुआ है। उनके उपन्यास चरित्र प्रधान है। किसी घटनाओं और पात्रों की स्थिति उन्होंने चित्रित है। वे अपने पात्रों को आदर्श दिखाते है। और अपनी ओर से उनमें छाँट छाँट करते है। वे लिखते है "जो सिद्धान्त आपको अच्छे नहीं जैसा होता है, वह हमारे मनुष्यत्व की पराजय है। ... हम मनोरंजन की सिद्ध करने के लिए चाहते है कि उनके चरित्र पोषीटिव हो, वो प्रलोभनों के आगे सिर न झुकाये, बल्कि उनसे परास्त हों जो वासनाओं के पंजे में न फँसे बल्कि उनका दमन करें, जो किसी विपत्ति के भीति सहर्ष का सहारा करके विजयमाल करते हुए निकलें। ऐसे ही चरित्रों का हमारे ऊपर बहुत अधिक प्रभाव पड़ता है।"[1] उन्होंने उत्कृष्ट रचना के लिए ऊँची नैतिक चरित्र पात्रों का चित्रण आवश्यक नहीं माना। उनके श्रेष्ठ उपन्यासों के पात्रों सदाचार या भ्रष्टाचार के लिए जो है। वे कहते है, "यह कहना सार्थक कि मेरी उपन्यास जीवन चरित्र होगा, चाहे किसी बड़े आदमी का या छोटे आदमी का। उनकी छुटाई-बड़ाई का फैसला उन कठिनाईयों से किया जायेगा कि जिन पर उनने विजय पाई है। हाँ, यह चरित्र इस ढंग से लिखा जायेगा कि उपन्यास मालूम हो।[2] सम्भवतः मैक्सिम गोर्की आदर्श पर प्रारम्भ किया

1-साहित्य का उद्देश्य पृष्ठ- 58 प्रेम चन्द्र।
2-साहित्य का उद्देश्य पृष्ठ- 58 प्रेम चन्द्र।

था । उन्होंने मनुष्य को विधि-निषेध की दीवालों और मान्य रूढ़ियों से विशेष रूढ़ियों और अन्ध विश्वासों से परे, केवल और मोक्ष के पलड़े से दूर आदर्श और प्राकृतिक रूप में देखा है । गोदान में प्रेमचन्द सेवा प्रेम चन्द्र के आदर्शों के पूर्ण रूप है। वे कहते है," मैं प्रकृति पुजारी हूँ, और मनुष्य को उसके प्राकृतिक रूप में देखना चाहता हूँ, जो प्रसन्न होकर हँसता है,दुःखी होकर रोता है और क्रोध में होकर मार डालता है।... जीवन मेरे लिए आनन्द मय क्रीड़ा है सरल आनन्द जहाँ दुःख,ईर्ष्या और छल के लिए कोई स्थान नहीं ... जहाँ जीवन है,प्रकाश है प्रेम है,वहीं ईश्वर है। और जीवन को सुखी बनाना ही उपासना है। और मोक्ष है ।[1]
प्रेम चन्द्र ने गांधी के सिद्धान्तों को पूर्णतः स्वीकार नहीं किया । उन्हें मनुष्यता का स्थान धर्मों से अधिक शिक्षणीय है। डा.राम चन्द्र तिवारी का कथन है," गांधी के प्राकृतिक सौन्दर्य को विकृत करने में अज्ञान,अंध विश्वास वेदमार्ग,निरर्थक दैन्य,आडम्बर और सामूहिक प्रमाद कारण है । उन्हें दूर करके प्रेम, सहयोग, सेवा और समता के आधार पर गांवों को स्वर्ग बनाया जा सकता है। प्रेम चन्द्र का यह विश्वास अंत तक बना रहा। वे संसार को ईश्वर का विराट रूप मानते है, संसार से कटकर एकान्त साधना की बात उनके लिए एक प्रकार की पलायनवृत्ति थी । वे जीवन में उद्योग अध्यवसाय और कठोर परिश्रम के द्वारा उन्नति का पथ प्रशस्त करना चाहते थे । उन्हें मनुष्य मात्र, प्राणिमात्र से गहन सहानुभूति और आत्मीय सम्बन्ध था । इसीलिए उनके दुःखे हुए गरीब-अमीर सभी के प्रति उनकी सहानुभूति पाते है ।"[2] उनमें एक महान आचार के सभी गुण विद्यमान थे,। डा. राम चन्द्र तिवारी लिखते है," वर्णित मत वैषम्य, हिन्दू मुस्लिम समस्या, किसान जमींदार, मंदिर, स्त्रियों की शिक्षा, शिक्षा -विकास,अछूतों का प्रश्न,महाजन और व्यापार की समस्या, प्रान्तीयता और राष्ट्रीयता,हिन्दी और उर्दू आदि जितने भी प्रश्न उनके सामने थे, सभी के सम्बन्ध में उन्होंने उदार और प्रगतिशील विचार व्यक्त किये है, उनका दृष्टिकोण निरंतर परिवर्तनशील रहा है।

1-गोदान पृष्ठ- 20। प्रेम चन्द्र ।
2-हिन्दी का गद्य-साहित्य पृ0-292 डा.राम चन्द्र तिवारी ।

फलतः अनेक महत्वपूर्ण प्रश्नों पर वे आज के प्रगतिवादी विचारों से भी आगे हैं। अपनी इस महत्ता,मौलिकता,उदारता,मानव-प्रेम, व्यापक सहानुभूति, प्रगतिशील दृष्टिकोण और मानव मनोविज्ञान की परख आदि विशेषताओं के कारण वे सदैव अमर रहेंगे। •।।।

।-हिन्दी गद्य साहित्य-पृष्ठ-२१३ डा॰ रामचन्द्र तिवारी ।

प्रेम चन्द्र के तेवर तथा उपन्यास में तुलना देखा होती है परन्तु पहली बार में तेवरात्मक बनाती है । रंगभूमि की सन्दु,सोफिया बाद्दी आधुनिक चिन्तनकला में जुड़ी है। वे देश के स्वाधीनता सम्बन्ध में सहयोग करती है। पुरुष के एकाधिकार को अस्वीकार करती है । ज्ञान की चाहना आधुनिक प्रेमी है । पुरुष पुरुषित का सुकोमल बन जाता है। वह उनका सुधार करती है। वह अनपढ़ता जाकर अपने पति को सुधारने का प्रयास करती है। कर्मभूमि में सुखदा और नसीमा मजदूर आन्दोलन में सहयोग करती है। और उनका नेतृत्व करती है। गोदान की धनिया होरी की सलाहकारी है और वह शोषण का विरोध करती है। गबनी की जुहारलादी प्रवृत्ति से सम्पन्न है। इस प्रकार प्रेम चन्द्र के उपन्यासों की नारियाँ सुधारवादी है, स्वाधीनता सम्बन्धी कार्यक्रमों,में अग्रसर है। वर्मा जी के उपन्यासों की नारियाँ सम्पूर्ण देश के स्वतन्त्रता की उन्नायक है। और देश में सम्पूर्ण सुधार करती है। वे देश की उन्नति के लिए अनेक ठोस योजनायें बनाती है ।

-: नारी की ओर जयशंकर प्रसाद :-

जय शंकर प्रसाद ने कुल तीन उपन्यास लिखे हैं, कंकाल और तितली तथा इरावती अधूरा। इनी पात्रों में पारिवारिक तिरोरी, परिस्थिति, मुक्ता, लोरिथी, इन्दु, अच्युत, लतिका, इरावती माता, किसी की विभिन्न समस्याएँ सामने आती हैं। कंकाल में समाज की कपटी, प्रवंचक धार्मिकता तथा खोखली नैतिकता पर गहरा व्यंग्य हुआ है। आदर्श सामाजिक व्यवस्था के बीच जिसका भयानक शोषणपन है को प्रसाद ने प्रकाश कर दिया है। प्रसाद ने आदर्श प्रधान स्थिति से मुक्त नारी के प्रतिपूर्ण आदर्श प्रकट की है। इनी पात्रों का चित्रण सफलता की रेखाओं से किया है। तारा का चरित्र नारी जीवन की पिपासा और उत्कटता का प्रतीक है। भारतीय नारी पिता है आधार है, वह परिस्थिति होती है किन्तु अपने स्त्रीत्व की रक्षा करती है। वह कहती है,"मैंने कभी कल्पना भी नहीं की थी कि तुम्हारी सेवा करूँगी। कभी मैंने स्वप्न में भी, तुम्हें छोड़कर इस जीवन में किसी से भी प्रेम नहीं किया। और न उसे मैं अनुचित ही। वह तुम्हारी प्रेम-भिखारिनी, वैसे की भीख नहीं माँग सकती और न वैसे के लिए अपनी पवित्रता बेच सकती है।" इतनी उच्च भावनाओं को संजोकर रखने वाली वह नारी कितनी आदर्श है, उत्कटता कोई स्त्रीत्व नहीं। यह पिपासा की एक कुलबुलाहट है। आज वह पुरुष प्रकृत अपवित्र, हीन और आर्यों को भला है कि वह नारी को वहन के लिए नहीं देख सकता। तारा का यह प्रश्न एक कुशोती है,"किसलिये, मैं दया की पात्री बन कठिन जीवन बिताना चाहती हूँ, मैं किसी के पास इतनी निःस्वार्थ स्नेह सम्पत्ति को छोड़ दे सके।

चारित्रिक पतन होने पर भी नारी चारित्र पवित्रता और ममता से हीन है। किशोरी चरित्र दृढ़ है। चरित्रहीन है परन्तु उसका मातृत्व अपराजेय है। वह कहती है,"जाओ परन्तु उसके लिए मैंने तब कुछ को दिया है जो तुम्हीं ने मुझे हीन किया जो केवल जाओ, जाओ, सन्तान करो, कुल गौरव महारानी बन जाओगे, तुम्हें मुझसे ले सकने से और तुम्हारे को भी कलंक कुछ कर के उन्हें दर्शन देते हैं। पर मैं हूँ, इसी चारित्र मेरा यह अन्य नहीं, मैंने जो पाप

बटोरा है, और ही मेरी गोद में फेंको जाओ। पुरुषोपम है, नारी है, बालुक है, किशोर है। उन पर विश्वास नहीं किया जा सकता। विश्व के नारी की विश्वास सत्पुरुष की सर्वोच्चता देखी जा सकती है।

तिब्बती में क्या सुख चाहिए नहीं है। जीवन की यथार्थवादी दृष्टि सच्ची साफ है। प्राकृतिक सुन्दर चित्रों को अभिव्यक्त करने में प्रसाद की प्रवृत्ति रही है। मान्यताओं पर लेखक ने स्पष्ट टिप्पणियाँ की है। सम्मिलित परिवार की प्राचीन परम्परा आदि आज अनावश्यक है। परन्तु नैतिक धर्म तथा शिल्प आदि की दृष्टि से तिब्बती अपने में पूर्ण एवं सफल कृति है।

तिब्बती बड़े बड़े जमींदारों के घरों का आन्तरिक दर्शन कराती है। वहाँ प्राचीन लोगों तैयार पलते हैं, वहाँ आर्थिक लाभ के लिए ? अन्तर्विद्रोह की ज्वाला धधकती है। और वहाँ पिसा-पिसा भीतर ही भीतर रोग लाती है। तिब्बती प्रकृति की स्वच्छन्द गोद में लोग लेती हुई विश्व मानवता का चित्र अभिव्यक्त करती है। उसके गाँव इसी मानवता के प्रतीक है। पाश्चात्य एवं भारतीय सांस्कृतिक जीवन का समन्वय भी तिब्बती में व्यक्त हुआ है। प्रसाद ने बैरा को भारतीय तैयारों की ओर मोड़कर भारतीय आदर्शों की ओर अपनी अटूट आस्था प्रकट की है। तिब्बती में विधवा-जीवन, अवैध प्रेम, वैधव्यपूर्ण सर्वोच्चता तथा सरकारी कर्मचारियों की निरंकुशता आदि अनेक प्रासंगिक समस्याओं का चित्रण किया है। प्रसाद सुधारवादी दृष्टिकोण लेकर सामने आते हैं। रामनाथ और घटराज के आदर्श-चरित्रों में कल्याणी का अभाव है। दोनों के प्रयास से नीरा कोठी में अवतरण हुआ। वही बैंक का प्रबन्ध होता है। वही गाँव की पाठशाला आ जाती है। मधुवन और तिब्बती प्रेम सूत्र में बँध जाते हैं। आत्म-पूर्णता अपना साथ हुआ पूर्णता है। मधुवन उसे पा जाता है यदि सरकारी अपूर्ण आकांक्षाओं को जीवन-युद्ध में बाधा देती है तो तिब्बतियों का शरण लेते होगा। प्रसाद की प्रवृत्ति प्राकृतिक सुन्दर चित्रों में रही है। उन्होंने मान्यताओं

पर स्पष्ट टिप्पणियाँ की है । सम्मिलित परिवार की प्राचीन परम्पराओं आज आवश्यक है । प्रसाद ग्राम सुधार की आवश्यकता पर बल देते हुए कहते है," मेरी लालसा है कि गाँवों का सुधार होना चाहिए । कुछ पढ़े-लिखे सम्पन्न और स्वस्थ लोगों को नागरिकता के प्रलोभनों को छोड़कर देश के गाँवों में बिखर जाना चाहिए । कच्चे सरल जीवन में जो नागरिकों के संसर्ग से विकार हो रहा है, विश्वास और आनन्द का प्रचार करना चाहिए।"

हैरावती में कुछ स्थान मिश्र,यूनानमिश्र,अग्निमिश्र कालीन के ऐतिहासिक पात्र है। कालिन्दी,हैरावती,अमृत,भक्तिमाता आनन्द में कल्पित पात्र है । प्रसाद ने ऐतिहासिक तथ्यों को कल्पना की तूलिका से भावना के रंगों में चित्रित किया है। इस दृष्टि से यह उपन्यास सफल है। लेखक का विचार है कि प्रसाद को अधूरा छोड़ गये । विनोद शंकर व्यास लिखते है "एक दिन सन्ध्यासत्र में उन्होंने कहा था कि सब लेखक महोदय मेरे हैरावती उपन्यास को पूरा करना चाहते है, सब लोग उसका नाम जानने के लिए उत्सुक हो उठे। प्रसाद जी ने बताया। उपन्यास सुनते ही सब हँस पड़े। मैंने कहा अपनी रचनाओं को आप ही पूरा कर सकते है।

वर्मा जी बुन्देलखण्ड के उपन्यासकार है। उन्होंने बुन्देलखण्ड के राजाओं के राजकालों का वर्णन किया है। उनके शौर्य और पराक्रम को दिखाना ही मेरा उनका उद्देश्य हो। बुन्देलखण्ड की नारियाँ वीर है,योद्धा है। वे शत्रुओं का सामना कर सकती है। पुरुषों से युद्ध ही नहीं कर सकती उन्हें परास्त भी कर सकती है, वे युद्ध में पुरुषों का सहयोग दे सकती है। उनमें राष्ट्रीयता,सामर्थ्यता,सेवाभावना कूट कूट कर भरी है। प्रसाद पूरे राष्ट्र के हितैषी है वे भारत राष्ट्र का सुधार करना चाहते है,भारतीय संस्कृति के वे पोषक है, उनकी नारियाँ भारतीय संस्कृति से प्रभावित है। भारत के पूर्व भारतीय संस्कृति का प्रचार प्रसार करने के आकांक्षी है । दोनों ही उपन्यासकारों की नारियाँ प्रभावशील और स्वतंत्र है। उनमें लज्जाशीलता देखने को नहीं मिलती। वे सब्य बनती हुई भी उनकी प्रकृतिक सामर्थ्य और सत्यों के प्रति प्रयुक्त है। प्रसाद के उपन्यास में गाँधीवाद का प्रभाव है और उन्होंने नयी समस्याओं को सामने रखकर उनके सुधार के लिए अपने सुझाव

दिये हैं । ऐसा प्रतीत होता है कि उन्होंने नये युग का निर्माण करना चाहा हो। परन्तु वर्मा जी ने भारत के अतीत की गौरव गाथा को अपने अन्थालों में चित्रित किया है ।

डा. राम चन्द्र तिवारी प्रसाद के सम्बन्ध में लिखते हैं,"भारतीय संस्कृति,धर्म और दर्शन के कुछ तत्वों की मार्मिक व्याख्या सुदूर अतीत से चली आती हुई भारतीय चेतना की अन्तर्वर्ती रहस्यमय को लक्षित करके उसका आधुनिक युग के सन्दर्भ में विशेषकर मानव चरित्र के विविध गुप्त एवं जटिल पक्षों का उद्घाटन,आधुनिक भारतीय समाज के शोषण का चित्रण,प्रेम के उदार रूप की प्रतिष्ठा,सौन्दर्य की मोहक व्यंजना,इतिहास के अनेकों में से मार्मिक एवं प्रेरक प्रसंगों का चयन,राष्ट्रीय गौरव की प्रतिष्ठा,नारी के व्यक्तित्व में मातृत्व,कुल-वधू ,त्याग और शक्ति और शौर्य तथा उस युग प्रपंच,ईर्ष्या,विद्वेष की विरोधी धाराओं का कभी आत्म आत्म और कभी पर आत्म मुक्ति प्रभृति और मानव के शौर्य और सहयोग का प्रभावोत्पादक अंकन, विपत्ति के विषाद और मानवीय प्रबल दोषों के संयोग से मानव के उत्थान पतन का चित्रण,सांस्कृतिक उपादानों को आध्यात्मिक महिमा से मंडित करने की अद्भुत क्षमता, अमूर्त भावनाओं और मनोवृत्तियों को मूर्तिमत्ता करने की क्षमता, प्रत्यक्ष और गोचर के परे रहस्यमयी सौन्दर्य तत्व का निरूपण आदि अनेक विशेषताओं के लिए प्रसाद चिर अमर रहेंगे।"[1]

1-हिन्दी का गद्य साहित्य-पृष्ठ 324 डा0 रामचन्द्र तिवारी ।

-मुल्कराज आनंद और यशपाल :-

यशपाल भी साहित्य को सोद्देश्य रचना मानते हैं। अपनी दृष्टि में "उपन्यास, आदर्श, और विचारों की आकर्षक अभिव्यक्ति या विचारार्थ समस्याओं की ओर आकर्षक ढंग से ध्यान खिंचाना ही साहित्य है।"[1] यशपाल कला-कला के लिए, वाले सिद्धान्त को नहीं मानते। उनके अनुसार कला मात्र के लिए नहीं साहित्य हो सकता है जो विचारशून्य हो, यदि जीवन सत्य है और कला जीवन की आत्मा की अभिव्यक्ति है तो कला सत्य की कसौटी पर खरा क्यों नहीं रह सकती।"[2] उनका विश्वास है कि आज साहित्यकार को समाजवादी बनना या सर्वहारा। समाजवादी ही आधार परिष्कृत और शोधित है। उनके मुख्य उद्देश्य साहित्यकार का धर्म है। यशपाल प्रगतिवाद के समर्थक और उन्नायक हैं। यशपाल प्राचीन मान्यताओं एवं रूढ़ियों के विरोधी हैं और नये सन्दर्भ के अनुकूल नवीन विचारधारा के समर्थक हैं। वह नवीन विचारधारा मार्क्सवादी जीवन दर्शन है। उन्होंने दादा कामरेड में, "पूँजी वाद गांधीवाद, और समाजवाद के सत्य की खोज की परिस्थितियाँ, व्यक्ति, और धारणाओं में सामन्य था"[3] दूसरे का प्रयास किया है, दादा कामरेड की प्रेम-कथा में, विदेशी वादों की अपेक्षा विप्लवात्मक सक्रिय प्रवृत्ति है।"[4] प्रेम का प्रेम हरेक को प्रेरणा देता है और जगाई हुई ज्योति की रक्षा की चेष्टा भी करता है। इसलिए अपनी जिम्मेदारी आर्य है। धन्धा धन्धा की प्राण रक्षा के लिए उनके साथ के घर से जाती है किन्तु दादा उसे शरण नहीं देती। इस उपन्यास में लेखक ने कम्युनिस्ट पार्टी तथा उसकी नीति की समीक्षा और सहानुभूति देनी चाही है। डा० धन्धा अपनी पत्नि राय के आचरण को उपहास पूर्ण स्वीकार करता है और मजदूर आन्दोलन का समर्थन करता है। यह नवीन विचारधारा सामाजिक चेतना का द्योतक है। दिव्या में ऐतिहासिक वातावरण

1-धारा-धारा में धारा पृष्ठ- 13.
2-धारा-धारा में धारा पृष्ठ- 20.
3-दादा कामरेड की भूमिका -
4-दादा कामरेड पृष्ठ-6 यशपाल ।

के कारण आश्रम को छोड़कर चले जाने को प्रतीत होता कि पुरातनीय दृष्टिकोण के आधार पर नारी जीवन की सार्थकता का विश्लेषण अत्यन्त सीमित होता है। लक्ष्मण-सूक्ष्म के कौतुक मार्गीय सेवकों को पाने की लालसा दिव्या अपने मन के सीमित छत्रमहरी केन्द्रों-सुख प्रलोभ को प्यार करती है। शिवपुत्रों को वह प्राप्त नहीं कर पाती। लक्ष्मण का मुख त्याग करती है। अन्तर चलना से पराजय पुनः सहित मथुरा में पुनः पर आक्रमण आक्रमण करती है। मथुरा की राजनीति रक्षणा उसे मना लेती है। दिव्या के प्राण बच जाते हैं। किन्तु उसके पुत्र शत्रुघ्न की मृत्यु हो जाती है। दिव्या दिव्य प्रेम की छाया में शत्रु मन्त्र मन से विचलित होती है। और मन की आकांक्षा में जीव होकर जीवन यापन करने लगी। सूक्ष्म की राजनीति मस्तिष्क अपनी उत्तराधिकारिणी की खोज में मथुरा पहुंचती है। और शत्रुघ्न रानी अपनी शिष्या दिव्या को जीवित पाकर आश्चर्य और उल्लास से भर उठती है। दिव्या मन्त्र खोल जाती है। और मस्तिष्क उसे अपने स्थान पर अभिषिक्त करना चाहती है। अभिमान वर्म निर्णय देता है-" मुझ से दिव्य कन्या सेवा के आसन पर बैठ कर्तव्य को अस्वीकार नहीं कर सकती।" दिव्या अभिमान की वेदी से उठकर पुरुषार्थ नगर के मार्ग पर चल-मार्ग में आकर बैठ जाती है। शिवपुत्रों लक्ष्य पीड़ित दिव्या को शिव वर्ग वेदीक्षित कर निर्माण का चिन्तन पुनः प्रारम्भ करना चाहते हैं। दिव्या यह जानकर कि "मैं नारी का कर्म निर्माण नहीं दृष्टि है उन्हें पूरा कर देती है। दिव्या अर्द्धनगर में वह उठती है " आज से आर्य, के लेख की दृष्टि में यह नारी जीवन की सार्थकता है। यह सामान्य मानवीय अनुभूति के आधार प्रमाण के स्तर पर मनुष्य जीवनधारिणी बनकर अपनी सार्थकता प्राप्त कर सकती है। दिव्या महाराज की अमर कृति है। इसमें महाराज की कला चरम पर है। महाराज का चौथा उपन्यास पार्टी कमरेड है। पार्टी कमरेड का उपन्यास पहला खण्ड महारिया बम्बई व ऐसीन सीमित मनमा उच्चतम कृतियाँ है। नारियल मीरा दिलों स्वागत और कम्युनिस्ट दल की व्याख्या है। मानसिया मीरा को आकृष्ट करने के प्रयत्न में नयी उलझी और आकृष्ट हो जाता है। जोशी के लोकी मीरा की व्याख्यानी करते उसे अपमानित करते हैं। इस तरह उपन्यास का कथानक कुंठित है। लेखक ने जोशी और कम्युनिस्ट दल की नीतियों और कार्यप्रणालियों का तुलनात्मक विवेचन किया है। अपना उप-

[illegible] व्यक्तिवाद को प्रधान किया है। राजनीति और सोमांस का समावेश इस उपन्यास में हुआ है। किन्तु आज सोमांस [illegible] और [illegible] है। पात्रों का आचरण युग के चारित्रिक परिवर्तन का [illegible] मनोवैज्ञानिक आधार हो गया है। पात्रों आमरेश में पात्रगत अपने उद्देश्य की पूर्ति में अधिक लगे हुये हैं।

मनुष्य के [illegible] संघर्ष का पात्रगत उपन्यास है। इस उपन्यास में प्रधान व्यक्ति सोमा और [illegible] का है। उनके साथ [illegible] मनोरमा और आमरेश मुख्य अन्य पात्र हैं। सोमा अपनी पिपासा [illegible] मुक्ती है। [illegible] की भारतीय [illegible] से मुक्त होने के लिए वह [illegible] के साथ भागती है। पुरुष के साथ [illegible] उसकी [illegible] का शिकार होती है। आमरेश मुख्य सोमा के प्रति [illegible] होकर और अपने [illegible] की [illegible] में स्थान [illegible] है। सोमा और [illegible] [illegible] में एक [illegible] रखने वाले हैं। [illegible] सोमा को [illegible] वाले दो [illegible] की [illegible] [illegible] है। [illegible] का दूसरा [illegible] [illegible] बनाई [illegible] है। आमरेश मुख्य की [illegible] के पार्टी [illegible] में [illegible] है। मनोरमा की [illegible] के [illegible] [illegible] से [illegible] [illegible] आती है। सोमा [illegible] [illegible] में [illegible] आती है। और [illegible] [illegible] [illegible] होती है। इस उपन्यास के [illegible] का आधार आज [illegible] है। [illegible] [illegible] हो गये हैं। गरीब [illegible] के [illegible] जीवन, [illegible] के [illegible] आधार, [illegible] परिवार की [illegible] [illegible] [illegible] जीवन, [illegible] जीवन और [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] है। [illegible] ने मनुष्य के [illegible] [illegible] की [illegible] [illegible] की है।

[illegible] उपन्यास "[illegible]" है। यह एक [illegible] उपन्यास है। इतिहास का [illegible] [illegible] है कि [illegible] [illegible] [illegible] पर आक्रमण [illegible] है। और [illegible] युद्ध के बाद [illegible] युद्ध न [illegible] की [illegible] [illegible] है। उपन्यास का आरम्भ [illegible] [illegible] का [illegible] है। युद्ध में [illegible]

[illegible] महाराज जयेश अपनी कन्या । अभिज्ञा को लीपकर वर्ग
[illegible] करते है। महाराज [illegible] वर्ग से दीक्षित होकर अभिज्ञा
का पालन करती है। अभिज्ञा मात्र की गोद में किसी के उतारो मत,
किसी ने छीनो मत,किसी के मारो मत,की शिक्षा प्राप्त करती है।
अभिज्ञा [illegible] : आदर्शवाद करता है और जैसलपुर के दास का पुत्र बालक है।

[illegible] का लेखक उपन्यास "[illegible]" है। यह [illegible] और देश
तथा देश का [illegible] दो खण्डों में पूरा हुआ है। और सन् 1942 से लेकर
1952 ई० तक का भारत अपनी समग्रता में लेखक हो गया है। कथा की
पुरी कथोपपुरी और आती [illegible] करता को साथ लाते है। कथोपपुरी [illegible]
[illegible] में [illegible] करते [illegible] करता [illegible] है। उसमें [illegible],[illegible],और
[illegible] है। [illegible] 1942 के आन्दोलन में [illegible] है। और [illegible] है।
[illegible] से प्रेम करता है। [illegible] गांधीवादी विचारधारा में विश्वास करती
है । [illegible] के [illegible] के [illegible] पुरी की आर्थिक हीनता के कारण विवाह [illegible]
[illegible] कर देते है। [illegible] की [illegible] अधिक [illegible] और [illegible]पूर्ण है।
[illegible] [illegible] [illegible] को प्यार करती है । [illegible] विवाह [illegible] नामक
[illegible] सम्पर्क [illegible] से हो जाता है। [illegible] को [illegible] उसकी [illegible] कर
[illegible] है। [illegible] का [illegible] आशावादी है। यह [illegible] [illegible]
से प्रेरित होकर लिखा गया है। उपन्यास की [illegible] [illegible] पात्रों के व्यक्तिगत
[illegible] [illegible] [illegible], [illegible] [illegible], [illegible] के [illegible] में
उजागर गई है। [illegible] 1942 से लेकर 1952 ई० तक के [illegible] एवं [illegible]
में है । [illegible] [illegible] [illegible] का कथन है," [illegible] से पूर्ण [illegible] का [illegible]
[illegible] [illegible], [illegible] के [illegible] [illegible] का [illegible] [illegible],[illegible] के [illegible]-[illegible]
[illegible],[illegible] के [illegible] [illegible] [illegible] [illegible],[illegible], के [illegible] [illegible]
[illegible],[illegible] का [illegible] [illegible],[illegible] [illegible], [illegible], [illegible] [illegible]
[illegible] का [illegible] [illegible],[illegible] [illegible] [illegible] [illegible], [illegible] [illegible]
[illegible] के [illegible] का [illegible] [illegible], [illegible] [illegible] में [illegible] [illegible] [illegible]
[illegible] [illegible] की [illegible] ,[illegible] की [illegible], [illegible] की [illegible],[illegible]
की [illegible], [illegible] [illegible] [illegible] " में [illegible] हो गया है। [illegible] में

[illegible] विज्ञान पद्धति को लेकर लिखा गया दूसरा उपन्यास नहीं है।[1]

दुनिया और बारह घन्टे आकाश के नवीनतम उपन्यास हैं। इनमें आकाश का कुछ अर्थ उन आयामों के अनुकूल है। आकाश ने तकनीक में कुछ नये प्रयोग भी किये हैं। बारह घन्टे उपन्यास में तारा लगभग बारह घन्टों का ही है।

1-हिन्दी का गद्य साहित्य पृष्ठ-432 राम चन्द्र तिवारी।

-: मुल्कराज गाल धर्म और क्रोध :-

क्रोध के प्रसिद्ध उपन्यास "बेहर एक जीवनी" प्रथम भाग,"बेहर एक जीवनी द्वितीय भाग,नदी के तीर" और अपने अपने अजनबी" है। प्रतिकूल परिस्थितियों के कारण आप अन्तर्मुखी होगये है। मानसिक परिष्कार और नैतिक सौन्दर्य बेहतर आपके व्यक्तिगत जीवन के प्रमुख आधार है। आपने कहा है,"दुनिया में बहुत कुछ बदलना चाहता हूँ, कुछ उखाड़-पछाड़ भी,पर जीवन के प्रति मेरा भाव आक्रोश का नहीं है। जीवन एक विकास का विकृति है और मानवीय सम्बन्ध और भी विकासकर।"[1] जीवन के प्रति उपजा दृष्टिकोण चिन्तन या प्रचारात्मक से सीधा सरोकार का है। वे कहते है,"आधुनिक युग का कोई भी सम्पोषकता जीवन-दर्शन किसी एक व्यक्ति के अध्ययन पर आधारित नहीं हो सकता । वह कई लेखों की कई पुस्तकों के अध्ययन और कई विद्वानों के क्रोध की अभिव्यक्तियों का सामान्य संगठन है।"[2] नवीन मानवतावाद मनुष्य की प्रमुखता स्थापित करना चाहता है। जीवन में सभी भाव मूल्य महत्व का है । वे स्वतंत्रता को परम आवश्यक मानते है। शान्ति और स्वतंत्रता दोनों में से एक को चयन करना हो तो क्रोध स्वतंत्रता को चयन करना चाहेंगे । आपका अभिमत है कि " संस्कृति के विकास के लिए मानवीय स्वतंत्रता अनिवार्य है । अलग सोचने की,भिन्न प्रकार से सोचने की , प्रयोग करने,कुछ करके दिखा पाने तक छोड़कर चलने,क्रोध करने,असहमत होने,अपने ढंग की प्रसन्नता या पीड़ा करने,नाराजी या अनबन देने,बोलने,और न बोलने की स्वाधीनता के बिना न संस्कृति विकास नहीं है।"[3] क्रोध के कथ्यानुभव और शिल्प में नवीनता के कारण देते हैं"मेरा कथाकार को एक तरीका तक मानकर देते है। जो पूर्व चीजों दर्शन नहीं मानते । आपकी

1-आर यू ऐ पद - पृष्ठ- 187 क्रोध।
2-आर यू ऐ पद - पृष्ठ-200 क्रोध।
3-आर यू ऐ पद - पृष्ठ-97 क्रोध।

दृष्टि में जीवन दर्शन के निर्माण में आर्थिक, अर्थशास्त्रीय और प्रकृति की देन कहीं अधिक महत्वपूर्ण है। [1] अज्ञेय की दृष्टि उदार और व्यापक है। वे भौगोलिक,मनोवैज्ञानिक ,दार्शनिक, एवं सांस्कृतिक सभी मूल्यों के प्रति जिज्ञासु है। और सभी को मुक्त मन से स्वीकार करते है वे मानव की स्वतंत्रता के पक्षधर है। उनकी धारणा है कि,"सच्ची कला कभी भी अनैतिक नहीं हो सकती। प्रत्येक मुक्त कला केन्द्र में अभिव्यक्त व्यक्ति के एक नैतिक आदर्श निहित है।"[2] कला की साधना का एक प्रकार या रूप है अर्थात सत्य की उपलब्धि है एवं एक साधना है। सुन्दर उसकी सम्पूर्णता का उपकरण या साधन है। प्रकृति का प्रति आकर्षण का सिद्धान्त और संसार का अस्वीकृति का सिद्धान्त मनोवैज्ञानिक चिन्तन की महत्वपूर्ण उपलब्धियाँ है और इसी कला रचना की मूल प्रेरणा की व्याख्या होती है। सच्ची कला अनैतिक नहीं होती। सच्चे कलाकार के सम्मुख नैतिक अनैतिक का द्वन्द्व ही नहीं रहता। वे अनुरागमय प्रभावी मुक्त के कर्म चित्र को भी अश्लील नहीं मानते। कला साधना का एक प्रकार है अर्थात सत्य की उपलब्धि की एक साधना है। सामान्यतः कला का सम्बन्ध सुन्दर से खोजा जाता है। सत्य से नहीं ,पर महान कलाकृति सत्य सम्पन्न होती है। सत्य एक मार्ग की अभिव्यक्ति है। प्लाटिनस दृष्टिकोण ने स्थापित किया है कि कलाकृति में सम्मिलित मानवीय "सम्पूर्णता"या अपरिवर्तित होकर"है उनके अनुसार अनुभव से परिवर्तित हो होता है, पर अनुभूति कल्पना के सहारे उस सत्य को ग्रहण कर लेती है। यही सत्य में दृष्टिकार के साथ परिवर्तित नहीं हुआ है। उनका मत है कि "कलाकार अभिव्यक्ति व्यक्ति अपनी परिस्थितियों का परिणाम होता है। वह अपने आस पास घटित रहे तत्वों का फल है। अतः कलाकार अभिव्यक्ति व्यक्ति गति मान्य है उनका कथन है कि ,"यह गति आगे की ओर है या पीछे की ओर। प्रगति है या प्रतिगति है या अधोगति है? इसका निर्णय साहित्य के कला के क्षेत्र से नहीं होता, क्षेत्र से केवल इतनी

1-कालजयी पद पृष्ठ- 199 अज्ञेय ।
2-कालजयी पद पृष्ठ- 23 अज्ञेय ।
3-कालजयी पद पृष्ठ- 208 अज्ञेय ।

की प्रेम आती है कि वह गति है, अरोक गति है। [1] गति वाले एक सापेक्ष क्रिया है । अज्ञेय ने प्रगतिवाद या प्रतिवाद करने के प्रयत्न में भौतिवाद को क्या का धर्म सिद्ध किया है । प्रगति किसी भी वाद की सीमा में बाँधा नहीं जा सकता । वाद की सीमा से मुक्त होने की चेष्टा स्वाभाविक है ।

अज्ञेय का व्यक्ति एक अस्तित्व का केन्द्रित और अर्थ प्रवण है । क्या नास्तिक बुद्धिवादी व्यवहार से व्य में हुआ है। शेखर एक क्रांतिकारी के शेखर की दृष्टि वस्तुतः अज्ञेय की दृष्टि रूपवादी और आदर्शवादी व्यक्तित्व की मनोभूमि की तन्मयता पर केन्द्रित रही है। शेखर अतीचारत धर्म का प्रतीक पुरुष है । वह समाज की बोझी सिद्ध हो जाने वाली मान्यताओं के बदले व्यक्ति की स्वतंत्र मान्यताओं की प्रतिष्ठा करना चाहता है । नदी के द्वीप का नायक डा.भुवन व्यक्ति रश्मियों की खोज करने वाला एक वैज्ञानिक है। रेखा एक लज्जावन्त और शिक्षित नारी है जो अपने पति से अलग हो गयी है। गौरा एक ग्राम विधवा नारी है जिसे तेजीस से प्रेम है। अपने दक्षिण भारत में जाकर तेजीस का अध्ययन किया है । वह एक अध्यापिका का जीवन व्यतीत करती है। चन्द्रमाधव रेखा और गौरा दोनों से परिचित है तथा दोनों का प्रशंसक भी है। रेखा और गौरा दोनों ही भुवन की ओर आकृष्ट है। रेखा और भुवन एक दूसरे के निकट आ जाते है। रेखा माँ बनने की स्थिति में आ जाती है। परन्तु भुवन की गौरव की रक्षा के लिए अपने भ्रूण की हत्या कर देती है। रेखा दूसरा विवाह कर लेती है। भुवन और रेखा एक दूसरे से मुक्त जाते है। इस कथा में लेखक ने व्यक्ति के भिन्न वर्ग की पुरुषों का अध्ययन किया है । कथा में प्रेम केन्द्रित मानसिक ग्रन्थियों के सूक्ष्मतम तन्तुओं को सुलझाया है। आलोचकों का कथन है कि नदी के द्वीप का भुवन शेखर ही है। नदी के द्वीप एक सर्वत्र भरी प्रेम कहानी है। अज्ञेय स्वयं लिखते है,"नदी के द्वीप समाज के जीवन का चित्र नहीं है । एक प्रेम के जीवन का है, वास्तव साधारण जन नहीं है एक वर्ग के व्यक्ति है। और वह वर्ग भी शेखर की दृष्टि

---

1. शिवांशु पृष्ठ- 76 अज्ञेय ।

से अज्ञान ही है । मैंने जोड़ी मेरी तरह से यह होगी जाकि कि क्या यह चित्र सर्व का चित्र है,उसका तथ्य चित्र है । मेरा विश्वास है कि नारी के दीप उस समाज का, उसके व्यक्तियों के जीवन का चित्रण यह चित्र है,तथ्य चित्र है। [1] नारी के दीप व्यक्तियों का जीवन चित्र भी नारी है,यह मान कर लक्ष्मेश्वर ने है। इसी क्रियाशीलता से अधिक भावना का महत्व उन्होंने है । रेखा में प्रभावशीलता है पर दीपता नहीं । यह संघर्ष या आत्मज्ञान जरूर पाती है । नारी के दीप की तरह यही उपाधिय आधुनिक नारी के अन्तर्द्वन्द्व की महत्वपूर्ण प्रवृत्तियों एवं भावनाओं का सुन्दर चित्रांकन है । श्री नेमिचन्द्र जैन लिखते हैं ,* आधुनिक नारी के व्यक्तित्व के इसी विविध एवं इसकी गहराई और सूक्ष्मता के साथ अपने आगे प्रकाश का तथा और चित्र उसे अभिव्यक्त का तथा अपने आप में एक बड़ी सार्थक-चित्रण उपलब्धि है । [2]

अज्ञेय का तीसरा उपन्यास * अपने अपने अजनबी * है । इसमें मृत्यु-कथा के सन्दर्भ में मानव मन का चित्रांकन है। पुस्तक के आरम्भ पृष्ठ पर लिखा है,* मृत्यु को सामने पाकर कैसे प्रियजन भी अजनबी हो जाते हैं । अंतरंगता एक बहाने हुए जो इस परम स्थिति में मानव का मानव तथा परिवार उभर कर आता है। उसका प्रलाप, उसका अदम्य साहस और उसका चिरन्तन अतृप्त प्रेम भी वैसे ही और उतने ही अकस्मात ढंग से क्रियाशील हो उठते हैं जैसे उसकी विभिन्न प्रवृत्तियाँ ।* [3] उपन्यास में कुल तीन अध्याय हैं और तीनों में तीन मुख्य स्त्रियाँ हैं। प्रथम में वर्षा से ढके-हुए एक मकान का,दूसरे में बाढ़ की विभीषिका में लगभग अर्धनग्न नारी के सुख

1- आत्मनेपद पृष्ठ- 75 अज्ञेय ।
2- अधूरे साक्षात्कार पृष्ठ- 26 नेमिचन्द्र जैन ।
3-अपने अपने अजनबी आवरण पृष्ठ- अज्ञेय ।

पर चले एक आधार का और तीसरे में जर्मन लेखिकों से
प्रभावान्वित एक आधार का चित्र है तीनों में ही एक भव्य व्यापकता
है। मनुष्य मुक्ति से महत्तर भी यदि स्वतंत्रता की अनिवार्यता कर
सके तो उसके चरित्र की सार्थकता है।

अज्ञेय ने हिन्दी उपन्यास को अन्तर्राष्ट्रीय धरातल पर
प्रतिष्ठित किया है। अज्ञेय ने अपने शेखर को 'सेन्ट्रल्स', के,
'ज्यां क्रिस्तोफ' से प्रेरित स्वीकार किया है। उन्होंने जिन पात्रों
की सहानुभूति दी है वे एक विशिष्ट वर्ग के प्राणी हैं।

-: सूर्यकान्त नाथ शर्मा और निराला :-

सूर्यकान्त त्रिपाठी "निराला" के प्रसिद्ध उपन्यास हैं, कुल्ली भाट, बिल्लेसुर बकरिहा, कुछ की कीमी, बहुरी उमार निराला ने सामाजिक प्रवृत्ति नारी जीवन की प्रवृत्ति, नारी जीवन की उच्चता तथा रहस्यमयता का चित्रण किया है इन के विद्रूप व्यंग्य की अभिव्यक्ति के साथ साथ सामाजिक जीवन की कुरूपता का भी सर्वत्र अपने उपन्यासों में चित्रण है। उनके उपन्यास कुलस्वातन्त्र्यवादी भाव भूमि पर लिखे गये हैं। उनकी प्रगतिशील विचारधारा के गुण मिलते हैं।

उपन्यास में कुलीनविवाह की समस्या उठाई गयी है। वे विधवा विवाह को किसी प्रकार की हीन नहीं समझते, कला दृष्टि पूर्ण है। वह निराला राजकुमार जैसे कुलीन व्यक्ति से बताते हैं उनका में कर्मचारियों की वासना और अत्याचार, नारी की विवशता, किसानों की निर्धनता और मजदूरों की दैन्य सभी उजागर हुआ है। नारी की विवशता और उच्चता का चित्रण मनोवैज्ञानिक हुआ है। इनमें निराला का प्रगतिशील दृष्टिकोण स्पष्ट है। विवाह में पात्रीय जीवन की तिरोभूता, सामाजिक पीड़ित कुलसमाज का उदार दृष्टिकोण, विधवा की समस्या, कर्मचारी का अत्याचार भी सहजता के साथ चित्रण मिला है। उपन्यास का आरंभ विवाह की दृष्टि है। प्रभावती वैयक्तिक दोषों से बहुरी उमार, कुल्लीभाट, और बिल्लेसुर बकरिहा में निराला का सर्वहारावादी दृष्टिकोण उभर कर आया है।

बहुरी-उमार, कुल्लीभाट, और बिल्लेसुर बकरिहा के अतिरिक्त उनके प्रायः सभी उपन्यास स्त्री पात्रों के नाम पर हैं, उनकी कृतियों में स्त्रीपात्रों की पारिवारिक विशेषताओं की व्यंजना हुई है। सभी उपन्यास पात्र प्रधान हैं। वे व्यंग्य प्रिय हैं। और कुल जीवन के अभिलाषी हैं, वे सामाजिक जीवन की विकृतियों वैयक्तिकता के विरोधी हैं। उनकी कला चेतना दोषपूर्ण है वे नैतिकता और सर्वहारावादी प्रवृत्तियों को महत्व देते हैं। वे दोषपूर्ण विचार से ऊपर सामाजिक कर्तव्य की ओर उन्मुख हुये हैं। डॉ नैना प्रसाद सारस्वत लिखते हैं" उपन्यास के क्षेत्र में और प्रभावती के चित्रण में बहुधा निराला की जो अभिव्यक्ति दोषपूर्ण दृष्टि बहुत क्षीण पड़ती गयी है। और वे बहुत अपना मन को छोड़कर जीवन के

के साथ व्यवहारिक धरातल पर आज हो गये है।[1] बहुरी जयर,कुलीमाट और चिलमेहुर कविता को लेकर प्रगतिशील साहित्य का बहुत मानते है।

डा॰ नगेन्द्र ने चिलमेहुर कविता की कला को का प्रचार पक्ष है, प्रगति की ओर कुछ तीखे पर भी लेकर न वहीं सीधा के लिये का उपयोग करता है,न वहीं चिलमेहुर की रचनात्मक शक्तियाँ अथवा उनकी सामाजिक चिन्तनकी का प्रचार ही करता है, और न वहीं शोषक वर्ग का व्यापिन शोषित शोषित वर्ग के का प्राणी के लिए कला का ही तैयार करता है। इन सभी तत्वों को अपने बड़े साथ ढंग से अनुभव कर ही चिलमेहुर के व्यक्तित्व में ही सम्मिलित किया है।व्यक्ति का चित्र व्यक्तिगत होने से ही वो सफल है।[2] कुलीमाट,चिलमेहुर कविता का वही पद्धति की आज कृतियों में चित्रण की निर्वैयक्तिक होने देखने को मिलती है। डा॰रामकुमार भ्रमरी लिखते है,"चित्रण की निर्वैयक्तिक सौंदर्य दान्य दृष्टि वस्तुओं को परखने की सारी दृष्टि और प्रागीय परिवेश एवं व्यापीय रैखा को सजीव करने की अद्भुत क्षमता आदि विशेषताओं ने उपलब्धि को उच्च बना दिया है।[3] भाषा की सोपानता उसकी अभिव्यक्ति क्षमता,उसमें मर्मस्पर्शी शब्द गुम्फन के लिए अलंकारों शब्द छाया का बोध चित्रण की अपनी विशेषताएँ है ।

गुन्दाराम शास्त्री ने वैज्ञानिक सहचारियों की व्यापकता,स्वतंत्र-विचारों उनके योगदान,पुरानी धारणों से टकराव लेने वाले उनके वर्ग आकर्षण दिया है। परन्तु उनके नारी पात्रों की चरित्र में अतीत का स्वर अधिक रहा है। परन्तु चित्रण स्वतन्त्र प्रेमी है। उनके नारी पात्र आधुनिक युग की नई समस्याओं से अनुशासन लाने में प्रखर एवं मौलिक विचारधाराओं की प्रतिमा है। वे अधिक स्वाधीनता प्रगतिशील,और शोषित वर्ग एवं प्रकृति के सहज आकर्षणों की पक्षधरी है। उनके नारी पात्र आधुनिक युग की समस्याओं से अन्तर्द्वन्द्व उनके सुख दुःख की चित्रण में प्रकार है ।

1-हिन्दी काव्य साहित्य पृष्ठ- 85 नंद दुलारे वाजपेयी ।
2- विचार और विश्लेषण पृष्ठ-134 डा० नगेन्द्र ।
3-हिन्दी का गद्य साहित्य पृष्ठ-316 रामचन्द्र तिवारी ।

वृन्दावन लाल वर्मा और भगवती चरण वर्मा

भगवती चरण वर्मा ने चित्रलेखा, भूले बिसरे चित्र, टेढ़े मेढ़े रास्ते, प्रश्न और मरीचिका, सबसे बड़ा राजा, गीतांजलि, सामर्थ्य और सीमा, रेखा, तो फिर नहीं आई, धुंधला, धुंधला, पामल आदि उपन्यास लिखे। अपने लिखने, सो वाँच, आखिरी दाव, उपन्यासों की उन्होंने रचना की। भगवती चरण वर्मा, की अन्य कृतियों में उल्लेखनीय है, कन्टाक्लोट, सो वाँचे और राख और चिनगारी कहानी संग्रह।

अनेक टेढ़े-मेढ़े रास्तों से गुजरता हुआ उपन्यास जो उन्हें अपने लक्ष्य और लक्ष्य की खोज में वाँचे कहाँ ले गया। वे अपनाही में भी कभी पूरी तरह और निरन्तर के लिए अपने को बाँध नहीं पाये। वे अपने आप के प्रति इतने ईमानदार नहीं रहे कि जीवन संघर्ष की ही कभी कोशिश नहीं की।

चित्रलेखा तीन वर्ष नहीं सम्पन्न उपन्यास है पाप-पुण्य की मानसिक व्यथा की कहानी है। आगे और टेढ़े मेढ़े रास्ते आदि बाद के उपन्यासों में इनका प्रकृतिवादी और मानववादी रूप उभर कर आगे आया है। टेढ़े मेढ़े रास्ते में राजनीतिक और सामाजिक पृष्ठ और भूमि में प्रायः मध्यवर्ग, परिवारिक पात्रों के माध्यम से लेखक यह दिखाने की चेष्टा करता है। कि समाज की दृष्टि में और उदात्त मान पड़ने वाली भावनाओं के पीछे जो प्रेरणायें हैं वे और कुछ नहीं केवल अतीत सामन्त मार्यादा, और लोभ, की अहम मनोवृत्तियों की ही देन है आखिरी दाव यह जुआरी के अहम प्रेम की कथा है और अपने लिखने में नई दिल्ली की मोटर सोसायटी पर व्यंग्य बाण चलाये हैं। इनका सुदृढ़ और मौलिक तथा उपन्यास भूले बिसरे चित्र है। जिसमें अनुभूति और संवेदना की अत्यन्त सजीवता के साथ उन्होंने तीन पीढ़ियों का भारत के स्वातंत्र्य आन्दोलन के तीन युगों की पृष्ठ भूमि में मार्मिक चित्रण किया है।

भगवती चरण वर्मा की अन्य कृतियों में उल्लेखनीय है कन्टाक्लोट, सो वाँचे और राख और चिनगारी है। अपना कुछ का गया, मारकाटता, तिमिरिया आदि।

-: मुन्शीराम शर्मा और जैनेन्द्र कुमार :-

जैनेन्द्र की अधिकांश उपन्यासों में मुक्त हुई है। परख,सुनीता,त्यागपत्र, कल्याणी ,विवर्त, मुक्तिबोध,व्यतीत,अनन्तर, तथा मुक्तिबोध, आदि प्रमुख उपन्यास है। उनके दर्शन,मनोविज्ञान,अध्यात्म और मनोविज्ञान की जागरूकता के साथ सम्बन्ध रखने का श्रेय है। उन्हें वह चन्द्र और रवीन्द्र के बाद्धों में रखकर देखा जा सकता है। उनका अभिमत है कि मनुष्य का सारा विकास सत्य के साक्षात की चेष्टा का परिणाम है। उनके अनुसार मनुष्य की इस सतत चेष्टा के परिणाम स्वरूप जो अनुभूति भलकर निर्विघ्न होकर सामने आया है वही साहित्य है। व्यक्ति और समाज के बीच सामन्जस्य और समरसता स्थापित करने की चेष्टा ने ही मनुष्य की चेष्टा का संस्कार किया है। और सत्य को निर्धारित किया है। उनका कथन है ,"मनुष्य की मनुष्य के साथ समाज को समाज के साथ,राष्ट्र के और विश्व के साथ और इस तरह स्वयं अपने साथ जो एक सुन्दर सामन्जस्यता समसत्ता (समसरता) स्थापित करने की चेष्टा चिरकाल से चली आ रही है। वही मनुष्य जाति की सामान्य सैद्धांतिक निधि की मूल है सम्पूर्ण मनुष्य जीवन जो कुछ उपयोगी,मूल्यवान सारभूत आय है। वह ज्ञान और अज्ञान रूप में उसी एक सत्य चेष्टा का प्रतिफल है। इस प्रक्रिया में मनुष्य जाति ने नाना भारतीय अनुभूतियों का योग किया है। [1] व्यक्ति और समाज के बीच सामन्जस्य और समरसता स्थापित करने की चेष्टा ने ही मनुष्य की चेष्टा का संस्कार किया है। और सत्य को निर्धारित किया है। सत्य की धारणा सार्वभौमिक वैज्ञानिक और साहित्यिक सभी की होती है। जैनेन्द्र के अनुसार साहित्य का सत्य अनुभूति का चित्रण होकर ही पूर्ण होता है। इसलिए साहित्य का सत्य अधिक पूर्ण और ग्राह्य है। वह सभी सम्भव है जबकि उसमें प्रेम और विनय हो। अंतर निहित है। सत्य,शिव और सुन्दर की आराधना में अंतर ही बाधक है। जैनेन्द्र का कथन है " साहित्य की आंधी का संस्कार जीवन है जो सुखद

1-साहित्य का श्रेय और प्रेय पृष्ठ- 20 जैनेन्द्र ।

ने सुखदा का मेल चाहती और रमेश में मिलकर रखती है । सुखदा का चित्र बुद्धि से सरल है वह साहित्य सरा, शिक्षित सरल 'हृदय छोटा।[1]

जैनेन्द्र की प्रसिद्धि उपन्यासों से आरम्भ हुई है, उनका प्रथम उपन्यास परख है परख में कुल चार पात्र है,-सत्यधन, कटो, गरिमा, और बिहारी । कटो गाँव की एक विधवा बालक है वह पढ़ने के लिए सत्यधन के पास आया करती है। दोनों के बीच अनुराग का कुछ संकेत होता है गरिमा बिहारी की बहिन है। बिहारी के चित्र गरिमा का विवाह सत्यधन से करना चाहते है। कटो का विवाह बिहारी से हो जाता है। कटो का स्वरूप देखकर सत्यधन अपनी हीनता से विचलित हो जाता है ।

"सुनीता" जैनेन्द्र का दूसरा उपन्यास है। इसमें तीन संघर्षयुक्त पात्र है। सुनीता और श्रीकान्त परिणीत है। हरिप्रसन्न, श्रीकान्त का मित्र है । हरिप्रसन्न सुनीता को सुखी पत्नी देखना चाहता है। सुनीता निराशा हो जाती है। हरिप्रसन्न लज्जित हो जाता है। त्यागपत्र जैनेन्द्र का तीसरा उपन्यास है। इसमें मृणाल के अभिशप्त जीवन की कथा कही गयी है। जैनेन्द्र का चौथा उपन्यास कल्याणी है कल्याणी का विवाह कालेराणी से हो जाता है। वे सदा सदा के सम्बन्धों की रक्षा करके कल्याणी द्वारा घर बसाना चाहते है। कल्याणी भीतर से घरेलू से दुखी रहती है। अन्त में गिरती है। डा० महानन्द के बच्चों के प्रति सच्चे प्रेम के कारण कल्याणी उसे अपनी ही समझती है"। किन्तु कालेराणी को ईर्ष्या होती है । वे उसे दुखों से घसीटते है। दूसरा में क्रान्तिकारी जीवन की कथा का आधार बनाया है। दूसरा एक तपस्या करने की लगती है, उनका विवाह श्रीकान्त से होता है । वो आर्थिक दृष्टि से हीन है। और इस वैषम्य से परिणीता में दूरी उत्पन्न होती है। हरीश क्रान्तिकारी है। हरीश दूसरा को आदेश देता है कि वह लाल को अपने प्रेम में बाँधकर बचा ले,अन्यथा उसका प्राण

1-साहित्य का श्रेय और प्रेय पृष्ठ- 133 जैनेन्द्र कुमार ।

दण्ड नैनिश्चित है । लाल सुखदा को छोड़कर चला जाता है । हरीश दल भंग कर देता है । श्रीकान्त हरीश के आग्रह पर पुलिस के हवाले कर उसको पकड़वाने के निमित्त घोषित पाँच हजार इनाम ले लेता है। सुखदा कोपति के इस कार्य से ठेस लगती है, वह अपनी माँ के पास रहने लगती है। और अंत में क्षयग्रस्त होकर अस्पताल पहुंच जाती है विवर्त जैनेन्द्र का छठा उपन्यास है। विवर्त के बाद व्यतीत प्रकाशित हुआ। चन्दी अनिता द्वारा दी गयी किसीभी सहायता को स्वीकार नही करती। व्यतीत के बाद जयवर्धन प्रकाशित हुआ। इसमे जैनेन्द्र की कला अरूप की प्रतिष्ठा करने मे सार्थक है। जयवर्द्धन मे कथासूत्र दो स्तरो पर संचालित हुई है। व्यक्तिगत और राजनैतिक। दोनों सूत्रों के केन्द्र में इला है । इला आचार्य की कन्या है। उसका पालन स्वामी चिदानंद के आश्रममें हुआ है । यही जयवर्द्धन से उसका परिचय हुआ है। इला जयवर्द्धन से अनुराग करती है। जैनेन्द्र का नवीनतम उपन्यास "मुक्तिबोध" है जैनेन्द्र की इस कृति में उनके चिन्तन और सृजन के नये आयाम है।

जैनेन्द्र जीवन की बाह्य वास्तविकता को महत्व नही देते । उनके पात्रों मे आन्तरिक संघर्ष मिलता है। डा. रामचन्द्र तिवारी ने इनके उपन्यासों के सम्बन्ध में जो लिखा है उससे इनके उपन्यासों के नारी पात्रों के सम्बन्ध में भी प्रकाश पड़ता है। परख मे कट्टो, सुनीता मे सुनीता, त्यागपत्र मे मृणाल, कल्याणी मे कल्याणी, सुखदा मे सुखदा विवर्त मे भुवन मोहिनी, व्यतीत मे अनिता का संघर्ष पति और प्रेमी के बीच सामन्जस्य ढूढने और पाने का ही संघर्ष है। वह संघर्ष आंतरिक है। आंतरिक इस अर्थ मे है कि ये नारियाँ अपने को ही पीड़ित करती है। अपने को गलाकर अर्पित करके सामन्जस्य पाती है। यह आत्म पीड़न का दर्शन एक ओर मनोवैज्ञानिक से जुड़ जाता है। दूसरी ओर गांधीवाद से । आत्मपीड़न एक प्रकार का काम भावना का दमन है। यह मनुष्य में अनेक प्रकार की अस्वाभाविक प्रवृत्तियों को जन्म देता है। जैनेन्द्र इस काम कुन्ठा-जनित अस्वाभाविकता पर रहस्यमयता का आवरण चढ़ा देते है। [1] जैनेन्द्र राजनैतिक स्तर पर राजसत्ता को अनावश्यक मानते है। वे व्यक्तिवादी आतंकवाद को गांधीवाद में परिणित करते है। उनके क्रान्तिकारी नेता गांधीवाद से प्रभावित है।

[1] हिंदी का गद्य साहित्य पृष्ठ-447 डा० रामचंद्र तिवारी ।

2-

है। गांधीवाद की ही चरम परिणति राजनैतिक विहीन समाज में हो सकती है। वैनेन्द्र हमारे वाचकों की दृष्टि में वैनेन्द्र का रचनात्मक साहित्य "एक रोमांटिक कल्पना का प्रयोगात्मक संचार का माध्यम है। वैनेन्द्र के उपन्यास अपनी एक सतह के माध्यम एक मौलिकी समाज का वातावरण उपस्थित करते पाठक की सहानुभूति को तुष्ट करते हैं।

वैनेन्द्र के सारे चिन्तन-मनन के बाद निष्कर्ष यह निकलता है कि वैनेन्द्र एक हैं। वैनेन्द्र एक हैं। साहित्य अनुभूति को मानवतावाद की अभिव्यक्ति निष्ठा तक पहुंचाने में सहायक है। उन्होंने अपनी कृतियों में आदर्शवाद के सहारा लिया है। वैनेन्द्र का मूल प्रतिपाद्य प्रेम की अभिव्यक्ति निष्ठा है। उन्होंने नए अन्यायों की समाज को दृष्टि दी है। और यह विधान मनोवैज्ञानिक प्रयोग है। डा. राम चन्द्र तिवारी लिखते हैं, "भाषा सुगठित, और चित्र है में जीवन्तता भरने लिए की है। मुहावरा और लोकोक्ति आदि सजीव शैली में लिखे गये हैं। वर्णनात्मक शैली में लिखा गया है। वैनेन्द्र ने कथा शिल्पगत में प्रतीक विधान भी किया है। ये प्रतीक कहीं आध्यात्मिक हैं और कहीं आर्थ क्षेत्रों से लाये गये हैं। यों देखा जाये तो उपन्यास एक पांच तत्व के किसी न किसी पक्ष का प्रतीक है। प्रतीक सम्पन्न के कारण ही उनके उपन्यासों में रहस्यमयता की आयोजना है। और उपन्यास मानवीय तत्व की अभिव्यक्ति के माध्यम बन गये हैं। वैनेन्द्र की कथा संगठनात्मक तथा मानवीयता का अभाव है। [1]

1- हिन्दी गद्य का साहित्य पृ०-450 डा. राम चन्द्र तिवारी।

जैनेन्द्र के उपन्यासों के नाम प्रधानतः नारी पात्रों के नाम पर हैं । सुखदा में सुखदा,सुनीता में सुनीता,कल्याणी में कल्याणी,कल्याणी में कल्याणी नारी पात्र है । जैनेन्द्र कुमार ने नारी को आत्मा का एक महत्वपूर्ण स्थान दिया है। आत्मा में कुछ सार्वभौम भाव होते हैं। जैसे प्रेम,भाव प्रतिष्ठा और भाव शान्ति का यहाँ कोई स्थान नहीं है। नारी इन भाव का निर्माण करती है । फलतः जैनेन्द्र कुमार की अपन्यासिक नारी चित्रण कला उत्कृष्ट है । जैनेन्द्र कुमार ने फलतः के रूप में नारी समाज आर्थिक, गुणों की प्रतिष्ठित किया है। जैनेन्द्र की दृष्टि से नारी गुणों की खान है। मानव का भाव,उसमें सदा भाव से रहता है। समय बदलने पर वह बड़े बड़े त्याग कर सकती है। सांसारिक दुखों को वह धैर्य के साथ सहन करने की क्षमता रखती है। वह भावुक नारी है ।

सुनीता का मुख सौन्दर्य विशिष्ट नारी है । उसका पति श्रीकान्त और उसके रूप और गुणों पर मोहित है। पति पत्नि दोनों स्वस्थ और सुन्दर हैं । सुनीता परम्परागत भारतीय नारी के रूप में घर को ही अपना कर्तव्य मानती है उसके लिए परम्परागत पति धर्म का पालन करना अनिवार्य है ।

सुनीता के माध्यम से जैनेन्द्र कुमार नारी के नव जागरण के आधुनिक बोध का प्रकट करना चाहते हैं। उनकी मान्यता है कि नारी का तन सम्पूर्ण नहीं मानी जा सकती है जबकि कि वह मन और पुरुष से श्रेष्ठ मानकर होगी । काम और प्रेम को वह भाव के स्तर पर ग्रहण करेगी तो उसका व्यक्तित्व कुंठित बनकर रह जायेगा। निर्भय होकर अपने व्यक्तित्व का प्रसार करना नारी के नव जागरण का मूल चिन्ह है । व्यक्तित्व के इस प्रसार में ऐसी बुद्धि विकसित होती है जिसमें सत्य कथित नैतिकता और आसक्तिता का भय नहीं रहता है। सुनीता ने नारी नव जागरण के आधुनिक बोध को ग्रहण करते कार्य क्षेत्र में प्रवेश किया है वह हरिप्र "घर" से माध्यम से ही "सत्य" को प्राप्त करती है सत्य से यहाँ अभिप्राय श्रीकान्त और अपने सुनीता है ।

सुभाष से सरल और परिचय है और अपनी आयु से बड़े के साथ विवाह होने पर भी वह प्रतिष्ठित धर्म का पालन करना चाहती है। इसके अतिरिक्त सुभाष समाज द्वारा अपेक्षित आदर्श श्रेणी के लोगों से बाहर रहने लगती है। डा0सर्वपल्लि राधा का कथन है कि,"सुभाष के रूप में जैनेन्द्र कुमार ने नारी की स्वतंत्रता विषयक अपने विचारों को मूर्त रूप दिया है। देश में बढ़ते पाश्चात्य प्रभाव के कारण नारी की स्वतंत्रता के विषय में अनेक तरह की बातें कही जा रही है। जैनेन्द्र किसी सीमा

तक व्यक्तिवाद व है नारी की स्वतंत्रता है बताती है। वहाँ सुमन को छोटी व है चित्रित किया गया है। सुमन का विद्रोह सामाजिक मर्यादाओं को तोड़ने के लिए बार-बार उत्तेजित व में प्रकट होता है। ।।।

सुमन की कहानी वास्तव में भारतीय नारी की दुर्दशा की कहानी है सुमन को उपन्यासकार ने सामाजिक विकारों से जकड़ी हुई नारी के व में चित्रित किया है। सुमन का परम्परागत रूढ़िवादी विचारों के दुष्चिन्ह पाने का प्रयत्न करती है। वह जीवन साथी के चयन में पूर्ण स्वतंत्रता की आकांक्षा करती है ।

सुमन महत्वाकांक्षी नारी है। वह समाज में आधुनिकता के साथ रहना चाहती है। उसकी हार्दिक इच्छा है कि उसका भावी पति उसे सब साधन प्राप्त कराये । वह ऐसे पति की कल्पना अपने लिए करती है जो सर्व सुख सम्पन्न हो।

जैनेन्द्र की की नारियाँ का प्रकार सुख साधनों में सुख आर्थिक बाला वरण के अनुकूल है। जबकि शर्मा की की नारियाँ ऐतिहासिक है। और अतीत से सम्बद्ध है। वे वीरांगनायें,पति परायणा है और धर्म तथा समाज की रक्षा करने वाली नारियाँ है। वे सामाजिक है जबकि जैनेन्द्र की नारियाँ में व्यक्तिवादी दृष्टिकोण की गुन्ध आती है। एक में भारतीय और अतीत का वातावरण है तो दूसरे में पाश्चात्य एवं वर्तमान का वातावरण है। दोनों की नारियों में एक प्रकार से भिन्न व्यक्ति है। दोनों में स्वतंत्रता की भावना है ।

---o---

1-उपन्यासकार जैनेन्द्र के पात्रों का मनोवैज्ञानिक अध्ययन-डा.जगदीशचन्द्र
पेज -187 राधा

-: वृन्दावन लाल वर्मा और उपेन्द्रनाथ अश्क :-

उपेन्द्र नाथ अश्क की समस्त उपन्यासों के क्षेत्र में आ गई है। उन्होंने गिरवरों के बिल, गिरती दीवारें, गर्मराख, बड़ी बड़ी आँखें, सत्तर आत्म एक सत्य, शहर में घूमता आईना, बाँधों न नाव इस ठाँव बन्धु ! आदि उपन्यास रचकर साहित्य की परिधि को व्याप्त बनाया है। इंग्लैण्ड के के प्रसिद्ध उपन्यास आफ मार्टिन चज़लैंग" का अनुवाद " शिव पंचकोटी" डारस्तायेवस्की के लघु उपन्यास "सर्दी स्टोरी" का अनुवाद है।

अश्क जी ने अपने उपन्यासों में निम्नवर्गीय जीवन की यथार्थ चित्रण का प्रयास किया है। डॉ० नगेन्द्र कुमार लिखते हैं," अश्क जी के उपन्यासों में यथार्थ की प्रवृत्ति वैज्ञानिक सीमा पर नहीं पहुँची है, परन्तु उनके उपन्यास सभी मध्यवर्गीय समाज की गतिविधि को एक विशेष दृष्टि से ही चित्रित करते हैं उनके उपन्यासों में उच्च समाज के ऐसे ही पात्र आये हैं, जिनमें निष्क्रियता, उदासीन सीमता और दमघोटू विषाद की छाया पड़ी हुई है। इन रचनाओं के पढ़ने पर हमारे मन में ऐसी भावनाएँ, उत्पन्न नहीं होती, जैसी प्रेम चन्द्र के उपन्यासों को पढ़कर होती है। -सत्यम उपन्यासकार और चित्रकोन्मुख।"[1] गिरती दीवारें और गर्म राख इन दो उपन्यासों में यथार्थवाद का प्रश्न उठता है। डॉ० नगेन्द्र कुमार बाजपेयी गिरती दीवारें को यथार्थ वादी मानते हैं। शिव दान सिंह गर्म राख को प्रकृतिवादी मानते हैं, राधेन्द्र पाठक का कथन" अश्क जी यथार्थ यथार्थवादी हैं। और गर्म प्रकृतिवादी ।[2] अश्क जी ने मानव के विभिन्न जीवन पर अनेक छोटे छोटे सन्दर्भों के माध्यम से मध्यवर्गीय समाज के टूटे-फूटे पुरे, -ुंब, ,मूर्ख गुमार, जीवन, और दल दल का चित्रण किया है। ये चित्रण वर्ग के सैद्धान्तिक जीवन, आर्थिक और सामाजिक समस्याओं दशाओं अवस्थाओं, मानसिकताओं, कुण्ठाओं, विडम्बनाओं, त्रुटियों, दुर्बलताओं, ग्रन्थियों, और विकृतियों को यथार्थ रूप प्रस्तुत करते हैं। उनका कथन है कि ," मैं आधुनिक

1-नया साहित्य नये प्रश्न पृष्ठ- 180 डॉ० कुमार बाजपेयी ।
2-उपन्यासकार अश्क - पृष्ठ- 184

का विरोधी नहीं, मैं विरोधी हूँ आत्मसत्य के आवरण में आवृत्त अंध-विश्वास तथा रूढ़िवादिता का, जो व्यक्ति की बुद्धि को कुंठित करके और कुत्सार्थ के पथ से विचलित करती है। तथा शोषण और अत्याचार के प्रति विद्रोह की भावना को जागने नहीं देती।[1] आज विद्यमान सहयोग का विस्तार नहीं करते। अत्याचार के कारण का सारा दोष, भी सांस्कारिक और अन्तर्विद्रोह संकेतों को समर्थित करने पर विवश कर देता है। यही-यही आज एक प्रतीकात्मक अन्याय है। उन्होंने लोगों अर्थशास्त्र पर प्रहार किया है। आज की ने तथा अन्याय की विशेषता का प्रचार बताई है, और निकट तथा अन्याय की कसौटी है कि पाठक उसे पढ़ता जाये और उसे पता न लगे कि लेखक अपनी इच्छा के अनुसार उसे कुछ दिखा रहा है। अथवा जीवन का कोई दृश्य दे रहा है।[2]

आज की ने पहले उर्दू में लिखा बाद में वे हिन्दी में आये। आज ने हिन्दी गद्य को एक सशक्त व्यावहारिक, कलात्मक, जीवन के विस्तार को समेटने में समर्थ तथा प्रभावमान शैली अपनाई। उनके कारण उर्दू के तिरछे शब्द हिन्दी में प्रचलित हो गये। उनके तथा साहित्य के कारण पंजाबी भाषा के भी बहुत से शब्द और मुहावरे हिन्दी में आ गये। उनके वर्णन में अद्भुत क्षमता है। उनके पात्र वर्णनों में अद्भुत वर्णन क्षमता मिलती है। उनका मन प्राकृतिक दृश्यों और ऐतिहासिक स्थानों के वर्णन में रमा है। उन्होंने छोटे छोटे वाक्यों की संरचना में व मुहावरों का पूरा व विस्तृत किया है। हिन्दी गद्य को यथार्थ जीवन के निकट लाने में आज की पूर्ण सफल हुए हैं। आज की को निम्न मध्यवर्गीय जनता के प्रति सहानुभूति है। उन्होंने अधिक सच्चे यथार्थ को प्रकट किया है। आज की ने मिट्टी दीवारें के सम्बन्ध में लिखा है वहाँ-वहाँ बहुत ही मार्मिक चित्रण है। और कभी कभी दृष्टि के कुछ आविष्कार के कारण

1-अन्धायुग आज पृष्ठ- 79 उपेन्द्रनाथ अश्क।
2-अन्धायुग आज पृष्ठ- 83 उपेन्द्रनाथ अश्क।

कोई स्थान अथवा काव्य अत्यंत सजीव सजीव उभर आया है। लेकिन कीटाणु सांसारिक दृष्टि के कारण जहाँ जहाँ फैली और घुमती हुई उन्हें दिखाती है। जिनकी याद देती चलती है। *।।। आज भी जो कला पेशा के अभिव्यक्ति कलाकार के प्रति सहानुभूति, पर्याप्त को देखने की सूक्ष्म दृष्टि और जन हितकर या लोकोपकार लेखक है। उन्होंने निरन्तर परिष्कार और परिमार्जन किया है।

।-नीलम्बरी साहित्य एवं आधुनिक परिदृश्य पृष्ठ- 92 अज्ञेय ।

कृष्णचन्दर तथा उर्दू और उपन्यास

उपन्यास के उपन्यास है 1-एक लड़की तरसठ मील, 2-आकाशगंगा, 3-तीसरा आदमी, 4-काली आँधी, 5-शायद कोई 6-दीवानगी, 7-गोदे हुए गुलाब, 8-गद्दार, 9-शहर में कैसा हुआ आदमी, तथा 10-दूसरा दरवाजा ।

उपन्यास के उपन्यासों में पुरुषों की अपेक्षा नारी पात्रों का वर्णन अधिक प्रभावपूर्ण किया है । नारी पात्रों में विविधता है। वे मात्र उपन्यासकार की कोई कल्पना नहीं अपितु समाज का यथार्थ चित्र है। ये नारियाँ विविध रूपों, समस्याओं आकांक्षाओं आदि का प्रतिनिधित्व करती है ।

कृष्ण दीवानगी आम उपन्यास में सामन्ती प्रथा के अंत से उत्पन्न होने वाली आर्थिक कठिनाईयों का वर्णन है। सन 1857 की क्रान्ति के बाद सामन्ती प्रथा का अंत होने की घोषणा से देशी राज्य ब्रिटिश साम्राज्य के अंत बन गये । विभिन्न प्रलोभनों के थोड़े टुकड़ों या उपलब्ध आर्थिक साधनों के माध्यम से भारतीय समाज के उच्च वर्ग के साथ गठ-जोड़ मजबूत बनता गया । कृष्ण दीवानगी आम की दादी जैसे नेक और सेवाभाव नारियाँ ने प्रलोभनों को कुचल कर कष्ट सहने का रास्ता अपनाया । उचित समझा ।

नारी अबला होने के कारण विभिन्न आर्थिक आदि निर्भरता तथा पीढ़ियों पर्यन्त की समस्या से ग्रसित है । उपन्यास के नारी पात्र प्राचीन रूढ़ियों को तोड़कर यथासम्भव अपनी समस्याओं का समाधान खोजते है। कभी कभी आजादी अतीत की यादों और आकांक्षा की सीमा होती नारियाँ परिस्थितियों के सामने टूटने लग जाती है। तथा वांछित जीवन जी पीने को अभिशप्त हो जाती है ।

उपन्यासों में निम्नलिखित सामाजिक समस्यायें देखने को मिलती है। 1-दरिद्रता तथा रुग्ण जीवन की समस्या, 2-वर्ग प्रथा, 3-दहेज की समस्या 4-जनसंख्या वृद्धि 5-साम्प्रदायिकता 6-शिक्षा तथा आय के कारण नारी शोषण की समस्या ।

उपन्यास देशी भारतीय परम्परा के पोषक रहे है । जिनमें नारी समाज को बल मिलता है। सोचो आदतों, रूढ़ियों तथा कुछ मान्यताओं का उन्होंने विरोध किया है। कृष्ण-दीवानगी आम की बड़ी दादी व तेजो, आकांक्षा की तथा काली आँधी की मालती आदि ऐसे पात्र है जो भारतीय सभ्यता व संस्कृति की तथा तथ्य परम्पराओं के अनुरूप कार्य करते है ।

नारी के प्रगतिशील होने में परिवेश तथा परिवारों की अपेक्षा उनके मानसिक धरातल का महत्व अधिक है। ज्ञान, कला या चिन्तनशील मनुष्य को विद्रोही बना देते हैं। एक तरफ तलाक, दहेज, घरेलू शोषण, आत्मजी अतीत, देशान्तरण, बेटे हुए, मुआवजा, अपहरण, आदि अपराधों के अधिकांश उपन्यासों में नारी पात्रों का विद्रोह वर्णित है। नारी की सहनशक्ति, धैर्य, तथा परिश्रम के भाव को इस सीमा बना दिया है कि वह समाज के साथ चलकर पुरुष से किसी भी क्षेत्र में पीछे न रहे। अमृतलाल ने कथाकार की प्रगतिशील नारियों के उदाहरण हमारे सामने प्रस्तुत किये हैं।

प्रगतिशील शहरी नारी और अब अधिक महत्वाकांक्षी, चालाक, आत्मनिर्भर तथा आर्थिक रूप से कुछ पिछड़ी होती है। वह अपने परिवार तथा समाज के उत्थान में पुरुष के बराबर भागीदार है। परन्तु अवसर मिलने पर कुछ शहरी नारियाँ निरंकुशता की भावना तथा स्वच्छन्दता की चाह में दूसरों के पिछाये चाल में फंस जाती है। और पिता, पति, पुत्र से दूर होकर जीवन में अकेलापन अनुभव करती है। ये नारी अपने ममता, दया, सहृदयता तथा न्याय के सारे आदर्श भूलकर, स्वार्थीपन की शिकार हो जाती है।

सप्तम अध्याय (उपसंहार)

नारी पात्रों एवं प्रगतिशीलता की दृष्टि से वर्मा जी की हिन्दी साहित्य की देन

नारी पात्रों एवं प्रगतिशीलता की दृष्टि से वर्मा जी की हिन्दी साहित्य को देन :-

वर्मा जी के प्रत्येक उपन्यास का आधार कोई न कोई घटना होती है। वे रोमांस प्रिय हैं। प्रायः सभी उपन्यासों में यह स्थिति देखने को मिलती है। ऐतिहासिक उपन्यास रोमांस अधिक अधिक प्रिय है। उनमें वातावरण के निर्माण की अद्भुत क्षमता है। मध्ययुगीन ऐतिहासिक वातावरण को सजीव करने में आप अग्रगण्य हैं। ऐतिहासिक उपन्यासों में भौगोलिक ज्ञान एवं ऐतिहासिक सामग्री की उपयुक्तता दोनों पर पूरा ध्यान देते हैं। नायिकाओं के व्यक्तित्व निर्माण में वे अधिक रुचि लेते हैं। उनकी नायिकायें सौन्दर्य सौम्यता, भावुकता के साथ साथ साहस, शक्ति, और त्याग की मूर्ति हैं। कर्तव्य की कठोरता में वे अपने प्रेम की कोमलता को छिपाये रखती हैं। आपके उपन्यासों में वीर रस और शृंगार रस का सामन्जस्य है। इन दोनों का समायोजन प्रसाद गुण को आकर्षक बना देता है। प्रकृति के कोमल मनोहर एवं भयंकर चित्रों के साथ ही घटनाओं, पात्रों और मनोभावों का चित्रण भी आपने सुन्दर किया है। वर्मा जी साहित्यकारों के प्रेमी हैं। उनके अनेक पुरुष पात्र कलाकार हैं। बिना किसी प्रेरणा और उद्देश्य के आप कला की सार्थकता स्वीकार नहीं करते। बुन्देलखण्ड की मूल प्रकृति से आपको प्रेरणा मिली है। बुन्देलखण्ड के जीवन को मूर्त करने के लिए आपने बुन्देलखण्डी शब्दों का तथा मुहावरों का प्रयोग किया है। बुन्देलखण्ड के जन जीवन, इतिहास, कुसंस्कार तथा भाषा का सच्चा प्रतिनिधित्व करने के कारण आपको बुन्देलखण्ड का उपन्यासकार कहा जाता है। उनकी भाषा प्रायः प्रौढ़, सशक्त और परिमार्जित होती थी और उसमें सरस, तरल और चित्रण क्षमता तथा अलंकरण की प्रवृत्ति मिलती है। अनेक पात्रों के व्यक्तित्व से हमारी चेतना जाग्रत होती है। आचार्य राम चन्द्र शुक्ल ने तो अपने हिन्दी साहित्य के इतिहास में वर्मा जी के कृतित्व की महिमा का प्रचार स्वीकार की है, "ऐतिहासिक उपन्यास के क्षेत्र में केवल वृन्दावन लाल वर्मा दिखाई दे रहे हैं। उन्होंने भारतीय इतिहास के अज्ञात

के प्रारम्भ में बुन्देलखण्ड की निवासिनी लेखिका "मधु कुलश्रेष्ठ" और विराटा की पद्मिनी को बड़े सुन्दर उपन्यास लिखे हैं । विराटा की पद्मिनी की कल्पना तो अत्यंत रमणीय है। [1] स्वर्गीय गंगा शंकर शिवशरण्यी ने मधु कुलश्रेष्ठ की पाण्डुलिपि देखकर हमको हिन्दीके आन्टर स्कॉट की उपाधि दी थी । महारानी लक्ष्मीबाई और "कुलटानी" उपन्यासों में उनकी कला का चरम विकास मिलता है। आपने ऐतिहासिक तथ्यों की रक्षा करते हुए कल्पना दृष्टि के आधार पर पूर्व इतिहास लोक की सृष्टि की है । इतिहास लोक की सृष्टि के लिए इतिहास के पूर्व वर्ण सूक्ष्म ज्ञान के साथ ही उनकी जातीयता -भिन्नताओं का ज्ञान है। वर्मा जी की सबसे बड़ी विशेषता यह है कि वे इतिहास लोक की सृष्टि के लिए पिछे जाने सूक्ष्म का चयन करते हैं। उनके साथ सूक्ष्म -सूक्ष्म उपादानों का व्यौरा सामने रखते हैं । वन,उपवन, नदी, टीला,गली,सड़क,दुर्ग, प्रासाद, मंदिर,महल कला स्थापत्य उभरता हुआ घटनाओं को जीवन्त बना देता है। घटनाओं में पात्र उभरते हैं, और वे अपना व्यक्तिगत प्रभाव बनाये रखकर कलाकार के महान उद्देश्य की सिद्धि में सहायक होते हैं । कलाकार का उद्देश्य उन पात्रों का जीवन लक्ष्य बनाकर सामने आता है। इस घटना क्रम और स्थान के अभिचित्रण से मर्मांकित है। वर्मा जी का व्यापक मानवतावादी नारी-पात्रों के आलोक में व्यापक निरन्तर दीप्त रहता है। उनके आदर्श पुरुष-पात्र उस आलोक को छूने की चेष्टा करते हुए, निरन्तर गतिशील दीखते हैं। कुलटानी में रमणीय आजीवन कुलटानी के व्यक्तित्व को स्वर्ग की कामना रखते हुए कर्तव्य और भावना को सन्तुलित करता है। "विराटा की पद्मिनी में कुंवर सिंह विराटा की पद्मिनी के सौन्दर्य से अभिभूत अपने को उत्सर्ग कर देता है। महारानी लक्ष्मी बाई नारीशक्ति और तेज का दिव्य आलोक विकीर्ण करती हुई पूरे जन समूह को प्रदीप्त करती है। वर्मा जी ने अतीत के पट पर कुछ दिव्य दृष्टियाँ की हैं। वे इन दृष्टियों के लिए चिर आदर रहेंगे।

1-हिन्दी साहित्य का इतिहास पृष्ठ-630 रामचन्द्र शुक्ल ।

"झाँसी की रानी" का विषय देशभक्ति और वीरता है। इसमें बुन्देलखण्ड की परिचित भूमि से बाहर निकलकर देशभक्ति ऐतिहासिक वातावरण को ग्रहण किया है। वर्माजी ने अंग्रेजों की इस भ्रान्त धारणा कि "रानी का सारे परिवर्तनों का जो सकता पूर्ण निराकरण किया है। उन्होंने अनेक ऐतिहासिक तथ्यों के आधार पर स्पष्ट किया है, "रानी स्वराज्य के लिए सती की अंतिम विभूति के पीछे एक विशिष्ट देशभक्ति योजना थी। रानी के व्यक्तित्व में भारत की अन्तरात्मा का जागरण सजग हो उठा था।"

वर्माजी ने बुन्देली में पन्द्रहवीं सदी की बुन्देलखण्ड की परिस्थिति पर बुन्देली के ऐतिहासिक वीरता की है। युग की उदात्तता, वीरता, तेजस्विता, आजादी और वफादारी ने अपने बुन्देलखण्ड की भूमि विभूति बनती है। उनकी वर्णन शक्तियों की अपराजेय व दृढ़ता, नारियों की सरलता और भक्तिमय धर्मता, की भव्यता बुन्देली के रूप में साकार हो उठी है, बुन्देली के व्यक्तित्व में रक्षा सत्य शौर्य तथा त्याग सब कुछ का समन्वय है।

अहिल्याबाई उपन्यास उनके आदर्श जीवन से प्रेरित होकर लिखा है, इसमें अहिल्याबाई के आदर्श चरित्र का अंकन किया गया है। अहिल्याबाई की प्रजावत्सलता, सौम्यता, बहुरूपता, एवं धार्मिकता को सर्वाधिक महत्व दिया गया है। प्रेम की भेंट, कुटी का घर, लगन अंतर मेरा कोई छल नहीं का कथानक मुख्यतः प्रेम उपन्यास है।

वर्माजी ने ऐतिहासिक नारी पात्रों को अपने उपन्यासों में स्थान दिया है। अनेक उपन्यासों के नाम नारी पात्रों के नाम पर रखे गये हैं। भारतीय नारियों के चरित्रों को उजागर करने का प्रयास उन्होंने किया है। जिन्होंने अपने देश की रक्षा की और कि स्वतंत्रता संग्राम में कूदी तथा भारत वर्ष का नाम उज्ज्वल किया। उन्होंने धर्म के कार्य किये, अनेक मंदिर व धर्मशालायें बनवाईं। प्रजा की रक्षा करते हुए उन्हें महा सम्मान एवं स्फूर्ति दी। उन्होंने दुष्टों को सख्त दण्ड दिये। शत्रुओं से लोहा लिया। प्रजा को सुख दिये, न्याय किया। उनकी वीरता एवं पराक्रम से साम्राज्य से न्यायपूर्ण से भारतवर्ष का नाम ऊँचा हुआ। महारानी लक्ष्मी-

गई थी।[illegible] ने अपने राज्य की रक्षा करती है, उनके सामने [illegible] नहीं होती, और कहती है कि,"मैं अपनी [illegible] नहीं [illegible]। [illegible] का उल्लेख करके [illegible] है। [illegible] ने अहिल्याबाई के सम्बन्ध में कहा," जिन मराठों ने हिन्दुस्तान के चारों कोनों में धर्म की ध्वजा फहराई है, जिन मराठों की होली ने उत्तर में बद्रीनाथ, केदारनाथ, [illegible] से लेकर, मथुरा वृन्दावन, काशी [illegible] और [illegible] राज्य, रामेश्वर तक एवं द्वारिका और सोमनाथ से लेकर जगन्नाथपुरी तक मंदिर, घाट, [illegible], और भी [illegible] धर्मशालायें बनवाई और [illegible] के लिए [illegible] रखवाई, जिन होली ने तीर्थ क्षेत्रों के मंदिरों में [illegible] पिलवाने का प्रबन्ध किया। [1]

[illegible] प्रयाग विश्वविद्यालय में [illegible] ने वर्मा जी से पूछा कि आपने आज तक जो लिखा है उसमें [illegible] में लिखे जो वर्मा जी [illegible]- " उन्होंने इतिहास को कला के सांचे में ढालने का प्रयत्न किया है। [2] वर्मा जी ने अतीत को वर्तमान में [illegible] दिखाने के लिए अतीत के प्रेरणादायक तत्वों को वर्तमान के [illegible] में समन्वित करने के लिए लिखा है।

1-अहिल्याबाई पृष्ठ- 115 वृन्दावन लाल वर्मा।
2-अपनी कहानी पृष्ठ-209 वृन्दावन लाल वर्मा।

राधेय सक्सेना का अभिमत है कि,"उनके नारी पात्रों में एक अपना व्यक्तित्व ही नहीं,साथ में अदम्य स्वाभिमान की रक्षा करता है। वे जीती है पूर्णतः के साथ और मृत्यु का वरण भी करती है। पूर्ण निर्भीकता के साथ। उनकी दुःखान्त नियति पर आँखे तो भर ही आती है,दीन-हीन रोष से भी कण्ठ उठता है। "[1] वर्मा जी अपने ऐतिहासिक उपन्यासों के लिए झाँसी की रानी,दुर्गावती,महारानी दुर्गावती,अहिल्याबाई और राजपूत की रानी जैसी महिमामयी वीरांगनायें चुनते है। महारानी दुर्गावती में जब रानी का प्रजावत्सल जैसा पुष्ट रोल है तब राजा उनकी अवहेलना करते नहीं अघाते। राजमहिषियों की तुलना में वर्मा जी की सामान्य नारी पात्रों की दृष्टि से अधिक विशिष्ट और गरिमामयी है। दुर्गावती की साथी ने अपनी सहेली मित्रों को बाद में ग्वालियर की महारानी दुर्गावती बनी, से साथ जाना सीखा था।

" आगे चलकर वह उनसे कहीं अधिक दृढ़ता और कुशलता से विजय निकलती है। गढ़पर दुर्ग की रक्षा के समय उसे ही यह नयी बात सूझती है और वही वह आग्रह करती है कि छापामार युद्ध की नीति अपनाकर रात के अँधेरे में छोटी-छोटी टुकड़ियाँ जाये और शत्रु के शिविर पर इधर-उधर से अचानक धावा बोल दें। " साथी का यह प्रस्ताव उस युद्धाय के स्वरूप में उड़ा देता है। "हुआ वा चाहो। अँधेरे में दुश्मन की टुकड़ियों पर हमने हमला किया था सकता है ? किले की दीवारों के पीछे से वार करना अच्छा रहता है। [2] साथी एक नहीं सुनती और वह विश्वास ही खो देती है कि उसकी युक्ति कितनी व्यावहारिक और काम की रही। वह स्वयं रात में युद्ध करते हुए दुश्मन के हाथों वीरगति को प्राप्त होती है। इतना ही नहीं,वह सोते सोते ही दुश्मन के एक सैनिक के टुकड़े कर जाती है। [3] सैनिक की पत्नी में

1-वृन्दावन लाल वर्मा पृष्ठ-36 राधेय सक्सेना।
2-वृन्दावन लाल वर्मा पृष्ठ-40 राधेय सक्सेना।
3-वृन्दावन लाल वर्मा पृष्ठ-40 राधेय सक्सेना।

नारी की बुद्धि और वैनी हो उठते है। उसे और दुर्गावती को पकड़ने के लिए दुर्ग तक आते है तो उसी से एक सैनिक के खातर बन्दूक की नोक से आँखों आँखों पर वह अपने तीर का निशाना साधती है । इसे निपटते ही वह निर्भयतापूर्वक बिल्ली नाटिनी की ओर बढ़ती है जो दुर्ग की रक्षा-योजना गुप्त को बताने के लिए खाई पर से रस्से की राह का रही थी। नारी खाई पर रस्सी का एक सिरा काट देती है। निर्भयतापूर्वक खाई में गिरकर ढेर हो जाती है। झाँसी की रानी का रानी दुर्गावती से ही नहीं नारी शिक्षा की राह बनाया का सामरिक परम्परा वाली नारी से बड़ी सफलता से जोड़ने में सफली है।"[1]

* प्रेम मेरा कोई अन्यास 1940 में प्रकाशित हुआ था। वर्मा जी ने जिस समस्या का यहाँ उठाया है उस पर पिछले ही लेखों में मैं अब तक उस पर विचार किया है। समस्या के अन्तर्गत मुख्यतः आते है एक ओर से अन्तर्विरोध और दूसरी ओर से नये मूल्य, जो नारी के बढ़ते स्वातंत्र्य तथा पुरुष शक्ति साथ उसके सम्पर्क विस्तार की देन है। इस उपन्यास में भी विभिन्न प्रकार की दुन्दी, सम्पर्क के दायरे की चिन्ता से अधिक सशक्त प्रकाशित होती है।[2]

इस प्रकार वर्मा जी के उपन्यासों की नारियाँ स्वातंत्र्य एवं पुनर्निर्माण की प्रतीक है। उन नारियों के चरित्र का अनुकरण कर जिनकी ही नारियाँ देश का उद्धार कर सकती है और भारत राष्ट्र के उत्थान और उस की रक्षा के लिए अपने जीवन का उत्सर्ग कर सकती है। अनुकर नारियों के चरित्र का अध्ययन कर उन्होंने नारियों के उत्थान में ही योगदान नहीं किया, अपितु देश के प्रति उनके उत्सर्ग की भावना भरी है। उनके चरित्र का अनुकरण कर नारियाँ राष्ट्र की रक्षा में सहायक सिद्ध होंगी। इस दृष्टि से वर्मा जी का योगदान अमिट है ।

1-वृन्दावन लाल वर्मा पृष्ठ-41 राधीय संस्करण ।
2-वृन्दावन लाल वर्मा पृष्ठ-42-43 राधीय संस्करण ।

सहायक ग्रन्थ सूची

-: सहायक ग्रन्थ-सूची :-

-: हिन्दी-ग्रन्थ :-

उपन्यास :-

1-झाँसी की रानी लक्ष्मीबाई	आर० वृन्दावन लाल वर्मा ।		
2-कीचड़ और कमल	**	**	**
3-देवगढ़ की मुसलमान	**	**	**
4-सावन की तिरिन्दाज	**	**	**
5-मृगनयनी	**	**	**
6-आहुति	**	**	**
7-महारानी दुर्गावती	**	**	**
8-अमर	**	**	**
9-टूटे काँटे	**	**	**
10-पिघलता की बहुरानी	**	**	**
11-कुमुद विजय	**	**	**
12-मेरा मेरा कोई	**	**	**
13-गोपा	**	**	**
14-आहत	**	**	**
15-अहिल्याबाई	**	**	**
16-मृगनयनी	**	**	**
17-मेरा	**	**	**
18-उदय विजय	**	**	**
19-रानगढ़ की रानी	**	**	**
20-मृगनयनी	**	**	**
21-मृगनयनी	**	**	**
22-प्रेम की भेंट	**	**	**
23-गढ़	**	**	**
24-कभी न कभी	**	**	**
25-गोली आग	**	**	**
26-गढ़ितरंगिनी	**	**	**
27-भारत का है	**	**	**

कहानी संग्रह :-

1- हमें पाँच	आ०वृन्दावन लाल वर्मा ।		
2- ऐतिहासिक कहानियाँ	**	**	**
3-आत्मकथा	**	**	**
4-अमावस का चाँद	**	**	**
5-मेहदी का प्यार	**	**	**

6-[illegible] का [illegible]	डा० वृन्दावन लाल वर्मा ।
7-[illegible]	** ** **
8-[illegible]	** ** **
9-[illegible] ।	** ** **
10-भारत राष्ट्रीय आन्दोलन तथा वैज्ञानिक चिंतन	प्रोफेसर प्रकाश गुप्त सैकण्ड-1956 [illegible]
11-[illegible]	प्रेम चन्द्र
12-साहित्य का उद्देश्य	*
13-हिन्दी का गद्य साहित्य	डा० रामचन्द्र तिवारी
14-[illegible]	[illegible]
15-[illegible]	[illegible]
16-[illegible]	*
17-[illegible]	*
18-[illegible]	*
19-हिन्दी कथा साहित्य	[illegible]
20-[illegible]	डा० [illegible]
21-साहित्य का [illegible]	डा० [illegible]
22-[illegible]	नन्द दुलारे वाजपेयी
23-उपन्यासकार	जैनेन्द्र नाथ अरुण
24-हिन्दी साहित्य का आधुनिक परिचय	[illegible]
25-हिन्दी साहित्य का इतिहास	रामचन्द्र शुक्ल ।
26-[illegible]	[illegible]
27-उपन्यासकार जैनेन्द्र के पात्रों का मनोवैज्ञानिक अध्ययन	डा० [illegible]
28-उपन्यासकार अरुण	जैनेन्द्रनाथ अरुण
29-वृन्दावन लाल वर्मा	राधीश [illegible]
30-साहित्य में यथार्थवाद	डा० रांगेय राघव

रेनु मिश्रा,
एम.ए.